आशुलिपिक सचिवीय सहायक (हिन्दी)

Stenographer Secretarial Assistant (Hindi)

NSQF स्तर - 3

1st वर्ष / Year

व्यवसाय अभ्यास
(TRADE PRACTICAL)

सेक्टर : कार्यालय प्रशासन एवं सुविधा प्रबंधन

Sector : Office Administration & Facility Management

(संशोधित पाठ्यक्रम जुलाई 2022 - 1200 घंटों के अनुसार)

(As per revised syllabus July 2022 - 1200 hrs)

Directorate General of Training

प्रशिक्षण महानिदेशालय
कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय
भारत सरकार

राष्ट्रीय अनुदेशात्मक
माध्यम संस्थान, चेन्नई

पो.बा. सं. 3142, CTI कैम्पस, गिण्डी, चेन्नई - 600 032

सेक्टर : कार्यालय प्रशासन एवं सुविधा प्रबंधन

अवधि : एक - वर्ष

व्यवसाय : आशुलिपिक सचिवीय सहायक (हिन्दी) - पहला वर्ष - व्यवसाय अभ्यास - (NSQF संशोधित 2022)

प्रकाशक एवं मुद्रण :

राष्ट्रीय अनुदेशात्मक माध्यम संस्थान

पो. बा. सं. 3142,
गिण्डी, चेन्नई - 600 032.
भारत.
ई-मेल : chennai-nimi@nic.in
वेब-साइट : www.nimi.gov.in

प्रकाशनाधिकार © 2022 राष्ट्रीय अनुदेशात्मक माध्यम संस्थान, चेन्नई

प्रथम संस्करण : अगस्त, 2022 प्रतियाँ : 500

Rs./-

प्राक्कथन

भारत सरकार ने राष्ट्रीय कौशल विकास योजना के अन्तर्गत के रूप में 2020 तक हर चार भारतीयों में से एक को 30 करोड़ लोगों को कौशल प्रदान करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है ताकि उन्हें नौकरी सुरक्षित करने में मदद मिल सके। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI) इस प्रक्रिया में विशेष रूप से कुशल जनशक्ति प्रदान करने में मामले में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है । इसे ध्यान में रखते हुए, और प्रशिक्षुओं को वर्तमान उद्योग प्रासंगिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आईटीआई पाठ्यक्रम को हाल ही में विभिन्न हितधारकों के सलाहकार परिषदों की सहायता से अद्यतन किया गया है । उद्योग, उद्यमी, शिक्षाविद और आईटीआई के प्रतिनिधि ।

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के तहत एक स्वायन्तशासी, राष्ट्रीय अनुदेशात्मक माध्यम संस्थान (NIMI), चेन्नई को ITIs और अन्य संबन्धित स्थानों के लिए आवश्यक निर्देशात्मक मीडिया पैकेज (IMPs) के विकास और प्रसार का काम सौंपा गया है ।

संस्थान अब **आशुलिपिक सचिवीय सहायक (हिन्दी)** के लिए संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप शिक्षण सामग्री लेकर आया है। **वार्षिक पैटर्न** के तहत **कार्यालय प्रशासन एवं सुविधा प्रबंधन** क्षेत्र में **प्रथम वर्ष** का **व्यवसायअभ्यास - NSQF स्तर - 3 (संशोधित 2022)** । NSQF स्तर - 3 (संशोधित 2022) व्यवसाय अभ्यास प्रशिक्षुओं को एक अंतर्राष्ट्रीय समकक्षता मानक प्राप्त करने में मदद करेगा । जहाँ उनकी कौशल दक्षता और योग्यता को दुनिया भर में मान्यता दी जाएगी और इससे पूर्व शिक्षा की मान्यता का दायरा भी बढ़ेगा । NSQF स्तर - 3 (संशोधित 2022) प्रशिक्षुओं को जीवन भर सीखने और कौशल विकास को बढ़ावादेने के अक्सर भी मिलेंगे । मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि NSQF स्तर - 3 (संशोधित 2022) ITIs के प्रशिक्षकों और प्रशिक्षुओं, और सभी हितधारकों को इन IMPs से अधिकतम लाभ प्राप्त होगा और देश में व्यवसायिक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए NIMI's के प्रयास एक लंबा रास्ता तय करेंगे।

NIMI के निर्देशक, कर्मचारी तथा माध्यम विकास कमिटी के सदस्य इस प्रकाशन में प्रदत्त अपने योगदान हेतु अभिनंदन के पात्र है।

जय हिन्द !

श्री अतुल कुमार तिवारी. I.A.S.,
महानिदेशक/विशेष सचिव
कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय,
भारत सरकार

नई दिल्ली - 110 001

भूमिका

राष्ट्रीय अनुदेशात्मक माध्यम संस्थान (NIMI) की स्थापना 1986 में चेन्नई में तत्कालीन रोजगार एवं प्रशिक्षण (DGE&T) श्रम एवं रोजगार मंत्रालय (अब प्रशिक्षण महानिदेशालय, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत), भारत सरकार , तकनीकी सहायता फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी सरकार के साथ की। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य शिल्पकार और शिक्षुता प्रशिक्षण योजनाओं के तहत निर्धारित पाठ्यक्रम NSQF स्तर - 3 (संशोधित 2022) के अनुसार विभिन्न ट्रेडों के लिए शिक्षण सामग्री विकसित करना और प्रदान करना है।

भारत में NCVT/NAC के तहत शिल्पकार प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ध्यान में रखते हुए अनुदेशात्मक सामग्री तैयार की जाती है, जिससे व्यक्ति एक रोजगार हेतु कौशल प्राप्त कर सके । अनुदेशात्मक सामग्री को अनुदेशात्मक माध्यम पैकेज्स (IMPs) के रूप में विकसित की जाती है। एक IMP में , थ्योरी बुक, प्रैक्टिकल बुक, टेस्ट और असाइनमेंट बुक, इंस्ट्रक्टर गाइड, ऑडियो विजुअल एड (वॉल चार्ट और पारदर्शिता) और अन्य सहायक सामग्री शामिल हैं।

प्रस्तुत व्यावसायिक सिद्धान्त पुस्तक प्रशिक्षु को सम्बन्धित ज्ञान देगी जिससे वह अपना कार्य कर सकेंगे । परीक्षण एवं नियत कार्य के माध्यम से अनुदेशक प्रशिक्षुओं को नियत कार्य दे सकेंगे । दीवार चार्ट और पारदर्शिता अद्वितीय होती हैं, क्योंकि वे न केवल प्रशिक्षक को किसी विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करते हैं बल्कि प्रशिक्षु की समझ का आकलन करने में भी उसकी मदद करते हैं। अनुदेशक निर्देशिका (इंस्ट्रक्टर गाइड), अनुदेशक को अपने अनुदेश योजना की योजना बनाने, कच्चे माल की आवश्यकताओं की योजना बनाने, दिन-प्रतिदिन के पाठों और प्रदर्शनों की योजना बनाने में सक्षम बनाता है।

IMPs प्रभावी टीम वर्क के लिए विकसित किए जाने वाले आवश्यक जटिल कौशल से भी संबंधित है। पाठ्यक्रम में निर्धारित संबद्ध ट्रेडों के महत्वपूर्ण कौशल क्षेत्रों को शामिल करने के लिए भी आवश्यक सावधानी बरती गई है।

एक संस्थान में एक पूर्ण निर्देशात्मक मीडिया पैकेज (IMF) की उपलब्धता प्रशिक्षक और प्रबंधन दोनों को प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करने में मदद करती है।

IMPs NIMI के कर्मचारियों और मीडिया विकास कमेटी के सदस्यों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है, जो विशेष रूप से सार्वजनिक और निजी व्यावसायिक उद्योगों, प्रशिक्षण महानिदेशालय (DGT), सरकारी और निजी ITIs के तहत विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों से प्राप्त होते हैं।

NIMI इस अवसर पर विभिन्न राज्य सरकारों के रोजगार एवं प्रशिक्षण महानिदेशकों, सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में उद्योग के प्रशिक्षण विभागों, DGT और DGT फील्ड संस्थानों के अधिकारियों, प्रूफ रीडर्स, व्यक्तिगत माध्यम विकासकर्ताओं के लिए ईमानदारी से धन्यवाद देना चाहता है। समन्वयक, लेकिन जिनके सक्रिय समर्थन के लिए NIMI इस सामग्री को बाहर लाने में सक्षम नहीं होता।

चेन्नई - 600 032

कार्यकारी निर्देशक

आभार

कार्यालय प्रशासन एवं सुविधा प्रबंधन व्यवसाय के अधिन ITIs के लिए **आशुलिपिक सचिवीय सहायक (हिन्दी) NSQF स्तर- 3** की प्रस्तुत अनुदेशात्मक सामग्री **(व्यवसाय अभ्यास)** के प्रकाशन में अपना सहयोग देने हेतु राष्ट्रीय अनुदेशात्मक माध्यम संस्थान (NIMI) निम्नलिखित माध्यम विकासकर्ताओं तथा प्रायोजकों को हार्दिक धन्यवाद देता है ।

मीडिया विकास समिति के सदस्य

श्री गिरीश शंकर	-	अपर सचिव, पर्यटन एवं अध्यक्ष के मंत्रालय, Travel and Hospitality क्षेत्र में सलाहकार परिषद
श्री विरेन्द्र कुमार शुक्ला	-	संयुक्त निदेशक (प्रशिक्षण), डीजीई एंड टी, नई दिल्ली मेंटर, सलाहकार परिषद
श्री संदीप कालिया	-	प्रशिक्षण अधिकारी RDAT फरीदाबाद सदस्य, सलाहकार परिषद
श्री विनोद कुमार	-	प्रशिक्षण अधिकारी RDAT फरीदाबाद सदस्य, सलाहकार परिषद
अर्पिता झा	-	व्यावसायिक अनुदेशक (स्टेनो हिन्दी) RVTI Jaipur, डीजीई एंड टी .
श्री आशीष चक्रवर्ती	-	प्रशिक्षण अधिकारी, CSTARI कोलकता सह–निदेशक, सलाहकार परिषद

NIMI समन्वयक

श्री निर्माल्य नाथ	-	उप निदेशक NIMI, चेन्नई -32
श्री शुभांकर भौमिक	-	सहायक प्रबन्धक, NIMI, चेन्नई -32
श्री एन. अशवक अहमद	-	सहायक प्रबन्धक, NIMI, चेन्नई -32

NIMI ने अनुदेशात्मक सामग्री के विकास की प्रकिया में सराहनीय एवं समर्पित सेवा देने के लिए DATA ENTRY, CAD, DTP आपरेटरों की पूरी-पूरी प्रशंसा करता है ।

NIMI उन सभी कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करता है जिन्होंने अनुदेशात्मक सामग्री के विकास के लिए सहायोग दिया है ।

NIMI उन सभी का आभार करता है जिन्होंने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से अनुदेशात्मक सामग्री के विकास में सहायता की है।

परचिय

इस अनुदेशात्मक सामग्री के अन्तर्गत आशुलिपि व्यवसाय संबंधी प्रायोगिक अभ्यास दिए गए है जिन्हें प्रशिक्षण अपने एक वर्ष के प्रशिक्षण अवधि के अन्तर्गत प्रायोगिक घण्टों में पूर्ण करेंगे । इन अभ्यासों के अन्तर्गत यह ध्यान में रखा गया है कि पाठ्यचर्या संबंधी समस्थ कौशल को समाहित कर लिया जाए ।

पाठ्यचर्या के प्रायोगिक भाग को 9 मॉड्यूल्स में बाँटा गया है । प्रत्येक मॉड्यूल्स निम्न प्रकार है:

माड्यूल 1 - आशुलिपि (शॉर्टहैण्ड)

माड्यूल 2 - कंप्यूटर का ज्ञान

माड्यूल 3 - पत्रों की जानकारी

माड्यूल 4 - आधारभूत कम्प्यूटर ज्ञान

माड्यूल 5 - कार्यालयीन वातावरण

माड्यूल 6 - कार्यालय में डायरी

माड्यूल 7 - विभिन्न कार्यालयीन उपकरण

माड्यूल 8 - डाकघर

माड्यूल 9 - सभी प्रकार के पत्राचार

उपरोक्त समस्त मॉड्यूल्स में प्रत्येक कार्य को इस प्रकार से क्रमवार किया गया है कि प्रशिक्षणार्थी आसान से कठिन, ज्ञान से अज्ञान, आधारभूत से अग्रिम ज्ञान प्राप्त कर सके प्रत्येक अभ्यास एक निर्धारित शीर्षक से प्रारम्भ किया गया है एवं अभ्यास के उपरान्त प्राप्त किये जाने वाले लक्ष्य, उद्देश्य के सपने प्रदर्शित किये गये हैं ।

अन्त में कौशलके क्रम इस प्रकार से वर्णित किये गये है कि कार्य संबंधी समस्त सावधानियाँ एवं बाधाएँ भी प्रशिक्षार्थी जान सके । जहाँ आवश्यक है वहाँ पर वर्णित चीजों का भी अतिरिक्त प्रयोग किया गया है जिससे प्रशिक्षणार्थी सरलता से कार्य सीख सके यदि कोई निर्धारित अभ्यास पूर्व में वर्णित किया गया है तो उसको दोहरान पुनः नहीं किया गया।

विषय-क्रम

अभ्यास सं.	अभ्यास के शीर्षक	पृष्ठ सं.
	माड्यूल 1 : आशुलिपि (शॉर्टहैण्ड)	
1.1.01	आशुलिपि लिखने के दिशा–निर्देश	1
1.1.02	व्यंजन तथा उनको मिलाकर लिखने का अभ्यास	2
1.1.03	स्वर, स्वर चिन्ह एवं स्वर स्थानों का अभ्यास	5
1.1.04	माध्यमिक स्वर	7
1.1.05	शब्दचिन्ह, शब्दाक्षर एवं संक्षिप्ताक्षर	8
1.1.06	वाक्यांश निर्माण	10
1.1.07	द्विस्वर एवं त्रिस्वर	11
1.1.08	त वर्ग व्यंजनों के दाएं चाप	13
1.1.09	ह और श व्यंजनों के वैकल्पिक रूप	14
1.1.10	र, ल व्यंजनों के वैकल्पिक रूप	16
1.1.11	वृत्त स, श/ष तथा ज	17
1.1.12	बड़े वृत्त का प्रयोग	28
1.1.13	स्त, स्ट लूप का प्रयोग	29
1.1.14	अनुनासिक्य एवं अनुस्वार का प्रयोग	30
1.1.15	व्यंजन रेखाओं पर प्रारम्भिक हुक (अंकुश)	31
1.1.16	(संयुक्त व्यंजन)आरम्भिक बड़े हुक	32
1.1.17	अंतिम हुक	33
1.1.18	अंतिम बड़ा हुक	34
1.1.19	अर्द्धकरण सिद्धान्त	35
1.1.20	द्विगुणन सिद्वान्त	36
1.1.21	उपसर्ग	37
1.1.22	प्रत्यय	38
1.1.23	पदनाम वाक्यांश – व्यंजन रेखाओं पर काट	39
1.1.24	गति लेखन	41
1.1.25	आशुलिपि उच्च गति अभ्यास	64
	माड्यूल 2 : कंप्यूटर का ज्ञान	
1.2.26	इनपुट डिवाइस	103
1.2.27	एम एस अफिस	106
1.2.28	मेल मर्ज	114
1.2.29	कुंजीपटल कुशलता	115
1.2.30	टंकण गति अभ्यास	121
1.2.31	टंकण उच्च गति अभ्यास	157

अभ्यास सं.	अभ्यास के शीर्षक	पृष्ठ सं.
	माड्यूल 3 : पत्रों की जानकारी	
1.3.32	विभिन्न पत्रों की जानकारी	182
	माड्यूल 4 : आधारभूत कम्प्यूटर ज्ञान	
1.4.33	ऐक्सेल	185
1.4.34	वर्क बुक और वर्क शीट	188
1.4.35	पावर पाइंट प्रजेन्टेशन	191
1.4.36	इंटरनेट	195
	माड्यूल 5 : कार्यालयीन वातावरण	
1.5.37	कार्यालय का परचिय	197
1.5.38	कार्यालय प्रबन्धक	199
1.5.39	कार्यालय ढांचा व वातावरण	200
	माड्यूल 6 : कार्यालय में डायरी	
1.6.40	फाइलिंग	201
1.6.41	सचिव	203
	माड्यूल 7 : विभिन्न कार्यालयीन उपकरण	
1.7.42	कार्यालय उपकरण	205
	माड्यूल 8 : डाकघर	
1.8.43	पोस्ट ऑफीस सेवायें	206
1.8.44	डाक व्यवस्था लेखन सामग्री	207
	माड्यूल 9 : सभी प्रकार के पत्राचार	
1.9.45	पत्राचार	206

संयोजित / अभ्यास परिणाम

इस पुस्तक के अन्त में आप यह जान सकेंगे

क्र.सं.	अध्ययन के परिणाम	अभ्यास सं.
1.	आशुलिपि (शॉर्टहैण्ड) में निर्देश लेने एवं कंप्यूटर का प्रयोग कर उसे कागज पर रुपान्तरित (ट्रांसक्राइब) करने में दक्षता। **(NOS: MEP/N0237)**	1.1.01 - 1.1.25
2.	कंप्यूटर हार्डवेयर एवं इसके परिधीयों का ज्ञान एवं कंप्यूटर पर उच्च गति टंकण में दक्षता। **(NOS: MEP/N0216)**	1.2.26 - 1.2.31
3.	विभिन्न प्रकार के पत्रों की जानकारी, व्यावसायिक पत्रों का श्रुतलेखन एवं श्रुतिलेख से प्रतिलेखन करने की दक्षता। **(NOS: MEP/N0237)**	1.3.32
4.	कंप्यूटर एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर; एम एस एक्सेल, वर्ड, पावरपॉइंट प्रजेंटेशन इत्यादि पर कार्य करने एवं इंटरनेट का प्रयोग करने में सक्षम। **(NOS: MEP/N0237), (NOS: MEP/N0216), (NOS: MEP/N0225)**	1.4.33 - 1.4.36
5.	कार्यालयीन वातावरण, आंतरिक सजावट, सफाई, सुरक्षा के महत्व का ज्ञान एवं कार्यालय प्रबंधक के कार्यों एवं कर्तव्यों से परिचित। **(NOS: MEP/N0237), (NOS: MEP/N9903), (NOS: MEP/N0224)**	1.5.37 - 1.5.39
6.	कार्यालय में डायरी –डिस्पैच, स्टेशनरी, दस्तावेजों फाइलिंग प्रबंधन तथा कार्यालय सचिव के कार्यों एवं कर्तव्यों से परिचित। **(NOS: MEP/N0237), (NOS: MEP/N0241), (NOS: MEP/N0201)**	1.6.40 - 1.6.41
7.	विभिन्न कार्यालयीन उपकरणों को पहचानकर उनकेसहीप्रयोग एवं रखरखाव से अवगत। **(NOS: MEP/N0237), (NOS: MEP/N0241), (NOS: MEP/N0216), (NOS: MEP/N0203)**	1.7.42
8.	विभिन्न डाकघर सेवाओं से परिचित। **(NOS: MEP/N0238)**	1.8.43 - 1.8.44
9.	सभी प्रकार के मैनुअल एवं ऑनलाइन पत्राचार करने में सक्षम। **(NOS: MEP/N0216)**	1.9.45

आशुलिपि लिखने के दिशा-निर्देश

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **आशुलिपि कार्याशाला के उपकरण**
- **ज्यामितीय आशुलिपि ।**

आशुलिपि कार्यशाला के उपकरण

आशुलेखन कार्यशाला के निम्नांकित उपकरण आवश्यक है।

कुर्सी व मेज – आशुलेखन की मेज सामान्यतः 75सेटी मीटर और कुर्सी 45 सेटी मीटर ऊंची होनी चाहिए ताकि आशुलेखन सुविधाजनक हो । आशुलेखक की लंबाई के अनुसार यह कम या अधिक हो सकती है।

आशुलेखन पुस्तिका (कॉपी)– सामान्यत : 200 पृष्टों की नुमा कापी आशुलेखको के लिए उपयुक्त होती है। लिखने का कागज चिकना होना चाहिए ताकि पेन और पेंसिल लिखने मे सलता से फीसले । लिखे पत्रो पे रबड बैंड लगाना चाहिए पन्ने पल. टने कि तकनीक सीखना बहुत लाभदायक है जिसका विवरण अध्याय 21 में दिया गया है।

पैंसिल और पेन –प्रारंभ मे अच्छी आशुलिपि पैंसिल का प्रयोग करे । बाद में अधिक अभ्यास करने के लिए अच्छे पैन का प्रयोग करे किन्तु बाल पैन का न करे । पैन या पैसिल को हल्के हाथ से पकडे । कॉपी को मेज पर सीधी रखे । बाए हाथ से कॉपी को दबाए रखे केवल एक हाथ वाले लोगो या बांऐ हाथ से लिखने वाले के लिए आशुलिपि सीखना उपयोगी या लाभदायक नही है।

घडी/स्टॉप वॉच –श्रुतलेखन के लिए डिक्टेटर के पास स्टॉप वाच होने अति उपयोगी है। इसके अभाव मे सेंकिंड की वाली कलाई धडी या मेज धडी का भी प्रयोग किया जा सकता है। ताकी हर 15 सेकिंड में गति का सही हिसाब लगाया जा सके । डिक्टेशन जोर से दिया जाना चाहिए तकि आशुलेखक का सुनने में कठिनाई न हो ।

टाइपराइटर /कंप्यूटर – प्रतिलेखन के लिए मैकेनिकल ; इलेक्टानिक टाइपराइटर या कंप्यूटर का प्रयोग किया जा सकता है।टकण यत्र का सही देखरेख करने से वह कार्य करने मे रुकावट नही बनेगा । आशुद्वियो को इरेजैक्स या रबड से मिटाकर पुनः टाइप किया जा सकता है। इलेक्टानिक यंत्रो में आशुद्विया इरेज कुजी से ठीक की जा सकता है।

कैसेट टेप रिकार्डर –आधुनिक इलेक्टानिक यत्रो मे कैसेट टेप रिकार्डर का प्रयोग आशुलेखन मे अत्यंत सफल सिद्व हुआ है। जिसमें आशुलेखन दुसरे पर निर्भर न रहकर स्वयं वाछित गतियों पर डिक्टेशन कैसेट खरीदकर उनसे अभ्यास कर अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकता है।

ज्यामितीय आशुलिपि :–

आशुलिपि के ज्यामितिय रूप सरल एवं वक्र रेखाओं तथा उनके भागों जैसे बिन्दु, डैश, अर्द्ववृत्त, वृत्त, कोण, लूप (अंडाकार वृत्त) तथा हुकों से बनते है। इन्हें आवश्यकतानुसार हल्का/गहरा, आधा या दुगुना किया जा सकता है। इनके रूप और इनको बनाने का अभ्यास कीजिए। डैश की लंबाई एक चौथाई से अधिक न हों

सरल रेखाएं.....

वक्र रेखाएं.....

बिन्दु.....

डैश.....

कोण.....

अर्द्ववृत्त.....

वृत.....

लूप.....

व्यंजन तथा उनको मिलाकर लिखने का अभ्यास

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **व्यंजनों को आशुलिपि में लिखना**
- **नियमानुसार दो या दो से अधिक व्यंजनों को आपस में मिलाना ।**

कार्य – प्रथम

निम्न को आशुलिपि में लिखिए, पढ़िए व अभ्यास कीजिए –

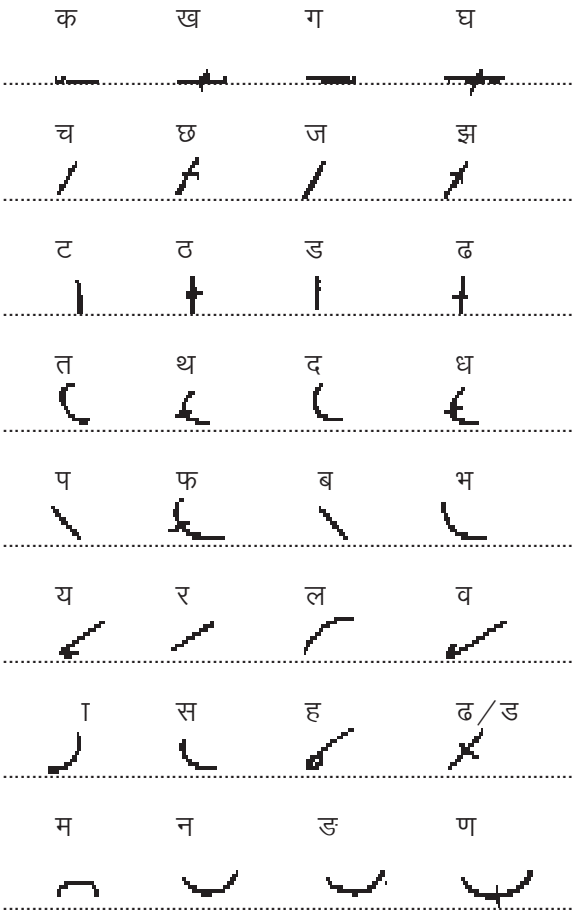

कार्य – द्वितीय

निम्न को आशुलिपि में लिखिए और पढ़िए –

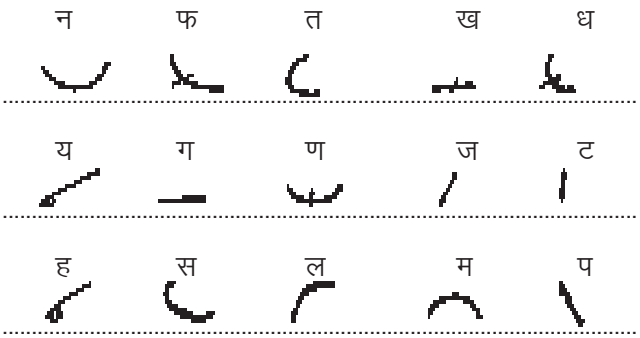

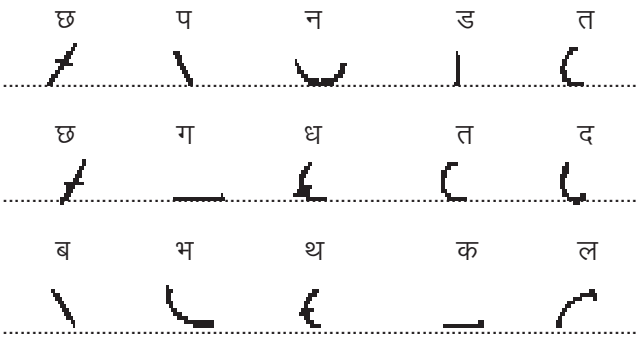

कार्य – तृतीय

निम्न को आशुलिपि में बार–बार लिखकर अभ्यास करिए –

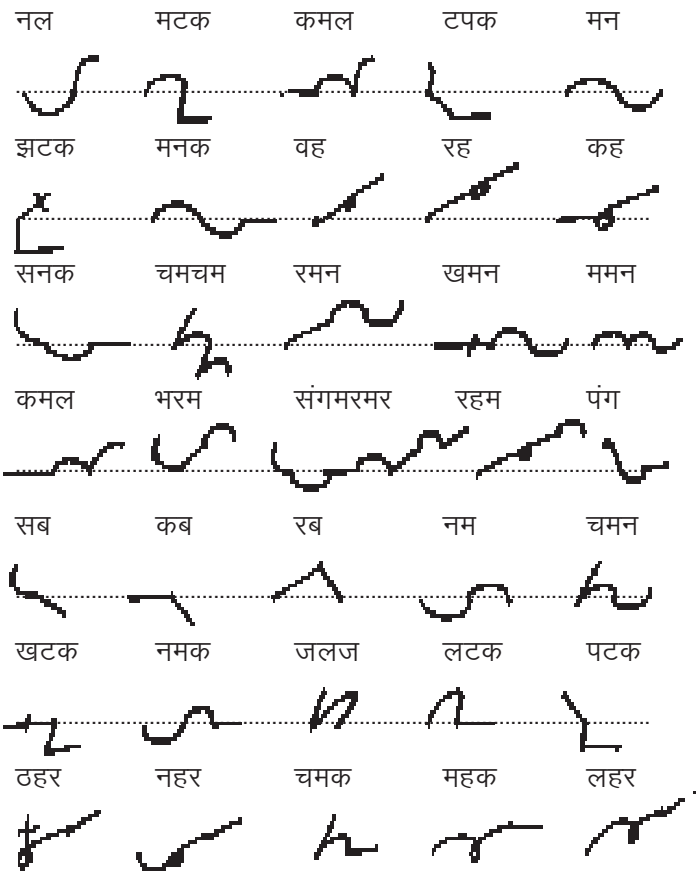

व्यंजनों को मिलाकर शब्द बनाने का अभ्यास

1. .....जल ..... झटक .....नमक .....छमक .....टमटम

2. .....लपक ..... जलक .....जनक .....बह ..... तव

3. .....चम्मच .....मनक .....पनख .....लटक ..... मग

4. .....लचक .....भलम .....रंग .....पंख .....कम

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. .....रब .....ठग .....ढक .....रथ ..... खटक

.....

.....

.....

.....

.....

.....

स्वर, स्वर चिन्ह एवं स्वर स्थानों का अभ्यास

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **व्यंजन तथा शब्दों पर ध्वनिनुसार हल्के / गहरे स्वर लगाना**
- **आशुलिपि में शब्दों को लिखना व ध्वनिनुसार पंक्ति के ऊपर**
- **पंक्ति पर तथा पंक्ति के नीचे स्वर चिन्ह लगाना ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अधोमुखी व्यंजन रेखाओं पर स्वर लगाइए और पढ़िए :–

टा..... दे..... थी..... आट.....

सौ..... बू..... आपा..... भूख.....

फाल..... शाल..... चोर..... छाल.....

तीर..... जौ..... भू..... भोर.....

कार्य – द्वितीय

निम्न ऊर्ध्वमुखी व्यंजन रेखाओं पर स्वर लगाइए और पढ़िए :–

रॉ..... रॉय..... आशा..... रॉड.....

या..... यार..... हा..... हार.....

व..... वार..... वाद..... यान .....

हार..... हो..... ही..... हूल.....

कार्य – 3

निम्न को आशुलिपि में बनाइए एवं हिन्दी अनुवाद भी कीजिये।

राम..... पेटी..... जीना.....

खाती..... आना..... पीता.....

जीता..... नील..... ऐसा.....

राधा..... आंधी..... रीना.....

सोना..... नाली..... रेत.....

शेक ..... नीला..... पेठा.....

रहा..... जोक..... रठी.....

जोश..... नोच..... ऐठा.....

जाता..... भटा..... रॉक.....

अंग..... छटक..... नेट.....

ऐग..... ठका..... रह.....

केला..... डाक..... ठग.....

खाना..... सीता..... टेडा.....

नेता..... नीति..... खाता.....

नाती..... शौप..... रौब.....

स्वरों के प्रयोग को आशुलिपि कॉपी पर प्रथम पंक्ति में आशुरेखाएं लिखे और पूरे पृष्ठ पर पंक्तिवार अभ्यास कीजिए।

आ ..... आप ..... आज .....पाल .....भाट .....खाल

.....

.....

.....

.....

ए ..... मेले ..... जेल ..... डेग ..... रेती .....बेटा

.....

.....

.....

.....

ई ..... ईद ..... कीप .....जीप .....कील .....ढील

.....

.....

.....

.....

औ ..... फौज .....शौक .....शौच ..... सौ ..... कौल

.....

.....

.....

.....

माध्यमिक स्वर

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **माध्यमिक स्वरों को शब्दों पर लगाने का अभ्यास ।**

प्रायोगिक अध्याय

कार्य – प्रथम

निम्न को आशुलिपि में बनाइए एवं हिन्दी अनुवाद भी कीजिए।

1. नीमा..... पीटा.....

   सीना..... नीना.....

   नीला..... रीना.....

   तिल..... नील.....

   रीया..... रीना.....

   सीना..... थीला.....

   मीता..... टिका.....

2. रिहा..... जीरा .....

   जीता..... टीका.....

   शीरा..... मिल.....

3. भीगा..... नीयत .....

   बिना..... लिया.....

   जीता.....

4. तिराहा.....पिलाया.....

   रीति ..... खीरा .....

   खिलौना..... शीरा.....

शब्दचिन्ह, शब्दाक्षर एवं संक्षिप्ताक्षर

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **वाक्यों में शब्द चिन्ह, शब्दाक्षरों का प्रयोग कैसे किया जाता है ।**

कार्य – प्रथम

पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए और अनुवाद करिए।

1. यद्यपि वे आयेंगे, मगर कब आयेंगे मालूम नहीं।

2. मंत्री जी को योजना पर विचार करना होगा।

3. मंत्री महोदय आयेंगे और तुम्हें न्याय देगें।

4. मै भी कहूँगा कि मिनार ऊँची हो, पर केसे हो?

5. मेरी दृष्टि से विद्यार्थियों को अच्छी आदतें सीखानी होगी।

6. वहां पहुँच कर कई लोगों ने ऊँचा पवर्त देखा।

शब्द – चिन्ह :–

शब्द–चिन्ह

.....एक (है) .....हैं ..... कि(की) .....के .....उस .....उसी

.....

.....

.....

.....

.....

..... ने (अब)..... मगर .....और .....यद्यपि .....का

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....को.....आ .....हो .....हों .....अंदर

.....

.....

.....

.....

.....

.....

वाक्यांश निर्माण

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **वाक्यांश क्या होते हैं ?**
- **इनका प्रयोग आशुलिपि में कैसे किया जाता है ?**

कार्य – प्रथम

पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए और अनुवाद कीजिये।

1. महोदया, यहाँ पहुँच गई होंगी यही आशंका मुझे पहले से है।

2. जब आप यह कह पाए होंगे तभी से सोसाइटी में सुधार किया गया होगा।

3. मंत्री जी द्वारा निवेदन किया गया कि आप वोट डालने पहुँच जाए।

4. रेशमा यहीं आएगी, यही वायदा किया और आई भी।

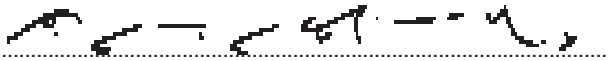

5. आपको यह मालूम होगा कि इस हफ्ते क्या योजना बनाई।

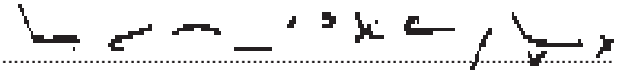

6. लगता है कि अब कक्षा में लड़कियां आने लगी है।

7. घर खरीदने के लिए पैसा तो लेना ही पड़ेगा।

8. लगता है कि घर के छोटे बच्चे सो चुके हैं।

9. इतनी गर्मी को देखते हुए लगता है कि फ्रिज लेना ही पड़ेगा।

10. कम्पनी में आग लग गई थी, लेकिन तुरन्त बारिश होने लगी ऐसा लगा कि अब नुकसान से बचा जा सकता है।

11. बच्चों को कहना पड़ेगा कि आपको अपना हर अध्याय याद रखना पड़ेगा।

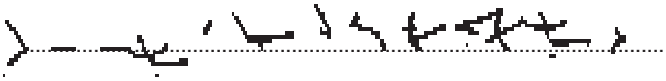

12. खिडकियां और दरवाजे बन्द कर लो, लगता है कि आंधी आने लगी है।

13. ज्यादा से ज्यादा बच्चों को शिक्षा देनी पड़ेगी।

14. मुझे परीक्षा देने के लिए अजमेर जाना पड़ा था।

15. ऐसा लगता है कि सभी छात्राएं आ चुकी हैं और खाना खा कर सो चुकी हैं।

द्विस्वर एवं त्रिस्वर

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **द्विस्वर एवं त्रिस्वरों का प्रयोग कैसे किया जाता है ?**

कार्य – प्रथम

निम्न शब्दों को आशुलिपि में लिखिए अनुवाद कीजिए और अभ्यास करिए।

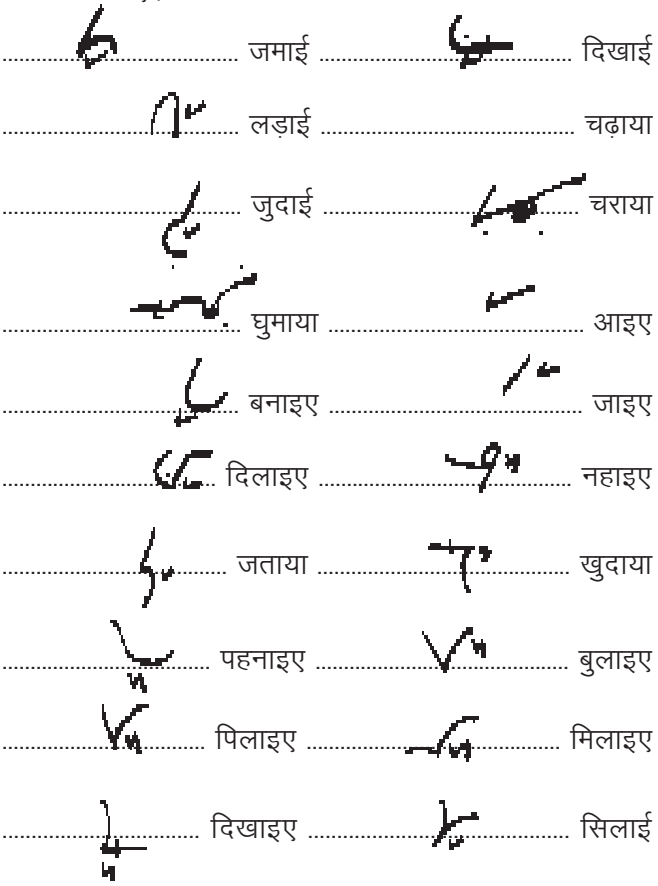

कार्य – द्वितीय

निम्न वाक्यों को आशुलिपि में लिखिए अनुवाद करिए एवं बार–बार अभ्यास कीजिए।

1 जाइए, आप घर जाइए और मुझे भी ले जाइए।

2 सूर्य नमस्कार कीजिए तथा स्कूल जाइए।

3 जब बाई आएगी, तब झाड़ू लगाएगी।

4 माई रसोई में, भैया कमाई में और बुआ सिलाई में जुट जायेगी।

5 आइए, पानी पीजिए और खाना खाइए।

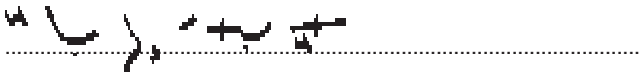

6 आप जाकर उनके परिवार को बधाई दीजिए।

7 अब आप वहां पर कभी मत जाइएगा।

8 राई का पहाड़ बनाना कोई आप से सीखें।

9 आप विराट कोहली के जैसे खेल खेलिए और जीत कर आइए।

10 देश की तरक्की के लिए युवाओं, आगे आओ।

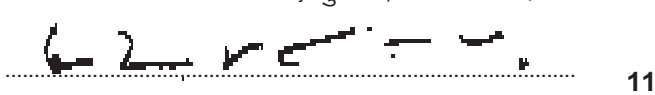

कार्य – तृतीय

निम्न वाक्यों को आशुलिपि में लिखिए अनुवाद करिए एवं बार–बार अभ्यास कीजिए।

1 मैंने कुछ सोचा होगा, तभी तो आप से कहा होगा।

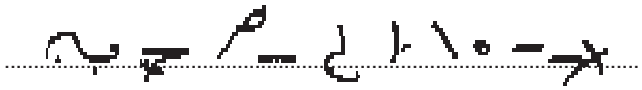

2 उसने मुझ से वायदा किया था, वहां पर जाने का।

3 मुझे पता लगा है कि आप उतीर्ण हो गए हो।

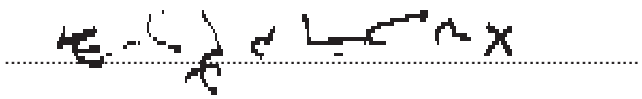

4 जब आप मुझे बुलायेंगे, तब मैं काम पर आउँगा।

5 खुदाई कराने में हमारी मदद कराइए।

6 उन्होने कहा कि जीवन सुधारने के लिये नवीन कार्य कराइए।

7 मोदी जी कहते हैं कि देश के अब अच्छे दिन आयेंगे।

8 जो जीतेगा, वही इनाम लेकर जाएगा।

9 महिलाओं के विकास के लिए अच्छी योजनाएं बनाई जानी चाहिए।

10 ग्रामीण स्वर जयंती योजना अपनायी जानी चाहिए।

त वर्ग व्यंजनों के दाएँ चाप

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **व्यंजन त वर्ग के दाएँ चाप का प्रयोग किन स्थितियों में किया जाता है ?**

कार्य – प्रथम

निम्न वाक्यों को आशुलिपि में लिखिए, अनुवाद करिए एवं बार–बार अभ्यास कीजिए।

त वर्ग व्यंजनों के दाएं चाप

1 सचिन तेन्दुलकर ने 100 शतक बनाकर भारत का मान बढ़ाया।

2 वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग की वजह से व र्षा कम होती जा रही है।

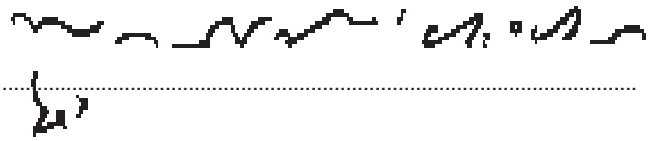

3 ताकत से दुनिया नहीं जीती जाती, दिमाग से जीती जाती है।

4 दूध पीने से मनु य में ताकत आती है।

5 महाराणा प्रताप भारत के वीर पुत्र थे।

6 सत्यमेव जयते भारत के सम्मान का प्रतीक है।

7 भारत की संस्कृति पूरे विश्व में विख्यात है।

ह और श व्यंजनों के वैकल्पिक रूप

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **वैकल्पिक व्यंजन रेखा ह और श का प्रयोग किन स्थितियों में किया जाता है ।**

कार्य – प्रथम

ह और श व्यंजनों के वैकल्पिक रुप

निम्न वाक्यों को आशुलिपि में लिखिए, अनुवाद करिए एवं बार–बार अभ्यास कीजिए।

1–जहाँ भी जाओ साथ जाओ, नहीं तो अकेले जाना पड़ेगा।

2–जो कुछ माँ बनाती है, वो हमेशा अच्छा होता है।

3–मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि तुम्हें बहाना बनाना पडेगा।

4–आज समाज में महिलाओं की जो स्थिती है, वह ठीक नहीं है।

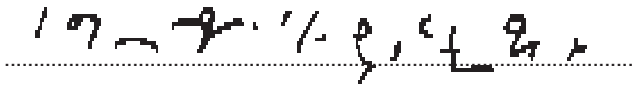

5– आप हमें बताइये कि हम समाज से भ्र टाचार केसे हटाएं।

6–उसने चोरी कैसे की, इसका किसी को पता नहीं चला ।

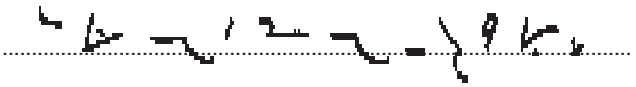

7–जहां–तहां पुस्तकें पड़ी रहती हैं वहां किसी का ध्यान नहीं रहता ।

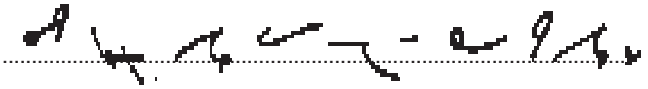

8–जहां कहीं भी औ ाधि की खोज की वह वहां नहीं मिली।

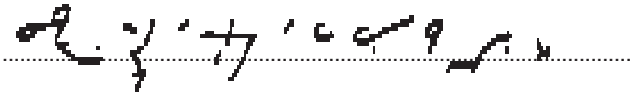

9–यदि मेरे साथ भेदभाव किया गया तो मैं न्यायालय में जाऊँगा।

10–उस के साथ न्याय नहीं किया गया इस लिए वो हार गया।

कार्य – द्वितीय

निम्न अनुच्छेद को आशुलिपि में लिखिए अनुवाद करिए।

जो भी आज का चुनावी दौर है उसके लिए आप को मेहनत तो काफी करनी पड़ेगी। चुनाव की जो भी योजना बनाई गई उसका समाज और देश पर काफी असर पड़ा। इस दौरान रैलियां भी काफी निकाली गई जिसके कारण लोगों को काफी असुविधा हुई। देहाती इलाकों में हर जगह प्रचार –प्रसार जोर –शोर से था। लोगों की जिन्दगी खुशहाल बनाने के लिए जो भी राजनेताओं द्वारा वादे किये गये उनको अवश्यमेव पूरा करना पड़ेगा। नहीं तो जनता का राजनिति से विश्वास उठ जायेगा। जहाँ–तहाँ भी देखा गया चुनावी लहर काफी तेज थी। हर जगह पुलिस मुश्तैदी से तैनात थी। उनकी निगाह चुनाव की छोटी से छोटी गतिविधि पर थी। चुनाव को लेकर लोगो में जागरुकता पहले की अपेक्षा काफी है। उनको सही प्रतिनिधि चुनने की समझ है।

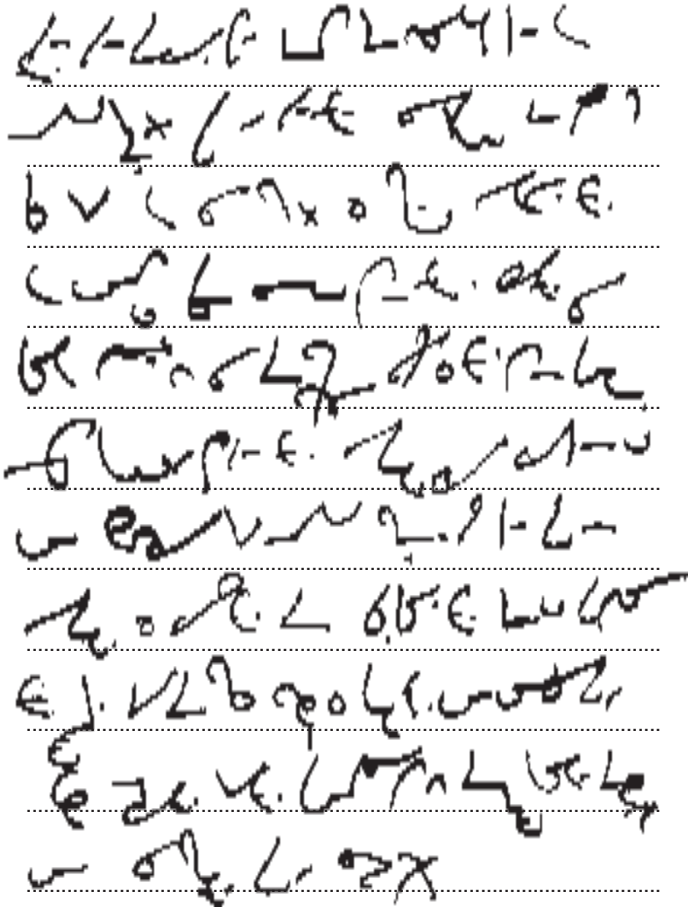

र, ल व्यंजनों के वैकल्पिक रूप

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **वैकल्पिक व्यंजन रेखा र और ल का प्रयोग किन स्थितियों में किया जाता है ।**

कार्य – प्रथम

व्यंजन र, ल के वैकल्पिक रुप

निम्न वाक्यों को आशुलिपि में लिखिए, अनुवाद करिए एवं बार–बार अभ्यास कीजिए।

1–ऐसे अनेक उदारण हैं जब सूखे के वजह से गाँवों में अकाल पड़ा है।

2 पढ़ने के लिए विद्यालय जाना पड़ता है।

3– लोगों की बेरोजगारी तभी हटेगी जब उन को रोजगार प्राप्त हो।

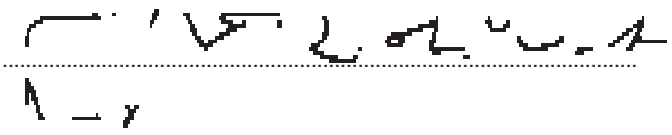

4–यदि एक आदमी शिक्षित हो तो वो अच्छी जिन्दगी बिताएगा।

5–विद्यालय के अलावा भी तो बच्चों का गृह कार्य पूरा करना होता है।

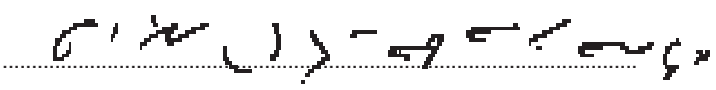

6–वे लोग हमारे घर किराये पर रहते हैं।

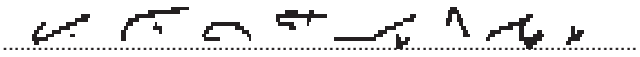

7–अब देखना यही होगा कि लोग रैलियां केसे निकालते हैं।

8–राजनीति का पाठ पढ़ाने वाले राजनेता कहलाते हैं।

9–मोदी की लहर का असर काफी लोगों ने देखा।

10–मुझे ऐतिहासिक जगहों पर घूमना ठीक लगता है।

वृत्त स, श / ष तथा जा

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **आशुलिपि में वृत्त स, श / ष तथा जा का प्रयोग कैसे किया जाता है ?**
- **गति कैसे बढाई जा सकती है ।**

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए –

वृत्त स, श/ष तथा ज़

श्रीमान्, बड़ी प्रतीक्षा के बाद आज वह शुभ दिन आया है जिस दिन हिन्दू समाज में स्त्रियों के साथ शताब्दियों से जो अन्याय होता चला आया है, उसका अन्त होने जा रहा है और लड़कियों को भी उनके पिताओं की सम्पति में कुछ भाग मिलने की व्यवस्था की जा रही है। केवल स्त्री होने के नाते उनके साथ अन्याय नहीं किया जा सकेगा।

श्रीमान्, आज हमारी सरकार स्त्रियों के लिए सुरक्षा नियम अपना रही है लेकिन सदियों से ही हमारे राजा–महाराजा स्त्रियों की स्थिति सुधारने का प्रयास कर रहे हैं जिनमें सती प्रथा, दहेज प्रथा आदि तो कम कर ही चुके हैं। परन्तु दहेज प्रथा तो अभी भी नहीं थमीं हैं, जिसके लिए सरकार भी प्रयास कर रही है। परन्तु आज स्त्रियों के लिए अत्यन्त सुखद घड़ी है क्योंकि उन्हें आज न्याय मिला है।

तत्पश्चात मैनुअली जाँच–पडताल द्वारा अशुद्धियां निकालने बाद जो शब्द बचते हैं वह कुल शुद्ध टंकित शब्द होते हैं। निश्चित समय में से उसका भाग देने के पश्चात जो गति आती है वह निवल गति कहलाती है।

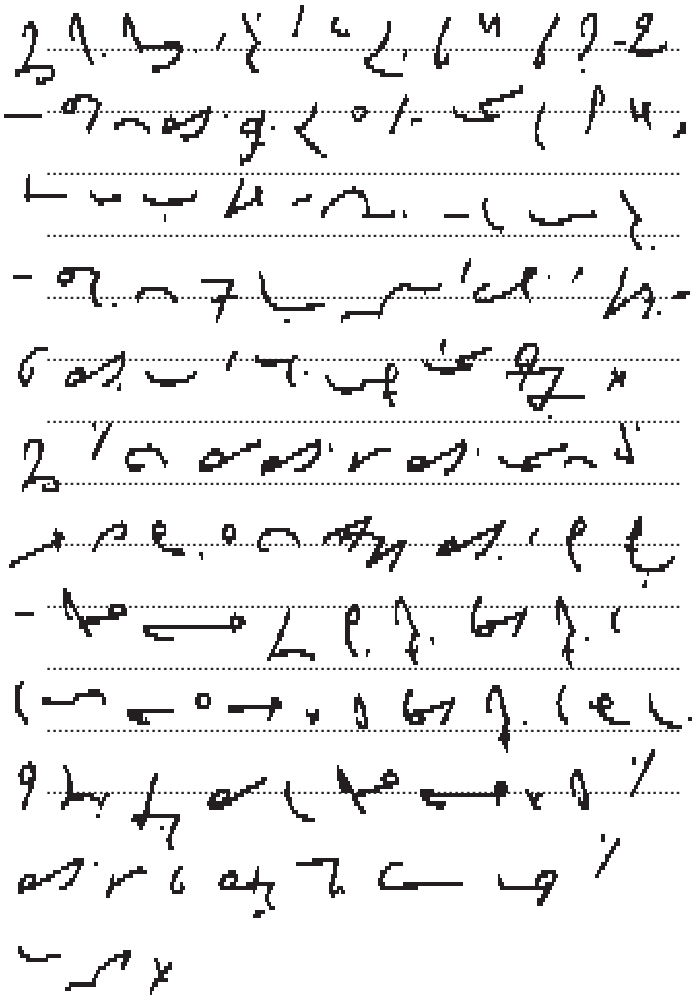

शब्द चिन्ह एवं शब्दाक्षर

.....ही .....से .....सार्वजनिक .....स्पष्ट ..... संकट..... न्यायाधीश

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....जैस .....जिस से .....सहयोग–गी.....समाप्त–प्ति.....सवाल.....आवश्यक

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....परामर्श.....वास्तव .....साहित्य.....सहायता.....सहानुभूति

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....संयुक्त .....समय .....समस्या .....सदस्य ..... सिफारिश

.....

.....

.....

.....

.....

.....

..... समिति ..... संसार .....अध्यक्ष .....भाषा ..... मुश्किल

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

..... संरक्षा .....असंतोष ..... क्षेत्र

.....

.....

.....

.....

.....

संक्षिप्ताक्षर

.....आवश्यकता .....स्पष्टता –तः .....स्पष्टतया .....अध्यक्षता

.....वास्तविक .....वास्तविकता .....अनावश्यक .....सांसारिक

.....परामर्शदाता .....साहित्यिक .....सामयिक –की .....नासमझ–झी

.....सराहना.....उपाध्यक्ष ..... असामयिक ..... संरक्षक

वाक्यांश

.....के अनुसार .....इसके अनुसार .....इन के अनुसार ..... नियमानुसार

.....

.....

.....

.....

.....

.....नियम के अनुसार .....उसी के अनुसार.....उस के अनुसार .....जिसके अनुसार

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....इन्हीं के अनुसार.....उनके अनुसार .....उन्हीं के अनुसार .....इस संसार में

.....

.....

.....

.....

.....

.....मैं समझता हूं कि..... मैं समझता था कि.....मैं समझा कि .....उस समय तक.....

.....उस समय तक..... उसी समय तक ..... इस समय तक.....आ नहीं सकता है.

.....सवाल यह है कि..... उन्हीं में से..... समझाने के लिए.....यह समझने के लिए

.....संसदीय समिति ..... इसके सिवाय..... नही हो सकता है.....यह सोचने के लिए

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....संसद सदस्य.....हो नहीं सकता.....सिवाय इसके कि..... यह सोचना हे कि

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....यह समझना है कि.....इस क्षेत्र में..... इस देश में .....इस दिशा से

.....

.....

.....

.....

..... इस दिशा (में).....उसी दिशा में.....इस दिशा से ..... इस दिशा (में).....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उसी दिशा में..... इस दिशा में..... इन दिशाआ..... जैसे कि.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

जैसा कि..... उन देशों में..... उन क्षेत्रों में..... अन्य देशो मे.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आशुलिपि में लिखिए –

1. ..... बस्तियां ..... मस्ती ..... दोस्ती ..... गोष्ठी .....कशीदा

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. .....पसीजना .....सुशासन ..... कुशासन ..... शामिल ..... शास्ति

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. ..... सहाय .....सही .....साहसिकता ..... सहमति ..... शासकों

.....

....

....

....

4. ..... सहम .....साहू .....साहिल ..... सहसा .....शासक

....

....

....

....

....

5.....लाइसेंस ..... पसली ..... नमस्ते ..... मसला ..... पेसिल

....

....

....

....

....

....

बड़े वृत्त का प्रयोग

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **बड़े वृत्त का प्रयोग ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

बड़े वृत्त का प्रयोग

अध्यक्ष जी, हमारी स्वतंत्रता के बाद शायद यह पहला अवसर है जबकि हमारी स्वतंत्रता के उपर आघात हुआ है और हम जिस प्रकार अपनी स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए तैयार थे इसी प्रकार उस समय भी हमें तैयार होना होगा। माननीय प्रधानमंत्री जी के इस मत से मैं सर्वथा सहमत हूँ कि यह एक ऐसा अवसर है जिस पर कि इस देश की मुख्य प्रतिनिधि संस्था जो यह लोकसभा है उसे इस संबंध में अपनी स्पष्ट राय देनी है और उस राय को देने के बाद हमें उस राय के अनुसार जो भी कार्यवाही करे। उसमें सरकार को पूरा–पूरा सहयोग भी देना हैं। प्रजातंत्र में प्रजा के पूर्ण सहयोग के बिना काम नहीं चल सकता। चाहे वह कोई भी काम हो, छोटा काम हो या बड़ा काम हो फिर वह तो हमारी स्वतंत्रता की रक्षा का प्रश्न है और एसे अवसर पर प्रजातंत्रवादी राष्ट्र को उसकी सारी प्रजा को सरकार के साथ सहयोग करने के लिये तैयार रहना चाहिये।

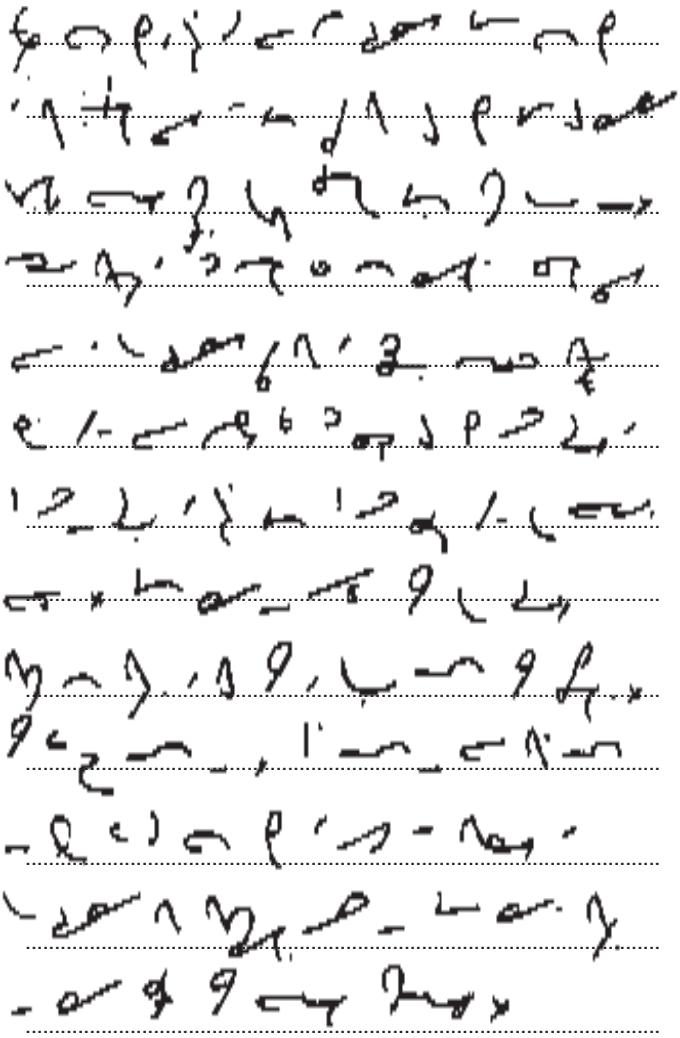

स्त, स्ट लूप का प्रयोग

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **स्त, स्ट लूप का प्रयोग ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

स्त, स्ट, लूप

सैनिक को सीमा पर हमारे सुरक्षा के लिए लगाया जाता है। इसी लिए इनको देश का रक्षक भी कहते हैं। देश की सुरक्षा उनके हाथ होती है। उनको 24 घण्टे चुस्त ओर सतर्क रहना पड़ता है। कुछ बड़े अफसरों को देश की सभी गोपनीय बातें पता होती हैं। सभी अधिकारी और सैनिक सीमा पर एक साथ घनि ठता से रहते हैं। सैनिक की यही कोशिश होती है कि देशवासी उनके कार्य से सन्तु ट हों, अतः उनको चाहिए कि उनमें से किसी को भी किसी दशा में मानसिक तनाव की स्थिति पैदा न हो। शि टता और मानसिक स्थिति बनाये रखना इनकी विशि टता मानी जाती है। इसी विशि टता के कारण वे अपने दुश्मन को परास्त कर देते हैं। हमारे राजनेता भी इस बात की पु ि ट करते हैं कि बिना सैनिक बल के हम अपने देश को सुरक्षित नहीं रख सकते हैं। इसी कारण वो विदेशों से नये–नये शस्त्र को खरीदते हैं और अपनी सेना को मजबूत बनाने की पूर्ण कोशिश करते हैं जो काफी हद तक कामयाब भी हुए हैं।

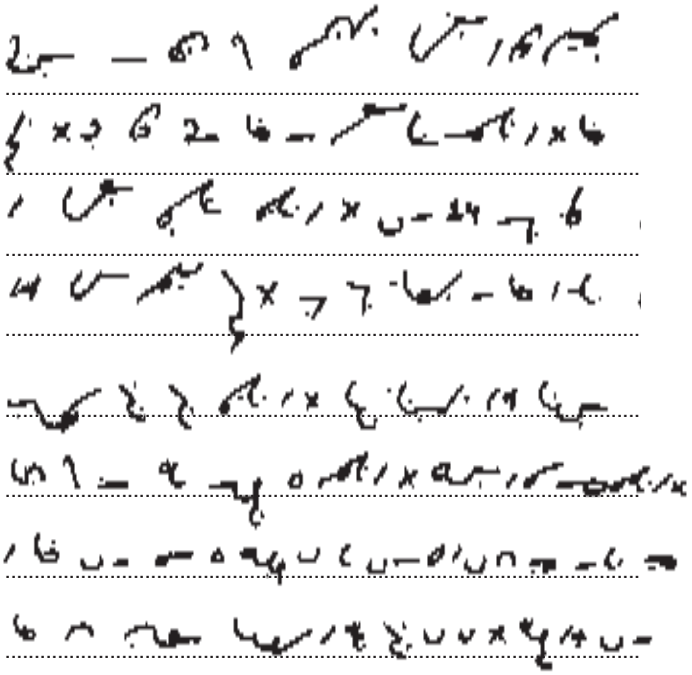

कार्य – द्वितीय

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

स्तर लूप

आजकल रा ट्रीय स्तर पर मास्टरों की नियुक्ति की जाने वाली है। जिसके लिए बड़े–बड़े मिनिस्टरों की सहायता ली जा रही है। वैसे तो राज्य स्तर पर कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में भी बहुत सारी नियुक्तियां हुई हैं। इस विद्यालय में पुस्तकें और भोजन मुफ्त में दिया जाता है। इसमें पढ़ने वाले बच्चे शि टता के साथ शास्त्र और शास्त्रीकरण का ज्ञान सीखते हैं। इसमें पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक कभी अंसतु ट नहीं होते। इसमें सारे वि ायों की शिक्षा दी जाती है।

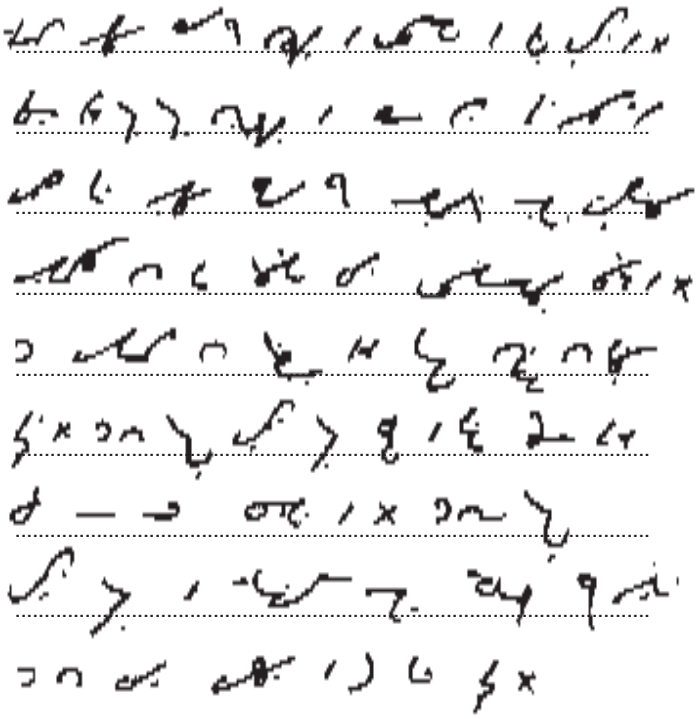

अनुनासिक्य एवं अनुस्वर का प्रयोग

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **अनुनासिक्य एवं अनुस्वर का प्रयोग कैसे किया जाता है ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

अक्सर व्यक्ति जब किसी काम में नाकामयाब होता है तो वह स्वयं को कमजोर और असहाय समझने लगता है। उसकी असफलता से उसके परिवार के लोगों को भी परेशानी उठानी पडती है वह अपनी असफलता से इतना कमजोर हो जाता है कि वह अपराध की ओर पग उठाने में सकोच नहीं करता है। नाकामयाब इंसान सही गलत की पहचान नहीं कर पाता है और उसकी बुद्धि क्षीण होने लगती है। नाकामयाब व्यक्ति को तनाव की स्थिति से बाहर लाने के लिए यह आवश्यक है कि उसे अनुशासन में रहना सिखाएं, उससे उसकी समस्याओं के बारे में वार्तालाप करके उसे सलाह देकर उसकी समस्याओं को सुलझाया जा सकता है और उसके मस्ति क को दूसरे नेक तथा अच्छे कामों में लगाया जाना चाहिए, उससे उसकी बुद्धि का विकास होता है। एवं मानसिक शक्ति भी मिलती है। उसे शस्त्रों का नहीं शास्त्रों का ज्ञान देना चाहिए और दोनों के जमीन–आसमान के बीच फर्क को समझाना चाहिए।

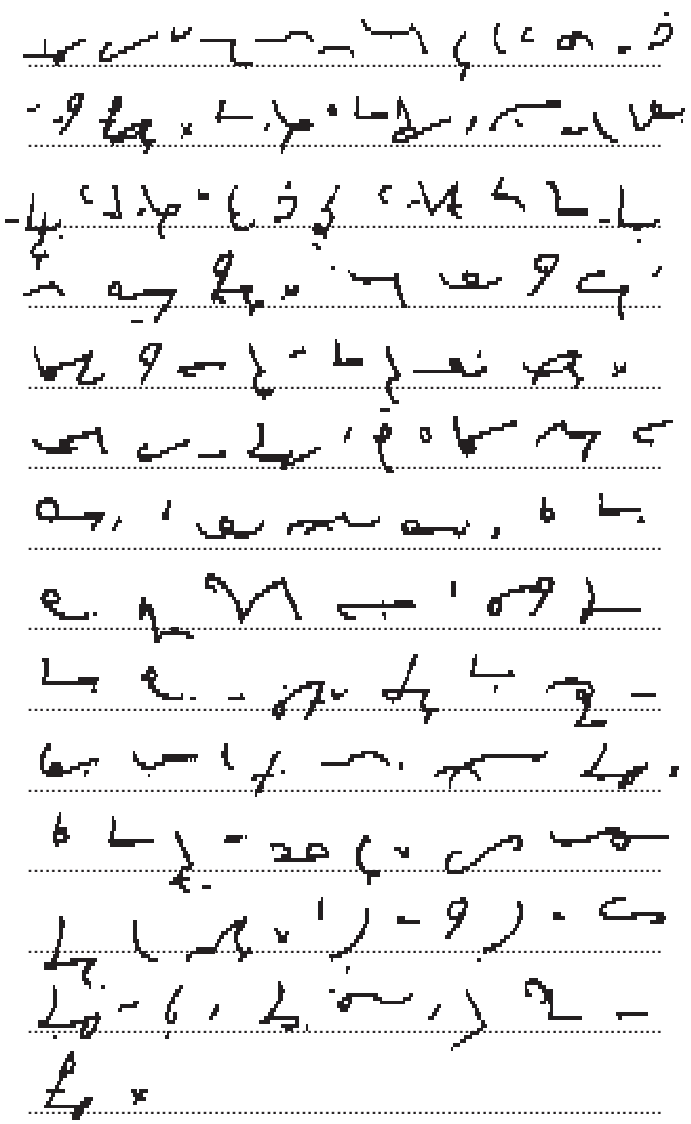

व्यंजन रेखाओं पर प्रारम्भिक हुक (अंकुश)

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **व्यंजन रेखा पर प्रारम्भ में हुक लगाना ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

आजकल फैशन जोरों पर है। लड़कियों का तो कहना ही क्या, लड़के भी बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहनकर, बिना किसी उद्देश्य के इधर–उधर घूमते दिखायी पड़ते हैं। प्रत्येक युवक अमीर हो या गरीब, अच्छी तरह रहना चाहता है। यदि तुम्हें किसी होटल या टाकीज में जाने का अवसर हो, तो तुम देखोगे कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अमीरी की डींग मारता है और राजकुमारों की तरह व्यवहार करता है। जेब चाहे खाली हो, परन्तु हाथ में सिगरेट अवश्य होगी। घर पर चाहे पुस्तकें न पढ़ें, पर स्टेशन पर समाचार–पत्र अवश्य खरीदेंगे। प्रायः ऐसे नवयुवक ऋण में फंस जाते हैं। जब एक दुकानदार से कुछ सामान उधार खरीद लेते हैं, तो दूसरी बार उसके पास से भी नहीं गुजरते हैं, बल्कि किसी अन्य दुकान पर चले जाते हैं। हमें ऐसे लोगों की नकल नहीं करनी चाहिए।

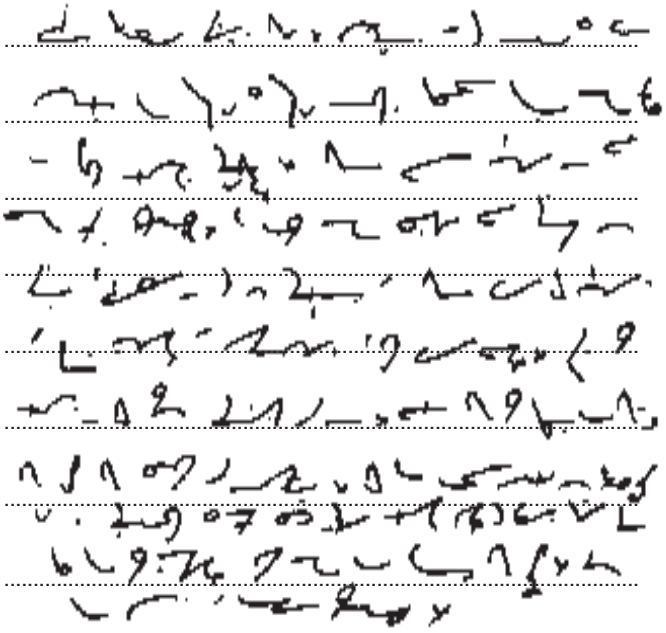

कार्य – द्वितीय

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

'र' / 'ल' हुक युक्त वक्र व्यंजनों के वैकल्पिक चाप

समय सबसे बड़ा धन है जिसने समय के प्रभाव को जाना, समय की चाल को समझा, वह लघु से महान, क्षुद्र से विराट और रंक से राजा बन जाता है। समय पर जो जागा नहीं वरन् निद्रा, तन्द्रा और आलस्यवश पड़ा रहा, समझ लो उसका भाग्य भी सोया रहा। उसने जीवन की स्वर्णिम घड़ियों को व्यर्थ में खो दिया। सुगन्धित इत्र को मिट्टी में मिला दिया, हाथ में आए अमूल्य हीरे को कंकड़ की तरह फेंक दिया, दीन बनकर दरिद्रता का वरण किया और इसी धरती पर जड़, पत्थर बनकर पड़ा रहा। जिसने समय–रुपी धन का सम्मान किया, वह सुखी बन गया। एक अच्छा विद्यार्थी रात–दिन परिश्रम करता है। सदा समय पर काम करना जिसकी दिनचर्या हैं, उसका भाग्य एक दिन जगमगाने वाला है। उसके जीवन में अरुणोदय होने वाला है, उसके जीवन का कमल खिलने वाला है, सफलता और सुख उसे मिलने वाला है।

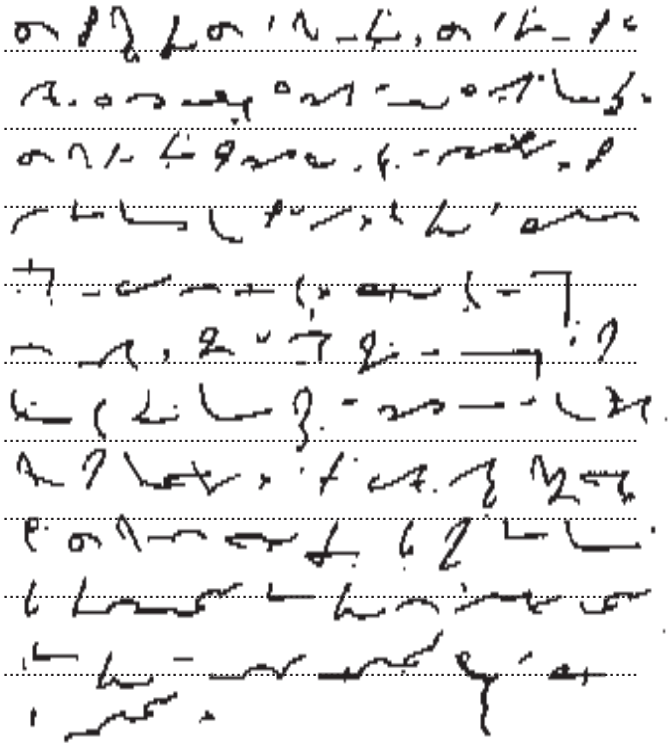

(संयुक्त व्यंजन) आरम्भिक बड़े हुक

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **बड़े हुक प्रयोग ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

समाज की व्यापक भलाई को देखते हुए समाज के उच्च वर्ग को आपसी सम्बंध बनाए रखना अति आवश्यक है। आज समाज या देश का कोई भी व्यक्ति इतना समृद्ध और सक्षम नहीं है कि वह अपने दैनिक जीवन में उपयोग में लाने वाली सभी वस्तुएं स्वयं पैदा कर ले। पहले जाति के आधार पर उद्योग व व्यापार के क्षेत्र बंटे हुए थे परन्तु अब आधुनिक युग में स्थिति बदल चुकी है और इसी तरह से कोई भी उद्योग जाति का मोहताज नहीं रहा है। जाति से ऊपर उठकर समाज के कुछ व्यक्ति लघु उद्योग के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय स्थान प्राप्त कर चुके हैं। इसके अलावा इन्होंने विशिष्ट एवं अमूल्य योगदान भी दिया है।

इसी प्रकार किसान भी कृषि करके (नई तकनीकों द्वारा) दुनिया में उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। इसके अलावा महिलाएं भी लघु उद्योग करके अपने आत्मसम्मान की रक्षा करती हैं। इनके अलावा हमारे शिक्षा शास्त्री और स्वाध्याय में आस्था रखने वाले महापुरूष संसार मे घूम कर के दुनिया के सभी देशों में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इसी तरह से छोटे उद्योगपति अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए व्यापक पैमाने पर अथक सहयोग देते हैं। हमारा शासन हर वर्ष पूरे देश के लिए वित्तीय कारोबार का लेखा जोखा एवं सारे प्रशासन का आय–व्यय तैयार करता है। इस आय–व्यय के अनुसार ही पूरे देश का बजट तैयार होता है। कृषि मे हुई प्रगति से हम गरीबों की सहायता कर सकते हैं।

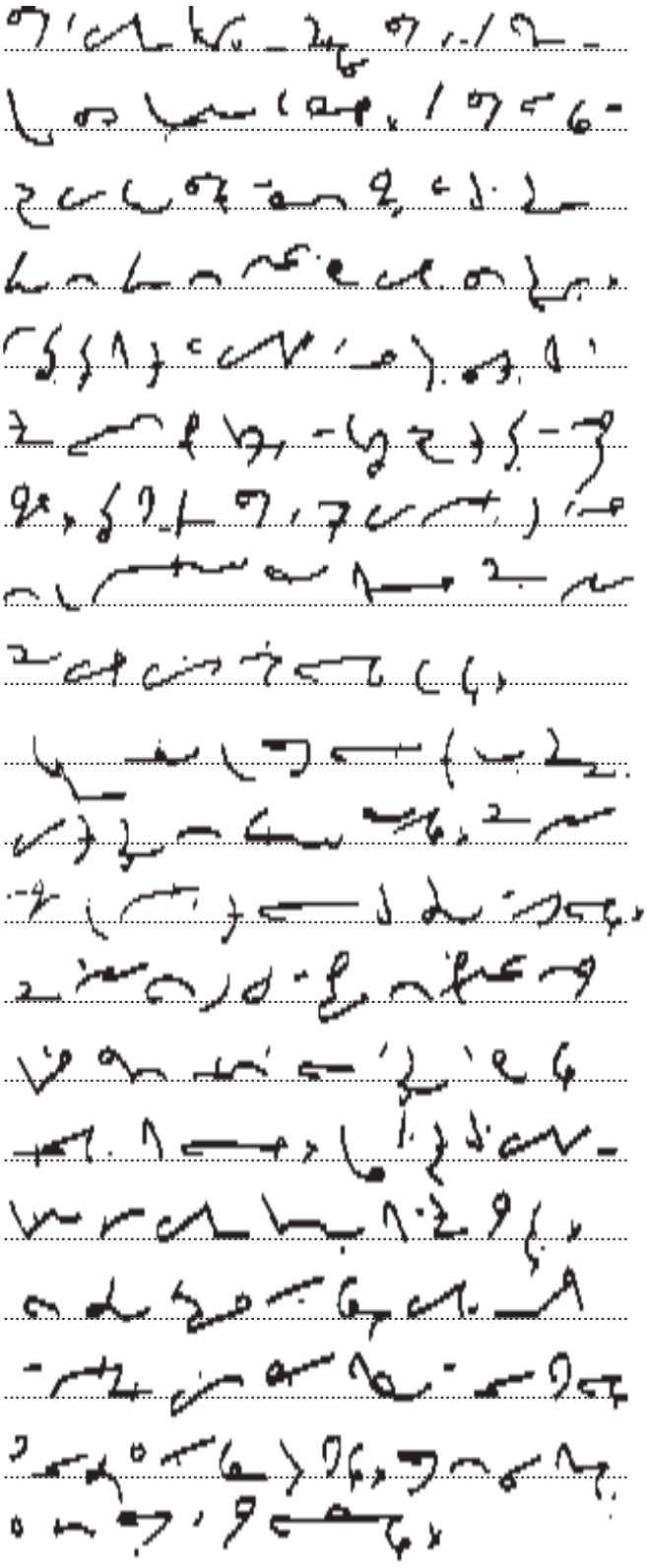

अंतिम हुक

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **अंतिम हुक का प्रयोग ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

अंतिम हुक

बचपन से ही मीरा बाई की रूची कृष्णि भक्ति/पूजा में थी। वह एक बार एक बारात को जाते हुए देखती है तो अपनी माँ से पूछती है कि ये क्या जा रहा है तो उनकी माँ उत्तर देती है कि ये दुल्हा (वर) जा रहा है तो वह पूछती है कि दुल्हा कौन है तो वह हँस के जबाव देती है कि ये तेरे हाथ में जिसकी मूरत है वही तेरा दुल्हा है। ये बात उस नन्ही सी मीरा बाई के मन में बस गई है और तभी से वे भगवान कृष्ण को अपने प्रियतम के रूप में दखने लगती है और दिन–रात उस की पूजा में व्यस्त रहती और भक्ति में लीन रहती। राजकुमारी का भेष छोड़ कर एक जोगन का रूप धारण कर लिया।

वक्त बीत गया और नन्ही राजकुमारी के विवाह की बात चलने लगी। मगर मीरा बाई अपने आप में मस्त रहती, उन्हें दुनिया की कोई चिन्ता नहीं थी। अन्ततः विवाह हुआ और वह विवाह करके अपने ससुराल गई। समाज की कुरीतियां और लोक लज्जा के भय के चलते उन्हे ससुराल से निकाल दिया गया और वह मथुरा आ गई। वहीं उन्होंने अपना आश्रम बनाया। पूरे जीवन में वह कृष्ण भक्ति में लीन हो गई और अपना शरीर त्याग दिया।

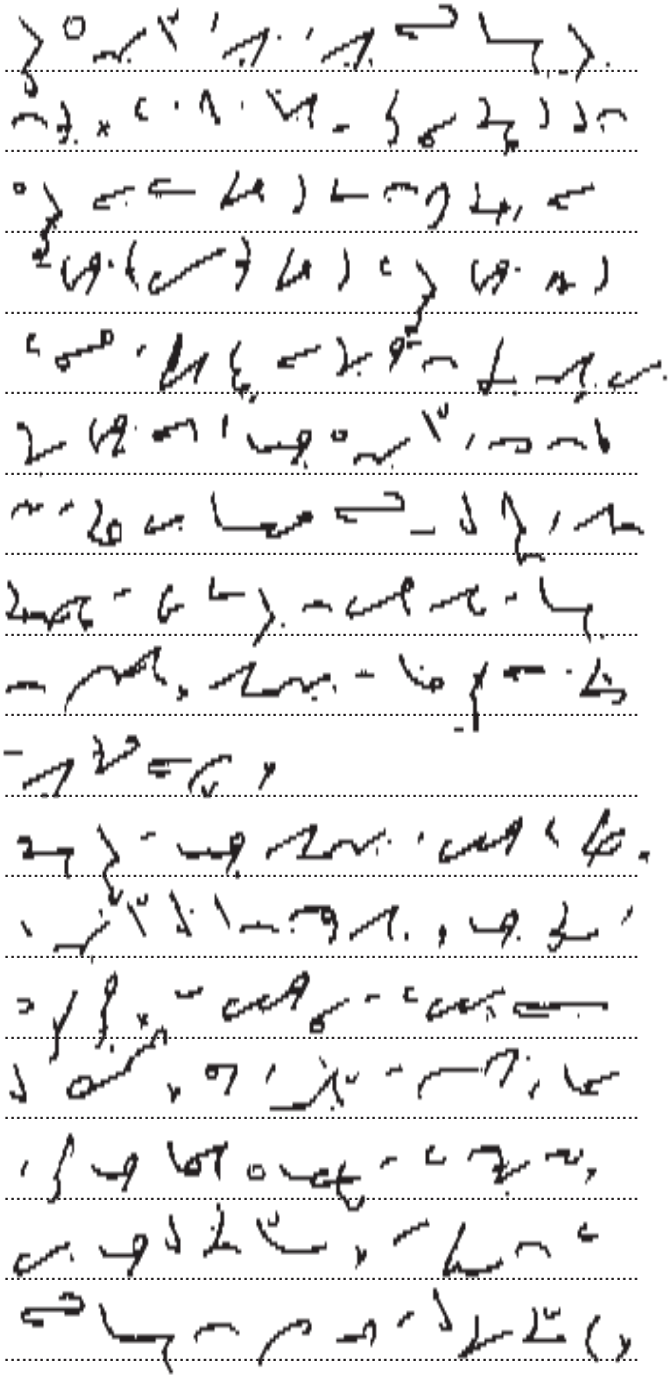

अंतिम बड़ा हुक

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **अंतिम बड़ा हुक का प्रयोग ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

देश के निर्माण के क्षेत्र में कई ऐसे महत्त्वपूर्ण काम होते हैं जिनकी उपयोगिता के लिए नारियों में शिक्षा और उनका सहयोग अनिवार्य है। ऐसे कामों में प्रथम रूप से प्रशिक्षण में मौहल्ले, गाँव में स्वच्छता तथा अच्छा रहन–सहन आता है। शिक्षित समाज में नारियों का स्थान अद्वितीय होता है। शिक्षा के क्षेत्र में जब तक नारियों में पूरा आकर्षण और उत्साह आगे नहीं आयेगा, ग्रामीण जीवन–स्तर सुधारने के सभी प्रयास असफल हो जायेंगे। यही हम उनके परिवार के खान–पान या रहन–सहन के बारे में भी कह सकते हैं। अतः निकट भविष्य के लिए शिक्षा को देश की चौमुखी भलाई के लिए उद्देश्यपूर्ण बनाया जाना चाहिए।

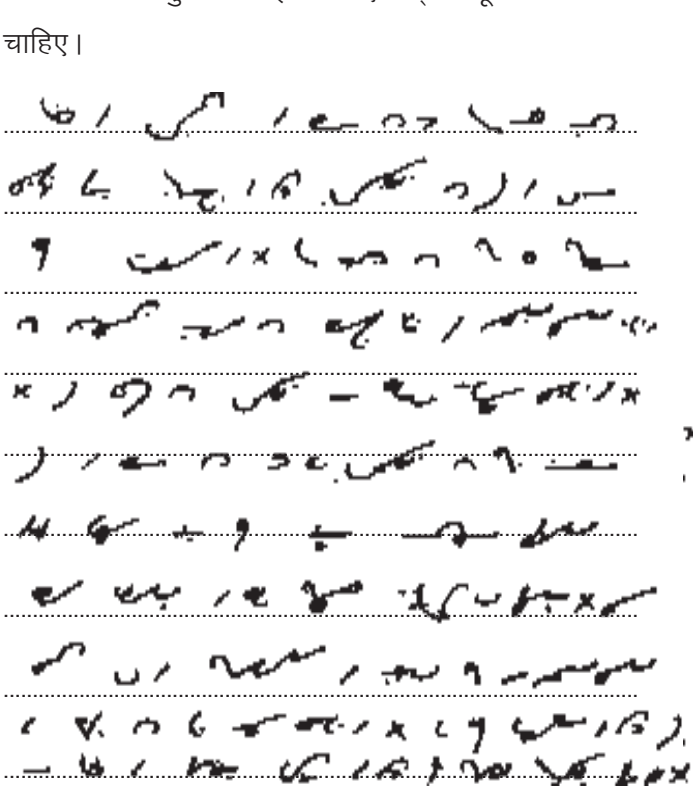

कार्य – द्वितीय

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

विश्व के कई देशों में एक तरह की नहीं बल्कि कई तरह की शासन प्रणाली अपनायी जाती हैं। सभी लोगों की अपनी अलग भाषा एवं संस्कृति होती है। इसलिए यह कहना उचित नहीं है कि किसी एक वर्ग की भाषा या संस्कृति दूसरे से अच्छी है। हर देश के निवासी आवश्यकतानुसार अपनी संस्कृति एवं भाषा से जुड़े रहते हैं जो लम्बे समय तक इस दौर से गुजरती है और समयानुसार उसमे आवश्यक परिवर्तन भी होते रहते हैं। समय के हिसाब से प्रत्येक इंसान को चलना चाहिए, तभी एक अच्छे समाज का ढांचा बनाए रखा जा सकता है।

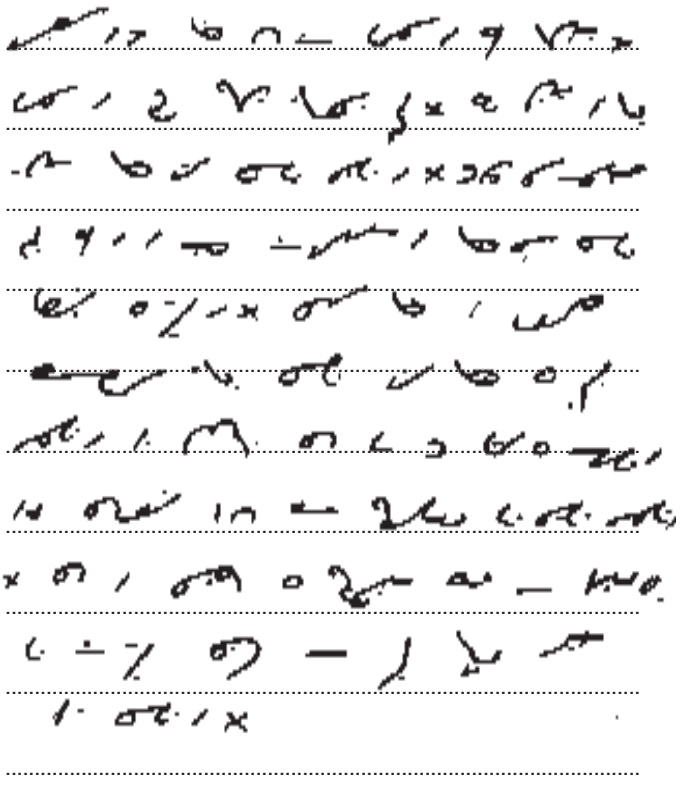

अर्ध्दकरण सिद्धान्त

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **अर्ध्दकरण सिद्धान्त का प्रयोग ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

एक वक्त वह भी आया था जब लोगों को बहुत ही खास बातों का ध्यान रखना होता था। आज समाज में बहुत से ऐसे अशिक्षित लोग हैं जिसके माध्यम से फूट डलवाने वाली प्रवृति बहुत गलत है। साथ ही साथ इस सम्बंध मे बहस छिड़ जाती है और यह फूट अत्यन्त विकराल रूप धारण कर लेती है। यह झंझट अनिश्चित काल के लिए हो जाता है। समाज हित के लिए सभी व्यक्तियों को अच्छा कार्य करना चाहिए। जिन इलाकों में अभी सुधार की गुंजाइश है वहां सभी लोगों को सोच–समझकर कदम उठाने चाहिए तभी यह सुधार संभव हो सकता है। क्योंकि एक अच्छे समाज के माध्यम से ही अच्छे और उन्नत राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। यह बहुतही महत्त्वपूर्ण बात है कि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति का मूहत्तकू बनकर नहीं रहना चाहिए। अच्छे समाजवाद का निर्माण करके अर्द्ध–विकसित क्षेत्रों को विकसित कर जनता का हित सम्पादन करना चाहिए।

जनता का कर्तव्य यह है कि वह शासन और समाज का हाथ बंटाये और एक सम्मिलित सुसंस्कृत समाज का निर्माण करें एवं समाज को शिक्षित करें। क्योंकि सुशिक्षित समाज की बात अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है अर्थात् शिक्षित लोग ही सच्चे समाज का निर्माण कर सकते हैं। व्यक्ति मे क्रांति तभी आ सकती है जबकि समाज का हित–चिंतन सुविचारित और संरक्षित हो।

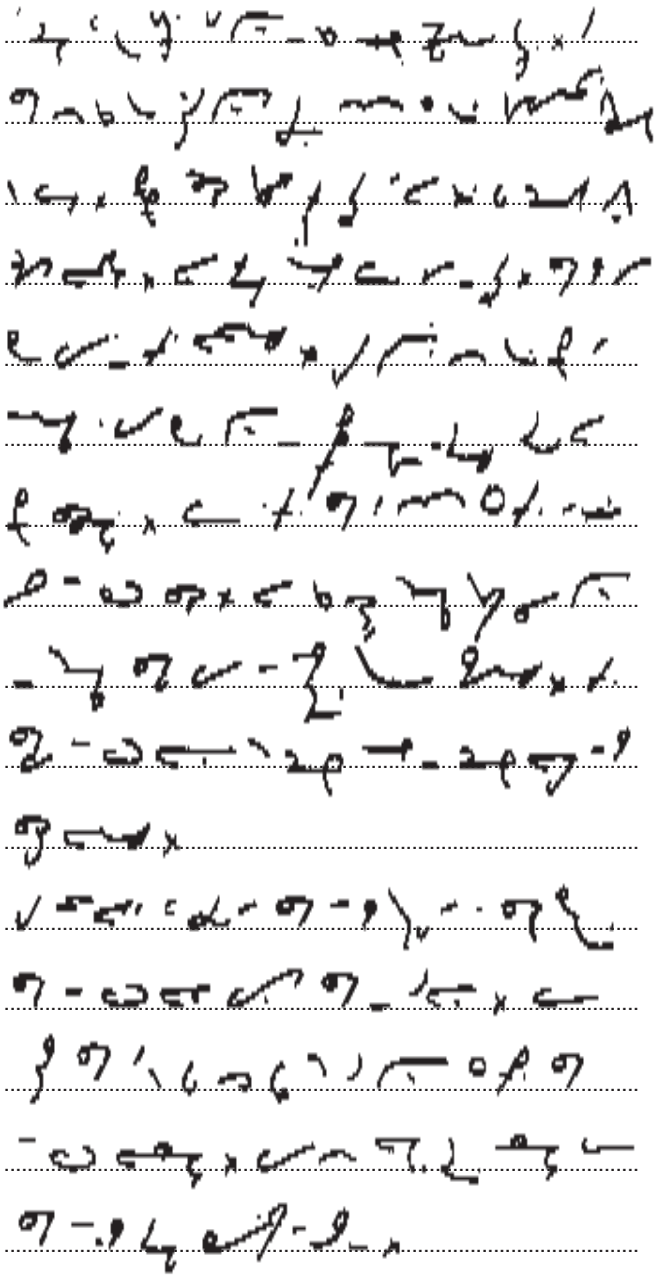

द्विगुणन सिद्धान्त

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **द्विगुणन सिद्धान्त का प्रयोग ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

द्विगुणन सिद्धान्त

अन्तरिक्ष उस स्थल को कहते हैं जो चाँद–सितारों और पृथ्वी तथा सूर्य के बीच होता है। आज हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं। सभी काम लोग वैज्ञानिक तरिकों से कर रहे हैं। आखिर मनुष्य ने ही तो विज्ञान और अन्तरिक्ष दोनों पर कब्जा किया हुआ है। जैसे कल्पना चावला, विच्छेंद्री पाल जैसी महान औरतें इस क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर चुकी है। चाँद पृथ्वी से लाखों किलोमीटर दूर है, फिर भी अन्तरीक्ष यान की सहायता से मनुष्य बहुत ही कम समय मे चाँद पर पहुंच सकता है। बहुत समय पहले जब लोग अशिक्षित थे तो यह समझते थे कि उनके जहाज डुब जायेंगे। किन्तु स्पेन के एक बहादुर नाविक के ख्याल से पृथ्वी गेंद की तरह ही गोलाकार थी। वह अपने जहाज को लेकर एक ही दिशा में चला। तीन साल की यात्रा के बाद उसका जहाज घूमकर जब वापस आया तो यह पुष्ट हो पाया कि पृथ्वी की गोलाई बहुत कम है। पृथ्वी को प्रकाश और गर्मी दोनों सूर्य से मिलती है। हमें सूर्य पश्चिम की ओर जाता दिखाई देता है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। पृथ्वी अपनी धूरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर चक्कर लगाती है। इसी कारण सूर्य पश्चिम मे छिपता दिखाई देता है। प्रकृति ने सोच–विचारकर ही मनुष्य के हाथ मे पृथ्वी का नियंत्रण सौंपा है। ईश्वरीय शक्ति विकेन्द्रित नहीं होती, उसका शासन एकछत्र और नियंत्रित होता है।

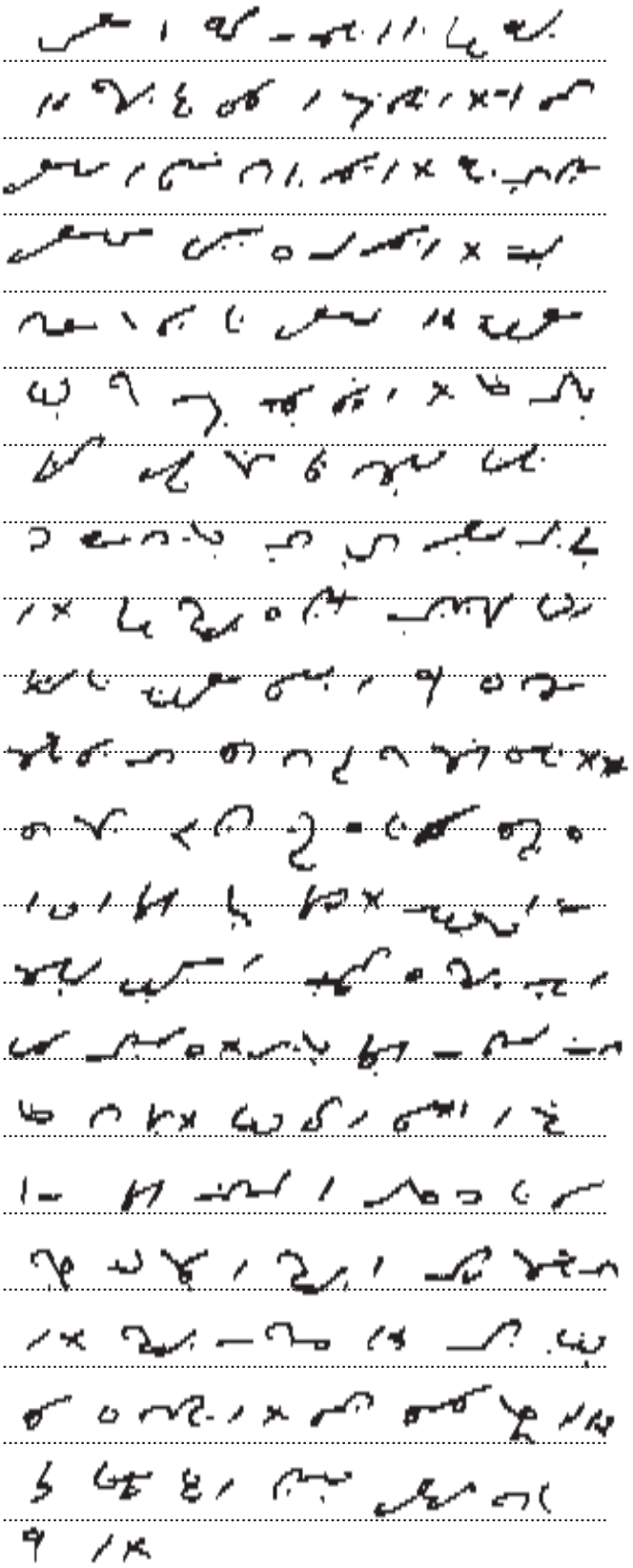

उपसर्ग

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **उपसर्ग का अर्थ एवं उपयोगिता ।**

कार्य – प्रथम

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

अभ्यास

उपसर्ग

अहिंसा परमो धर्म का पाठ हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने अपने जीवन में बचपन से उतारा था। उन्होंने राष्ट्र के हित में बहुत से कार्य किये। ये काम देश के हित के साथ–साथ वे अपने आत्म संतुष्टि के लिए भी करते थे। वे हर व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने कुटिल उद्योग देशवासियों को विदेशी वस्तुओं को त्याग देने को कहा और अपने हस्तनिर्मित वस्तुओं के उपयोग के बारे में बताया। उन्होंने बालिकाओं के शिक्षा पर भी विशेष बल दिया। अज्ञानी तथ अनपढ़ लोगों को शिक्षित करने का पूर्ण प्रयत्न किया। उन्होंने सर्वप्रथम गाँवों में बुनियादी शिक्षा की नींव रखी। हरि. जनों के हित में बहुत ही उल्लेखनीय कार्य किये और छूत–अछूत की भावना को लोगों के मन से हटाने का भी प्रयत्न किया। उनकी एक वाणी हमारे लिए बहुमूल्य है यथासंभव उन्होंने अहिंसा के बल पर ही अंग्रेजों से लड़ाई जारी रखी। सब पढ़े और सब बढ़े के नारे के साथ उन्होंने निःशुल्क शिक्षा का भी प्रावधान रखा। निःसंदेह उनका विचार महान था और उनकी सोच निःस्वार्थ थी, इसीलिए अपने मजबूत इरादे के बदौलत अंग्रेजों को जड़ से उखाड़ फैंका।

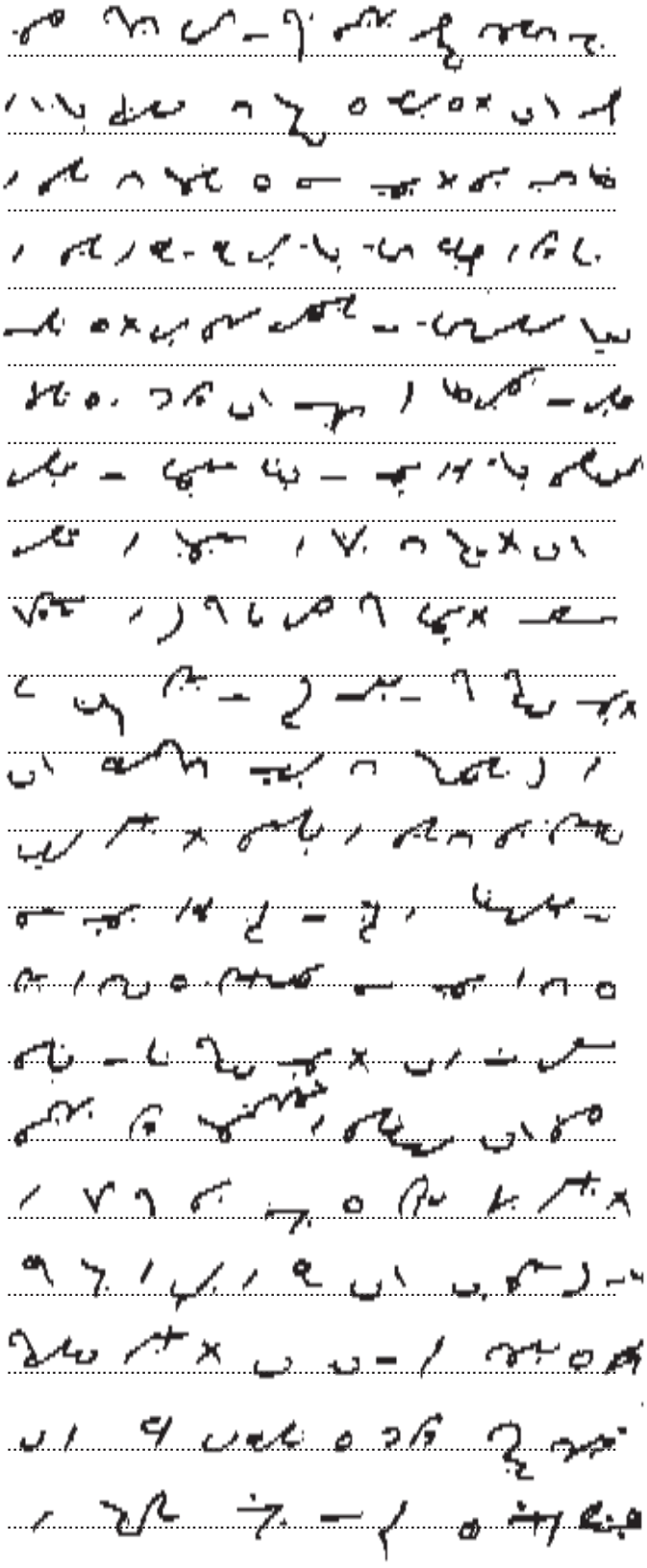

प्रत्यय

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **प्रत्यय का अर्थ एवं उपयोगिता ।**

कार्य – प्रथम

प्रत्यय

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

भारतीय सभ्यता पूरे विश्व में विख्यात है, भारत में अनेकों बार विदेशी मेहमान आते हैं और हमारी भारतीय सभ्यता के रंग में रंग जाते हैं और यहीं के यही रह जाते हैं। भारतीय सभ्यता इतनी प्रभावशाली है कि इससे अछूता कोई नहीं रह सकता है। इस देश में अनेक तीज–त्यौंहार होते हैं और अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

वस्तुतः आज हमारे समाज में विदेशी संस्कृति इस कदर हावी हो गई है कि खुद हमारे देशवासी ही अपनी भारतीय सभ्यता को भुलाते जा रहे हैं। शहर के साथ–साथ देहातों में भी विदेशी संस्कृति ने पूरी तरह पांव गड़ा लिए हैं जो कि कहीं से भी लाभप्रद नहीं है। हमें प्रेरणा के रूप में उन व्यक्तियों के व्यक्तित्व को अपनाना चाहिए जो कि अपनी संस्कृति के साथ रहकर देश में नाम रोशन किया है। ऐसा नहीं है कि विदेशी संस्कृति में कोई अपवाद है लेकिन समाजवादी दृष्टिकोण को देखते हुए हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है। उत्तर पूर्वी इलाकों में अभी भी काफी हद तक भारतीय संस्कृति बची है, बस हमें सही नेतृत्व की आवश्यकता है।

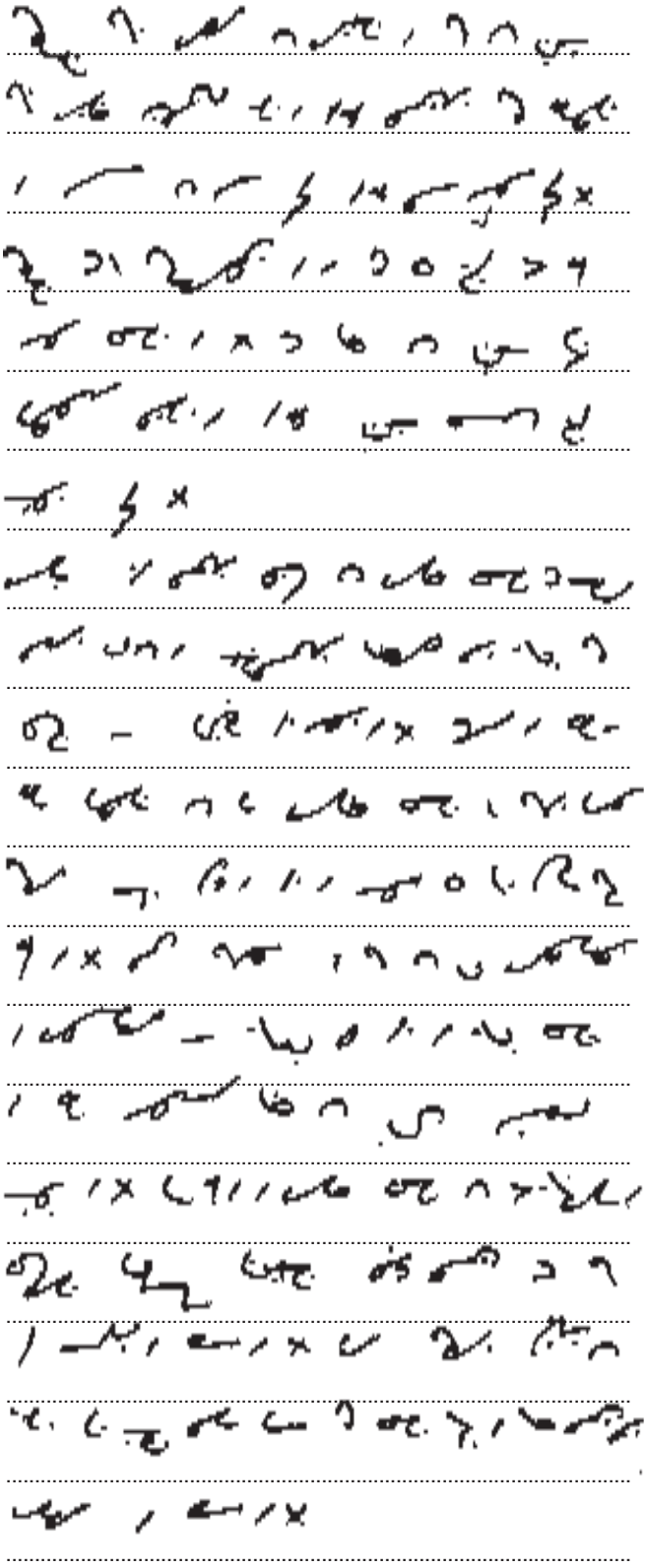

पदनाम वाक्यांश - व्यंजन रेखाओं पर काट

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **व्यंजन रेखाओं पर काट का अर्थ एवं उपयोगिता ।**

कार्य – प्रथम

पदनाम वाक्यांश–व्यंजन रेखाओं पर काट

निम्न अवतरण को पढ़िए, आशुलिपि में लिखिए एवं अनुवाद करिए।

स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह के मन में बचपन से ही भारत को एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में देखने की इच्छा थी। अंग्रेजों का पूरे भारत पर एकछत्र अधिकार था। किन्तु लोकतान्त्रिक पद्धति के अनुसार राट्रपति राष्ट्र का प्रमुख होता है। राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में रा ट्रपति के कार्यों का निर्वहन उपराष्ट्रपति करता है। अगर किसी राज्य का मुख्यमंत्री अपना पद शासन काल पूरा होने से पहले स्वैच्छा से अपना इस्तिफा देता है तो उस समय से अगले चुनाव या मुख्यमंत्री के चयन तक राष्ट्रपति शासन लगता है जैसा कि अभी हाल में दिल्ली में मुख्यमंत्री बने केजरीवाल जी के साथ हुआ। उन्होंने कुछ महीनों में ही अपने पद से इस्तिफा दे दिया और तब तक राष्ट्रपति शासन रहा।

जनतंत्रीय प्रणाली में जिस दल को चुनावों में संसद के निचले सदन अर्थात लोकसभा का बहुमत मिलता है वह अपना नेता चुनता है जो प्रधानमंत्री होता है। हमारे देश में जनता को ही जनारदन कहा गया है। वह अपना मत सही व्यक्ति को देकर अपनी सेवा के लिए चुनने का पूरा अधिकार होता है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना लहु इसी लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना के लिए बहाया है परन्तु इसका कोई फायदा आज देखने को नहीं मिल रहा है। क्योंकि हमारे देश में गरीब और गरीब होता जा रहा है और अमीर और अमीर। देश की दशा दिन–प्रतिदिन दुर्दशा में बदलती जा रही है ।

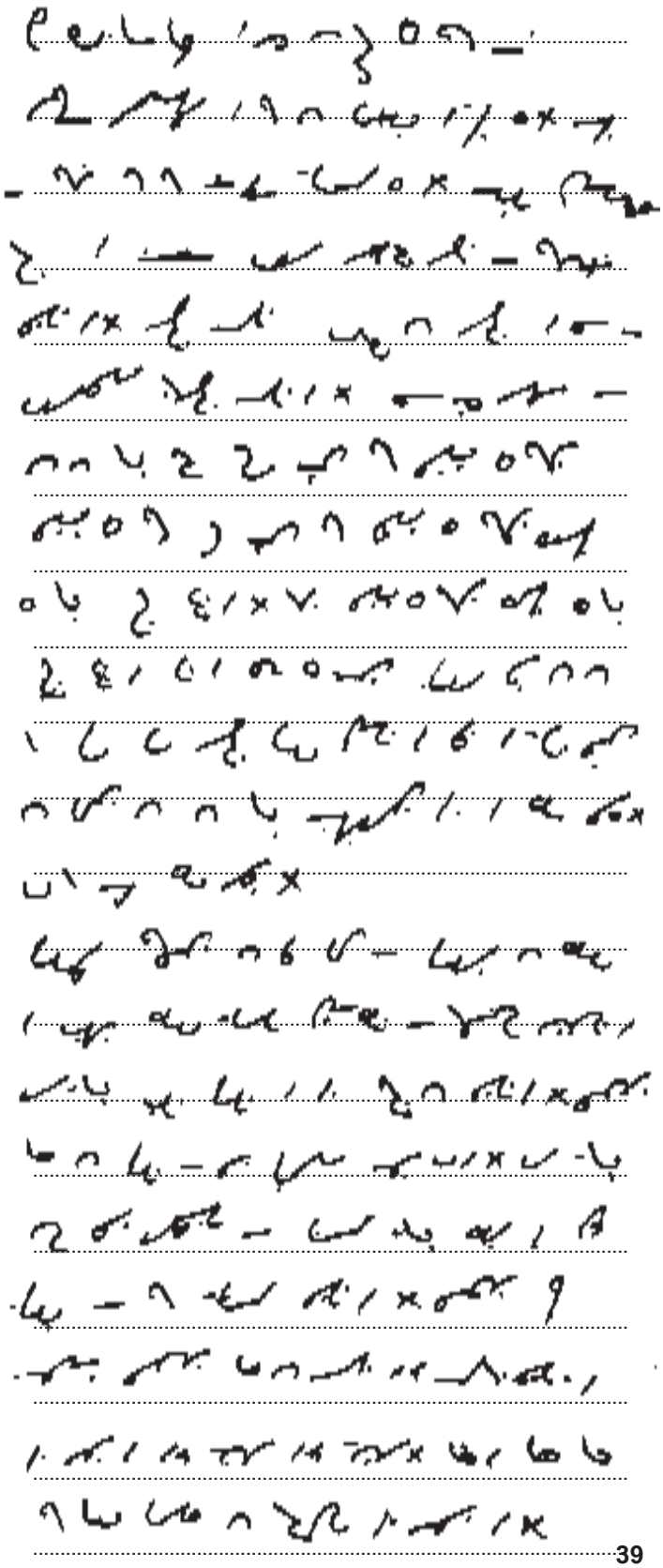

काट प्रयोग

माता पिता, इनें गिनें, कहा सुनी, पेड़ पौधे, पशु पक्षी, पक्ष विपक्ष, जड़ी बूटी, वाद विवाद, रोटी पानी, रोजी रोटी, दाल रोटी, दाना पानी, रूपया पैसा, हिसाब किताब, कर्तव्य परायण, राष्ट्रभक्ति, देश भक्ति, समाज सेवक, देश सेवा, घिसा पिटा, युद्ध विराम, अच्छे बुरे, आमने सामने, रूप रेखा, शक्ल सूरत, सलाह मशवरा, विचार विमर्श, विचार विनिमय, दंगा फसाद, बीचों बीच, रातों रात, बातों बात, मां बाप, मां बहन, लेना देना, तन मन धन, तोड़ फोड़, स्त्री पुरूष, रूपया पैसा, रोकड़ बाकी, तर्क वितर्क, नोंक झोंक, जवाब तलब, सोच विचार, सोच समझ, झूठ मूठ, सुख दुख, भाई बहन, खान पान, लेना देना, हानि लाभ, आमोद प्रमोद, हंसी मजाक, सूझ बूझ, शिक्षा दीक्षा, रंग रूप, निम्न लिखित, अच्छा खासा, देश विदेश, काम धंधा, नौकर मालिक, मारपीट कूड़ा करकट, हिचकिचाहट, हिचकिचाना, हिचकिचाते, पहले पहल, हाथों हाथ, भूल चूक, बोल चाल, जैसे तैसे, भीड़भाड़, हलचल, इधर उधर, धन दौलत, किस्से कहानी, चोर बाजार, लंबा चौड़ा, यहां वहां, कभी न कभी, जीव जंतु, लूटमार, लूटपाट, सचमुच, शोरगुल, सवाल जवाब, तालमेल, हंसी खुशी, कायदा कानून, काला बाजार, आनन फानन, उलट पुलट, उल्टा सीधा, सीधा सादा, राजा महाराजा, छुआछूत, भोलाभाला, जहां तहां, ज्यों त्यों, देख रेख, परिवार नियोजन, तौर तरीका, छिन्न भिन्न, नामंजूर, उतार चढ़ाव, अस्त्र-शस्त्र, धमाचौकड़ी, गाली गलौज, गुंडा गर्दी, सलाह मशवरा, आयात निर्यात, आचार संहिता, कड़ी से कड़ी, तोड़ मरोड़ कर, अफरा-तफरी

गति लेखन

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **लिप्यांतरण करने के नियम**
- **पत्रों का अभ्यास**
- **आशुलिपि गति अभ्यास के अध्याय**
- **टंकण गति अभ्यास के अध्याय ।**

प्रायः देखा गया है कि प्रशिक्षार्थी आशुलेखन के सिद्धान्तों का पूरी तरह से पालन नहीं करते हैं। जिनके कारण उन्हें सफलता मिलने में विलम्ब होता है और कभी – कभी तो वे इसमें आगे बढने का प्रयास छोड देते हैं। इस कला के सक्षम ज्ञान का अर्जन करने के लिए निम्नांकित बातें ध्यान में रखने से आपको आगे बढने में सहायता मिलेगी और आप एक सफल आशुलेखक बनकर अपना भवि य उज्जवल बनाने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे । आशुलेखों का लिप्यंतरण करना आशुलेखन का अनिवार्य अंग है । अतः आप प्रारम्भ से ही अपने आशुलेखों को स्पष्ट बनायें । जितने सुन्दर आशुलेख होंगे , उतनी ही शुद्धता व शीघ्रता से आपको सफलता मिल सकेगी। आशुलेख सुन्दर होने पर उन्हें पढने में भी सहायतामिलेगी। न पढे जाने वाले आशुलेख व्यर्थ हैं। गति बढाने का सरलतम उपाय देखकर लिखना व आशुलेखों को पढना है । य ह अभ्यास आप स्वयं करेंगे तो आप 120 शब्द प्रति मिनट की गति तक पहुंच जायेंगे । इससे अधिक गति बढाने के लिए ही प्रशिक्षक अथवा टेप –रिकार्डर का सहारा लेना आवश्यक है । इस अभ्यास को तब तक लिखें जब तक उसे पूरी तरह लिखने में सक्षम न हों । इसके बाद इसी अभ्यास को गति 20 शब्द बढाकर लिखने का प्रयास करें । पुनः इसे लिखने पर गति आगे बढायें । पहले ऐसे वाक्यांशों का अभ्यास कर

लें जो उस डिक्टेशन में आप स्वयं लिखेंगे । इससे शीघ्रता से गति बढाने और सुन्दर आउट – लाइनें बनाने में सहायता मिलेगी । हर बार में नयी सामग्री से प्रयास करना तभी उचित है जब उसे पूरी तरह से लिखने में कामयाबी मिल जाए ।

नये शब्दों के आशुलेखन – चिह्न या वाक्यांश तैयार करें । नियमानुसार ऐसा प्रयास करने से रटने की आवश्यकता नहीं पडती और समझकर लिखी गई आउट – लाइनें पढना सरल होता है । मनगढंत या बिना नियम या आधार के शब्द – चिह्न या उन के शब्दाक्षर बनाना आपके लिए हानिकर सिद्ध हो सकता है। अतः सही प्रारूप न मिलने पर मार्गदर्शन प्राप्त करें। यह अपने प्रशिक्षक, सहयोगी या मित्रों से प्राप्त कर सकते हैं। अपनी लेखनी पर विश्वास करें और स्मरण शक्ति के बल पर लिप्यंतरण करने से निराशा ही हाथ लगेगी ।

पत्रों का अभ्यास :–

राजस्थान सरकार

कार्यालय प्रधानाचार्य.रा.म.पो.ज.महाविधालय,जयपुर

क्रमांकः म.पो.ज.छात्रा:2010 / 4607 दिनांक–21 अक्टूबर 2010

कार्यालय आदेश

संस्थान के आदेश क्रमांक 4351–53 दिनांक 21 / 10 / 2010 के क्रम में संस्थान में अध्ययनरत अनुसूचित जाति, जन–जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की उन छात्राओं को जिन्होंने सामाजिक न्याय एवं अधिकारीता विभाग द्वारा स्वीकृति छात्रवृति के आवेदन फार्म प्रस्तुत किये है, को पुनःसूचित किया जाता है कि उनके द्वारा प्रस्तुत आवेदन फार्मो में अनेक कमियॉ पाई गई है। अतः वे अपने फार्म छात्र शाखा से प्राप्त कर समस्त कमियों की पूर्ति उपरान्त पुनः छात्र शाखा में प्रस्तुत करें।

प्रधानाचार्य

7 अक्टूबर, 2013

प्रतिलिपिः निम्न को सूचनार्य एवं आवश्यक कार्यवाही हेतुः

1 समस्त विभागाध्यक्षो, प्रभारी अधिकारियो को भेजकर निर्देशित किया जाता है कि आप अपने विभाग की छात्राओ को उक्त के संबंध कों सूचित करावें।

2 समस्त छात्राओं में परिचालन हेतु।

3 नोटिस बोर्ड।

– – – – – – – – – – – – – – –

अर्द्ध सरकारी पत्र :–

प्रेषकः–

श्रीधर चतुर्वेदी

अध्यक्ष लोक सेवा आयोग

इलाहाबाद।

9 अगस्त 2002.

प्रिय श्री कपूर,

शिक्षा निदेशालय के श्री मनोहरलाल ने भौतिक शास्त्र के व्याख्याता पद के लिए आवेदन पत्र दिया है। इस आवेदन पत्र में श्री मनोहर लाल ने राजस्थान में पिछले 3 वर्ष तक राजकीय कॉलेजों में व्याख्यता पद पर काम करने का उल्लेख किया है। आप कृपया

मुझे इनके अनुभव, कार्य श्रमता व आचरण के विषय में अपनी सम्मति शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

आपका शुभचिन्तक

(श्रीधर चतुर्वेदी)

सेवा में,

श्री राधेश्याम कपूर
निदेशक, कॉलेज शिक्षा
राजस्थान।

वी. पी.पी पार्सल गुम हो जाने के बारे मे,
शिकायती पत्र
सुनील प्रकाशन
न्यायालय रोड, गाजियाबाद
उत्तर प्रदेश,

दिनांकः 3 जूलाई 2014

सेवा में,

डाकपाल
मुख्य पोस्ट ऑफिस
गाजियावाद(उ.प्र.)

विषयः वी.पी.पी पार्सल गुम हो जाने के सम्बन्ध में,

महोदय ,

मैने 150 0रू. के मुख्य मुल्य की राम वरित मानस की 10 प्रतियां 20 दिसम्बर 2010 को मैर्स रमेश पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली को वी.पी.पी पार्सल द्वारा आपके डाकघर से भेजी थी किन्तु वे प्रतियां अभी तक वहां नहीं पहुंची। ऐसी सूचना अभी हाल ही में मुझे प्राप्त हुई है। यह पार्सल वापस मेरे पास भी नही आया। ऐसी स्थिति में आपसे अनूरोध है कि कृपया इस बारे में छानबीन कराने का क ट करें ताकि पार्सल गन्तव्य स्थान तक पहुंच जाये अथवा वापस हमें भिजवां दें।

इसके लिए में आपका अत्यंत आभारी रहूंगा।

भवदीय

(सुनील कुमार राजोंरिया)

गति अभ्यास

निम्न अवतरणों को बार– बार आशुलिपि में लिखिए तथा अनुवाद भी करिए।

अभ्यास –1

माननीय उपाध्यक्ष महोदय , मैं आपके माध्यम से रेल मंत्री जी को इस यथार्थवादी बजट पेश करने के लिए बहुत –बहुत धन्यवाद देता हूं । संभवतः बजट बनाते समय उनके दिलो दिमाग में इस देश के कॉमन मैन की तस्वीर रही , उसकी आर्थिक स्थिति की तस्वीर रही, इसलिए रेलोंमें यात्रा क र ने वाले 90 प्रतिशत यात्रियों का उन्होंने ध्यान रखा तथा उसको उन्होंने जरा साभीटच ही नहीं किया बल्कि उनको वे जो भी सुविधाएं दे सकते हैं। वह देने के लिए साधन इकट्ठा करने का प्रयत्न किया है । इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूं । मंत्रीजी इस देश की भौगोलिक स्थिति से, इस देश की विशालता से भली भांति परिचित हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरियों से भी परिचित हैं और जो संसाधन हैं उन से भी परिचित हैं। उपलब्ध संसाधनों से किस प्रकार ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं दी जा सकती हैं। इसको अपने ध्यान में रखते हुए ही इस बजट को बनया है । रेल मंत्री जी के दिलो दिमाग में यह बात भी पूरी तरह से रहेगी कि ाताब्दी के बदलते –बदलते जो यातायात आज है वह दुगुना हो जाए और इस प्रकार जो कमी भी होगी उसको किस प्रकार से पूरा किया जा सकता है। उसकी तैयारी इन्होंने उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से प्रारंभ कर दी है। उसके लिए जो लाइट–वेट कोचेज बनाने और इंजन बनाने और दूसरी सुविधाएं एकत्र कर रहे हैं। उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं । पिछले वर्ष हमारे प्रधान मंत्री जी ने आह्वान किया था, इस देश के कर्मचारियों और इस देश की जनता को किसी भी कीमत पर हमें 21 वीं सदी तक ले जाने के लिए तैयार कर सकना है ।

अभ्यास – 2

दिसम्बर 1967 में संसद के सामने जब राजभाषा संशोधन विधेयक पर विचार हुआ था, तब उसके/साथ ही हिन्दी के विकास और प्रचार – प्रसार विद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन , सरकारी नौकरियों में प्रवेश पाने के लिए/भाषा ज्ञान की स्थिति आदि के विषय में एक सरकारी संकल्प पर भी विचार हुआ था । विधेयक के साथ – साथ/वह संकल्प जिस रूप में राज्य सभा तथा लोक सभा द्वारा पारित हुआ, उससे सरकारी नीति की अधिकृत जानकारी हम सब को मिलती है।

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी है और /उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी भाषा का प्रसार, वृद्धि और उसका विकास करना, ताकि वह/संपूर्ण भारत की सामाजिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का सर्वसम्मत माध्यम हो सके , संघ का कर्तव्य है/ ।

यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी भाषा के प्रसार एवं विकास की गति बढाने हेतु , तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इस के प्रयोग हेतु, भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया/ जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और उसके लिए किये गये या किये जाने वाले उपायों एंव की गई/प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी, और सभी राज्य सरकारों को/भेजी जाएगी।

संविधान की आठवीं अनुसूची में हिन्दी के अतिरिक्त भारत की चौदह मुख्य भाषाओं का भी उल्लेख किया गया है और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास के/लिए सामूहिक उपाय किए जाने चाहिए ।

यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी तथा सभी भारतीय भाषाओं का समन्वित विकास हो/ ।

सरकार द्वारा, राज्य सरकारों के सहयोग से ,एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे शीघ्र कार्यान्वित किया जाएगा। ताकि/वे आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बन सकें। एकता की भावना के संवर्द्धन तथा देश के विभिन्न भागों/में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा सब राज्य सरकारों के परामर्श से/तैयार किए गए त्रि–भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी उपाय किए जाने चाहिए ।

यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में, हिन्दी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक और भारतीय भाषा के ,/दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए ,और हिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं/एवं अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी के अध्ययन क लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए ।

यह बात/स्पष्ट होनी चाहिए कि किसी का मंतव्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को शिक्षा के क्षेत्र से ही बहि कृत कर दिया जाए। अपेक्षा तो इस बात की है कि हमारे कार्यों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग की अनिवार्यता न रह जाए/। उपयोग की दृष्टि से भी अंग्रेजी वैकल्पिक रूप में पढी जाती रहेगी अंग्रेजी का स्थान भारतीय भाषाओं को देने से/कार्य सरल हो जाएगा तथा भाषा विषयक खाई भी शीघ्र पट जाएगी ।

अन्त में तो कार्य हिन्दी में करना ही/है। किन्तु यह स्थिति एकदम नहीं आ सकती है। अतः अन्तरिम काल में सुप्रीम कोर्ट में तथा हाई कोर्टो में हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों का प्रयोग होना चाहिए किन्तु अहिन्दी–भाषी राज्यों के हाई कोर्टो में वहां की प्रादेशिक/भाषाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है तथा सब जगह एक भाषा से दूसरी भाषा मे अनुवाद करन की/पूरी व्यवस्था भी हो। अन्त में राजकीय क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा हट सकेगी तथा भारतीय भाषाओं का प्रयोग होने लगेगा।

उपसभापति महोदय जब वित्त मंत्री जी ने 1970 में चार्ज लिया था तो उस समय प्राइस राइज के बारे में कहा था कि उनका पहला कदम प्राइजेज को होल्ड करना होगा । लेकिन इस घो ाणा के बाद भी देश में प्राइजेज बढती ही चली गई । 1972 में उन्होंने कहा था कि वे प्राइज को रोकने के लिए विशेष प्रयत्न करेंगे , लेकिन इसके बावजूद भी यही स्थिति है और कुछ नहीं बदला है । आपकी जो चीनी की पालिसी है , वह ठीक नहीं है । आज शुगरकी कीमत 350 रूपए क्विंटल हो गइ है और जो देहात का एरिया है उसमें शुगर के वितरण का जो तरीका है वह बहुत ही गलत है । आपने 60 परसेंट लेवी की चीनी शहरी क्षेत्र के लोगों में बांटने के लिए दी है, लेकिन देहात के लोगों को अपने विशेष उत्सवों के लिए,विवाह आदि के लिए चीनी साढे तीन सौ रूप्एय क्विंटल पर खरीदनी पडती है । तो मै आप से पूछना चाहता हूं कि आपकी कोई शुगर नीति भी है या नहीं? एक तरफ तो मिल वाले साढे तीन सौ रूपए प्रति क्विंटल चार्ज कर रहे है । और दूसरी और लेवी चीनी 200 रूपए प्रति क्विंटल पर बिक रही है । तो मै आपसे यह जानना चाहता हूं कि कम से कम आप पांच साल या दस साल के लिए अपनी शुगर पालिसी तो बनाइए । आज आपकी जो शुगर पालिसी बनी हुई है वह नार्थ के लिए कुछ है साउथ के लिए कुछ है, पूर्व के लिए कुछ है और पश्चिम के लिए कुछ है । आप क्या चीनी का जो उत्पादन होता है उसको पूल नहीं कर सकते हैं ? पहले आप नार्थ में 50 प्रतिशत से भी ज्यादा चीनी को प्रोडक्शन करते चले गए और फिर आपने कहाकि खेती के उत्पादन केलिए जोर दिया जाना चाहिए । मै आपसे कहना चाहता हूं कि आपकी जो नार्थ के संबंध में पालिसी है वह फेल होती जा रही है और जो चीनी का उत्पादन को मेन्टेन करने के लिए कोई नीति अख्तियार करने जा रहे है ? मैं आपसे एक और प्रश्न पूछना चाहता हूं । जो आपका नान प्लान ऐक्सपेंडीचर , खर्चा है, वह 25 प्रतिशत बढता ही चला जा रहा है । इस खर्चे को रोकने के लिए आपने क्या कदम उठाए है ? आपने इस संबंध में एक ऐक्सक्यूज दिया है कि बंगला देश के शरणार्थियों की वजह से प्राइसेज हमारे यहां बढी हैं ।

उपसभाध्यक्ष जी, जो विषय अभी इस सदन के सामने है , वह इसलिए कि आज मूल्य वृद्धि को लेकर समूचे देश में एक बेचैनी फैली हुई है और इस संसद के सामन भी इसीलिए विचारार्थ है । इस पर जितना विचार किया गया है उसके सिलसिले में उसके क्या आर्थिक कारण हैं । उन कारणों के उपर कुछ प्रकाश डाला गया है लेकिन एक कारण पर प्रकाश नहीं डाला गया और यह कारण यही है कि जो लोग पॉलिसी बनाते है, सरकार चलाते है , उन लोगों का जो सोशल आउ. टलुक है , जो सामाजिक दृष्टि है , वह किस प्रकार की है ? उस दृष्टि के उपर प्रकाश नहीं डाला गया है । इसीलिए मै उस पर भी कुछ प्रकाश नहीं डाला गया है । इसीलिए मैं उस पर भी कुछ प्रकाश डालना चाहता हूं कि उनकी सामाजिक दृष्टि क्या है । आज कौन हिन्दुस्तान का मालिक है ? कहने के लिए प्राइम मिनिस्टर है , या रा ट्रपति के या और दूसरे लोग होते है, लेकिन समाज का एक तबका ऐसा होता है जिसके ऐजेंट का काम ये मालिक किया करते हैं। और वह तबका है बडी जातका, अंग्रेंजी पढा लिखा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न आदमी का तबका । वही तबका आज हिन्दुस्तान में समाजवाद बना हुआ है । हिन्दुस्तान में प्लान चल रहे हैं, हिन्दुस्तान में सारी चीजें हो रही है और डेमोक्रेसी व सोशलिज्म के नाम से हो रही हैं , लेकिन फिर भी वह सक्सेसफुल नहीं हो रहा है । आप इस बात को समझें। मैं फिगर्स देता हूं और शायद दूसरे लोगों ने भी फिगर्स दी होंगी जिनसे यह मालूम होगा कि आज किस तरह की जरूरत उन चीजों की है जिन चीजें। कोहिन्दुस्तान का गौरव से गरीब आदमी इस्तेमाल में लाता है, इस्तेमाल सिर्फ पहनने और ओढने के लिए नहीं लाता है बल्कि अपनी जान की रक्षा के लिए अपना पेटभरने के लिए लाता है।सक्सेसफुल नहीं होने के क्याकारण हैं ? उनको इंप्लीमेंट करने वाला जो आदमी है, उस के सोशल आउटलुक की तवजह से उसका इंप्लीमेंटेशन ठीक से नहीं हो रहा है । ऐसी चीजों के दाम में कितनी बढोत्तरी हुई हे,इसका मैं उदाहरण देना चाहता हूं । सिर्फ 18 महीने के अंदर दो गुना मूल्य में वृद्धि हुई है। खाद्यान्न में 10 परसेंट की वृद्धि हुई है गत साल से उसी तरह से दलहन में 20 प्रतिशत की तिलहन में 40 प्रतिशत की और मोटे अनाज में 50 परसेंट की वृद्धि हुई है ।

श्रीमान, आपने इनलेंड लैटर पर टैक्स बढाया है, लिफाफे पर भी टैक्स बढाया है । अनाज के दाम सबसे अधिक बढे है । सभी खाद्यान्नों के दाम बढे है। तमाम अखबारों में निकला है कि आपके बजट से 5 प्रतिशत की बढोत्तरी दामों में हुई है, तो आप प्राइसेस को कैसे रोंकेगे ? जब आपने यह वायदा किया कि प्राइज लाइन को रोंकेगे तब ईटों का दाम दुगुना हो गया । मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या सरकार के निकम्मेपन की वजह से यह नहीं हो रहा है ? क्या देश में कोयले की कमी है, क्या वैगनों की कमी है? कोयले की कमी वैगनों के न दिए जाने की वजह से है । आप ट्रैक्टर की कीमत देखिए पहले वह 13 हजार में मिलता था , आज उसकी कीमत कागज पर हैं। आपका क्या कंट्रोल है फैक्टरियों पर ? सीमेंट आज महंगा बिक रहा है , भले ही आप का उस पर कंट्रोल है । स्टील का दाम भी कंट्रोल होने के बवजूद बढा है आप भगवान के वास्ते ऐसी पालिसी बनाइए कि कम से कम 12 घंटे थ्कसान को बिजली मिले अगर 12 घं टे बिजली मिलेगी तो उसकी मजदूरी बेकार नहीं जा सकती। यह ठीक है कि बाढ व सूखे पर आपका कोई कंट्रोल नहीं है । लेकिन एक बात होती है कि जब सरकार की नीयत बंद हो जाती है तब प्रकृति भी आपकी सरकार का साथ नहीं देती है। तो आपमें नेकनीयती की जरूरत है ।

श्रीमान् मैने भी स्वतंत्रता की लडाई में हिस्सा लिया है , लेकिन हमारी कुछ मान्यताएं हुआ करती है । यह जो 25 साल की सिल्वर जुबली मनाई जा रही है ,यह समय आपके लिए आत्म निरीक्षण का है । गांधी जी कहते थे कि मेरा स्वतंत्रता से अभिप्राय यह नहीं है कि पावर किसके हाथों में है , मेरा फ्रीडम का कांसेप्ट यही है कि जनता की कितनी कैपेसिटी बढी है , सत्ता के दुरूपयोग को रोकने में आ 25 साल का खाता बनाइए क्या प्राइसेज को आपने रोका है, क्या निर्देशक सिद्धान्तों को आपने इस्तेमाल किया है जनत के हाथ में ज्यादा षक्ति देने के लिए ? इसलिए मैं अर्ज करना चाहता हूं कि ये जो आपने कदम उठाए हैं। वे कीमतों को बढाने में ही मदद करेंगे आपसे मेरा आग्रह यह है कि आप जो कदम उठाएंवे कीमतों को रोकने के लिए कारगार हों ताकि इस देश की गरीब जनता के क टों को बढाने के बजाय हम कम कर सकें ।

इसलिए मेरा निवेदन यह है कि आप जहां कहीं भी नए रेल स्टेशन या यार्ड बनाते/ हैं, वहां पर आपको अपने कर्मचारियों को सुविधा देनी ही चाहिए , उसके लिए // प्रबंध पहले से ही करना चाहिए ताकि वे अपनी ड्यूटी अच्छी तरह से कर सकें /// आप अपनी तरफ से तो उनको सुविधा प्रदान नहीं करते हैं । और उन पर (1) चार्जशीट लगादेते हैं। मुझे इटारसी के कुछ लोगों का मामला मालूम है जिन्हें / चार्जशीटदिया गया है अब आप उन्हें चार्जशीट देते हैं । तो उन्हें जवाब देने का मौका भी देना चाहिए ताकि वे बतला सकें कि जिस चीज के लिए /// चार्जशीट उन्हें दिया गया है वह ठीक भी है या नहीं । अक्सर यह होता (2) है कि कोई गलती करता है और चार्जशीट किसी दूसरे को दे दिया जाता / है जिसका नतीजा यह होता है कि बेगुनाह आदमी को सजा मिल जाती है और // जो गुनाह करता है वह साफ बच जाता है । इसलिए मेरे कहने का मतलब/// यह है कि जब आप चार्जशीट किसी को देते हैं। तो उस को जवाब (3) देने के लिए समय भी देना चाहिए ताकि वह साबित कर दे कि उसने/ गलती की है या नहीं। आपको उन्हें हर प्रकार की सुविधा देनी चाहिए ताकि // वे अपना काम अच्छी तरह से कर सकें। अगर सुविधा देने के बाद भी वे अपना ///कार्य अच्छी तरह से नहीं करते है। या वे कोई गलती करते हैं । और (4) उसके लिए उन्हें सजा दी जाए तो कोई हर्ज नहीं । अब मैं आपके / सामने ट्रांसफर के संबंध में कहना चाहता हूं । सरकारी नौकर को कहीं भी ट्रांसफर किया जा सकता है , यह बात सही है लेकिन अक्सर देखने में आता है कि एक/// रेलवे कर्मचारी जो हिन्दी क्षेत्र का है उसे मराठी क्षेत्र में भेज दिया जाता है । (5)

अब जब कि उसका ट्रांसफर मराठी क्षेत्र में होता है तो वहां उसको अपने / बच्चों को पढाने में काफी परेशानी का सामना करना पडता है । इस तरह की बातें// साउदर्न और सेन्ट्रल रेलवे में देखने में आती हैं। जो रेलवे कर्मचारी हैं। इस तरह के क्षेत्र /// में चले जाते हैं। वहां उनके लडकों को भाषा का सामना करना पडता (6) है। वे अपने अपने बच्चों को पढने के लिए पुराने ाहरों में छोड आते हैं। इसका /नतीजा यह होता है कि अगर किसी व्यक्ति के दो लडके हो गए तो उसे // अपने लडकों को 50–50 रूपया पढाई के खर्चे के लिए भेजना पडता है /// उसकी तनख्वाह जब बहुत होती नहीं है और खर्चा बढता जाता है तो वह रिश्वत लेता है ।

अध्याय –8.

60 श.प्र.मि.

श्रीमान् , आपने हाउस के अंदर कई बार कहा कि हम अपने कर्मचारियों के लडकों को /पढने के लिए स्कॉलरशिप देते हैं लेकिन देखने में यह आता है कि आप// अपेन कर्मचारियों को इस तरह की कोई सुविधा नही देते हैं। ये लोग तो बडे अफसर ///नही बनेगें सिवाय स्टेशन मास्टर के । जब उनकी तनख्वाह ही कम होगी और (1) उनका खर्चा ज्यादा होगा तो रेलवे में रिश्वत से भ्र टाचार भी दूर नहीं हो सकता // है । आप इन लोगों का ट्रांसफर कर देते हैं। , किसी का खडंवा से मुसावल /// कर दिया । जब आप इस तरह के ट्रांसफर करते हैं । (2) तो आपको देखना चाहिए कि उनके बच्चों के पढने के साधन वहां मौजूद हैं / या नहीं । सलिए मैं चाहता हूं कि रेलवे की जो इस प्रकार कीनीति // है उसमें परिवर्तन होना चाहिए ताकि कर्मचारियों के क ट न बढें वरन कम हों ///उनको अपने बच्चों की पढाई की चिन्ता नहीं रहेगी तो वे काम अच्छा करेंगे । (3) इसका नतीजा यह हो रहा है कि हमारे मुगलसराय की तरफ जो टी.सी. हैं/ उनमें बहुत गहरा असंतोष है । इस संबंध में मैने मंत्रीजी को भी //पत्र भेजकर पूछा था उस पर अब तक कोई कार्यवाही नहीं हुई । तथ्य यह है/// कि जहां पर पदोन्नति की जगह होती है , सलेक्शन ग्रेड प्रमोशन होता है तो ऐसी (4) जगहों के लिए भी कोटा निर्धारितपहले से ही होता है ।

टी.सी.की जगहों / पर इन लोगों को नहीं लिया जाता और उनकी संख्या नगण्य है। इन लोगों // को जान बूझकर नहीं रखा जाता है । मैं यहां पर एक उदाहरण देना चाहता ///हूं । एक व्यक्ति जो सेलेक्टकिया जाता है , संयोग से उसकी मृत्यु हो गई (5) और उसकी जगह पर जनरल केंडीडेट को रख दिया गया लेकिन हरिजन को /नहीं रखा गय । मैं समझता हूं कि सरकार की जो भी नीति है, जो होम// मिनिस्ट्री के आदेश हैं। उनका अच्छी तरह से परिपालन होना चाहिए । शैड्यूल कास्टस और /// शैड्यूल ट्राइब्स के ऐम्पलॉइज एसोसिएशन की तरफ से इस संबंध में मंत्री जी को (6) एक प्रतिवेदन दिया गया था । इसलिए मेरा अनुरोध है कि इस मामले की तरफ / मंत्री जी को ीघ्रता से ध्यान देना चाहिए और उनकी कठिनाईयों को जल्दी उन्हें // दूर करना चाहिए । इन शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं और सरकार /// से आग्रह करता हूं कि जो भी मैंने सुझाव दिए हैं उन पर विचार करें । (7)

मान्यवर, एक बुनियादी बात की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । विरोध/ पक्ष के सब लोग यह जानना चाहते हैं। कि क्या इस सदन में अब वही/ / काम लिया जाएगा जिसको गवर्नमेंट चाहती है और हमारे चेयरमैन महोदय वही बात कहेंगे / / /जो गवर्नमेंट चाहती है । हम कहते हैं कि विरोध पक्ष की चाहे कितनी बडी मेजॉरिटी (1) हो और चाहे व्ह कोई भी मांग करता हो उस पर कोई ध्यान नहीं दिया / जाता है । कभी – कभी यह देखकर दुख होता है कि चेयर की ओर से / / सदन के साथ ऐसा बर्ताव किया जा रहा है जिससे हमारे हृदय में यह/ / / भावना पैदा होती है कि जैसे हमारा तिरस्कार किया जा रहा है । आप इस बात (2) की ओर ध्यान दें कि एक बार एक प्रस्ताव पेश किया गया । बारह घंटे तक / उस पर बहस हुई और बाद में बहुमत से वह स्वीकार किया गया उस समय / / प्रधानमंत्री स्वयं यहां पर मौजूद थे। उनके सामने यह बात आई कि एक कमेटी बना दी जाए तो चेयर (3) ने ऐसा फैसला कर दिया जिससे कमेटी नहीं बनाई जा सकी । उन्होंने कहा कि / प्रस्ताव की भा ाा ऐसी है जिसमें कहीं भी नहीं कहा गया है कि हम / / कमेटी नहीं बनाएंगे । इस संबंध में विरोध पक्ष की जो मंशा थी और जिस पर (4) उतनी देर तक बहस हुई और जिसको बहुमत से स्वीकार किया गया उसको / नहीं माना गया ।

इस सदन के बहुमत की मंशा साफ थी कि इस सदन की/ / एक कमेटी बना दी जाए जो इस मामले को देखे और चेयरमैन को अधिकार दिया / / / गया था कि वह इस संबंध में एक कमेटी बना दें लेकिन उन्होंने वह कमेटी नहीं (5) बनाई । अब सदन को अधिकार दिया जाए कि वह इस संबंध में एक कमेटी / बना दे और इस प्रकार का प्रस्ताव आपके सामने है । इस प्रस्ताव पर सदन में / / बहस होती रही है। कल भी इस पर बहस हुई और भ्र टाचार के मामले पर भी बहस / / / हुई । बिजनेस एडवाइजरी कमेटी ने इस सदन को सूचना दे दी कि अमुक काम (6)के लिए इतना टाइम एलॉट है । मेरा निवेदन यह है कि उस प्रस्ताव को इस / सदन में पेश किया जाना चाहिए ताकि यह मालूम हो सके कि बिजनेस ऐडवाइजरी कमेटी / / की बात को सदन मानता है या नहीं। इस मामले पर 45 मिनट नहीं बल्कि / / / एक घंटे तक बहस हुई । आप इस सदन की गरिमा और अधिकारों के रक्षक हैं। (7)

अध्याय – 10.

60 श.प्र.मि.

उपसभापति महोदय , शिमला समझौते की चर्चा में सरकारी पक्ष की तरफ से जो भाषण/ हो रहे हैं , मैने बहुत कोशिश की कि उन भाषणो में किसी दलील को पा //सकूं , किसी तर्क को ढूंढ सकूं जो कि हम लोगों की दलील के जवाब के /// तौर पर ग्रहण किया जा सके। लेकिन जितना मैं उन भाषणों को सुनता हूं और (1) जितना पढता हूं, अभी मेरे माननीय मित्र बोल रहे थे , वह भी/ उसमें कोई अपवाद नहीं लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि जो भी सरकारी पक्ष के // लोग बोलें उसमें वे दलील का जवाब दलील से देने की कोई कोशिश /// करें बजाय इसके कि विशेषणों का प्रयोग करके अपने मन की तसल्ली कर ले। (2) महोदय, प्रधानमंत्री का भाषण , विदेश मंत्रीजी का भाषण और बाकी कांग्रेस के और/ विरोधी दलों के जो भी उनका समर्थन कर रहे हैं। उन सबके भाषणों//को सुनने के बाद मैं समझ नहीं पाया कि आखिर कौन सी सफलता है जिसके ///नाम पर शिमला समझौते की इतनी तारीफ करने की जरूरत समझी जा रही है। प्रधान (3) मंत्री जी ने अपने बहुत सारे उत्साही अनुयायियों के उत्साह पर थोडा सा पानी गिरा / दिया था जब उन्होंने यह कहा था कि मैं इसको कोई बडी सफलता नहीं // मानता, यह तो एक गुजारे वाली शुरूआत है । लेकिन मालूम होता है कि उनके अनुयायियों /// को यह जरूर साबित करना है कि यह एक महान ऐतिहासिक घटना है। (4)

इसके बराबर की घटना आज तक नहीं हुई और इस वास्ते उनके जोश को / रोकने का कोई तरीका नहीं । परंतु महोदय , प्रधानमंत्री जी ने जो दलीलें दी , जो // तर्क दिए, अगर वे तर्क हैं। तो उनका जवाब देने की मैं आवश्यकता नहीं /// समझता क्योंकि उन्होंने जनसंघ के ऊपर जो कटाक्ष किय, जनसंघ के जन्म की बात कही (5) है , उसकी जड में जाने की जरूरत नहीं । यह इस सदन की मर्यादा के विपरीत / होगा कि हम यहां पर ऐसी घटिया बात करें। मैं तो केवल यह जानना चाहूंगा //कि शिमला समझौते के गुण क्या हैं, इस समझौते में देश ने क्या प्राप्त किय है ? /// महोदय , पहली बात मैं इस समझौते में जो देखता हूं वह है फाइनल सैटलमेंट की । (6) काश्मीर के बारे में फाइनल सेटलमेंट हो गया है, वह कितनी बार हमारे देश के/ प्रधानमंत्री ने , विदेश मंत्री ने संसद में और बाहर सर्वजनिक मंचों से कहा है // कि काश्मीर का सवाल हमेशाा के लिए हल हो चुका है लेकिन आपके आज /// के वक्तव्य से ऐसा लगता है कि काश्मीर के सवाल का फैसला होना अभी बाकी है । (7)

अध्याय – 11.

60 श.प्र.मि.

उपसभापति जी, जो शिमला समझौता अभी इस सदन के सामने प्रस्तुत किया गया है / मैं समझता हूं कि जिस ढंग से यह समझौता किय गया है , वह // देश के लिए अच्छा नहीं हुआ है । इस माने में अच्छा नहीं हुआ है कि /// इस समझौते से हमने कुछ नहीं पाया है । लेकिन जो एक बारगेनिंग पावर हमने (1) इस लडाई के जरिए प्राप्त कर ली थी, वह हमने इस समझौते के द्वारा खो दी है।आगे क्या होगा,क्या नहीं होगा, यह कहना मुश्किल है । पाकिस्तान // ने जो हमारा इलाका अपने कब्जे में ले रखा है,उस के बारे में भी ///हम कुछ नहीं कर सके , लेकिन इस लड. ाई में पांच हजार किलोमीटर जीती जमीन हमने वापस दे दी । (2) लडाई बंद होने के बाद भी पाकिस्तान वालों ने हमारी जो /चौकियां जबरदस्ती कब्जें में कर ली थीं ,उनके बारे में भी शिमला समझौते //में कोई चर्चा नहीं हुई । तो इस तरीके से हमने देखा कि हमने///सिर्फ दिया है ,लिया कुछ भी नहीं है।

सरकार इस समझौते के द्वारा इस तरह (3) का प्र. चार कर रही है कि हमने बातचीत के लिए एक अच्छा वातावरण / तैयार कर लिया है और आगे भी जो बातचीत होगी उसके लिए हमने // एक भूमिका तैयार कर ली इसका नतीजा हमको फलदायक मिलेगा या नहीं ///यह तो भवि य बताएगा लेकिन बातचीत करेन के सिलसिले में हमारे हाथ में जो एक (4) महत्वपूर्ण पहलू था , उसको हमने खो दिया है। अब जो बात करने का / सिलसिला है उस पर हमें आपत्ति है । आज हिन्दुस्तान की क्या समस्या है ?आज हिन्दुस्तान की समस्या यह है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच अशांति बनी है, हिन्दू /// मुसलमानों के बीच एक तरह की अशांति बनी रहती है, इस की जो अशांति (5) है उसको किस तरह से दूर किया जाए और इस अशांति का क्या कारण / है ? इसका कारण वही है जैस कि हमारे एक पूर्व वक्ता ने कहा था // कि अंग्रेज हिन्दुस्तान से जाने के समय हिन्दुस्तान का बंटवारा कर गए ताकि हिन्दुस्तान और /// पाकिस्तान दो टुकडे बन जाएं और वे हमें आपस में लडते रहें। इसी तरह से (6) आज चाहे वे अंग्रेज हों , निक्सन हो , या कोई दूसरा हो, ये सब / चाहते हैं कि हिन्दुस्तान जो एक बडा देश है वह एक मजबूत देश बन पाए // और इसीलिए ये लोग पाकिस्तान को भडकाते रहते हैं कि वह हिन्दुस्तान के/// साथ हमेशा लडता ही रहे ताकि हिन्दुस्तान किसी भी तरह से मजबूत न बन सके । (7)

उपसभापति जी, 24 दिसंबर को भूतपूर्व गृह मंत्री चौधरी चरण सिंह जी पर / जो हमला उनको जान से मारने के लिए किया गया था, उस के संबंध / / में जो चिंता व्याप्त है और जिससे हिंसा का वातावरण इस देश में बन/ / / रहा था और जिन परिस्थितियों में उन पर हमला किया गया है , उनकी ओर (1) मैं सदन का और आपके द्वारा सरकार का ध्यान आकर्ि त करना चाहता हूं । जैसा कि / आप जानते हैं । 22 दिसंबर को चौधरी चरण सिंह जी ने लोक सभा में मंत्रिमंडल / / से त्यागपत्र देने के कारणों पर अपना बयान दिया था । उस सिलसिले में उन्होंने / / / एक बात कही थी कि किस तरह से उनको मंत्रिमंडल से इस्तीफा नहीं देने दिया (2) निकाला गया । उसके बाद 23 तारीख को बोट क्लब पर एक करोड किसानों ने / रैली के रूप में उपस्थित होकर अपने रा ट्रीय नेता की बात सुनी और उस/ / रैली में भी चौधरी चरण सिंह जी ने एक खास बात कही थी और वह / / / बात यह थी कि चाहे कुछ भी हो , भ्र टाचार के साथ मैं किसी भी हालत (3) में समझौता नहीं करूंगा और उनके इस बयान के बाद दूसरे दिन जब वे / किसानों से मिल रहे थे उनसे मिलने आए लोगों से मिल रहे थे तब / / उनके ऊपर इस तरह का प्राण घातक हमला किया गया।वह तो अच्छा हुआ और/ / / देश का सौभग्य था कि वहां पर सुरक्षा अधिकारी और दूसरे लोग सावधान थे और उन्हें (4) कोई चोट नहीं पहुंची। लेकिन अखबारों में जो रिपोर्ट आई है,/ उससे यही प्रतीत होता है कि जो तेज हथियार उसके पास था वह जहर में बुझा था / / और यह भी कहा गया था कि जो केस बनाया गया है, रजिस्टर किया / / / गया है वह केवल ताजीराते हिन्द की धारा 506 के अंतर्गत रजिस्टर (5) किया गया है। इससे लोगों के मन में एक गंभीर आशंका पैदा होती है / कि किसी भी साधारण आदमी के खिलाफ भी यदि इस तरहका हमला हो तो केस हमेशा ताजीराते हिन्द/ /की धारा 307 वे अंदररजिस्टर किया जाता है। यहां भूतपूर्व गृह/ / / मंत्री रा ट्र के ऐसे नेता जिनकी तरफ करोडों लोग आस लगाए बैठ हैं । (6) कि वे देश का मार्गदर्शन सही दिशा में करेंगे , उन पर हमला हो जाए बाहर से /, जहर से बुझे हुए हथियार से और उनका केस रजिस्टर किया जाए ताजीराते हिन्द की धारा 506 के अंतर्गत , इससे लोगों के मन में एक शंका पैदा / / / हुई है । इसके साथ ही जो आदमी पकडा गया उसका बयान है । (7)

अध्याय – 13.

60 श.प्र.मि.

उपसभापति जी , मैं इस बिल का समर्थन करता हूं लेकिन दुख के साथ कहता /हूं कि इस सरकार के पास कोई सूझ –बूझ नहीं है। केवल चीनी मिलों में टेक // ओवर करने से काम नहीं चलने वाला है। चाहिए तो यह था कि चीनी /// मिलों का रा ट्रीयकरण कर लिया जाए , लेकिन यह मुर्गी के हृदय वाली सरकार जिस के (1) पास कोई सिद्धान्त नहीं है, कोई उसूल नहीं है, वह भला यह क्यों करे और/ खास कर के जनता पार्टी में वह घटक जो पूंजीपतियों का सबसे बडा समर्थक // है ,उसके दबाव में आ कर ऐसे जनहित के काम को भी यह पार्टी /// करने से हिचकती है और यह इसे नहीं करेगी । मैं तो सोचता था कि इन (2) मिलों का रा ट्रीयकरण होगा । हमारी बहुत दिनों से मांग है कि चीनी मिलों का रा ट्रीयकरण / होना चाहिए । इस के साथ ही साथ दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि // 20 करोड रूपए चीनी मिलों को आज तक दिए गए हैं।,खुद श्री सिंह ने कहा/// कि 20 से 50 करोड रूपए उन पर पडे हुए हैं। मैं (3) चाहता हूं कि सरकार यह बताए कि यह जो मिल मालिको के पास किसानों/ की गाढी कमाई का 55 करोड रूपया अभी तक पडा हुआ है // उस को चुकता कराने के लिए आप क्या व्यवस्था कर रहे हैं? क्या आपने /// इस पर चिन्तन किया है , विचार – विमर्श किया है , यह बताएं । श्रीमान् , मंत्री महोदय ने कहा है कि (4) बहुत सी ऐसी मिलें चीनी की हैं जहां पर काम करने / वाले मजदूरों को पेमेन्ट नहीं किया गया है। उन की तनख्वाहें बकाया रह गई हैं । मैं // सरकार से जानना चाहूंगा किइन मजदूरों की जो तनख्वाहें बाकी हैं उनकी जो /// ग्रेच्युइटी बाकी है जिनका पैसा बकाया है उसकी जिम्मेदारी किस पर है? मैं (5) जनना चाहता हूं कि सरकार जो करोड रूपया इन चीनी मिलों को काम करने लायक/और मुनाफा कमाने लायक बनाने में खर्च करेगी क्या वे इनको बाद में उन को // हैंड –ओवर कर देंगे या कोई ऐसी व्यवस्था करेंगे कि जो रूपया इन चीनी मिलों को ///चलाने लायक बनाने , मुनाफा कमाने लायक बनाने बनाने पर खर्च होगा उसको वसूलने के लिए (6) आपने कोई व्यवस्था की है ?क्या इस रूपए को आप लोन के रूप में रखेंगे या अंत/में आपका विचार यह है कि चीनी मिलों का रा ट्रीयकरण कर दें मैं इन बातों//स्प टीकरण करना चाहता हूं और इस बिल का हार्दिक समर्थन भी करता हूं ।मै/आशा करता हूं कि आप मेरे प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर देने की कृपा करेंगे।(7)

अध्याय – 14.

महोदय, ये सब अलग – अलग संस्थाएं बनी हुई है और जैसा कि माननीय वक्ता/ने कहा, ऐसे इंस्टीटयूट है जो धार्मिक स्थितियों को आधार लेती है।मुझे //इसमें ऐसा लगता है कि कहीं काई उत्तरदायी नहीं है और एक दूसरे पर/// बात टालने की स्थिति बनी हुई हैं। जब तक इस स्थिति का सुधार नहीं होता (1)तब तक अच्छी से अच्छी योजना अच्छे से अच्छा आदर्श कार्यान्वित नहीं हो सकता है। /मै थोड़ा सा अपना अनुभव आपको बता दूं क्योकि मै शिक्षा के क्षेत्र में खपा हूं। आज से 5 साल पहले युनिवर्सिटी की पर्चियों को जांचना मैने इसलिए छोड़///दिया कि मेरी समझ में भी आ गया कि ये तो सब नकल की गई पर्चियॉ है(2) मैने एक प्रश्न पै. राग्राफ के रूप में दिया था कि भाषा में, वही वाक्य //यानि एक से इस वाक्य अपनी कापियों में लिख दिए।हमारी समझ में आया कि शिक्षक ///ने यह डिक्टेट कर दिया है । अभी–अभी यह स्थितिप पैदा हुई कि एक युनिवर्सिटी (3)के विद्यार्थियों के पर्चे दिए गए तो उन्होंने कहा कि यह कोर्स के बाहर है।और वे उठकर बाहर चले गए यह कहकर कि हम तो सिनेमा देखने //जाएगें।जब लौटकर आए तो वे अपनी–अपनी पुस्तकें ले आए और कहा कि हमें लिखने /// दो नहीं तो बाहर निकलों हम बताते है। जिन्होने इस स्थिति का सामना किया उनमें (4) से कई शिक्षक है जो मारे गए और इनको रोकने के लिए हम कुछ/नहीं कर सके। आज भी अनुचित सधनों का प्रयोग कहीं बंद नहीं हुआ है।कहां// इम्तिहान रह गए है? परीक्षा के बारे में अभी एक माननीय सदस्य कह रहे थे///कि इस को बदल दिया जाए। आप बदल दीजिए और उसी शिक्षक का इस बात की (5) जिम्मेदारी दे दीजिए कि वह क्लास मे देखें रोज पढ़ाए लेकिन आपको इस बात का /इंतिजाम करना पड़ेगा कि शिक्षक और विद्यार्थी के बीच में संबंध पहले कायम हो सकें।//साल भर वह उसको पढ़ाएगा लेकिन शिक्षक के प्राणों की उसकी जान की /// रक्षा का भी इंतिजाम आपको करना पड़ेगा । आज इस तरह की जो स्थिति है (6) कि जो योग्य विद्यार्थी परीक्षा में बैठना चाहता है वह अल्पमत में रह गया है/और जो उपद्रव करके आगे बढ़ना चाहता है वह बाजी मार ले जाता है ।// इस प्रकार की स्थिति जब हमारे संस्थानों में चलती रहेगी तो कैसे हम नौजवानों का/// भवि य उज्जवल बनाएगें और कैसे हम अपने नौजवानों से देश की प्रगति की आशा रखेंगें?(7)

उपाध्यक्ष जी, जिस सम्माननीय स्थान पर आप बैठे है मुझे स्मरण आता है कि उसी / स्थान पर स्वर्गीय जाकिर हुसैन साहब जब यहां बैठते थे और उनके सामने बुनियादी / /शिक्षा का सवाल आता था जिसके कि वह जनक कहे जाते थे तो वह/ / / बड़ी नम्रता से कह देते थे कि इसकी चर्चा मत करों अब यह नही (1) है और मर चुकी है।मैने दो एक बार उनको यह कहते सुना है।/आप शिक्षा की योजना उसका विवरण अच्छे से अच्छा हमारे पास है। कोठारी कमीशन/ / है राधाकृ णन कमीशन है गजेन्द्र गढ़कर कमीशन है कितने ही सेमीनार्स हुए उनकी रिपोर्ट है।/ / /विद्वान मंत्री जो हुए इस विभाग में उनका मार्गदर्शन है सब मौजूद है। आज (2) भी विद्वान वक्ता ने प्रस्ताव पेश किया उसका विदवतापूर्ण भाषण भी मौजुद हो गया है। उसके बाद भी यह आज की डिबेट भी जुड़ जाएगी उस रिकार्ड में ।/ /मगर जब मै सोचता हूं कि जिस दर्द से जाकिर साहब ने बेसिक ऐजुकेशन की/ / / बात कहीं थी आज ये पुस्त्कें भी लाइब्रेरी की शोभा बनी हुई है और कभी (3) इन्हीं कीमती किताबों को छात्रों के आांदोलन में जलाने के काम में लाया गया था वे /जलाई जाती है तो मुझे ऐसा लगता हे कि इस पवित्र क्षेत्र में सबसे/पहले जो हम उस विषम चक्र में फंस गए कि हम निरक्षर थे और चाहा/ / /कि सब लोग पढ़े एक ऐसी संख्या पढ़ने और पढ़ाने वालों की सामने आ (4) गई है जिससे छात्रों और शिक्षकों के संबंध टूटे।

जगह–जगह स्वतंत्र स्थितियां /बनी और सब अपनी – अपनी मनमानी करने लगे । संविधान की स्थिति से भी आप देखे/ / कि कितने है जो इस शिक्षा विभग को नियंत्रित करते हे और कितनी संस्थाए है/ / /जोइस विभाग को भी नियंत्रित करती है लेकिन कहीं कोई उत्तरदायित्व नहीं है।(5)जैसे उदाहरण के लिए यदि आप एजुकेशन मिनिस्टर साहब से कहीं की यह रिपार्ट/की यह स्टेट युनिवर्सिटी की बात है और यह स्टेट सब्जेक्ट है। हम लिखेगें उनको(6)तो हमें इसी प्रकार का उत्तर मिलेगा चाहें कोई भी भ्रष्टचार की बात हो/इसलिए मै कहना चाहता हूं कि चाहे जो भी हम अच्छी–अच्छी योजनाएं बनाते / /है आदर्शवादी स्थितियां रखते है लेकिन जब उनको चलाने की बात होगी तब हमारे/ / /यहां यही समस्याएं पैदा होंगी क्योंकि उसको चलाने के लिए स्टेट जिम्मेदार है।(7)

अध्याय – 16.

श्रीमान, वित मंत्री जी ने बड़ी कोशिश की इा जटिल समस्या का अच्छी वरह से /उत्तर देने की परन्तु में यह कहना चाहती हूं कि यह समस्या बड़ी गंभीर हो//गई है और एक अजगर की तरह मुंह चली आ रही है। जो फिगर्स आने ///दिए है वे बता रहे है कि चंद महीनों के अंदर वे चीजें (1) जिनसे गरीब मजूदूर किसान अपना पेट भरते है तेजी से उनकी कीमत बढ़/रही हैं । आज गरीब जनता यह महसूस कर रही है कि उनका जीना भी//मुश्किल है।आपको पता है कि कनक गरीब लोग नहीं खाते वे तो ज्वार ///खाते हे क्योंकि ज्वार सस्ती होती हैं।इसी तरह से और मोटा अनाज जो गरीब (2) खाते है उनकी कीमतों में बहुत ज्यादा बढ़ोत्तरी हो गई है।चीनी की आपने /कहा है कि 30 परसेंट कीमत बढ़ी है लेकिन हालत यह हे कि आपने //60 परसेंट कंट्रोल में दिया है और 40 परसेंट ओपन में और बाजार में///जाओ तो 4रूपए किलो चीनी मिलती बड़ी कठिनाई से।इसलिए मैं आपसे (3)चा. हती हू कि जो ये खाने की चीजें हे जो दाले है मोटा/अनाज है चीनी है इनकी आप कीमतें घटाएं।

आपने बराबर जिक्र किया //है सरकारी मुलाजिमों की तनख्वाह बढ़ाने का। तो मैं एक बात कहना चाहती हूं कि क्या ///सरकार चाहती है कि शान्तिपूर्ण तरीके से लोग रहें या हर वक्त तूफान मचाएं । सरकारी (4)जो नौकर है वे ही तुफान चमाते है क्योंकि वे स्ट्राइक करते है और सरकार/उनके डर से वेतन बढ़ा देती हैं।वह अगर दस रूपये बढ़ाती है तो // महंगाई 20 रूपये बढ़ जाती हैं। बाकी जो मजदुर है किसान है वे स्ट्राइक नहीं///कर सकते है क्योंकि वे संगठित नहीं है उनके लिए आपने क्या समाधान किया (5) है? मेरे अपोजीशन के भाइयों को खाने की चीजों की इतनी फिक्र नहीं है/जितनी स्टील की कीमतों की मगर मै कहती हूं कि पहले खाने की चीजों की ये///फिक्र होनी चाहिए स्टील की फिर।इसलिए मै यह कहना चाहती हूं कि ये ///जो चीनी की हमारी मिलें है उनको जैसा कि मैने पंजाब में (6) कहा था मै यहां फिर दोहराना चाहमी हूं कि आप उनका नेशनलाइजेशन कीजिए ताकि/जो बीच का व्यापारी प्राफिट ले रहा है उनको रोका जा सके। कई दफा//इतनी कमी नही होती है लेकिन लोग कमी क्रिएट करते है और उससे लाखों///रूपया कमा लेते है लेकिन गन्ना पैदा करने वाले लोगों का शोषण किया जाता है। (7)

श्रीमान, अकाल अब धीरे–धीरे हरित क्रांति को समाप्त करके देश में काले बादल/के समान छा गया है। मैं सरकार से इस बारे में घोषणा करने की आवश्यकता//समझता हूं कि सरकार को इस तरह की स्थिति को रा ट्रीय संकट घोषित करके///इसका मुकाबला करना चाहिए। अगर वह उस तरह की कोई घोषणा करती है तभी (1) वह इस संकट का मुकाबला कर सकती है क्योंकि आज देश के आठ राज्यों / में अकाल पड़ा हुआ है।महोदय,बिहार में अकाल का विश्लेषण करके तो यही// कहना पड़ेगा कि पिछले साल रबी और खरीफ फसलें समाप्त हो गई। इस बार भी//आपको पता होगा कि आपने बिहार सरकार को जो रूपये बाढ़ सहायता के (2) लिए दिए थे उसमें से पांच करोड़ रूपये बिना पीड़ितों को दिए गए।वह/रूपये केन्द्र को रिटर्न हो गया है।वहां के लोग असहाय पड़े हुए है और //सरकार भी असहाय है।रबी की फसल से जो सहायता लोगों को मिल सकती थी ///वह भी नहीं मिल पाई जिसके कारण वहां की जनता को कई प्रकार(3)का कष्ट सहन करना पड़ रहा है।

इसी तरह से गरमी की जो फसलें वहां/पर पैदा होती थी वें भी समाप्त हो गई है और मैं आपको यह//भी बताना चाहता हूं कि वहां पर कई लोग भूख के कारण मर चुके है/// और अब यह स्थिति और जगह भी तेजी फैल रही है।आज अकाल की (4) वजह से कई राज्यों में संकट की स्थिति पैदा हो गई है।जिसको मै/यहां पर दोहराना नहीं चाहता हूं । इस संकट का अध्ययन करने के लिए केन्द्र की//ओर से कुछ स्टेटों में टीमें भेजी गई है।कुछ स्टेटों में तो इस तरह की/// टीम भेजने का आग्रह भी किया गया है । तो मेरा नम्र निवेदन हे कि केन्द्र (5) सरकार की ओर से इस तरह के संकटों को दूर करने के लिए राज्यों को /सहायता दी जाए। राजस्थान सरकार को करोडो रूपया दिया गया जिसमें से करोड़ों रूपया //गबन हो गया।जहां तक बिहार की बात है मै आपसे यह कहना चाहता///हू कि आप उसका जो भी सहायता जिस कार्यके लिए भी दें (6) वह आप बिहार सरकार के ऊपर न छोड़े बल्कि आप इस बात के लिए व्यवस्था /करे कि जो भी कार्य आपकें पैसे से वहां पर किए जाते है वे//पूरे कर लिए जाते है या नहीं । इस काम के लिए यह देखना आवश्यक है///कि जो कार्य उनको रोकने के लिए दिए जाते है वे पूरे होते है या नहीं। (7)

श्रीमान, इम लोग देहात से आते है और हम लोग पाते यह है कि हदबंदी/से फाजिल जमीन के लिएजो संघर्ष होते है उस संघर्ष के लिए केस फाइल करना//कचहरियों में गरीबों के लिए बिलकुल ही असंभव हैं। उसी तरह से जनित केसेज न्यूनतम मजदूरी से जनित केसेज छुआछुत से उत्पीड़ित और उससे जनित केसेज (1) बहुत से जो केसेज होते हे उन तमाम केसेज को कचहरियों में/लाना गरीबों के लिए एक असंभव सी बात हो गई है। इसीलिए //जरूरत इस बात की है कि जो कानून सरकार ने पारित किए है उनके///जरिए अगर सरकार सचमुच में गरीबों को न्याय देना चाहती (2) है कि विभिन्न तरह के जो सामाजिक कानून पास हूए है उन कानूनों के जरिए/गरीबों को राहत मिले तो जरूरत इस बात की है कि सरकार उनको सस्ता //न्याय देने के संबंध में कोई मजबूत कदम उठाए। क्या होना चाहिए? प्रश्न यह/// है कि केसे सस्ता न्याय उनको दिलाया जा सकता है? एक सुझाव आया कि सस्ता न्याय दिलाने के लिए सरकार को कोई बोर्ड या इस तरह का कोई कानून नहीं/बनाना चाहिए बल्कि वालंटरी जो आर्गनाइजेशंस है उनके ऊपर इस बात को छोड़ देना//चाहिए कि वे चंदा दे और चंदे के जरिए जो पैसा आए और उस चंदे/से गरीबों को न्याय मिले यह संभव नहीं होगा। इंग्लैंड और अमरीका के अंदर मुझे //जानकारी नहीं है लेकिन मै जानता हूं कि उन देशों के इंदर न्याय सस्ता नहीं///है बल्कि न्याय बहुत ही महंगा हैं इसलिए वालंटरी आर्गनाइजेशन के जरिए पैसा (5) जमा करके गरीबों को सस्ता न्याय दिलाया जा सके यह हमारे लिए/स्वीकार करना या इसका समर्थन करना संभव नहीं हैं। इस//तरह से मै समाजवादी देशों के बारे में कुछ जानता हूं जिन देशों में कम्यूनिस्ट ///पार्टी की हुकूमत है अभी मिश्रा जी ने बोलते हुए उन देशो के बारे में (6) आलोचना की। जहां तक मेरी जानकारी है उन देशों में जो वकील होते है वह/सरकारी वकील होते है। पक्ष और विपक्ष दोनों को सरकार की तरफ से वकील बिला//फिस का कमलता है। मै चाहता हूं कि सरकार का ऐसे देशों के अंदर न्याय ///दिलाने की जो पदधति है उसका बहुत ही गहराई से अध्ययन करना चाहिए। (7)

महोदय, अगर सामाजिक देशों की पध्दति सचमुच में गरीबों को न्याय दिलाने में सफल होती है/अगर उनसे सचमुच में गरीबों को उससे सस्ता न्याय मिल जाता है तो/ /मै समझता हूं कि भारतवर्ष को उस पध्दति को लागू करने की दिशा में/ / /गंभीरता से विचार करना होगा

क्योंकि सस्ता मै समझता हूं कि सदन में घोषणा करने (1) से नहीं होगा गरीबों के बारे में तो आपकल बातें करना मंत्र जपने क समान/हो गया हैं। शायद ही कोई व्यक्ति हो जो गरीबों की तरक्की न चाहता हो जो/ /हिन्दुस्तान में पूंजीवाद का समर्थक हो जो हिन्दुस्तान में अमीरशाही का समर्थक हो जो हिन्दुस्तान में मोनोपली का समर्थक हो पूंजीवाद का समर्थक हो। वह आदमी लब इन गरीबों का नाम लेकर उनकी सहायता की बात (2) चलाता है तो मुझे बड़ी ही उनकी/नियत पर गहरा संदेह होता हैं। इस लिए मै चाहता हू कि सरकार/ / जब हिन्दुस्तान के संविधान में समाजवाद का लक्ष्य स्वीकार करती है उसकी प्रस्तावना में/ / /समाजवादी लक्ष्य है अगर समाजवादी उददेशय उसकी प्रस्तावना में है तो सहज प्रस्तावना तक (3)वह सीमित नही रहना चाहिए। अभी मिश्र जी ने कहा कि दूसरे बहुत से सेक्शंस/ऐसे है जहां सस्ता न्याय देने की दिशा में संविधान में कुछ संशोधन किया गया है/ /डाइरेक्टिव प्रिंसिपल्स में इस तरह की बात कही गई है कि हमें सस्ता न्याय/ / / देना चाहिए । तो ऐसी अवस्था में जब संविधान में इस तरह की बातें हे तो (4) जब संविधान तो हमारे देश का बुनियादी कानून हेउस कानून से दूसरे कानून ऐमनेट करते/है।ऐसी अवस्था में दूसरे कानूनों को बनान चाहिए ताकि गरीब लोगो को न्याय / /सस्ता सुलभ हो सके। एक बात और कहकर मैं अपनी बात समाप्म करूगा/ / /और वह यह है कि सी.आर.पी.सी. में सरकार ने एक प्रावधान किया (5)था कि केस जो फाइल होगा थाने के अंदर और अनुसंधान जो थाने के अंदर/होगा उसमे गांवों से जो लोग जाएगे उनमें गवाही देने के लिए तो/ /उनको टी.ए.दिया जाएगा। यह सी.आर.पी.सी. का संशोधन जहां तक/ / /मुझे स्मरण है 1972 या 1974 में हुआ था और इस तरह(6)का प्रावधान वहा किया गया था। मै समझता यह हू कि गरीब जो कि फाइल/केस करता है उसको न्याय नहीं मिलता है क्योंकि वह उसमें जाने का व्यय/ /वहन करने में असमर्थ हो जाता है।मै सरकार से जानना चाहता हूं कि/ / /सी.आर.सी.सी. जो इस तरह का प्रावधान करता है उसके लिए काई उचित रूप से व्यवस्था हो (7)

अध्याय – 20.

महोदय, कानून सहायता के संबंध में जो प्रस्ताव आया है मै उसका समर्थन करता /हू। मै इसलिए समर्थन करता हू कि मेरी समझ यह है कि //जनतंत्र के अंदर गरीबों से को सस्ता न्याय दिलाना राज्य की जिम्मेदारी होनी चाहिए। लेकिन आजादी/// के 35–36 व ा के बाद भी देखने को यह मिलता है कि आज भी (1) लोगों को महगें दर पर न्याय मिलता हैं।गरीबों को कचहरियों में पहुचना और सस्ता/न्याय पाना एक असंभव सी बात है।अगर सही मायने में देखा जाए तो // सुप्रीम कोर्ट में जितने भी केसेज है उनका 99.9 परसेंट केस अमीरों ///के बीच के ही है। हाईकोर्ट की भी हालत करीब करीब उसी तरह की (2) है और डिस्ट्रिक्ट कोर्ट की भी हालत उसी तरह की है।क्या इसका अर्थ यह /लगाया जाए कि देश के अंदर गरीबों पर कोई जुल्म और अत्याचार नहीं होता है//जिससे वे कोई केस होईकोर्ट में या सुप्रीम कोर्ट में या जिला कोर्ट/// में या उसके नीचे नहीं लाते? ऐसी बात नहीं हैं। कारण यह है कि वे अपने केस इन कचहरियों से कर सकें और लाने में जो खर्चा होता है। उस //को वहन करना बार्दाशत करना उनकी आर्थिक शक्ति के परे की बात है। केसेज///को हाईकोर्ट में लाने की बात तो छोड़ दीजिए बहुत से ऐसे भी केसेज है (4) कि जिन केसेज को वे थाने में ले ही नहीं जाते है इसलिए /कि उनकी हमेशा कचहरियों में जाने की फीस//उसके जाने का खर्च और कोई कोर्ट का//खर्च इनत माम खर्चो के चित्र जब प्रस्तुत होते है तो वे कचहरियों में केस///फाइल करना उचित नहीं समझते है। इसलिए जो गरीबों को न्याय मिलना चाहिए वह(5)न्याय नहीं मिल पाता है। सरकार बार–बार घो ाणा करती है कि गरीबी रेखा के/चीमे रहले वालों की संख्या 50 प्रतिशत है इसलिए ऐसे लोग कचहरियों में//जाएं और यह महंगा न्याय प्राप्त करे। यह उनके लिए असंभव सी बात है।///सरकार ने बिुत तरह के कानून बनाए है हदबंदी का कानून बनाया है (6) फाजिल जमीन का कानून बनाया है न्यूनतम मजदूरी का कानून बनाया है सोशल डिसेबिलिटी का/ कानून बनाया है और इस तरह के अनेक समाज सुधार के कानून बनाए है//जो कि आम तौर पर गरीबों के लिए ही बनाए गए हे और उनसे///अपेक्षा की गई थी कि इन कानूनों के जरिये गरीबों को कुछ राहत दिलाए। (7)

आशुलिपि उच्च गति अभ्यास

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **आशुलिपि उच्च गति पर ।**

अभ्यास 1

80 शब्द प्रति मिनट

महोदय, सम्पति के मौलिक अधिकारों सबंध में कुछ लोग कहते हैं कि डेढ़ सौ रूपया पाने वाला गरीब आदमी जो पोस्ट–ऑफिस में जमा कराता है, वह भी उस का सम्पति का अधिकार है और उसके इस अधिकार को आप क्यों छीनना चाहते हैं? मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि इस अधिकार का फायदा किस ने उठाया है? क्या उस आदमी ने जिसके पास डेढ़ सौ रूपए की आमदनी है या जिसकी डेढ़ सौ रूपए (1) की बचत है, उस को कुछ फायदा मिला है? या उन लोगों को फायदा मिला है जो पूरे देश में 75 परिवार हैं ओर जिनका देश की चालीस प्रतिशत दौलत पर कब्जा है। अगर उसका फायदा उन लोगों को मिला है जिन्होंने देश की चालीस प्रतिशत सम्पत्ति पर कब्जा कर रखा है तो हमें निश्चित रूप से इस पर पुनर्विचार करना होगा। सम्पति के अधिकार को मूलभूत अधिकारों में से निकालना होगा और रोजगार को मूलभूत (2) अधिकारों में शामिल करना होगा ताकि सरकार की जिम्मेदारी हो कि वह इस तरह की योजनाएं बनाए जिस में सब को रोजगार मिल सके ओर नहीं तो उन लोगों को बेरोजगारी का भत्ता दे, तभी हमारा दृष्टिकोण इस दिशा में सही बन सकता है।

मैं एक बात और कहना चाहता हूँ, आप देखें कि आज क्या स्थिति है। आज स्थिति यह है कि आज एक आदमी खेती भी करता है, वह आदमी वकालत भी करता है और वह आदमी (3) बिजनेस भी करता है । वही आदमी ससंद का सदस्य भी हो सकता है और उसके साथ और दस धंधें कर सकता है। उसके लिए कोई पाबंदी नहीं है और दूसरी तरफ बीस करोड़ आदमी ऐसे हैं कि जो गरीबी की न्यूनतम सीमा रेखा के नीचे रहते है, जिनको कोई रोजगार उपलब्ध नहीं है। तो इन दो स्थितियों में हमें तुलना करनी पड़ेगी कि क्या सम्पति के अधिकार को सुरक्षित रखते हुए हम इन निरीह लोगों को छोड़ दें कि (4) जो देश के असली नागरिक है अगर हम उनको नही छोड़ना चाहते तो हमें निश्चित रूप से एक बात करनी चाहिए कि जिसमें एक आदमी को एक ही रोजगार हो, उससे अधिक नही और उसमें उनका पेट भरने लायक दाम मिलना चाहिए। आज तो हमें न्यूनतम आवश्यकताएं चाहिए। जो मूलभूत आवश्यकताएं है, उनको पूरा करना है, आराम नहीं चाहिए। उन को तो आज कपड़ा मिल जाएं, रोटी मिल जाएं, मकान, स्वास्थ्य और शिक्षा की (5) सुविधा मिल जाए। यदि हम उनकी न्यूनतम आवश्कयकताओं की पूर्ति कर सकें तभी हम देश को सही रास्ते पर ले जा सकेंगे। आज की जो अर्थव्यवस्था है, उसमें जिस आदमी के पास पैसा है, जिस के पास साधन है, उस को छूट है कि वह चाहे जितना पैसा कमाए लेकिन जिसके पास पैसा नहीं है, जिसके पास श्रम शक्ति है, जिसके पास केवल उसके हाथ–पैर हैं, वह भी अपने पैरों पर खड़ा हो सके, इसके लिए सरकार के पास कौनसी योजनाएं है और वह उन योजनाओं को कैसे लागू करना चाहती है।

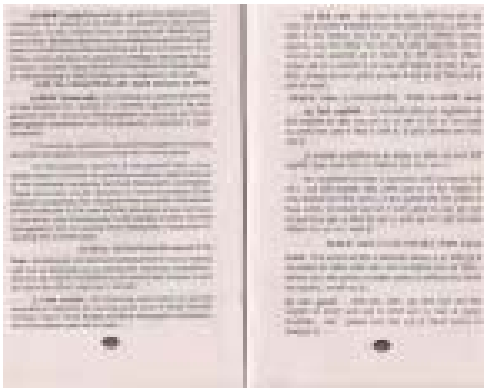

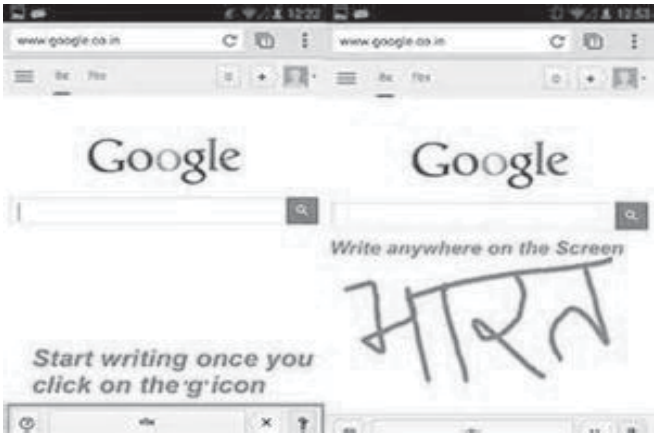

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

उपसभापति महोदया, हमारे देश के जो वैज्ञानिक हैं ओर जो प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगे हुए हैं उन के सबंध में अक्सर समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि वे कई कारणों से देश को छोड़ कर विदेश में जा कर बस जाते हैं। मैं भारत सरकार से निवेदन करना चाहता हूँ कि इन कारणों की जांच होनी चाहिए कि क्यों हमारे वैज्ञानिक आत्महत्या कर लेते हैं या विदेशों में जा कर बस जाते हैं? अपने विज्ञान के काम (1) में विदेश में रहना चाहते है, इस देश में नही रहना चाहते है? इन शब्दों के साथ में एक बार फिर सारे वैज्ञानिकों के प्रति, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने वाले वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के प्रति और उन के साथियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि हमारे देश के वैज्ञानिकों इस देश को आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ाते रहेंगे।

आदरणीय उपसभापति महोदया, माननीय चित्त बसु ने जो प्रस्ताव रखा है वह सिर्फ एक राज्य (2) के बारे में रखा है कि पश्चिमी बंगाल को किस तरह बढ़ाया जाए। होना यह चाहिए था कि देश के जितने पिछड़े हुए राज्य हैं, उन को किस तरह बढ़ाया जाए और क्षेत्रीय असमानताओं को किस तरह मिटाया जाए ऐसा प्रस्ताव होता तो वह स्वागत योग्य होता मगर इन्होने केवल एक ही राज्य को आगे बढ़ाने की बात कही है जो कि पहले से ही बढ़ी हुई है। आज से कुछ साल पहले बंगाल सबसे ज्यादा औद्योगिकी था लेकिन जब से लेफ्ट फ्रट सरकार वहां आई है तब से वहां का औद्योगिकरण समाप्त होने लगा है। पश्चिमी बंगाल में मार्क्सवादी सरकार जब से आई है तब से वहां के औद्योगिकरण में बड़ा अंतर हो गया है और तब से मद्रास, गुजरात, तमिलनाडु और हरियाणा आगे बढ़े हैं, वरना पहले पश्चिमी बंगाल सबसे आगे था। हम चाहते हैं कि जितने भी पिछड़े राज्य हैं, खासकर राजस्थान जो सबसे पिछड़ा हुआ हैं ओर जिसकी प्रति व्यक्ति आय सबसे कम है, वहां भारत सरकार की औद्योगीकरण में जो लागत हुई है, वह सबसे कम है। इस प्रकार के राज्य के प्रोतसाहन देना चाहिए न कि पश्चिमी बंगाल को जो कि पहले से ही आगे हैं। हमारे यहां के तमाम पूंजीपति बंगाल में बैठे हुए हैं और उन्होने वहां उद्योग लगा रखे हैं, वह सारे उद्योग राजस्थान में आ जाए, या पूंजीपति आ जाएं तो हम उसका स्वागत करेंगे। ये लोग हमारे मारवाड़ी पूंजीपतियों को वहां खींच कर ले जाए है और फिर भारत सरकार से कहते है कि पश्चिमी बंगाल को आगे बढ़ाने में जितना प्रयत्न किया है वह स्वागत योग्य है। हमारी तो भारत सरकार से शिकायत है कि आपने पश्चिमी बंगाल को ज्यादा दिया है और दूसरे राज्य जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान को पिछड़ा रखा है अतः उन के विकास की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। राजस्थान में गरीबी की सतह से नीचे पचास प्रतिशत लोग हैं, जहां लगातार अकाल पड़ता है, वहां की हालत दयनीय है, वहां पर और ज्यादा औद्योगिकरण होना चाहिए।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

उप सभापति महोदया, हमारे देश के जो वैज्ञानिक हैं ओर जो प्रोद्योगिकी के क्षेत्र मे लगे हुए हैं उन के सबधं में अक्सर समाचार पत्रों मे पढ़ने को मिलता है कि वे कई कारणों से देश को छोड़ कर विदेश में जा कर बस जाते हैं। मैं भारत सरकार से निवेदन करना चाहता हूँ कि इन कारणों की जांच होनी चाहिए कि क्यों हमारे वैज्ञानिक आत्महत्या कर लेते हैं या विदेशों मे जा कर बस जाते हैं? अपने विज्ञान के काम में विदेश में रहना चाहते हैं, इस देश में नही रहना चाहते है? इन शब्दों के साथ मै एक बार फिर सारे वैज्ञानिकों के प्रति, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने वाले वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के प्रति और उन के साथियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि हमारे देश के वैज्ञानिक इस देश को आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ाते रहेंगे।

आदरणीय उपसभापति महोदया, माननीय चित्त बसु ने जो प्रस्ताव रखा है वह सिर्फ एक राज्य के बारे में रखा है कि पश्चिमी बंगाल को किस तरह मिटाया जाए–ऐसा प्रस्ताव होता तो वह स्वागत योग्य होता मगर इन्होंने केवल एक ही राज्य को आगे बढ़ाने की बात कही है जो कि पहले से ही बढ़ी हुई है। आज से कुछ साल पहले बंगाल सबसे ज्यादा औद्योगिक था लेकिन जब से लेफट् फ्रंट सरकार वहां आई है तब से वहां का औद्योगिकरण समाप्त होने लगा है। पश्चिमी बंगाल में मार्क्सवादी सरकार जब से आई है तब से वहां के औद्योगिकरण में बड़ा अंतर हो गया है और तब से मद्रास, बंगाल, गुजरात, तमिलनाडु और हरियाणा आगे बढ़े है, वरना पहले पश्चिमी बंगाल सबसे आगे था। हम चाहते हैं कि जितने भी पिछड़े राज्य हैं, खासकर राजस्थान जो सबसे पिछड़ा हुआ है ओर जिसकी प्रति व्यक्ति आय सबसे कम है, वहां भारत सरकार की औद्योगिकरण में जो लागत हुई हैं, वह सबसे कम हैं। इस प्रकार के राज्य को प्रोत्साहन देना चाहिए न कि पश्चिमी बंगाल को जो कि पहले से ही आगे है। हमारे यहां के तमाम पूंजीपति बंगाल में बैठे हुए है और उन्होनें वहां उद्योग लगा रखे है, वह सारे उद्योग राजस्थान मे आ जाएं, या पूंजीपति आ जाए तो हम उनका स्वागत करेंगे। ये लोग हमारे मारवाड़ी पूंजीपतियों को वहां खींच कर ले गए है फिर भी भारत सरकार से कहते है कि पश्चिमी बंगाल को आगें बढ़ाने मे जितना प्रयत्न किया है वह स्वागत योग्य है। हमारी तो भारत सरकार से शिकायत है कि आपने पश्चिमी बंगाल को ज्यादा दिया है और दूसरे राज्य जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान को पिछड़ा रखा है अतः उन के विकास की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। राजस्थान में गरीबी की सतह से नीचे पचास प्रतिशत लोग हैं, जहां लगातार अकाल पड़ता है, वहां की हालत दयनीय है, वहां पर और ज्यादा औद्योगीकरण होना चाहिए।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

उपसभापति महोदया, मै इस एप्रोप्रिएशन बिल का समर्थन करता हूँ ओर समर्थन करते हुए मैं तमाम सदस्यों को यह कहना चाहता हूँ कि जब–जब बजट मैं कर की वृद्धि का प्रस्ताव आता है, मैं उसका तहेदिल से समर्थन करता हूँ ओर इसीलिए समर्थन करता हूँ क्योंकि मेरी यह राय है कि जब तक हिदुस्तान के जितने रिसोर्सेज हैं, उन सबका संग्रह न करें तब तक हमारी जो योजना है, वह कभी भी सफलीभूत नहीं हो सकती। बदकिस्मती है कि हमारी वैसी आर्थिक स्थिाति नहीं सुधरी है ओर इसलिए हमें विदेशों से कर्जा लेना पड़ता है। विदेशों से कर्जा लेना कोई शर्म की बात नही है। सब सरकारें लेती हैं ओर उससे काम चलाती हैं लेकिन हमारा बराबर यह निजी विचार रहा है कि देश मे जो टैक्स देने वाले लोग हैं। उनसे टैक्स लिया जाए ओर अमीरों से ज्यादा लिया जाए तथा गरीबों से कम लिया जाए। यह हमारा विचार बराबर रहा है लेकिन मेरी शिकायत है कि अभी जो हमारी सरकार है, वह समाजवाद की स्थापना के लिए बात करती है किंतु इसकी जो आर्थिक नीति है, वह मिश्रित अर्थव्यवस्था की है। गंगा–जमुना की नीति है ओर यह जो गंगा जमुना की नीति है वह मुल्क के लिए अच्छी चीज नहीं है। कितने दिन तक यह चलेगी यह तो पता नही ओर इसीलिए हमारी सरकार कभी–कभी अमीरों पर रहम करती है। उनसे तो इतना टैक्स लेना चाहिए कि हमें बाहर के जो देश हैं, उनसे कर्जा लेने की जरूरत न पड़े। इसके साथ ही साथ जो मध्य वित्तीय दर्जे के लोग हैं जिनकी माली हालत अच्छी है, उन से भी जरूर टैक्स लिया जाए ओर गरीबों से कम लिया जाए लेकिन ऐसी स्थिति नहीं है।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

सभापति महोदय ,वित्त मंत्री महोदय के बजट भाषण पर कई माननीय सदस्य अपने विचार व्यक्त कर चुके हैं। कुछ सदस्यों ने वित्त मंत्री महोदय के सामने बड़े अच्छे सुझाव भी रखे हैं। मैं भी सदन को इस संबंध में अपने विचारों से अवगत कराना चाहता हूं । सर्वप्रथम मै कर ढांचे के बारे में अपने विचार रखना चाहता हूँ बजट में करों में कुछ छूट दी गई है लेकिन कुछ वस्तुओं पर कर बढ़ा दिये गए हैं जो आम आदमी (1) के प्रयोग में नहीं आती हैं। वित्त मंत्री द्वारा करों में जो राहतें दी गई हैं उससे गरीबों को कुछ लाभ होगा इसमें संदेह है। मेरे विचार से भारत की कर प्रणाली को बहुत सरल बनाया जाना चाहिए । कर इस प्रकार से लगाए जाने चाहियें जिससे आम लोगों पर इसका प्रभाव न पड़े । हम देखते हैं कि सरकार किसी वस्तु पर थोड़ा कर लगाती है लेकिन बाजार में उसके दाम बहुत बढ़ जाते है। (2) कर बढ़ानें के साथ–साथ सरकार को यह भी कहना चाहिये कि किस–किस वस्तु के दाम नहीं बढ़ाए जायेंगे । सरकार यदि ऐसा नहीं करती है तो वस्तुओं के दाम बढ़ते जाते हैं और सरकार उसे रोक नहीं पाती है। सरकार को ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे देश की गरीब जनता को लाभ मिल सके ।

महोदय , यह प्रसन्नता की बात है कि सरकार का ध्यान मूल्यों के बढ़ने पर पूर्ण रूप से है। इस बात के लिये सकरार प्रयास भी कर रही है कि भविष्य में मूल्यों में वृद्धि न हो । बजट में इस बात का भी वर्णन किया गया है कि जो असंतुलन है उसको भी दूर करने का प्रयास किया जाएगा। यह बहुत ही सराहनीय कार्य होगा और मेरी समझ में इससे देश का विकास होगा। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर करती है। बजट में किसानों के लाभ के बारे में कोई जिक्र नहीं किया गया है। किसान मेहनत से अपने खेत में अनाज पैदा करता है सराकर को चाहिये कि किसान के अनाज को बेचने की अच्छी व्यवस्था कर दे और उन्हें उचित मूल्य दिला दे। इससे किसान अपने खेत में पैदावार बढ़ाने का प्रयास कर सकते हैं। मैं मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहता हूँ कि बजट में कुछ संसोधन करने पर विचार किया जाए और उसमें ऐसे निर्णय लिए जाएं ताकि देश में जिस उद्देश्य के लिये प्रजातंत्र है, वह पूरा हो सके ।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

अध्यक्ष महेदय , वित्त मंत्री महोदय ने इस सदन में जो विध ोयक पेश किया है मैं उसका पूर्ण रूप से समर्थन करता हूँ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा प्रज. ातन्त्र बना। उस समय सभी देश वासियों ने यही सोचा था कि देश का शासन जनता के हाथ में होगा और इसके साथ ही देश में समाजवाद की स्थापना भी होगी । जनता को आशा थी कि देश में अब किसानों और मजदूरों का राज होगा। (1) इसी उम्मीद के साथ हमारे देश में प्रजातंत्र की स्थापना हुई और जनता का शासन स्थापित हुआ।

महोदय, बहुत देख के साथ कहना पड़ता है कि स्वतंत्रता के 61 वर्षों बाद भी हमारे देश में आम जनता को मूलभूत आवश्यकताएं उपलब्ध नहीं हो पा रहीं है। देश में बेरोजगारी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। देश के नवयुवकों में इससे बड़ा असंतोष है। आज भी हमारे देश में ऐसे कई स्थान हैं जहां लोगों को पीने का पानी नहीं मिलता है। आज भी देश में कई लाख लोग बेरोजगार हैं आज भी लाखों की संख्या में ऐसे किसान हैं जो गॉवों में बसे हुए हैं और जिन्हें अपनी मेहनत का पूरा पैसा नहीं मिलता । देश में हजारों ऐसे लोग हैं जो अपने पारंपरिक धंधों पर निर्भर हैं लेकिन आज वे भी बेकारी के कारण परेशान हैं । हमारे देश में योजनाएं तो बहुत बन रहीं है। लेकिन इन समस्याओं के समाधान के लिये कुछ नहीं किया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय, रेल मंत्री जी ने जिन परिस्थितियों में अपना काम संभाला वे बहुत ही कठिन परिस्थितियों थीं। पिछली सरकार ने रेल की व्यवस्था को बहुत खराब कर दिया था। इसके बावजूद रेल मंत्री जी ने रेलवे में सुधार लाने के लिये जो प्रयास किये हैं मैं इसके लिए उन्हें बधाई देता हूँ। देश उस समय बड़ी कठिनाइयों में से गुजर रहा था। ऐसे समय में रेलवे ने लोगों तक आवश्यक चीजों को समय पर पहुंचाया । (4) मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि देश के ऐसे क्षेत्रों में जहाँ पीने के पानी को पहुंचाया गया। संकट के समय में भी रेलवे ने पूरी जिम्मेदारी के साथ अपने दायित्व को निभाया है। जब –जब भी हमारे देश में शत्रुओं का आक्रमण हुआ उस समय हमारी सेनाओं के साथ – साथ रेलवे ने भी दक्षता का परिचय दिया । तब से अब तक और आज भी उसी गति से काम कर रही है। रेलवे आज हमारी एकता का प्रतीक बन गया है।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

अध्यक्ष महोदय , देश के स्वतंत्र होने के पहले ही लोगों ने यह कल्पना की थी कि स्वाधीन भारत में शिक्षा व सरकारी काम काज देश की अपनी भाषाओं में सम्पन्न होना आरंभ हो जायेगा । स्वाधीन होते ही देश के अनेक विश्वविद्यालयों ने इसी भावना का अनुसरण करते हुए अपनी शिक्षा और परीक्षाओं में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं को समुचित स्थान भी दे दिया था। हिन्दी भाषी क्षेत्रों के अनेक विश्वविद्यालयों में शिक्षा और परिक्षा का माध्यम हिन्दी हो चुका था। लेकिन जैसे – जैसे समय बीतता गया, लोगों की सोच में अन्तर आने लगा। लोग अनुभव करने लगे कि हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्राप्त नवयुवक सरकारी नौकरियों में उचित मात्रा में नहीं आ पा रहें हैं। उच्च शिक्षा की तो बात अलग थी पर छोटे स्तर के पदों को प्राप्त करना भी उनके लिए बहुत कठिन हो गया था क्योंकि सरकारी पदों पर भर्ती के लिए अंग्रेजी आवश्यक थी। ऐसी स्थिति को देखते हुए जनता के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक था कि क्यों न शिक्षा का माध्यम फिर से अंग्रेजी कर दिया जाए। ऐसी बदलती सामाजिक धारणा को रोकना आवश्यक था क्योंकि देश की अपनी भाषाओं को समुचित स्थान न मिलना राष्ट्रीय हित में नहीं था । अतः सरकार ने सरकारी पदों पर भर्ती की परिक्षाओं में हिन्दी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को मान्यता प्रदान कर दी । इस से लोगों की सोच में तो अन्तर अवश्य आया परन्तु वास्तविक रूप में आज भी हिन्दी या क्षेत्रीय (3) भाषाएं उस स्थान पर नहीं आ पाई हैं जहॉ उनको आना चाहिए था ।

केन्द्र सरकार ने भी अपना सरकारी कार्य हिन्दी में सम्पन्न करने के लिये अनेक प्रावधान किए, सरकारी आदेश जारी किए, प्रशासनिक कार्य हिन्दी में करने के लिए काफी बल दिया परन्तु केवल सरकारी आदेशों से कोई कार्य तब तक सिद्ध नहीं हो सकता जब तक उस कार्य को वास्तविक स्वरूप प्रदान करने वालों की मानसिकता न बदले। अतः सरकारी आदेशों और व्यवस्थाओं के बाद भी देश (4) की भाषाओं को सरकारी कामकाज में वह स्थान नहीं मिला पाया जिसकी वह हकदार है। इस से हमें दुख होता है और हम इसको दोष एक –दूसरे पर डालने का प्रयास करते हैं। इस संबंध में मेरा यह मानना है कि इसके लिये किसी न किसी हद तक हम हिन्दी भाषी वर्ग के लोग भी दोषी हैं। यदि इस देश का सबसे बड़ा भाग अपने सारे व्यक्तिगत काम हिन्दी भाषा में करना आरंभ कर दें तो सरकार को भी साधन जुटाने पड़ेंगे ।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

अध्यक्ष महोदय , हम एक बहुत ही गंभीर समस्या को लेकर आज इस सदन में विचार विमर्श कर रहे हैं। ऐसी समस्या पहले कभी भी हमारे सामने उपस्थित नहीं हुई । इसकी समीक्षा करने के लिये हम लोग कानून के अनुसार सरकार जो काम कर रही है उस पर अपने विचार प्रकट कर रहे हैं और उसी पर अधिक से अधिक ध्यन दे रहे हैं अभी हमारे एक माननीय सदस्य ने भी कहा कि बड़े – बड़े पूंजीपतियों से हमें अपने संबंध नहीं रखना चाहिए क्योंकि उनके कुछ सदस्य ऐसी बातें कह रहे हैं जो देश के हित में नहीं है । अभी सदन में एक सदस्य ने कुछ पूंजीपतियों के बारे में कहा कि उन लोगों ने हमारे देश की पूंजी को बाहर के देशों में रखा हुआ है। यह एक बहुत बड़ा व्यापारी वर्ग समूह है और इतने बड़े समूह में यदि एक दो आदमी गलती करते हैं कुछ इस प्रकार के कार्य करते हैं जो देश के हित में नहीं हैं तो उसके लिये सरकार को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है यह शायद उचित भी नहीं होगा ।

एक अन्य माननीय सदस्य ने बहुत सी आदर्श की बातें कही है। आदर्श की बात सही हो सकती है। मैंने उनसे इस सबंध में सहमत हूँ लेकिन समस्या यह नहीं हे। समस्या यह है कि अभी जो स्थिति हमारे सामने है, कानून के अनुसार जिन लोगों ने उचित तरीके से व्यवहार नहीं किया है उनके साथ हमारा व्यवहार कैसा हो, उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा हो हम उनकी किस प्रकार से आलोचना करें। आदर्श की बातों से शायद ही कोई सदस्य सहमत न हो । इन सभी बातों को देखकर हमें इस सदन में विचार करना है। इन बातों को ध्यान में रखकर हमें अपनी राय प्रकट करनी है। केवल यह कह देना कि सारा दोष सरकार का है, ठीक नहीं है। मैं चाहता हूँ कि सरकार को करों की चोरी करने वालों के खिलाफ आवश्यक (4) कदम उठाने चाहिये ताकि वे भविष्य में इस प्रकार से कर चोरी करने का साहस न कर सकें। सरकार ने इस संबंध में कुछ कदम उठाए हैं लेकिन प्रश्न यह है कि जो लोग करों की चोरी कर रहे हैं उनमें कितनी कमी आई है। सरकार ने इस संबंध में जो आयोग नियुक्त किया था उसकी रिपोर्ट प्राप्त करने पर देश का काफी रूप्या पैसा खर्च हो चुका है। इसको कार्यान्वित करने में कुछ कानूनी पेचिदा कठिनाइयां हैं।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

माननीय उप सभापति महोदय, हमारे दल ने असम राज्य की समस्या को जिस रूप में समझा हैं, उसको हमारे माननीय नेता ने इस सदन में अपने कथन में स्पष्ट रूप से कह दिया है। मैं पुनः उसी बात को दोहराना नहीं चाहता हूँ। मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूँ कि यह एक गम्भीर समस्या है और देश की एकता के लिये और देश की आर्थिक स्थिति के लिये एक विकट समस्या बनी हुई है। कुछ दल इस समस्या को हल करने की बजाए और अधिक बढ़ाना चाहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है लेकिन हमारा दल इस बात के खिलाफ है। हम सब यह भी जानते हैं कि कुछ विदेशी शक्तियां जिनकी चर्चा इस माननीय सदन में हो चुकी है, यहाँ काम कर रहीं है। यह समस्या केवल असम राज्य में है, बल्कि देश के अन्य प्रदेशों में भी धीरे धीरे पैदा होती जा रहीं है इन विदेशी शक्तियों की ऐसी इच्छा है कि यह देश अलग अलग टुकड़ों में बंट जाए और शक्तिशाली देश न बन पाए ।

उप सभापति महोदय , इस संबंध में हम और हमारी पार्टी पूरी तरह से सरकार के साथ है। हम अपने देश की एकता को किसी भी स्थिति में भंग नहीं होने देंगे , लेकिन इस सबके बावजूद हमें यह अवश्य विचार करना चाहिए कि केन्द्र सरकार ने इस संबध में ऐसे कौन कौन से कदम उठाए हैं जिनसे असम राज्य की इस समस्या को हल करने में सहायता मिली हो। हमारे इस सदन के माननीय सदस्य कह रहे थे कि असम की आर्थिक स्थिति का लाभ उठा कर ये सभी शक्तियां वहां पर अपना अपना काम कर रही हैं। मै भी इस तथ्य से पूरी तरह से सहमत हूं लेकिन सरकार का भी तो कुछ दायित्व होता है कि वह इस राज्य की आर्थिक स्थिति को जितनी जल्दी हो सके सुधारने का प्रयास करें ताकि ये विदेशी शक्तियां वहां की गरीब और कमजोर जनता से अनुचित लाभ न उठा सकें। मान्यवर, काफी समय पहलें असम राज्य के मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि असम राज्य के जो प्रगति के साधन हैं वे बहुत बड़े पैमाने पर राज्य के बाहर चले जाते हैं और इस तरफ उन्होंने केन्द्र सरकार का ध्यान आकर्षित किया था लेकिन मुझे बड़े खेद के साथ यह कहना पड़ रहा है कि केन्द्र सरकार ने मुख्यमंत्री जी की इस बात की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

श्रीमान, बराबर हमारे शिक्षा मंत्री भी आते रहे हैं। उनमें से शिक्षा महारथी भी थे जिनका शिक्षा से कोई संबंध नही रहा है और प्रत्येक ने इस बात का प्रयत्न किया कि शिक्षा में सुधार हो , परन्तु से सुधार जो किए गए हो सेकेटहरी टाइप किए गए। अभी जो स्कीम दी है उसमें भी इस बात का जिक्र किया गया है कि प्राइमरी शिक्षा किस प्रकार की होगी। पांच साल से लेकर ग्यारह साल तक के बच्चे को यह शिक्षा दी जाएगी, स्कूलों की तादाद बढाई जाएगी। इसके बाद हायर सैकेण्डरी स्कूलों की जो स्टेज आएगी उसमें इतने स्कूल होगें और उन स्कूलों के द्वारा हमारें इतने बच्चे पढ़ सकेंगे वह सब ठीक है, वह आप करेगें परन्तु श्रीमान् मै आपसे निवेदन करूंगा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे सचमुच देश में अच्छे नागरीक बनें और जो शिक्षा के गुण हैं वो उनके अंदर आए आदि। आदिकाल से लेकर आज तक किसी भी संस्कृति चाहे आप ले लीजिए सभी ने एक ही बात पर बल दिया कि बेहतर से बेहतर आदमी तैयार किए जाएं आपके जो स्कूल और कॉलेज हैं वे आज इंसान बनाने के कारखानें तो नहीं रहे वे फैक्ट्री हो गए हैं। वे पुर्जे बनाते हैं और पुर्जे जब बनकर निकलते हैं तो उनका प्रदर्शन आज हम बाजार में संस्थाओं में और पार्लियामेण्ट में और विधानसभाओं में देखते हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि सबसे पहले हमारें महापुरूषों ने जो बात कही थी उसको हम आपके सामने रखें। मेरे पास ज्यादा समय नहीं है लेकिन मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि गर्भाधान से लेकर जब से बीज बोया जाता है उस समय से लेकर मृत्यु पर्यन्त सोलह संस्कार हमारें यहां रखे हुए है। संस्कार का अर्थ होता है विकास बराबर संस्कार होते रहते है। जब बीज बोया जाता था उस समय भी संस्कार होता था और उसके बाद उसका नामकरण संस्कार आदि होते थे और यही क्रिया चलती रहती थी शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य यह था कि जिस समय कोई मनुष्य पढ़कर निकले तो वह समाज का एक अच्छा अंग बने, एक अच्छा नागरीक बनें और यह समझे कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है? दुःख के साथ कहना पडता है कि आज एक बड़ी खराबी आई है तो हमारे देश के अंदर आई है।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

श्रीमान, माननीय मंत्री जी ने प्रारम्भ में यह कहा था कि इस कार्य के लिए अध्ययन मण्डल गठित हो गया है और उसकी रिपोर्ट के पश्चात् ही कुछ कहा जा सकता है जितने भी प्रश्न इस संबध में किए गए हैं वे सब अध्ययन मण्डल पर ही केन्द्रित हो गए हैं तो क्या माननीय मंत्री जी कृपा करके यह बतलाएंगे कि इस अध्ययन में जिन व्यक्तियों को लिया गया है वह कौन–कौन हैं? क्या वे शासकीय दल द्वारा ही नियुक्त किए गए है या जैसे आप स्वयं ही जानते हैं कि एक बडा जटिल और विषम प्रश्न हैं और आप इस तरह की चीज को हल करने के लिए क्या यह उचित नहीं था कि इस अध्ययन को दल में हर प्रकार के विचारों के लोगों को इकट्ठा करके रिपोर्ट ली जाती है?

श्रीमान, आप अर्बेन प्रोपर्टी की सीलिंग करके जा रहे हैं और देहातों में काश्तकारों की जमीन की सीलिंग कर दी है, इस बारे में हमें खुशी है कि आप उस जमीन को भूमिहीन हरिजनों को दे रहे हैं आप जो अर्बेन प्रोपर्टी सीलिंग करके जा रहे हैं उसमें भी आप मकानहीन हरिजनों को अर्बेन प्रोपर्टी बांटने के संबंध में प्राथमिकता देंगे? इसके साथ ही मैं आपसे यह भी पूछ लेना चाहता हूँ कि क्या किसी प्रश्न के उत्तर में मंत्री जी का कांग्रेस पार्टी के मैनीफैस्टों का हवाला देकर सदन को यह कहना है कि उस मैनीफैस्टों के अनुसार हम चल रहे है, यह उचित हैं क्योंकि एक बार यह प्रश्न उठा था और आपने रूलिंग दी थी कि उसका जिक्र किया जाना उचित नहीं है आज तो मंत्री जी ने कहा हैं कि हम मैनीफैस्टों के अनुसार कार्य कर रहे है, क्या यह उत्तर के रूप में कहना उचित है ?

श्रीमान्, जो स्टडी ग्रुप बनाया गया उसमें अपनी रिपोर्ट भी दे दी है इसमें जितने भी संबंधित मंत्रालय थे, उन सब के प्रतिनिध ाी थे। उसमें प्लानिगं कमीशन वित मंत्रालय, स्वास्थय मत्रांलय और कृषि मंत्रालय इन सबके उतरदायी सचिव इसमें रखे गये थे और उन्हीं की यह रिपोर्ट हैं, जो सामान्य हमारी नीति के आधार पर ही सरकार को सारा काम करना है और इस विषय पर मैनीफैस्टों के अंदर बहुत स्पष्ट इंगित किया गया है इशारा किया हुआ है और इस संबंध में कोई दो राय नहीं हो सकती जब अंतिम विचार होगा तो मंत्रीगण चर्चा करेंगे।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

श्रीमान, यह जो कश्मीर का इंगित है जिसके बारे में कहा जाता है कि सैल्फ सिटरमिनेशन का अधिकार उसको होना चाहिए, उस पर राजी हों तो उसे स्वतंत्र यूनिट रखकर उसी संगठन के अंदर लाने का इतंजाम किया जाए आज इन परिस्थितियों में भुट्टों जी भी कहते हैं कि बंग्लादेश के साथ हमको कोई न कोई संबंध रखना चाहिए हम समक्षते है कि उसके लिए भी अच्छा होगा बांग्लादेश, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान या और भी स्थान जो जन्म लेने वाला है, उसके लिए एक पाकिस्तान पैदा होगा इस संगठन के आने से आज झारखण्ड में, नागालैंड मे अभी उपद्रव हुआ था पाकिस्तान में बांग्लादेश का कैसा जन्म हुआ इसको हम लोगों ने देखा, हो सकता है कि इस तरह का आंदोलन यह भी खास हो इसी तरह से हिन्दुस्तान का वह इलाका है जो पिछड़ा हुआ है, जिसके वही कष्ट हैं इसी तरह की शिकायतें आज हिन्दुस्तान के कई राज्यों और दूसरे राज्यों के प्रति या सेंटर के प्रति हैं इसलिए आज की जो समस्या है जनतंत्र की समस्या है।

बराबरी की समस्या है, समाजवाद की जो समस्या है, समता लाने की जो समस्या है उसमें अगर इस तरह का कोई संगठन बनाया जाए तो हम समझते हैं कि यह देश के लिए अच्छा होगा इसलिए मेरा सुझाव है कि मंत्री जी जब बातचीत करेंगे तो उनके सामने इस तरह का भी सुझाव रखें। मैं नहीं समझता कि वे मानेगें या नहीं, लेकिन उनके सामने जो नई–नई समस्याएं हैं उसमें इस बात पर भी विचार करेंगे कि ऐसा संगठन बनाने से उनको इस तरह की समस्याओं का शिकार बनने का मौका नहीं होगा अभी जो समझौता हुआ है उसके सिलसिले में एक वक्ता कह रहे थे कि विश्वासघात किया गया है, अगर मुझे याद है और शायद ऐसा कहा गया था कि जो हमारी अब लड़ाई होगी वह हिन्दुस्तान की भूमि पर नहीं होगी, वह लड़ाई पाकिस्तान की भूमि पर होगी और जो जमीन हम जीतेंगे उस जमीन को हम नहीं लौटाएंगे ऐसी बात कही गई है या नहीं इसको मंत्री जी जानें अगर मंत्री जी ने ऐसा कहा हो और उसके बाद अगर जमीन लौटा दी गई हो और अगर इसको विश्वासघात कहा जाए तो क्या वह झूठ बात होगी ? महोदय, आज शान्ति की जरूरत है जैसा शुरू में कहा गया था।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

उपसभापति महोदया , सबसे पहले मैं दो तीन बातों के बारे में जो कि यहां सभा भवन में उठाई गई हैं और जिनका अभी तक संतोषजनक उत्तर नहीं मिला है, मैं कहना चाहता हूँ। जहां तक ट्रांसपोर्ट का सवाल है, ट्रांसपोर्ट के द्वारा ही हमारा सारा इंप्रूवमेंट हो सकता है और ट्रांसपोर्ट के द्वारा ही हम तरक्की कर सकते हैं। लेकिन उसको यह सरकार जितना नेग्लेक्ट कर रही है, उतना शायद दूसरे कामों को नहीं कर रही है। मैं पहले यह कह दूं कि हमारा दृष्टिकोण तारीफ करने का नहीं होता। हमारा दृष्टिकोण क्रिटिकल होता है। इसलिए जो अवगुण हैं उन्हें मैं बताने की कोशिश करूंगा, जो गुण है वह तो दूसरी पार्टी के जो लोग हैं, वे बताएंगे।

अब जहां तक ट्रांसपोर्ट का सवाल है, वैगंस के संबंध में इस सभा भवन में और बाहर भी बार बार इस चीज की मांग की गई है कि इस बारे में कुछ किया जाए क्योंकि आपके पास जितने वैंगस है उनकी रेगुलर वे में आप सप्लाई नहीं कर रहे हैं। उदाहरण के लिए सरकार को यह मालूम है कि अनाज दो महीने , मई और जून में आता है । इसी समय वह किसानों के पास से मंडियों में आता है लेकिन उस समय जहां भी मंडी है वहां वैगंस नहीं दिए जाएंगे और जब बरसात शुरू हो जाएगी, जून जुलाई का महीना होगा या अगस्त का महीना होगा तब वैंगस दिए जाएंगे । एक तरफ तो यह कहते हैं कि किसानों को फैसिलिटीज दे रहे हैं और दूसरी तरफ उनके अधिकारों पर आप कुठाराघात कर रहे हैं क्योंकि जब फसल आएगी और वैगंस नहीं मिलेंगे तो क्या होगा यह कि मार्केट में अनाज अवश्य आएगा लेकिन अनाज खरीदने वाले नहीं होंगे क्योंकि उनके पास पैसा नहीं होगा । एक तरफ तो रेजीमेंटेशन के कारण बैंक वाले पैसा नहीं देते हैं और दूसरी तरफ जब ट्रांसपोर्ट नहीं होगा तो माल बाहर नहीं जाएगा और किसान का अनाज नहीं बिक सकेगा तो जब किसानों के पास आमदनी का जरिया होता है तब आज ट्रांसपोर्ट का इंतजाम नहीं करते हैं जिससे उनका बहुत नुकसान होता है।

महोदया, आपके सिस्टम का यह हाल है कि जहां एक जगह उसका कोई डिवीजन सेंट्रल गवर्नमेंट के मातहत है और दूसरी जगह उसका कोई डिवीजन या डिपार्टमेंट राज्य सरकार के मातहत होता है तो आपका कानून अलग अलग लागू होगा। वह सारे डिवीजनों में एक सा लागू होना चाहिए । लेकिन दुर्भाग्य यह है कि रेलवे में अलग अलग डिवीजन आपने बनाए हैं। उनमें अलग अलग तरीके, अलग अलग ड्रेस अलग अलग फैसिलिटी है। उनका जब तक आप एकीकरण नहीं करते तब तक आप कुछ कंट्रोल नहीं कर पाएंगे और कंट्रोल नहीं कर पाएंगे तो दूसरों को शिकायत करने का मौका मिल. `गा। उन्हें यह कहने को मिलेगा कि रेलवे ऐडमिनिस्ट्रेशन में धांधली हो रही है। वे आपके कानून को नहीं देखेंगे, जैसे ऐक्चुअल प्रैक्टिस में हो रहा है उसको देखेंगे और परिणाम यह होगा कि आपके रूल्स बेकार हो जाएंगे।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

उपसभाध्यक्ष जी, कहीं कहीं आप यह देखंगे कि आपके डिवीजन में एक कायदा होगा , पर सेंट्रल रेलवे के भुसावल डिवीजन में दूसरा कायदा होगा और झांसी में , जबलपुर में कुछ और होगा । यदि आपको झांसी डिवीजन में वैगन मिलता है वे ईस्ट बंगाल या आसाम में कोई रूकावट नहीं होगी । वहां न तो इस बात का रिस्ट्रिक्शन है कि कितने वैगन पर डे देने चाहिए लेकिन यदि इसी चीज को जबलपुर डिवीजन में आप लेंगे तो वहां कह देंगे कि आपके इतने वैंगस हुए एक महीने में एक वैगन या दो महीने में तीन वैगन तो जब तक आप इस तरह की डिस्पैरिटी को दूर नहीं कर पाएंगे तब तक लोगों में असंतोष रहेगा। एक ही कानून में, एक ही रूल के मातहत सब को बांधिए तो कठिनाई नहीं होगी।

अब मैं खासकर लोको के सबंध में कहना चाहता हूँ। स्पेयर पार्टस ही नहीं मिलते, ऐसा मेरे एक पूर्ववक्ता ने कहा था और कुछ डिफीकल्टीज बताई थीं। मैने तो यहां तक देखा है कि बोल्ट भी ऐसे हैं कि जो एक जगह के हों तो दूसरी जगह नहीं लगते। परिणाम यह होता है कि इस के कारण डिरेलमेंट होता है। मैं स्वयं इसका भुक्तभोगी हूँ।

दूसरी बात यह है कि आप स्टेशन तो बढ़ाते जा रहे हैं। बहुत और स्टेशन भी बढ़ाएंगे, यार्ड भी बढ़ाएंगे लेकिन फैसिलिटी कुछ नहीं देंगे । आज जो छोटे स्टैशन बनाते हैं। वहां पर न तो स्टेशन मास्टर के ठहरने की जगह वहां है, न वहां कोई सोसायटी है। वहां पर एक टेंट या छप्पर सा डाल दिया है। न कर्मचारियों के लड़कों या बच्चों के रहने की वहां जगह है, पीने के पानी का इंतजाम है इससे कहीं उनको राहत हो सकती है, इमरजेंसी की बात दूसरी हैं वहां दो चार महीने के लिए किसी को काम करना पड़ जाए तो ऐसी हालत में हर एक को बर्दाशत करना चाहिए लेकिन 6 महीने के बाद तीन तीन साल तक वह वहां पर पड़ा रहे उस के लड़के, बाल बच्चे दूसरी जगह हों, न उसके खाने पीने की व्यवस्था हो सके, न रहने की व्यवस्था हो सके तो कैसे काम चलेगा। इसका परिणाम यह होता है कि ड्यूटी में नेगलिजेंस होने लगती है। आदमी सोचता है कि खुद मुझे तो यहां समय काटना है फिर मैं जिम्मेदारी से बर्ताव नहीं करता तो मैं भी गैर जिम्मेदरी से बर्ताव करूंगा। इसमें मेरा क्या दोष हो सकता है।

तो जैसा मैंने इटारसी के संबंध में कहा था, कटनी के यार्ड के संबंध में कहा था आपने बड़े से बड़ा यार्ड तो बना दिया लेकिन वहां कोई व्यवस्था ही नहीं है। रास्ते में कोई आदमी घड़ी बांधकर नहीं ले जा सकता, दो तीन मील अंधेरे में जाना पड़ता है, कोई लाइट नहीं है, सड़क नहीं है, अपने साथ पैसा लेकर वहां से कोई नहीं जा सकता। अब आप समझें कि ऐसे में गार्ड क्या करेगा ड्राइवर के पास घड़ी नहीं होगी तो वह पंक्चुअल कैसे रहेगा इसके लिए समुचित व्यवस्था आप को करनी चाहिए।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

उपाध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न केवल आंध्र प्रान्त का नहीं है कि वहां की पावर्स राष्ट्रपति को दे दी जाएं यों तो अन्य प्रान्तों में राष्ट्रपति शक्ति ले ही रहे हैं परंतु आंध्र में प्रश्न प्रजातंत्र का हैं हमारी सरकार और हमारा संविधान इन दोनों का मूल आधार प्रजातंत्र है और मैं समझता हूँ कि हमें अपने व्यक्तिगत सम्मान, स्वाभिमान और स्वार्थ का ध्यान रखते हुए भी प्रजातंत्र की भ. ावना का आदर करना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए प्रजातंत्र को जहां तक मैं समझ पाया हूं जनता की भावना का ही आदर करना चाहिए, जनता के बहुमत का स्वागत करना चाहिए और जनता जिस बात को चाहती है वही हमाको करना चाहिए। अगर हम यह धारणा बना लें कि जो हमारे दिमाग में है वह जनता को मानना होगा और जनता हमारे पीछे भेड़ों की तरह चले तो प्रजातंत्र हमारी घोषणाओं में, हमारे नारों में ही रह जाएगा ।

आंध्र प्रान्त के दोनों भाग –तेलंगाना और आन्ध्र इन दोनों की जनता अपने अपने दृष्टिकोण से आज यह आंदोलन कर रही है। वहां के सभी सरकारी कर्मचारी और दूसरे लोग भी आंदोलन कर रहे हैं। बिल्कुल सिचुएशन वही है जैसी कि बंगला देश में एक दिन थी । आज वहां की जनता ने इस बात को प्रकट कर दिया है केन्द्रिय सरकार के सामने कि हम एक साथ मिलकर नहीं चल सकेंगे हमें अलग प्रान्त बना दिया जाए । मैं यह समझता हूँ कि इसमें कोई आपत्ती नहीं होनी चाहिए। लेकिन हमारी सरकार बोलती है हम नही मानेंगे। ना मानने का हमारे सामने कोई आधार नहीं हैं ये समझते है कि कुछ मुट्ठी भर लोग, कुछ प्रतिक्रियावादी लोग या सी.आई.ए. के आदमी वहां पर आंदोलन करा रहे हैं। बजाए इसके कि हम आत्मनिरीक्षण करें कि कहीं हमारे साथी तो नहीं हैं। जो आंदोलन करा रहे हैं। सी.आई.ए. और रिऐक्शनरी का नाम लिया जाता हैं। मैं चैलेंज करता हूँ गॉरमेन्ट को कि यहां रिऐक्शनरी और सी. आई. ए. के आदमी हैं। तो वह कांग्रेस के ही है क्योंकि वहीं आदमी नेतृत्व कर रहें हैं, वही आदमी आज आंदोलन चला रहे है। अगर इनको शक है तो वे वहां पर चुनाव करा दें। और इस बेसिस के आधार पर कि जो लोग एक आन्ध्र चाहते है वह जाएं, जनता उसका निर्णय कर देगी लेकिन सरकार यह करने को बिल्कुल तैयार नहीं है। श्रीमान्, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात और नागालैण्ड का जन्म ही आंदोलन के बाद हुआ। जब वहां हिंसात्मक कार्यवाही हुई तो आप ने सिर झुकाया। आज देश की जनता को यह बात अनुभव हो गई है चाहे आप मानें या ना मानें कि वर्तमान कांग्रेस सरकार समझने वाली दलील नहीं मान सकती है। अगर आपने तोड़फोड़ ना किया, रेलों को नहीं तोड़ा,उनकी पटरीयां ना उखाड़ी, बसों को ना जलाया तो कोई दलील इस गवर्नमेण्ट की समझ में नहीं आ सकती है। आप समझदारी के साथ कोई प्रतिवेदन कर दीजिए। तो उसको सरकार नहीं समझेगी।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

अभ्यास 16

100 शब्द प्रति मिनट

महोदय, आप ने जो विचार प्रकट किए हैं वे सराहनीय हैं लेकिन उनको कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक है कि पहले कुछ बातों पर विचार कर लिया जाए। कल बहस होगी। आपने दो मुद्दे सामने रखे। उसमें से पहला मुद्दा तो यह है कि कल जो बहस होगी वह नियम 176 के अन्तर्गत होगी या नियम 170 के अन्तर्गत होगी ? नियम 176 के अन्तर्गत बहस होती है तो उसमें सदस्यों को कठिनाई होगी। 170 में तो हम लोगों को अधिकार है। कि हम उसपर कोई संशोधन पेश कर सकें लेकिन नियम 176 के अन्तर्गत बहस में हम लोगों को (1) संशोधन पेश करने का कोई अधिकार नहीं होता। तो यह फैसला आज हो जाना चाहिए कि वह बहस 176 के अन्तर्गत होगी या 170 के अन्तर्गत होगी ताकि हम लोगों को कल सुबह तक उसकी इत्तला मिल जाए और यदि बहस 170 के अन्तर्गत चलती है तो हम लोग समय से अपने संशोधन आदि दे सकें। तो इसके लिए बिजनेस, एडवा. इजरी कमेटी की बैठक आज आप बुला लें। उसके सदस्य नहीं है। तो व्यावहारिक दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि सलाहकार समिति की बैठक आज होनी चाहिए और उसके लिए आप समय निर्धारित करें। इसमें कोई कठिनाई नहीं है। मैं (2) यह नहीं कहता कि सदन के काम में कोई रूकावट पैदा करना चाहता हूँ लेकिन माननीय सदस्यों की जो इच्छा है कि इस विषय पर बहस के लिए समय दिया जाए। उसको ध्यान में रखते हुए और कोई विषय इस समय विचार के लिए संभव नहीं दिखता। तो इसलिए आप सलाहकार समिति की बैठक करा दें। और इन दो मुद्दों पर तत्काल कुछ फैसला हो सकें ताकि माननीय सदस्य कल उस पर अपने विचार रख सकें। इसके लिए आप कोई निर्णय लें। मै समझता हूँ कि इस समय यही मुनासिब होगा।

श्रीमान्, जो आपने कहा, वो बहुत सही बात है। (3) सरकार को इस पर सोचना चाहिए। यह बड़े दुःख की बात है कि सरकार अपनी जिम्मेदारी ना निभाकर ऐसा कर रही है। सदन के नेता ने कल कह दिया कि जैसे हमारे सभापति फैसला करें। सरकार को यह फैसला करना चाहिए कि जो दिन सरकारी काम के लिए निर्धारित है। सरकार उसके लिए कहे कि इतना समय फलां दिन हम निकाल सकते हैं। यह काम सभापति पर नहीं छोड़ना चाहिए। यह आक्रमण सरकार का सभापति की तरफ लक्षित है। और ये प्रयत्न हो रहे हैं कि सभापति पर दबाव डाला जाए। जैसा अभी वह कह रहे थे कि सभापति के (4) सम्मान के विरूद्ध कोई बात कही जाती है तो वह उचित नहीं है। किसी भी माननीय सदस्य की इच्छा नहीं है कि एक भी शब्द सभापति के विरूद्ध कहने की। उनकी व्यवस्था को मानते हुए उनका सम्मान करते हुए हम सरकार की निन्दा करना चाहते हैं कि सरकार समय निर्धारित नहीं करना चाहती है और इसके लिए आपने संक्षेप में जो इशारा किया वह अत्यन्त प्रशंसनीय है लेकिन हम चाहते हैं कि सरकार को और सभापति को सदन की भावनाओं का आदर करना चाहिए।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

मान्यवर, कल से मैं विदेश मंत्रालय से संबंधित अपने विचारों को प्रकट कर रहा था। अपने मन की कुछ बातें मैंने कल कही और कुछ जो शेष है उन्हें आप के माध्यम से माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूँ। मान्यवर, बड़े आश्चर्य की बात है जिस पर हमें गहराई से विचार करना चाहिए। हमारी नीति गुटनिरपेक्षता की है। हम उपनिवेश वाद के विरूद्ध हैं, जाति भेद के विरूद्ध हैं चाहते है कि सब लोग शान्ति से रहें तथा हमें भी रहने दें लेकिन कारण क्या है कि हमारी बात नहीं मानी जाती (1) हैं? इसमें कुछ कारण जरूर है मैं देहात का रहने वाला हूं, एक छोटी सी बात कहना चाहता हूं। एक पड़ोस में दो घर हैं, एक थोड़ा कमजोर है। दूसरा पड़ोसी पहले पड़ोसी का आये दिन नुकसान करता रहता है। अब पहला घर वाला अपनी सुरक्षा के लिए चाहता है कि दोनों के बीच में चार दिवारी बना दे जिससे दूसरा उसे तंग न कर सके तो दूसरा पड़ोसी कहता है कि हम चार दिवारी नहीं बनाने देंगे ठीक यही हालत हमारी है।

अध्यक्ष जी, कौन सा ऐसा मुल्क है जो अपनी सरहद को चारों तरफ (2) से नहीं घेर रहा है। हमें भी ऐसा मजबूरन करना पड़ रहा है। आये दिन बांगला देश की तरफ से लोग हमारे यहां आते हैं और तरह तरह की खुराफात करते हैं। भारत के लोग बांग्लादेश में जाकर खुराफात नहीं करते हैं, इसीलिए अपनी सुरक्षा के लिए हम तार लगाना चाहते हैं लेकिन वे कहते है कि हम नहीं लगाने देंगें। इसको रोकने के लिए गोलियां चलाते हैं। हमारी नीति निष्पक्षता की है हम सबसे प्रेम मोहब्ब्त चाहते हैं लेकिन इसका क्या उपाय है जिससे की हमारी सुरक्षा भी बनी रहे और उनके दोस्त भी बने रहें? (3) ठीक यही हालत लंका में भी है।

मान्यवर, हमने बहुत कोशिश की लेकिन अभी तक पंजाब का भी मसला तय नहीं हुआ । हम देख रहें हैं कि आए दिन इंग्लैंड में भारत के खिलाफ मीटिंग आयोजित की जाती हैं, ब्रिटेन के लोग और संसद सदस्य वहां पर खालिस्तानियों को प्रोत्साहन दे रहे हैं। हमने इसके खिलाफ मांग भी की है लेकिन केवल हाथ जोड़ने से काम नहीं चलेगा। यह बात सही है कि आज के समय में कोई भी बड़े से बड़ा मुल्क भी किसी मुल्क को गुलाम नहीं बना सकता। हम किसी मुल्क के खिलाफ (4) नहीं हैं लेकिन कोई भी हमारे विरूद्ध साजिश न करें।

मान्यवर, हमने यह देखा कि हमारे देश में जो फ्रांस और रूस के राष्ट्राध्यक्ष आए और उन्होंने यहीं सेंट्रल हाल में भाषण दिया और अपने अपने देशों की नीति को अपनी अपनी मातृभाषा में रखा लेकिन जब हम लोग विदेशों में जाते है या हमारे मंत्रीगण विदेशों में जाते हैं और वहां पर संसद की मीटिगों या पब्लिक मीटिंगों में भाषण करते हैं तो अंग्रेजी भाषा में करते हैं। मैं निवेदन करना चाहूगाँ कि भारत की गरिमा को बढ़ाने के लिए वहां पर सभी को हिन्दी (5) में लेक्चर देना चाहिए ताकि हमारी पहचान विश्व में बढ़ सके ।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

डिफाल्टर होंगे और हमारी बात नहीं मानेंगे उन को जो पानी मिलता है , उस को हम बन्द कर देंगे ।

यह जोरा वाटर है वह गन्दा पानी है और वह सिर्फ लान वालों के काम आता है और पुरानी दिल्ली वालों को देने से कोई लाभ नहीं है। हम सविता बहिन जी बतलायेंगी कि इस बारे में जो कुछ भी किया जाना है, वह विचार कर के कियाजायेगा। वे दूसरे सुझाव भी इस बारे में दे सकती है। जो नीचे के हिस्सों मे रहने वाले हैं उनके लान्स में तो पानी काम आ सकता है अन्यथा इस में कठिनाई हो सकती है ।

भविष्य के बारे में आप ने कहा कि हम क्या सोच रहे हैं, तो मैं उन को संक्षेप में बता देना चाहता हूँ। मैं इस बारे में पूरी कहानी तो नहीं बतला सकता हूँ लेकिन हमनें यह सोचा है कि 1974 में हमारे यहां की जनसंख्या बहुत बढ़ जायेगी क्योंकि 1971 में जो जनसंख्या थी वह 36 लाख से ऊपर थी और यह आशा की जाती थी कि अगले दो तीन सालों में यह 47 लाख तक हो जायेगी और इतनी जनता के लिए 282 मिलियन गैलन पानी प्रतिदिन की आवश्यकता होगी । अनुमान 1981 और 2001 तक का बनाया है, और वह काफी बड़ा है लेकिन जहां तक हम रैन वैल लगाना चाहते हैं जिन में सीधा पम्प से पानी ऊपर लाने की बजाय वहां नीचे चैनल्स लगाये जायें जिन से ज्यादा पानी स्रोतों में आ जाए । इस तरह से लगाना चाहते हैं। जिस से 15 मिलियन गैलन पानी आ जाय और रामगंगा प्रोजेक्ट से कोई 100 मिलियन पानी की व्यवस्था करना चाहते हैं।

यह जो रामगंगा प्रोजेक्ट है , यह उत्तर प्रदेश सरकार के साथ है, उन से पत्र व्यवहार हुआ है। हमने उत्तर प्रदेश सरकार को लिख दिया है कि जो रूपया आप मांगते है उस के लिए हमने स्वीकृति दे दी है और उस के कारण इस रामगंगा प्रोजेक्ट में देरी नहीं होने वाली है। एक बात और है, ताजावाला हैडवर्क्स से हम पानी मंगाते हैं, रास्ते में बहुत सा पानी चला जाता है जमीन सोख जाती है। हम 117 मील की दूरी से पानी पहुंचाते हैं और 325 क्यूसेक में से केवल 160 क्यूसेक पानी पहुँचता है । उस के बारे में भी व्यवस्था कर रहें हैं, जिससे रास्ते में पानी कम न हो।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

श्रीमान् माननीय सदस्या ने जो सुझाव दिये हैं, उन पर हम लोग ध्यान दे रहें हैं और आगे भी देंगे। जब से हमें मालूम हुआ तब से हम इस चीज के पीछे लगे हुए हैं। हम इस बारे में आश्वासन देना चाहते हैं कि इस कठिनाई को दूर करने की हर संभव कोशिश की जाएगी ।

हमें जो बात मालूम हुई है वह यह है कि जो राज्य वाटर का पानी है, उस के पम्प में खराबी आ गई है और उस को हम ठीक कर रहे हैं। यह जरूर हैं कि उस को ठीक करने में कुछ वक्त (1) लगेगा और मुमकिन है कि इस महीने या अगले महीने तक वह ठीक कर लिया जायेगा। इस बारे में बहुत जल्दबाजी नहीं की जा सकती है, लेकिन उस में काफी जल्दी की जा रही है और उस से कुछ फायदा होगा।

ये जो 20 टैंकर भेजे हैं और उन से जो आप मुश्किल की कल्पना कर रहे हैं उस के बारे में जो कारपोरेशन के मैम्बर हैं तथा जो दूसरे सोशल वर्कर्स हैं, वे इस बात को देखें कि वहां पानी पहुंचता है या नहीं और इस बीम में कठिनाई नहीं आयेगी लेकिन यह जरूर है (2) कि जो ऊंची जगहों पर है उन की मुश्किल पानी को ऊपर करने में है। उस में ज्यादा सुविधा तो यह होती है कि अगर वहां पर पम्प लगा कर पानी ऊपर भेजा जाय, छत के ऊपर टंकी रखी जाय तो पानी पहुंच सकता है लेकिन इस वक्त कारपोरेशन के लिए यह काम करना संभव नहीं होगा लेकिन यह इंप्रेशन, यह विचार, यह ध ाारणा अगर किसी की है, तो मैं उस को शुद्ध कर देना चाहता हूँ कि इस वक्त इस विषय में कोई सुधार नहीं हो रहा है , यह सही बात नहीं है 1966 में 114 (3) मिलियन गैलन पानी लोगों को प्राप्त होता था , वह 1971–72 में 164 मिलियन गैलन पानी प्राप्त होने लगा था । किन्तु अब 175 मिलियन गैलन पानी ही प्राप्त होता है। दूसरे निजी शहरेां के मुकाबले में कलकत्ता, बंगलौर, दिल्ली बम्बई वगैरह के मुकाबले में यहां पर पानी की सप्लाई फिर भी बेहतर है। यह जरूर हे कि नई दिल्ली का लोकल एरिया पुरानी दिल्ली से कुछ ज्यादा है। यह जो रा वाटर का पानी रूक गया है उस के बारे में हमने 120 लोगों को चेतावनी दी है और माननीया सदस्या परन्तु शायद यह जरूर जानना चाहती हैं कि हम ने और (4) क्या अनेक कार्यवाही अतिरिक्त की है। दस कनेक्शनों को हमने काट दिया है और रा वाटर के महकमें को हुक्म दे दिया है कि जो भी नगर निगम राज्य द्वारा बनाये गये आवश्यक राज्य कानून का पालन नहीं करेंगे या नही।

कठिन शब्दों को ढूंढ कर उनका अभ्यास करिए

अभ्यास 20

100 शब्द प्रति मिनट

उपाध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न केवल आंध्र प्रान्त का नहीं है कि वहां की पावर्स राष्ट्रपति को दे दी जाये। यों तो अन्य प्रान्तो में राष्ट्रपति शक्ति ले ही रहे हैं परन्तु आंध्रप्रदेश में प्रश्न प्रजातंत्र का है। हमारी सरकार और हमारा संविधान इन दोनों का मूल आधार प्रजातंत्र है और मैं समझता हूँ कि हमें अपने व्यक्तिगत सम्मान, स्वाभिमान और स्वार्थ का ध्यान रखते हुए भी प्रजातंत्र की भावना का आदर करना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए। प्रजातंत्र को जहां तक मैं समझ पाया हूँ कि जनता की भावना का ही आदर करना चाहिए जनता के बहुमत का स्वागत करना चाहिए (1) और जनता जिस बात को चाहती है वहीं हमको करनी चाहिए। अगर हम यह धारणा बना लें कि जो हमारे दिमाग में हैं वह जनता को मानना होगा और जनता हमारे पीछे भेड़ों की तरह चलें तो प्रजातंत्र हमारी घोषणाओं में हमारे नारों में ही रह जाएगा।

आंध्र प्रान्त के दोनों भाग – तेलंगाना और आंध्र–इन दोनों की जनता अपने–अपने दृष्टिकोण से आज यह आंदोलन कर रही है। वहां के सभी सरकारी कर्मचारी और दूसरे लोग भी आन्दोलन कर रहे हैं बिल्कुल सिचुएशन वही है जैसे कि बंग्लादेश में एक दिन थी। आज वहां की जनता ने इस बात को (2) प्रकट कर दिया है केन्द्रीय सरकार के सामने कि हम एक साथ मिलकर नहीं चल सकेंगे। हमें अलग प्रान्त बना दिया जाये। मैं यह समझता हूँ कि इसमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन हमारी सरकार बोलती है हम नहीं मानेंगे। ना मानने का मेरे सामने कोई आधार नहीं है। ये समझते हैं कि कुछ मुट्ठी भर लोग, कुछ प्रतिक्रियावादी लोग या सी. आई. ए. के आदमी वहां पर आन्दोलन करा रहे हैं। बजाए इसके कि हम आत्मनिरीक्षण करें कि कहीं हमारे साथी तो नहीं हैं जो आन्दोलन करा रहे हैं। सी. आई. ए. और रिऐक्शनरी (3) का नाम ले लिया जाता है। मैं चैलेंज करता हूँ गवर्नमेन्ट जो कि यहां रिऐक्शनरी और सी. आई. ए. के आदमी है। तो वह कांग्रेस के ही हैं। क्योंकि वही आदमी नेतृत्व कर रहे हैं वहीं आदमी आज आन्दोलन चला रहे हैं। अगर इनको शक है तो वे वहां पर चुनाव करा दें और इस बेसिस के आधार पर कि जो लोग एक आन्ध्र चाहते हैं वह इन लोगों को वोट दे दें जो विभाजन चाहते हैं वे एक साइड में खड़े हो जाएं जनता उसका निर्णय कर देगी लेकिन सरकार यह करने को बिल्कुल तैयार नहीं है। (4) श्रीमान्, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात और नागालैण्ड का जन्म ही आन्दोलन के बाद हुआ। जब वहां हिंसात्मक कार्यवाही हुई तो हिंसा के सामने आपने सिर झुकाया आज देश की जनता को यह बात अनुभव हो गई है कि चाहे आप मानें या न मानें कि वर्तमान कांग्रेस सरकार कोई समझने वाली दलील नहीं मान सकती है। अगर आपने तोड़फोड़ न किया, रेलों को नहीं तोड़ा, उनकी पटरीयां नहीं उखाड़ी, बसों को न जलाया तो कोई दलील इस गर्वनमेण्ट की समझ में नहीं आ सकती है। आप समझदारी के साथ कोई प्रतिवेदन कर दीजिए तो उसको सरकार नहीं समझेगी। (5)

इनपुट डिवाइस

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **इनपुट और अउटपुट डिवाइस का पहचान ।**

इनपुट डिवाइस :–

इनपुट डिवाइस में की–बोर्ड / कुंजीपटल, माउस, स्कैनर, जॉय स्टिक, माइक्रोफोन आदि होते हैं।

कम्प्यूटर में इनके द्वारा इनपुट या सामग्री टाइप करके या अन्य माध्यमों से डाली जाती है और निर्देश देने पर इनपुट यूनिट से ये आंकड़े कम्प्यूटर की भाषा में सी.पी.यू. में स्टोर किए जाते हैं, फिर ये प्रोसेस / संसाधित करने पर इनपुट से बाहर मॉनिटर पर आते हैं।

आकृति अलग–अलग कार्यों के लिए स्वतः बदलती जाती है, इसमें बाएं और दायें क्लिक बटन होते हैं जिन्हें दबाने से ये कार्य संपन्न होते हैं। ये कई तरह के होते हैं।

माउस क्लिक :–

माउस के बटनों को फुर्ती से दबाकर छोड़ना क्लिक कहलाता है। स्क्रीन पर माउस प्वॉइंटर को सरकाया जाता है और उसे क्लिक किया जाता है। इसे सिंगल या एक बार क्लिक करना कहते हैं।

डबल क्लिक एवं राइट क्लिक :–

बाएं माउस बटन को दो बार लगातार दबाकर छोड़ना डबल क्लिक कहलाता है, दाएं बटन को दबाना राइट क्लिक कहलाता है। राइट क्लिक करने से कई प्रोग्रामों की सूची मिलती है जिनमें से आप वांछित प्रोग्राम चुनकर उस पर क्लिक करके उस प्रोग्राम को खोल सकते हैं।

स्क्रॉल ह्वील :–

माउस के नवीनतम मॉडलों में अब नीचे घूमने वाली गोली के स्थान पर ऊपर एक घूमने वाला पहिया / स्क्रॉल ह्वील लगाया गया है जिससे बहुत जल्दी पेजों पर ऊपर नीचे पहुँचा जा सकता है, अब तो कार्डलेस / बिना तार के भी माउस आने लगे हैं।

माउस प्वाइंटर शोप :–

अलग–अलग कार्यों को करने के लिए माउस प्वाइंटर के संकेत चिन्ह या शेप / आकृतियां बदल जाती है जिनको समझना आवश्यक है। इनके कार्यों के लिए अलग–अलग संकेतों की जानकारी निम्न है–

आउटपुट डिवाइस :–

मॉनिटर, स्पीकर प्रिंटर आदि भाग जो कम्प्यूटर द्वारा प्रोसेस की गई सामग्री को दिखाते हैं, आउटपुट डिवाइस कहलाते हैं।

मॉनिटर :–

टी.वी. की तरह सामने दिखाई देने वाला भाग या वीडीयू (विजुअल डिस्पले यूनिट) जिस पर प्रोसेस की गई सामग्री या आंकड़े दिखाई देते हैं, वह मॉनिटर कहलाता है। यह आउटपुट डिवाइस है जिसके द्वारा हजारों रंगों में सामग्री स्क्रीन पर दिखाई जा सकती है और छापी भी जा सकती है।

स्पीकर :–

स्पीकर ध्वनि प्रकट करता है। इसके द्वारा हम गाने, म्यूजिक, आवाज रिकॉर्ड किए गए गाने, भाषण आदि सुनते हैं।

प्रिंटर :–

कम्प्यूटर की संसोधित सामग्री को कागज पर छापने के लिए प्रिंटर की आवश्यकता होती है जिसे कम्प्यूटर से जोड़ दिया जाता है,

छपाई के गुणों, रंगों और गति के अनुसार प्रिंटर अनेक प्रकार के होते हैं। इनमें प्रमुख रूप से इंकजैट या बबल जैट, लेजर प्रिंटर और इंपैक्ट प्रिंटर या डॉट मैट्रिक्स प्रिंटर होते हैं।

कार्यालयों में या दैनिक कम्प्यूटर कार्यों में इंकजैट या लेजर प्रिंटर का प्रयोग अधिकतम होता है।

इंकजैट प्रिंटर :–

इंकजैट प्रिंटर में कागज पर कम्प्यूटर द्वारा दिए गए चित्र पर स्प्रे किया जाता है। इसमें कई रंग प्रयोग किए जा सकते हैं। इससे छपाई अच्छी लगती है, दैनिक काम में इसका बहुत उपयोग होता है।

लेजर प्रिंटर :–

इसके द्वारा ड्रम पर चमकती हुई लेजर किरण पड़ती है और ड्रम पर सामग्री का चित्र घूमने पर कागज पर पाउडर स्याही खींच लेता है, छपाई के लिए और कार्यालयों में इसका बहुत प्रयोग किया जाता है।

मदर बोर्ड :–

मदर बोर्ड बहुत बड़ा सर्किट बोर्ड है जो कम्प्यूटर के सभी भ. ागों को जोड़ता है, इससे हार्डवेयर के सभी भाग जैसे सी.पी. यू. और रैम जुड़े होते हैं। यह बाहर से दिखाई नहीं देता।

सी.पी.यू. :–

कम्प्यूटर का सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट या दिमाग सीपीयू कहलाता है जो सूचनाओं को एकत्र करता है और कम्प्यूटर के अन्य विभागों को अपना काम करने का निर्देश देता है, इसके तीन प्रमुख भाग हैं।

1. मैमोरी यूनिट :– यह सामग्री जुटाता है और उसे आलू/ ALU में भेजता है।
2. आलू/**ALU** :– यह गणितीय काम करता है।
3. सीयू/**CU** :– कंट्रोल यूनिट सामग्री के आदान–प्रदान को नियंत्रित करता है और इसका प्रोसेसिंग करने के बाद आउटपुट डिवाइस को भेजता है।

कम्प्यूटर मैमोरी :–

कम्प्यूटर का वह स्थान जहां सामग्री एवं आंकड़े या प्रोग्राम स्थाई या अस्थाई तौर पर स्टोर किए जाते है, कम्प्यूटर की मैमोरी कहलाती है, यह दो प्रकार की होती है – प्राइमरी और सेकेंडरी।

प्राइमरी मेमोरी :–

प्राइमरी या प्राथमिक मैमारी या रैम/RAM कम्प्यूटर का महत्वपूर्ण अंग है। यह कम्प्यूटर में अस्थाई तौर पर डैटा स्टोर कर इसे कार्यशील बनाता है। कम्प्यूटर में जो भी सामग्री डाली जाती है उसे सी.पी.यू. द्वारा मैमोरी में डाला जाता है और तब तक स्टोर किया जाता है जब तक उसकी आवश्यकता हो। यह कम्प्यूटर की प्राइमरी या मुख्य मैमोरी कहलाती है। इसके दो भाग हैं – रैम और रोम।

रैम/**RAM** :–

रैम अस्थाई तौर पर सामग्री को स्टोर करता है। यदि बिजली चली जाए तो स्टोर की गई सामग्री न ट हो जाती है यदि उसे समय–समय पर कंट्रोल + एस करके सेव न किया जाए। इस सामग्री को संशोधित, संपादित या मुद्रित किया जा सकता है और भवि य के लिए बचाकर रखा जा सकता है।

रोम/**ROM** :–

ROM (Read Only Memory) केवल पठनीय सामग्री है इसमें कोई सुधार भी नहीं किया जा सकता है। इसका उपयोग विशेष सूचना को स्टोर करने के लिए किया जाता है जो हार्डवेयर को काम करने में सहायता करता है।

सेकेंडरी मेमोरी :–

सेकेंडरी मेमोरी स्टोरेज डिवाइसेज का एक समूह है जिनके द्वारा डेटा स्थाई तौर पर स्टोर किया जाता है इनके स्टोरेज डिवाइस निम्न हैं–

1. हार्ड डिस्क ड्राइव :–

यह कम्प्यूटर के सीपीयू के अंदर लगी होती है। जो भारी मात्रा में सामग्री को स्टोर करती है और आवश्यकता के अनुसार उसका उपयोग किया जाता है।

2. फ्लॉपी डिस्क ड्राइव :–

यह कम्प्यूटर का वह भाग है जिसके द्वारा सामग्री स्थाई तौर पर स्टोर की जाती है जिसे ए ड्राइव कहा जाता है। यह मॉनिटर के बाहर लगी होती है।

3. सीडी और डीवीडी **(CD & DVD) :-**

(Compact Disc Drive and Digital Versatile Disc) ड्राइव कम्प्यूटर के वह भाग हैं जिनमें सामग्री और प्रोग्राम स्टोर किए जाते हैं। रिकॉर्ड की जाने वाली डिस्क ड्राइव पर सामग्री या म्यूजिक या गाने या पिक्चर आदि रिकॉर्ड किए जाते हैं और बजाए जा सकते हैं। इनका दैनिक प्रयोग हर व्यक्ति बड़ी मात्रा में करता है जो बहुत ही सुविधाजनक और सूचनापूरक तकनीक है।

4. मैगनेटिक टेप :–

यह ऑडियों टेप या कैसेट की तरह काम करता है जिसमें चुंबकीय सिद्धान्त पर डेटा/डाटा स्टोर किया जाता है और जब आवश्यकता हो, तब उसका उपयोग किया जा सकता है।

5. लैश ड्राइव या पैन ड्राइव :–

यह कम्प्यूटर की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण स्टोरेज की तकनीक है जिसके द्वरा हजारों पृ ठों की सामग्री को छोटे से पैन ड्राइव में जेब में रखकर कहीं भी ले जाई जा सकती है और उसका उपयोग किया जा सकता है। यह यू.एस.बी. पोर्ट पर काम करती है जिसका आजकल बहुत से कामों के लिए उपयोग होता है।

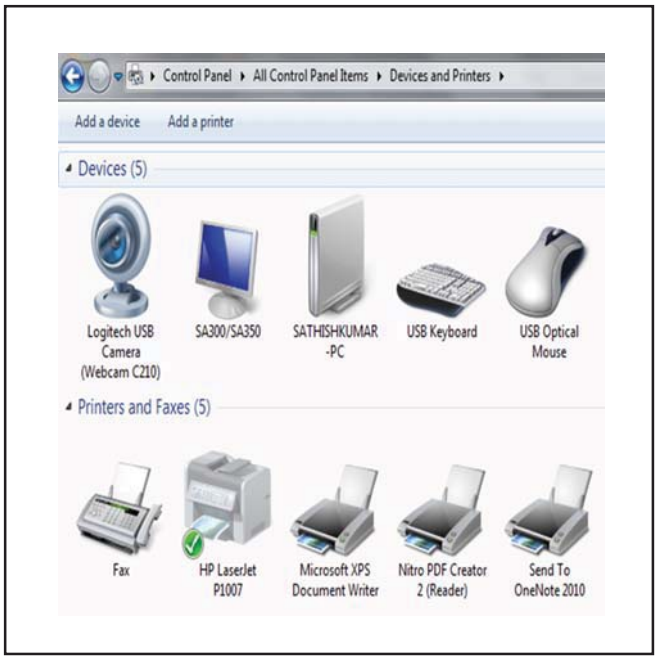

आपरेटिंग सिस्टम :–

सिस्टम सॉफ्टवेयर के सभी यंत्रों का समूह जिनके द्वारा कम्प्यूटर कार्य करता है, ऑपरेटिंग सिस्टम कहलाता है। इसके द्वारा कम्प्यूटर की मैमोरी, प्रोसेसर, इनपुट और आउटपुट डिवाइसेज का प्रबंधन होता हैं। माइक्रोसॉफ्ट विन्डोज, मैंकिनटोश, लिनेक्स प्रमुख आपरेटिंग सिस्टम है। ऑपरेटिंग सिस्टम दो प्रकार के हैं– पहला सिंगल यूजर जिस पर एक ही व्यक्ति काम कर सकता है। जैसे विण्डोज 95 और विन्डोज 98 दूसरा मल्टी यूजर जिस पर अनेक लोग एक साथ काम कर सकते है, जैसे विन्डोज 2000 विन्डोज XP Windows XP Windows Vista Windows 2007 and Linux/लीनेक्स।

वैब कैमरा :–

वैब कैमरा एक वीडियो कैमरा है जो कम्प्यूटर में तस्वीरे यू. एस.बी. द्वारा भेजता है इसका उपयोग दूर स्थानों पर स्थित लोगों के बीच चैटिंग या वार्ता, मीटिंग या वीडियो कॉफ्रेंसिंग के लिए किया जाता है दूर स्थानों पर कम्प्यूटर के वैब कैमरे पर बैठै लोगों से उसी तरह आमने–सामने बात हो जाती है जैसे कि एक साथ बैठक में बात कर रहे हों। इससे लाखों रूपयों का आने जाने का खर्च और समय बचता है देश विदेशों में बैठे लोगों की बातचीत और महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

कम्प्यूटर बूट :–

कम्प्यूटर को चालू/ON करने पर हार्ड डिस्क से ऑपरेटिंग सिस्टम सॉफ्टवेयर, कम्प्यूटर की मैमोरी में लोड हो जाता है जिसे बूटिंग/ Booting कहते हैं।

वैलकम स्क्रीन :–

कम्प्यूटर के बूट होने पर कम्प्यूटर की स्क्रीन पर विन्डोज 7 या विन्डोज 2003 दिखाई देता है जिसके बाद आप कम्प्यूटर को चला सकते हैं या LOG ON कर सकते हैं आप इसे पासवर्ड से लॉक कर सकते हैं जिसे याद रखने पर ही आप कम्प्यूटर को खोल सकते हैं।

डैस्क टॉप/**Desktop** :–

डैस्कटॉप कार्यालय की मेज की तरह है जिस पर सभी आवश्यकता की चीजें उपलब्ध होती हैं डिस्पले स्क्रीन या दृश्य पटल पर विन्डोज के काम की चीजें इस पर दिखाई देती हैं जैसे My Computrer

डैस्कटॉप का बाहरी दृश्य बदलने के लिए खाली स्थान पर क्लिक करें जिससे डैस्कटॉप कस्टमाइज/चालू हो जाएगा। आप अब वॉल पेपर या रंगीन दृश्यों या बैकग्राउंड कलर को बदल सकते हैं।

एम एस आफिस

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **फाइल बनाना ।**

My Document/Document :-

कम्प्यूटर की हार्ड डिस्क में एक फोल्डर होता है जिसमें सामग्री या डॉक्यूमेंट, टैकस्ट, फाइल आदि स्टोर किए जाते हैं। डॉक्यूमेंटस में पिक्चर, म्यूजिक/गाने, गेम या अन्य फाइलों को स्टोर किया जाता है। डबल क्लिक करने से इनकी जानक. ारी कम्प्यूटर के स्क्रीन पर मिल जाती है।

डाक्यूमेंट खोलने के लिए निम्न कदम उठाए जाते हैं–

- डेस्कटॉप पर माई–डाक्यूमेंट को डबल क्लिक करें जिस में अनेक आइकॉन या डाक्यूमेंट सूची अक्षरों के क्रम में दिखाई देती है।
- यदि यह डेस्कटॉप पर नहीं है तो यह डी ड्राइव में स्टोर किए होते हैं जिसके लिए स्टार्ट में जाकर माइ डॉक्यूमेंट पर क्लिक करें जिसमें यह सूची मिल जाएगी।
- वर्ड 7 में सर्च पर क्लिक करें और My Document टाइप करें। पूरी सूची उपलब्ध हो जाएगी। इसमें हर फाइल का विवरण होता है। जिसमें फाइल का साइज, उसके निर्माण या संशोधन की तारीख भी होती है।

कम्प्यूटर के डिस्क डी में भी फाइलों का विवरण होता है।

Start Menu esa जाकर Search पर क्लिक करें और फाइल और फोल्डर का नाम टाइप करें। जिस फाइल या फोल्डर को मिटाना या हटाना है उस पर राइट क्लिक करें जिससे Confirm File Delete आएगा। उसके Yes पर क्लिक करने से फाइल Recycle Bin / कूड़ेदान में चली जाएगी। No पर क्लिक करने से Delete रद्द हो जाएगी।

Recycle Bin एक बक्सा है जिसमे नष्ट की जाने वाली फा. इलों या फोल्डरों को एक साथ भेजा और रखा जाता है। ताकि आवश्यकता पड़ने पर उनको Restore /वापस किया जा सके लेकिन फ्लॉपी डिस्क, पैन ड्राइव या नेटवर्क से ली गई फा. इलें नष्ट हो जाती है और रिसाइकिल बिन में नहीं भेजी जा सकती है इसलिए उनको वापस नहीं लाया जा सकता है।

डिलीट फाइलों को री–स्टोर करने या वापस लाने के लिए निम्न कदम उठाए जाते हैं–

- रिसाइकिल बिन पर क्लिक करें और वापस लाई जाने वाली फाइल पर राइट क्लिक करें और फिर Restore पर क्लिक करें।
- पूरी तरह नष्ट करने के लिए फाइल पर राइट क्लिक करके Delete पर क्लिक करें। ऐसा करने पर उसे वापस नहीं लिया जा सकता है।

किसी फाइल या फोल्डर को रिसाइकिल बिन में भेजकर नष्ट करना :–

- डिलीट की जाने वाली फाइल या फोल्डर को सेलेक्ट करें।
- शिफ्ट–की को दबाकर रखें और डिलीट दबाएं।
- Confirm File Delete आने पर Yes पर क्लिक करें।
- फाइल पूरी तरह से नष्ट हो जाएगी और रिसाइकिल बिन में नहीं जाएगी।
- No पर क्लिक करने से Delete की कार्यवाही न ट हो जाएगी और फाइल डिलीट/नष्ट नहीं होगी।

विभिन्न मैन्यूज :–

आइकॉन :–

डैस्कटॉप पर दिखाई देने वाले छोटे–छोटे चित्र जो कम्प्यूटर पर विशेष कार्य करते हैं आइकॉन कहलाते हैं। कम्प्यूटर यूजर की सुविधा के लिए इनका प्रयोग होता है। इनमें से माई कम्प्यूटर, रिसाइकल बिन, वर्ड फाइल, फोल्डर आदि का प्रयोग अधिकतम होता है। आइकॉन पर डबल क्लिक करने से आ. इकॉन का प्रोग्राम खुल जाता है जिस पर अपना काम कर सकते हैं।

नया यूजर एकाउण्टस खोलना :–

स्टार्ट मेन्यू से कंट्रोल पैनल खोलें और यूजर एकाउंट पर डबल क्लिक करें और नीचे दिए गए कार्य करें –

- Creat New Account पर क्लिक करें।
- Account sk नाम टाइप करें।
- Passs word टाइप करें।
- Creat pass word la pass word डालें

Remove Pass word ls Pass word हटाएं।

स्टार्ट मेन्यू के प्रयोग :–

स्टार्ट मेन्यू सबसे नीचे स्क्रीन पर टास्क बार पर स्थित हैं जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

मॅन्यू में सारे प्रोग्रामों की लिस्ट होती है। जो कम्प्यूटर में उपलब्ध है, जब किसी आइकॉन को क्लिक करते है तो ड्राप डाउन बटन मॅन्यू आता है, इसमें जो भी कमांड चाहिए उसे सेलेक्ट करके, उसमें दिए गए ऑप्शन को सेलेक्ट करने से डॉयलॉग बॉक्स आता है इसमें दिए गए आइकॉन पर क्लिक करके वांछित प्रोग्राम होते हैं।

Log Off, Turn of Computer; All Programs; Run, Search, Help and Support, Printers and faxes, Control Panel, Computer, Movie Maker; Outlook Express; Files and Settings; Transfer Wizard and small black arrow आदि होते है।

Search Programs and files स्क्रीन के ऊपर या सबसे नीचे होता है इससे फाइलों को ढूंढा जा सकता हैं।

टास्क बॉर :–

मॉनीटर के स्क्रीन पर सबसे नीचे टास्क बार होता है। जिस पर स्टार्ट बटन तथा सिस्टम ट्रे होती है। ये छिपी भी होती हैं और वहां पर भी लाई जा सकती है, इसमें तारीख और समय भी सैट करके दिखाया जा सकता है, टास्क बार के छोटे–छोटे बटन होते है जिनसे एम.एस.वर्ड, एम.एम.एक्सल एण्ड पावर प्वाइंट पर खोले जा सकते हैं।

टाइम और तारीख सैट करना :–

टास्क बार पर खाली स्थान पर क्लिक करें और स्टार्ट मॅन्यू से Properties पर जाएं। माउस प्वाइंटर को टाईम इंडिकेटर पर ले जाएं और राइट क्लिक करें, पॉप–अप मेन्यू से Adjust Date and Time पर जाकर सही डेट, महीना और समय तय करें और OK पर क्लिक करें–

विन्डो :–

विन्डो आयताकार बक्सा है जो कम्प्यूटर की स्क्रीन पर किसी भी प्रोग्राम को दिखाता है। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

विन्डो की साइज को ऊपर या नीचे से या दाएं बाएं से ठीक करने के लिए निम्न कदम उठाएं

- माउस प्वाइंटर को विन्डो के दायें किनारें पर ले जाएं। प्वाइंटर को शेप तिरछा या खड़ा दिखाई देगा जैसा दायें चित्रों में है।
- बार्डर पर माउस क्लिक करें और वांछित साइज तक लाएं और छोड़ दें।
- साइज ऊपर और नीचे से करने पर ठीक हो जाएगा।

टाइटल बार :–

कम्प्यूटर स्क्रीन के सबसे ऊपर एक पट्टी है जिस पर विन्डोज का टाइटल/शीर्षक होता है और उसके दाईं और तीन बटन Minimize, Maximize and Close बटन होते हैं जिनको कंट्रोल बटन भी कहा जाता है जैसा चित्र में दिखाया गया है।

मॅन्यू बार :–

अलग–अलग कामों को करने के लिए अलग–अलग बटन होते हैं जो एक पट्टी/मेन्यू बार में अंकित होते है माउस प्वाइंटर को जिस बटन पर संकेत करके क्लिक किया जाएगा, वह अपना कार्य करेगा।

स्टेटस बार :–

स्टेटस बार प्रोग्राम विन्डो के नीचे होता है। जिस पर ऐक्टिव सा कार्य किए जाने वाले डॉक्यूमेंट की जानकारी लिखी आती है।

क्विक लॉंच टूल बार :–

दैनिक प्रयोग में आने वाले टूल बार का नाम क्विक लांच टूल बार है। जिसमें बाईं ओर नीचे स्क्रीन पर तीन आइकॉन होते है। Internet, Explorer and Windows Media Player प्रोग्राम फाइल या फोल्डर से ड्रैग करके इसमें और भी आइकॉन जोड़े जा सकते हैं।

पॉप–अप मॅन्यू और डॉयलाग बॉक्स :–

किसी आइकॉन पर या खाली स्थान पर राइट क्लिक करने से पॉप–अप मॅन्यू आता है जो विन्डो या फाइल के मुख्य कार्य बताता है जैसा दायीं ओर दिखाई देता है।

लेकिन डॉयलॉग बॉक्स/तब आता है जब कम्प्यूटर किसी कमांड या आदेश की पुष्टि करने के लिए हां या ना में उत्तर चाहता है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

कर्सर :–

जब भी स्क्रीन पर कुछ टाइप किया जाता है या ई–मेल संदेश से कुछ टाईप किया जाता है तो उस स्थान पर एक खड़ी पाई लगातार झपकती रहती है जिसे कर्सर कहते है इससे उस स्थान का पता लगता है जहां हम टाइप करके कोई अक्षर या शब्द डालना चाहते है इसे इंसर्शन प्वाइंट कहते हैं।

ड्रैग और ड्रॉप जंक्शन :–

माउस बटन से किसी आइटम को संकेत करके माउस बटन को दबाए रखकर किसी अन्य स्थान पर ले जाना ड्रैग करना या खींचना कहलाता है और उसे निर्धारित स्थान पर बटन को छोड़ देना ड्रॉप कहलाता है ड्रैग और ड्रॉप ऑप्शन से स्क्रीन पर हम किसी आइकॉन या अन्य चीज को इधर–उधर ले जा कर रख सकते हैं।

स्टोरेज डिवाइसेस से डेटा या फाइल कॉपी करना :–

- पहले कॉपी की जाने वाली फाइल को सेलेक्ट करें।
- सेलेक्टेड फाइल को राइट क्लिक करें। जिससे पॉपअॅप मेन्यू आएगा।
- कॉपी पर क्लिक करें।
- जहां फाइल सेव करनी है, वहां पर डबल क्लिक करें जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।
- खाली स्थान पर राइट क्लिक करें पॉप–अप मेन्यू आएगा।
- Paste पर क्लिक करें और डॉयलाग बॉक्स देखें।

वर्ड फाइल को कट और पेस्ट करना :–

- वर्ड फाइल को हाइलाइट करें।
- वर्ड फाइल को राइट क्लिक करें और पॉप अप मेन्यू को देखें।
- कट पर क्लिक करें।
- गंतव्य स्थान/ Destination Page पर जाएं।
- खाली स्थान पर क्लिक करें, पॉप अप मैन्यू आएगा।
- पेस्ट/Paste पर क्लिक करें।

वर्ड फाइल को कटिंग/Cutting और कॉपी/Copying विधियों में अन्तर :–

किसी फाइल या शब्द को कट/Cut करने के बाद उसे तुरन्त पेस्ट नहीं किया गया तो वह सामग्री अपने मूल स्थान से कटने के कारण न ट हो जाती है लेकिन यदि उसे कॉपी करके पेस्ट करना हो तो वह सामग्री अपने मूल स्थान पर भी रहती है और नष्ट तभी होगी जब आप उसे डिलीट/Delete करेंगे, इसलिए कटिंग ऑप्शन का प्रयोग केवल सामग्री को एक स्थान से काटकर दूसरे स्थान या पेज पर ले जाने के लिए किया जाता है।

स्क्रीन सेवर :–

कम्प्यूटर की स्क्रीन पर दिखाई देने वाला दृश्य स्क्रीन सेवर कहलाता है जिसे अपनी इच्छानुसार बदला जा सकता है जिसके लिए निम्न कदम उठाए जा सकते हैं।

- डेस्कटॉप पर खाली स्थान पर माउस को राइट क्लिक करके पॉप–अॅप मैन्यू देखें।
- प्रोपर्टीज में क्लिक करके स्क्रीन सेवर/ Screen Saver पर क्लिक करें और मॅन्यू में स्क्रीन सेवर के नमूनें देखें।
- मनपसंद स्क्रीन सेवर पर जाकर Apply पर क्लिक करें,

लोकप्रिय वर्ड प्रोसेसर

वर्ड परफेक्ट /वर्डस्टार /माइकोसॉफ्ट /प्रमुख लोकप्रिय वर्ड प्रोसेसर हैं।

डाक्यूमेंट विण्डो :–

उतर –एम. एस. वर्ड खुलने पर एक नया डाक्यूमेंट विण्डो खुलता है जैसा चित्र में दिखाया गया है इस पर टाइटल बार, मेन्यूबार, टूल बार, स्टेटस बार रूलर बार आदि होते हैं। इनकी जानकारी अगले पृष्ठों मे दी गई है।

माइकोसॉफ्ट खुलने पर एक नया डॉक्यूमेंट खुलता हैं

नया डॉक्यूमेंट खोलने के लिए निम्न कदम उठायें –

- फाइल मेन्यू /पर क्लिक करें और न्यू पर जायें
- स्टेंडर्ड टूल बार पर न्यू बटन पर क्लिक करें ।

एक नया डॉक्यूमेंट स्क्रीन पर खुल जायेगा जिस पर अस्थाई नाम डॉक्यूमेंट 1 और डॉक्यूमेंट 2 और डॉक्यूमेंट 3 आयेगा

इसका /डॉक्यूमेंट का नाम आप विषय के अनुसार बदल सकते हैं। जो उस फाइल का सही और पक्का नाम होगा इसको भी आप जब चाहें बदल सकते हैं। नाम पर राइट क्लिक करके रिनेम पर क्लिक करें और दूसरा नाम टाइप करें।

फाइल मॅन्यू पर क्लिक करें और सेव ऑप्शन में जायें

- ''सेव एस '' डायलोग्स आएगा जिस पर फाईल का नाम टाइप करें।
- ऐक्टिव डॉक्यूमेंट को बन्द करके बाहर निकालें।
- विन्डोज बन्द करने के लिए फाइल मॅन्यू पर क्लिक करें और Exit option पर क्लिक करें।

फाइल मॅन्यू मे जाकर ओपन बटन दबाऐं ।

- स्क्रीन पर एक बॉक्स मे सभी फाइलों की सूची आ जायेगी
- वांछित फाइल को सेलेक्ट करें ओर उस पर क्लिक करें
- ओपन बटन पर क्लिक करें फाइल खुल जायेगी एक्सप्लोरर/में जाकर फाइल पर क्लिक करके भी फाइल खुल जायेगी .

पंक्तियों टाइप करने के बाद कंट्रोल + एस करते रहना चाहिए

किसी सामग्री को डिलिट करने के लिए निम्न कदम उठायें।

डिलीट किए जाने वाली सामग्री को सेलेक्ट करें।

- Edit menu में जाकर स्टेंडर्ड टूलबार के कट बटन को दबायें अथवा
- सामग्री को सेलेक्ट करके कंटोल+एक्स दबाये सामग्री को एक स्थान से दूसरे पर ले जाने के लिए सामग्री सिलेक्ट करें
- Edit menu के कट को दबाएं .
- सामग्री जहां पर ले जानी है कर्सर या इनसर्ट प्वॉइट को वहां पर ले जाये पेस्ट पर क्लिक करें

क्लिप बोर्ड –

क्लिप बोर्ड कम्पयूंटर की मैमोरी का टेम्परेरी /अस्थाई स्थान है। जहां पर कट की गई सामग्री को तब तक रखा जा सकता है। जब तक उसे कापी ना किया जाये ।

ड्रेग एण्ड ड्रॉप फीचर

ड्रेग एण्ड ड्रॉप तकनीक किसी शब्द वाक्य या सामग्री को एक स्थान से घसीटकर दूसरे स्थान पर ले जाकर रखना है। इसके लिए निम्न कदम उठाये जाते हैं।

- हटाए जाने वाले शब्द या वाक्य को सेलेक्ट करें
- सेलेक्ट किए गए टैक्स्ट को प्वांइट करके माउस बटन को दबाए रखें
- इसे वांछित स्थान पर ले जाकर माउस बटन को छोड़ दें सामग्री वहां पर चली जाएगी ।

अंडू – रिडू कमांड –

अंडू –रिडू का अर्थ हैं इससे पहले की कार्यवाही या कमांड को रद्द करना और रिडू का अर्थ है उस कार्यवाही या अनडू की कार्यवाही को रद्द करना । ये कमांड स्टेंडर्ड टूलबार में उपलब्ध है।

यदि गलती से कट के स्थान पर डिलीट दब गया हो तो सामग्री नष्ट हो जाएगी क्योंकि यह क्लिप बोर्ड पर नहीं है। इसमें पेस्ट का ऑप्शन काम नहीं करता अनडू करने से उस कार्यवाही को रद्द किया जाता है। और सामग्री बचायी जाती है।

यदि अनडू कमांड गलती से दबाया गया हो तो उसे रद्द के लिए रिडू कमांड का प्रयोग किया जाता है। ताकि अनडू का कमांड अपना काम ना कर सके और पिछली कार्यवाही चालू हो ।

कट एंड पेस्ट –

किसी सामग्री को काट कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर रखना कट एण्ड पेस्ट विधि है। edit menu के कट ऑप्शन में जाकर वांछित सामग्री को कट करें और जहाँ ले जाना हो वहां कर्सर ले जाकर पेस्ट करें।

ctrl+X से भी सेलेक्टेड सामग्री को काटा जा सकता है।

पहले सामग्री /टेक्सट सेलेक्ट करें

- सेलेक्ट किए गए टैक्स्ट को राइट क्लिक करें
- पॉप अप मॅन्यू के कॉपी ऑप्शन पर जाएं.
- कर्सर उस स्थान पर ले जाएं जहां सामग्री को ले जाना है।
- राइट क्लिक करके मॅन्यू में पेस्ट का बटन दबाएं.

अथवा

- सामग्री को सेलेक्ट करके ऐडिट मॅन्यू के कापी ऑप्शन पर जाएं और कापी बटन दबाएं और पेस्ट ऑप्शन पर क्लिक करें । सामग्री उस स्थान पर चली जाएगी .

इससे भी और सरल तरीका है– सामग्री सेलेक्ट करें

- कंट्रोल +सी दबाएं और निश्चित स्थान पर कर्सर ले जाकर
- कंटोल +वी करें.
- किसी डॉक्यूमेंट में सामग्री को प्रवेश/इंनसर्ट किया जाता है। वर्ड सामान्यतया इनसर्ट मोड़ होता है। इसके लिए

- कर्सर को उस स्थान पर ले जाते हैं। जहां शब्द या वाक्य इंनसर्ट करने हैं।
- शब्द या वाक्य टाइप करें स्टेटस बार पर यदि ओ.वी. आर बटन धुँधला है तो समझे कि वर्ड इनसर्ट मोड में है। यदि बटन की लाइन जलती है। तो वह ओवर राइट मोड में है।
- की –बोर्ड की दायीं ओर इनसर्ट कुंजी को दबाएं जिससे इनसर्ट मोड चालू हो जाएगा .
- जितनी भी सामग्री आप टाइप करके डालना चाहते हैं, डाल सकते हैं।

वर्ड रैप

- किसी वर्ड डॉक्यूमेंट में जब हम टाइप करते है। तो दायें मार्जिन की परवाह न करते हुए हम टाइप करते जाते है जिसको एम.एस.वर्ड स्वंय दायें मार्जिन पर पहुंचने पर सामग्री को अगली पंक्ति में ले जाता है।इस विधि को वर्ड रैप कहते हैं।
- अग्रेजी के छोटे अक्षरों को कैपिटल मे कैस में बदलना
- केस बदलने के लिए निम्न कदम उठाये जाते हैं।

Viewing Document

स्कीन पर डॉक्यूमेंट कई तरीके से दिखता है। जिसके लिए निम्न प्रकार के ऑप्शन /तरीके हैं।

1. नार्मल व्यू –

यह डिफॉल्ट व्यू है जिसका प्रयोग टाइपिंग और ऐडिटिंग में होता है। टाइप सामग्री से बाहर ाी ाक /header, footer, footnotes, pages, numbers, margin spacing आदि नार्मल व्यू में नही दिखाई देते हैं। डिस्पले देखने के लिए नार्मल ऑप्शन को सेलेक्ट करें

2. आउटलाइन –

आउटलाइन व्यू में डॉक्यूमेंट की सारी सामग्री दिखायी देती हे। इसके द्वारा सारी सामग्री को देख सकते हैं। पंक्तियों और ाी ाक को पुनः ठीक कर सकते हैं। इसे देखने के लिए व्यू मेन्यू में आउटलाइन व्यू सेलेक्ट करें।

3. पेज लेआउट –

इसमें हर पेज का ले आउट जैसा वह कागज पर छपेगा वैसा दिखाई देता है। इसमें पेज के आकार के बाहर ाी ाक, पेज, नम्बर पुस्तक का नाम आदि भी देख सकते हैं। इसके लिए पेज लेआउट को सेलेक्ट करें और बटन दबाएं।

4. फुल स्क्रीन व्यू –

इसमें टाइप किये जाने वाले स्थान को अधिकतम किया जाता है स्क्रीन से टाइटल बार, मेन्यू बार, टूलबार, स्क्रॉलबार एडं स्टेटस बार हट जाते है।

टैक्स्ट/टाइप सामग्री को इंडेट करना :–

रूलर बार या पैराग्राफ डॉयलॉग बॉक्स से टाइप सामग्री का इंडेट किया जाता है। जैसा चित्र में दिखाया गया है।

सामग्री को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाने के लिए इंडेट किया जाता है। इंटेट करने से टैक्स्ट की जगह कम होती है। और कागज पर सफेद स्थान बढ़ाया या घटाया जा सकता है लेकिन कम्प्यूटर में डिफॉल्ट इंडेट हर 5 स्पेस के बाद होता है। दायी ओर जगह छोड़ने के लिए दायां इंडेट भी किया जा सकता है। ऊपर का चिन्ह पहली पंक्ति का इंडेट होता है। और नीचे का चिन्ह बायां इंडेट होता है।

1. रूलर बार का प्रयोग –

सामग्री की चौड़ाई समतल रूलर बार दिखाता है। जिसे हम कागज या लैटर पैड के अनुसार सैट करते हैं।

इसके लिए निम्न कदम उठाये जाते हैं।

- जिस सामग्री में टैब का प्रयोग किया जाना है उसे सेलेक्ट करें।
- तिकोने इंडेंट मार्कर पर माउस प्वॉइंटर करें और बटन दबाकर वांछित स्थान पर ले जांए ।
- माउस बटन छोड़ने पर सामग्री वहां से इंडेट हो जाएगी.

2. पैराग्राफ फारमेट करना –

नीचे दिए गए डॉयलॉग बॉक्स के अनुसार बायां, दांया, पहली पंक्ति या हैंगिग इंडेट निर्धारित किए जा सकते हैं –

- पहले वांछित पैराग्राफ को सेलेक्ट करें।
- फारमैट मॅन्यू पर क्लिक करें और पैराग्राफ सेलेक्ट करें जिससे डॉयलॉग बॉक्स आएगा।
- पहली पंक्ति इंडेंट और हैंगिंग स्पेस भी टाइप करें जो स्पेशल ड्रॉप – डाउन लिस्ट में है।
- ओ.के.बटन दबाएं।

3. बुलेट और नंबर देना– इनके प्रयोग के लिए निम्न कदम उठाएं–

- बुलेट सूची का कोई चिन्ह सेलेक्ट करें या नया लें।
- फारमेटिंग टूलबार से बुलेट चिन्ह पर क्लिक करें।
- वह चिन्ह आ जाएगा और ऐंटर दबाने पर अगली पंक्ति में आ जाएगा. इसे हटाने के लिए फिर क्लिक करें ।
- नंबर की सूची सेलेक्ट करें।
- फारमेटिंग टूलबार नंबर क्लिक करें।
- नंबरों के भी अनेकों रूप लिस्ट में उपलब्ध है। उनके अनुसार किसी पर क्लिक करें .
- हटाने के लिए पुनः क्लिक करें

बुलेंट और नंबरों से सामग्री को विशे ा रूप से स्प ट एवं आक र्क बनाया जाता है। जिससे उसे पढ़ने एवं समझने में भी सुविधा होती है।

4. फारमेंट पेंटर –

किसी डॉक्यूमेंट को फॉरमेंट करने के लिए फॉरमेट पेंटर का प्रयोग किया जाता है। इससे फारमेट का रूप कापी होकर डॉक्यूमेंट को फॉरमेट करने में काम आता है। इसके लिए –

- पहले सामग्री के फारॅमेट को सेलेक्ट करें।
- स्टेंडर्ड टूलबार पर उपलब्ध फॉरमेट पेंटर बटन को दबाएं ताकि माउस प्वॉइंटर पेंट ब्रश के रूप में दिखाई दे और उस पर आइ –बीम आए।
- फॉरमेंट की जाने वाली सामग्री को सेलेक्ट करें.
- सामग्री अपने आप नए फॉरमेंट में आ जाएगी.
- फॉरमेंटिग पूरा होने पर Esc. Key दबाएं और फॉरमेंट पेंटर दबाएं।

5. डॉक्यूमेंट हाइलाइट करना –

वर्ड का हाइलाइट फीचर सामग्री /डॉक्यूमेंट को 15 रंगों तक चमका सकता है। जिसके लिए निम्न कदम उठाए ं–

सामग्री को सेलेक्ट करें।

- चित्र के अनुसार हाइलाइट बटन के दायीं ओर के नीचे वाले तीर पर क्लिक करें।
- रंगों की सूची सामने आ जाएगी।
- रंग को चुनने पर सामग्री का रंग बदल जाएगा।
- हाइलाइट हटाने के लिए चमकीली सामग्री को सेलेक्ट करके हाइलाइट बटन को दबाएं।

6. टैब सेट करना –

ीघ्र सामग्री की सूची बनाने के लिए टैब सैट किए जाते हैं। जैसा डॉयलॉग बॉक्स में है।

टैब स्टॉप 5 प्रकार के होते हैं– बांया, दांया, केन्द्र, दशमलव और बार टैब. डिफॉल्ट टैब बायां होता है।

टैब कुंजी को दबाने से टाइप करने का स्थान दायीं ओर को हर आधे इंच पर जाकर रूकता है। टैब से संबंधित अन्य विशेषताएं डॉयलॉग बॉक्स में दिखाई देती है। वर्ड में टैब लीडरों द्वारा सामग्री को पढ़ने में सुविधा होती है. टैब लीडर बिन्दुओं या डैशों की लाइन होती है जो दो स्थानों की सामग्री के बीच डाले जाते हैं।

टैब डॉयलॉग बॉक्स के प्रयोग के लिए निम्न कदम उठाएं–

- पैराग्राफ को सेलेक्ट करें।
- फारमेट मेन्यू से टैब सेलेक्ट करें. डॉयलॉग बॉक्स आ जाएगा।
- टैब स्टॉप पोजीशन बॉक्स में टैब की पोजीशन /स्थान टाइप करें।
- अब टैब ऐलाइनमेंट सेलेक्ट करें और – बायां, केन्द्र, दांया, डेसीमल या बार सेलेक्ट करें।
- अब टैब लीडर के स्टाइल को सेलेक्ट करें जैसे 1से कोई लीडर नहीं आएगा, 2 से बिन्दुओं की लाइन, 3 से डैशों की लाइन और 4 से सभी अंडरलाइन हो जाएंगे।
- सैट बटन को दबाएं जिससे टैब स्टॉप सैट हो जाएं.
- ओ.के. बटन को दबाएं।
- टैब हटाने के लिए टैब डॉयलॉग बॉक्स के क्लियर बटन को दबाएं।

7 पेज मार्जिन सैट करना –

सामग्री को सही आकार में छापने के लिए पेज के चारों ओर सही मार्जिन सैट करना अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है किसी कागज या पैड पर छापी जाने वाली सामग्री या पत्र का बायां, दायां, ऊपर और नीचे का हाशिया लगाने से उसकी सुंदरता बढ़ती है. हाशिये माउस प्वांइटर से खींचकर भी लगाए जा सकते हैं और पेज सेट अप में कागज के आकार को ध्यान में रखकर लगाना अधिक लाभदायक होता है. पेज सेट अप डॉयलॉग बॉक्स में 4 टैब होते है।

1. मार्जिन से दांया, बायां , ऊपर और नीचे के हाशिये के साथ पेज नंबर भी दिए जा सकते हैं।

   मार्जिन में हैडर /शी र्क और फुटर/ नीचे से कागज पर पेज नंबर भी दिए जा सकते हैं।

   जो पेज के ऊपर, नीचे, दायें, बायें, या केन्द्र में हो सकते हैं।

2. पेपर साइज से कागज की लंबाई , चौड़ाई और उसे छापने का स्टाइल/तरीका – पोर्ट्रेट /खड़ा या / लेंडस्केप/तिरछा सैट करके सही आकार में सामग्री छापी जाती है।
3. पेपर सोर्स /से हम कवर पेज या विशे ा प्रकार के कागज को छापने का निर्देश, पेपर साइज के अनुसार देते हैं।
4. ले –आउट से पंक्तियों, बार्डर या पेज नंबरों का निर्धारण होता है जो हेडर या फुटर में होते हैं जिनसे पुस्तकों के नाम या संकेत भी आते हैं, जैसा कि पेज सेट अप के चित्र में दिया गया है।

रूलरों का प्रयोग –

रूलरों का प्रयोग – टाइप करते समय मार्जिनों को लगाने या देखने का सरलतम तरीका रूलर बार हैं।

होरिजेंटल / समतल रूलर से हमें दायें, बायें मार्जिनों का पता चलता है और खड़े / वर्टिकल रूलर से ऊपर और नीचे के मार्जिन दिखाई देते हैं जिन्हें हम कागज के साइज के आवश्यकतानुसार बढ़ा या घटा सकते हैं।

किन्तु यदि रूलर बार ऊपर एवं बाईं और दिखाई न दें तो व्यू मॅन्यू में जाकर–

- रूलर सेलेक्ट करें।
- रूलर लाइन पर कर्सर ले जाकर खाली स्क्रीन के ऊपर छोड़ दें कर्सर एक डमरू के आकार का दिखाई देता है।
- माउस क्लिक करें और मार्जिन को वांछित स्थान तक घसीटें और ओके करें।

डॉक्यूमेंट मार्जिन को ऐडजेस्ट करना –

सही सैटिंग और मार्जिन बदलने के लिए डॉयलॉग बॉक्स में जाएं, जैसा पहले भी बताया गया है. फिर –

- फाइल मॅन्यू में पेज सेट अप सेलेक्ट करें।
- मार्जिन टैब पर क्लिक करके सही मार्जिन टाइप करें ,
- और ओके करें।

पेपर साइज एंव पेज साइज बदलना –

पहले दिए गए पेज अप के विवरण में भी बताया गया है कि डिफॉल्ट पेपर साइज ए4 होता है . अलग –अलग पेपर साइज पेज अप में हैं जो साइज चाहिए उस पर क्लिक करें टाइप करके पेपर साइज तय करें जैसा नीचे दिए गए चित्र से पता चलेगा।

पेपर साइज बदलने के लिए निम्न कदम उठाएं –

- फाइल या पेज ले आउट के पेज सेट अप में जाकर क्लिक करें जिससे डायलॉग बॉक्स आएगा।
- मार्जिन देखें और सही सैट करें।
- पेपर साइज देखें और सैट करें।
- पोट्रेट या लेंडस्केप पर क्लिक करें।
- ओ.के.करे और छापने से पहले पेज ले – आउट देख लें.

हैडर/शीर्षक या फुटर जोड़ना– पेज का ऊपरी सिरा हैडर या शीर्षक कहलाता है। और सबसे नीचे का भाग फुटर या निम्न छोर कहलाता है ऊपर डॉक्यूमेंट का नाम और नीचे नंबर दिया जाता है नाम व पेज नंबर ऊपर या नीचे बाईं ओर, दायीं ओर या बीच में भी दिए जाते हैं ये हर पेज पर स्वतः आ जाते हैं इसके आइकॉन और डॉयलॉग बॉक्स नीचे हैं।

हैडर जोड़ने के लिए निम्न कदम उठाएं–

- हैडर और फुटर में जाकर हैडर पर शीर्षक टाइप करें ।
- क्लोज बटन दबाएं या डॉक्यूमेंट को डबल क्लिक करें।

फुटर जोड़ने के लिए –

- हैड़र और फुटर में जाकर फुटर पर नंबर टाइप करें।
- क्लोज बटन या डॉक्यूमेंट को डबल क्लिक करें।

खंड /सेक्शन एवं पेज ब्रेक –

सेक्शन ब्रेक से डॉक्यूमेंट को अलग अलग भागों या खंड़ों में बांटा जाता है। इनको बारीक बिन्दुओं में देखा जा सकता है नार्मल व्यू में इसमें एडं ओफ सेक्सन लिखा जाता हैं।

सेक्शन ब्रेक के लिए ये कदम उठाएं–

- इनसर्शन प्वॉइंट को जहां सेक्शन ब्रेक देना है वहां पर ले जाएं।
- इनसर्ट मॅन्यू से ब्रेक ऑप्शन सेलेक्ट करें।
- ब्रेक डॉयलॉग बॉक्स आ जाएगा।
- अब निम्न ऑप्शनों में से एक ऑप्शन छांटें–
- Next page radio button से सेक्शन ब्रेक नए पेज के आरंभ में आएगा।
- Continuous radio button से सम अंकित पेजों पर नया सेक्शन आएगा।
- Odd page radio button से विषम अंक वाले पेजो पर नया सेक्शन ब्रेक आएगा।
- डॉयलॉग बॉक्स बंद करने के लिए ओ. के. पर क्लिक करें।
- डिलीट करने के लिए सेक्शन ब्रेक को सेलेक्ट करके डिलीट बटन दबाएं।

पृष्ठों पर नबंर डालना –

छपी हुई सामग्री या डॉक्यूमेंट पढ़नें या देखने के लिए पृष्ठ संख्या होना अति आवश्यक है . पेज नंबरों को हेडर या फुटर के बॉक्सों में डाला जाता है . इसके साथ ही पेज नंबर/कमांड से पुस्तक नाम संकेत भी जोड़ा जा सकता है।

हैडर एंड फुटर टूलबार विधि– इसके लिए निम्न कदम उठाएं –

- हैडर फुटर पर डबल क्लिक करकें उसे खोलें।
- इनसर्ट पेज नंबर पर क्लिक करें।

हैडर और फुटर पर एक नंबर आ जाएगा पेज नंबर को फॉरमेट किया जा सकता है , इन पर पुस्तक का नाम दिया जा सकता है।

जिसके लिए निम्न कदम उठाएं–

- हैडर खोलें।
- हैडर पर पेज टाइप करें।
- इनंसर्ट पेज नंबर पर क्लिक करें।

पेज नंबर ऑप्शन का प्रयोग –

इसमें पेज नंबर के फॉरमेट , स्टाइल पहले नबंर को छिपाने की भी सुविधा है जिसके लिए निम्न कदम उठाएं –

- पेज नंबर डॉयलॉग बॉक्स में फारमेट बटन पर क्लिक करें।
- डॉयलॉग बॉक्स में सही पेज नंबर का चुनाव करें।
- ओ.के.बटन पर क्लिक करें।
- इनसर्ट मॅन्यू के पेज नंबर ऑप्शन को सेलेक्ट करें।
- पेज नंबर के स्थान का–दायें, बाएं या बीच में–चुनाव करें।

बुकमार्क –

डॉक्यूमेंट पर कार्य करते समय आप कुछ और काम करने लगते हैं तो उस स्थान को तुंरत ढूंढने के लिए बुकमार्क का प्रयोग होता है ताकि आप बिना सर्च या पन्ने सरकाए तुरन्त उसी स्थान पर आ सकें।

इसके लिए निम्न कदम उठाकर बुकमार्क बनाऐं –

- जिस जगह बुकमार्क लगाना हो वहां इनसर्शन प्वॉइंट ले जाएं।
- ऐडिट मॅन्यू से बुकमार्क लगाना हो वहां इनसर्शन प्वॉइंट ले जाएं।
- नाम के बॉक्स में बुकमार्क का नाम टाइप करें.
- ऐड बटन पर क्लिक करें.

बुकमाक्र हटाने के लिए उसे सेलेक्ट करें और डिलीट करें बटन क्लोज करने से बुकमार्क हट जाएगा.

केस चेंज करना –

अग्रेंजी के छोटे अक्षरों को बड़ा करने , कैपिटल लैटर्स को छोटा करने की सुविधा कंम्पयूटर में है।

Change Case

Sentence Case	शब्दों को सेलेक्ट करें।
UPPER CASE	फारमेट मॅन्यू मे case सेलेक्ट करें और डॉयलॉग बॉक्स में वांछित कार्य सेलेक्ट करें
Title Case	
toggle CASE	ओ. के. क्लिक करें।

फॉरमेटिंग के शॉर्टकट तरीके–

Ctrl {	Make text smaller by one point एक प्वाइंट छोटा
Ctrl }	Make text larger by one point बड़ा
Ctrl =	Subscript formatting अक्षर के नीचे
Ctrl +B	Turn bold formatting on and off खोलें /बंद करें
Ctrl +I	Turn italics formatting on and off खोले /बंद करें
Ctrl Shift+	Superscript formatting अक्षर के ऊपर
Ctrl Shift <	Make font smaller फोंट छोटा करें
Ctrl Shift>	Make font larger फोंट बड़ा करें
Ctrl Shift +D	Double underling formatting डबल अंडरलाइन
Ctrl Shift +K	Small Caps formatting कैपिटल अक्षर छोटे करें
Ctrl Shift +W	Word under line -i.e. no lines under spaces
Ctrl U	Turn underline formatting on /off
F4	Repeat the last action पिछला कार्य दोहराएं.
Shift F3	Change case of selected text केस बदलें

5.5.1. SPELL CHECKER- वर्ड में अग्रेंजी के स्पेलिंग चैक करने की सुविधा से कार्य करना अति सरल हो गया है. अशुद्धियां होने पर शब्दों के नीचे हल्की धारनुमा पंक्ति आ जाती है। ताकि आप गलती को ठीक कर सकें शब्दों को सेलेक्ट करके राइट क्लिक करने से आप पॉप अप मॅन्यू देखकर कार्यवाही कर सकते हैं। ऑटो करके ऑप्शन से स्पेलिंग अपने आप ठीक हो जाती है.

मेल मर्ज

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **मेल मर्ज करना ।**

Ms Word X

To Create the from letters , You can use the active documemt window8 3ms. doc or a new Dolcument window.

Active window New main Document Cancel

- ऐक्टिव विंडों बटन पर क्लिक करके देख लें कि यही ऐक्टिव विन्डो है।
- न्यू मेन डॉक्यूमेंट पर क्लिक करें जिससे एक न्यू डॉक्यूमेंट खुलेगा जो मेन डॉक्यूमेंट होगा।

यह मेल मर्ज डॉयलॉग बॉक्स मेन डॉक्यूमेंट के साथ मर्ज की जाने वाली सामग्री को दिखलाएगा।

डाटा सोर्स फाइल अक्षर से आरंभ होकर 40 तक अक्षरों या संख्या की हो सकती है।

- मेल मर्ज के गॅट डाटा बटन पर क्लिक करें।
- सामने दिखाई देने वाली लिस्ट से क्रियेट डाटा सोर्स पर क्लिक करें जिससे नई डाटा सोर्स फाइल तैयार होगी,
- बॉक्स में न्यू फील्ड नाम टाइप करें।
- 'ऐड फील्ड नेम' पर क्लिक करें।
- वहां से अपने स्थान पर हटाने के लिए 'मूव' बटन दबाएं।
- हटाने के लिए 'डिलीट' बटन दबाएं।
- ओ.के.बटन दबाएं.फाइल नाम टाइप करके सेव करें।

डाटा सोर्स और मेन डॉक्यूमेंट मर्ज करने के लिए –

- मेन डॉक्यूमेंट खोलें।
- 'व्यू मर्ज डाटा' बटन पर क्लिक करें।
- 'मेल मर्ज' ऑप्शन सेलेक्ट करें।
- 'मर्ज' बटन क्लिक करें, जिससे निम्न बॉक्स आएगा।

लिस्ट में से जो चीज मर्ज करनी है उसे सेलेक्ट करें।

मर्ज बटन दबाएं. सामग्री नए नए रूपों में तैयार हो जाएगी।

वर्ड हेल्प : वर्ड का हेल्प फीचर हर काम में सहायता करता है, कोई चीज समझ में न आने पर हेल्प का प्रयोग किया जाता है इसके लिए –

- हेल्प डायलॉग बॉक्स में दी गई सूची से कार्य को छांटे
- इडेक्स टैब सेलेक्ट करके टॉपिक सेलेक्ट करें।
- फाइंड टैब सेलेक्ट करें और टॉपिक सर्च करें।
- 'आनसर विजार्ड' को सेलेक्ट करके टॉपिक सर्च करें।
- इससे कंटेंट टेब आएगा जिसमें सभी प्रकार के हेल्प टॉपिक दिए गए है. जैसा ऊपर चित्र में है।

इंडैक्स टैब से किसी शब्द को ढूंढा जाता है

ढूंढो और बदलो : वर्ड में किसी शब्द को ढूंढने और उसे हटाने या स्थान पर अन्य ाब्द डालने की बहुत अच्छी सुविधा है इसमें यह भी पता चल जाता है कि डॉक्यूमेंट में वह कितनी बार आया है इसके लिए निम्न कदम उठाएं–

- ऐडिट मॅन्यू में जाकर चित्रानुसार 'फाइल' आप्शन सेलेक्ट करें।
- जिस शब्द को ढूढंना है उसे टाइप करें।
- अब हटाये जाने वाले शब्द को टाइप करें।
- रिप्लेस विद में नया शब्द टाइप करें।
- एक या अधिक जगहों को सेलेक्ट करें।
- फाइंड नैक्स्ट बटन पर क्लिक करें।
- अब रिप्लेस बटन दबाएं. शब्द बदल जाएगा।

कैंसिंल पर क्लिक करके वापस डॉक्यूमेंट में आएं।

मेल मर्ज : कार्यालयों में एक प्रकार के पत्र कई लोगों को जाते है जिनके पते व नाम अलग अलग होते हैं। वर्ड में एक ही पत्र में अलग –अलग नाम व पते देकर इसको किया जाता है।

मेल मर्ज फीचर में मेन डॉक्यूमेंट की सामग्री और डाटाबेस फाइल की सामग्री को जोड़ने की सुविधा है. इसके लिए तीन कदम उठाने हैं–

- मेन डाक्यूमेंट बनाना।
- डाटा सोर्स तैयार करना और दोनों को मिलाना या मर्ज करना।
- पहले मेल मर्ज ऑप्शन टूल्स मैन्यू से सेलेक्ट करें।
- मेल मर्ज डॉयलॉग बॉक्स दिखाई देगा

क्रियेट बटन पर क्लिक करें. नीचे दी गई लिस्ट आएगी

Create
From Letters….
Mailing Labels ….
Envelopes ….
Catalog

Restore to Normal Word Document….

इसमें एम.एस वर्ड का नीचे दिया गया डॉयलॉग बॉक्स आएगा.

कुंजीपटल कुशलता

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **कुंजीपटल संचालन ।**

कुंजीपटल कुशलता :–

कुंजीपटल कौशल में कुंजियों का अंगुलियों में सही विभाजन, संचालन उनके अक्षरों या चिन्हों को याद करना दृश्य पद्धति से कुंजियों का संचालन और शुद्ध व तेज गति से टाइप करना सम्मिलित है कुंजीपटल कुशलता पूरी तरह स्पर्श पद्धति से टाइप सीखने वाले बहुत सरलता से प्राप्त कर लेते हैं।

1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	.	ञ	B	S

निर्देश :–

1. अपने बाएं हाथ की चारों अगुंलियों को आधार पंक्ति पर चित्रानुसार रखें। कनि ठा को कुंजी 2 पर, अनामिका को कुंजी 3 पर, मध्यमा को कुंजी 4 पर और तर्जनी को कुंजी 5 पर रखें। हर अक्षर कुंजी को क्रमशः दबाएं और तुरन्त छोड़ें। उसके बाद दाएं अगूंठे से अंतर छड़ को दबाकर छोड़े। जिससे एक स्पेस छूटेगी।
2. अब दायें हाथ की अंगुलियों को क्रमशः कुंजी 2, 3, 4, 5 पर रखें और उन्हें एक–एक करके दबाकर छोड़े और दायें अंगूठे से एक स्पेस दें।
3. अंगुलियों को फुर्ती से दबाएं और छोडें, बाएं हाथ की छोटी अंगुली से केवल मात्राएं टाइप होंगी, अतः अनामिका से व्यंजन क, मध्यमा से तर्जनी से ही टाइप करें। दायें हाथ की कनिष्ठा से अनामिका से य, मध्यमा से स, तर्जनी से टाइप करें। और चार्ट के अनुसार सभी अंगुलियों से अभ्यास करें। आधे अक्षरों को ा से पूरा करें।

नोट :– हर शब्द के बाद स्पेस दबाएं और हर पंक्ति के अक्षरों को दस से बारह बार टाइप करें।

अभ्यास – प्रथम

- हक कह यह यहा हाय कि किस साह यार कार किस शाह
- हार हारा हरा राह राही कही ही यही हया कसा यारी शाही
- कहो कह करार कहे काहे काहिरा हीरा हीरे हीरो केश राह
- करे कहे रहे कहीं यहां यहीं यों करो करे कराह हरेक शक
- राहें राही रोक रोकें रोको रोका रोकी कोरा कोरें कोरी होश
- रहे कहार हरारे राकी रही रहो हरो हरिहर सरकार होशियार

नोट :– ध्यान रखें कि ऊपर और नीचे लगने वाली सभी मात्राएं बाईं कनिष्ठा से टाइप होंगी। स्पेस बार केवल दाएं अगूंठे से दबाया जाएगा। आधार पंक्ति में टाईपराइटर पर 12 कुंजिया होती है लेकिन कम्प्यूटर पर 11 हैं अतः कम्प्यूटर पर दाईं कनिष्ठा से केवल एक कुंजी टाइप होगी हर पंक्ति के शब्दों को 10 से 15 बार टाईप करें। कुंजीपटल न देखें ताकि शुद्धता और गति दोनों शीघ्र लाई जा सके।

अभ्यास – द्वितीय

- कांसा कोरा कोया हीरक सारा सारे सारी
- किसे किसी किसको किससे किसका कसकर
- होरी होरा सेर सारो कहर सिंह कोक काक अहीर
- हिंसक हीरक कहार कहकहे कहकर सीसा सीसे
- हंसे हसी हंसा सहसा साही सही कोहरा
- शंकर कंकर शशी शीशी शिशिर

नोट :– कुंजीपटल में कई अक्षर आधे ही है अतः आधे अक्षरों को कम्प्यूटर पर टाइप करते समया की मात्रा से या आधे स्पेस वाली शिफ्ट कुंजी पर दी गई खड़ी पाई से पूरा करें फिर अन्य मात्राएं लगाएं हर पंक्ति को दस से पन्द्रह बार टाइप करें।

अभ्यास – तृतीय

- किसी भी अभी सभी सभ्य रूस रूसी
- स्याही स्याह श्रेयांस श्रीयश यशस्वी श्रेयस्कर
- साथी साथ हाथ हाथी हथियार हाथियारों
- भैंसा थाह साथियो साथियों हाथियों थका कथ्य
- कैसा भोंक भोंका भीर भीरू रिस्क
- भयंकर भैया हैं है शौक शौकिया भार भारी

नोट :– कुंजीपटल में 9 अक्षरों के आधे रूप ही दिए गए है आधार पंक्ति के चार अक्षरों के आधे रूप है थ्, भ्, श्, भ्ा जिन्हें कम्प्यूटर पर टाइप करते समय खडी पाई या आ की मात्रा से पूरा कर सकते हैं पहले अक्षर पूरा करें फिर अन्य मात्राएं लगाए, हर पंक्ति को दस से पन्द्रह बार टाइप करें।

अभ्यास :– चतुर्थ

- भरसक भारी भर भोंरा थक थका रथ
- थोक थिंक कारथ थक्का कथा कारथ
- कोष कोषीय शाकाहारी भाष्य केशर शहरी
- कौशिक शक्की शंका संकाय राशि शशि
- भेष भूषा भैंसा कोशिशें कोशिकायें किस्से शिषिर
- रिस्क भाषायीं भरोसा रंभा करू सभ्य शाक्य

तृतीय पंक्ति का संचालन :–

अपनी अगुंलियों को आधार पंक्ति पर रखें और ऊपर की पंक्ति के अक्षर को टाइप करते ही अपने स्थान पर आ जाएं बाईं कनिष्ठा से मात्राएं अनामिका से म, मध्यमा से त तथा तर्जनी से ज और ल टाइप करें। इसी प्रकार दाएं हाथ की कनि ठा से, ख्, अनामिका से च, मध्यमा से व तथा तर्जनी से प और न टाइप करें ख् को ा की मात्रा से पूरा करें। हर पंक्ति को दस से पन्द्रह बार टाइप करें।

अभ्यास – पंचम

- मल मत मन जल मचल नम जल जन
- चख मन तन नत पत पता माल
- नाना नानी पापा नाती नाता नाते नीति
- पोता पोते पाती पोती तोता तोते जूता जूते
- मूली माली तलना जलना पालना लाना चालाना
- मनचला मसलना मारना पीलापन लचीलापन

नोट :– अब शिफ्ट पर दिए गए अक्षरों का भी अभ्यास करें आधे अक्षर क्ष् को ा की मात्रा से पूरा करें टाइपराइटर पर केवल खड़ी पाई ा की मात्रा का प्रयोग करें

नोटः– इसी पंक्ति में बाईं कुंजी की शिफ्ट पर ऊ चिन्ह दिया गया है जिसे उ पर लगाने से बडी ऊ, र पर लगाने से छोटा रू और प पर लगाने से फ बनता है हर पंक्ति को दस से पन्द्रह बार टाइप करें।

अभ्यास :– छठम

- फनकार फेंकना चंचल परिपक्व नत्थू सत्य
- पप्पा पप्पी सच्चा कच्चा क्षमा कक्षा
- कुख्यात खाते त्याज्य पत्नी हल्ला मुन्नी
- तन्मय निम्न निन्दा क्षमा खामी मोक्ष मुलम्मा
- निम्नानुसार पम्मी किन्नौर तत्व जत्था कथनी
- मल्लाह कत्ल पन्ना पम्प जम्प पल्लवी तथ्य फूल नैनी

नोट :– अब दोनों हाथों से दोनों पंक्तियों के शिफ्ट कुंजियों पर दिए गए अक्षरों को भी टाइप करें और हर पंक्ति को दस से पन्द्रह बार टाइप करें अभ्यास के शब्दों से छोटे रू और बडे रू का भेद स्प ट समझ लें ताकि इसमें गलती न हों टाइप. राइटर पर चिन्ह से रू, ऊ तथा फ बनाएं लेकिन कम्प्यूटर पर टाइप करते समय र पर q की मात्रा लगाने से भी रू बनेगा और से भी बनेगा।

अभ्यास –सप्तम

- श्री श्रीयुत श्रीमन श्रीमान श्रेय यज्ञोपवीत
- शीशा शाखा शोख खास शीरा शारीरिक
- रूप्या रूप्ये रूचि रूचिकर रोचक रूकना
- हरूवा नरूला पारूल बरूवा रूख रूखी
- भीरू जिन्ना चिल्लाना भुलावा शैली शाला खालसा

पप्पू चुप्पी तल्लीन चम्मच भूतल जम्मू लम्हा

नोट :– इस अभ्यास की हर पंक्ति को दस से पन्द्रह बार टाइप करें यह ध्यान रखें कि गलती न होने पाएं अब धीरे–धीरे गति बढाएं लेकिन गति तभी बढाएं तब अंगुलियां सही अक्षरों पर पड़े और गलतियां न हो शुद्ध टाइप करना सीखें। लगातार टाइप करने से गति अपने आप बढ़ेगी।

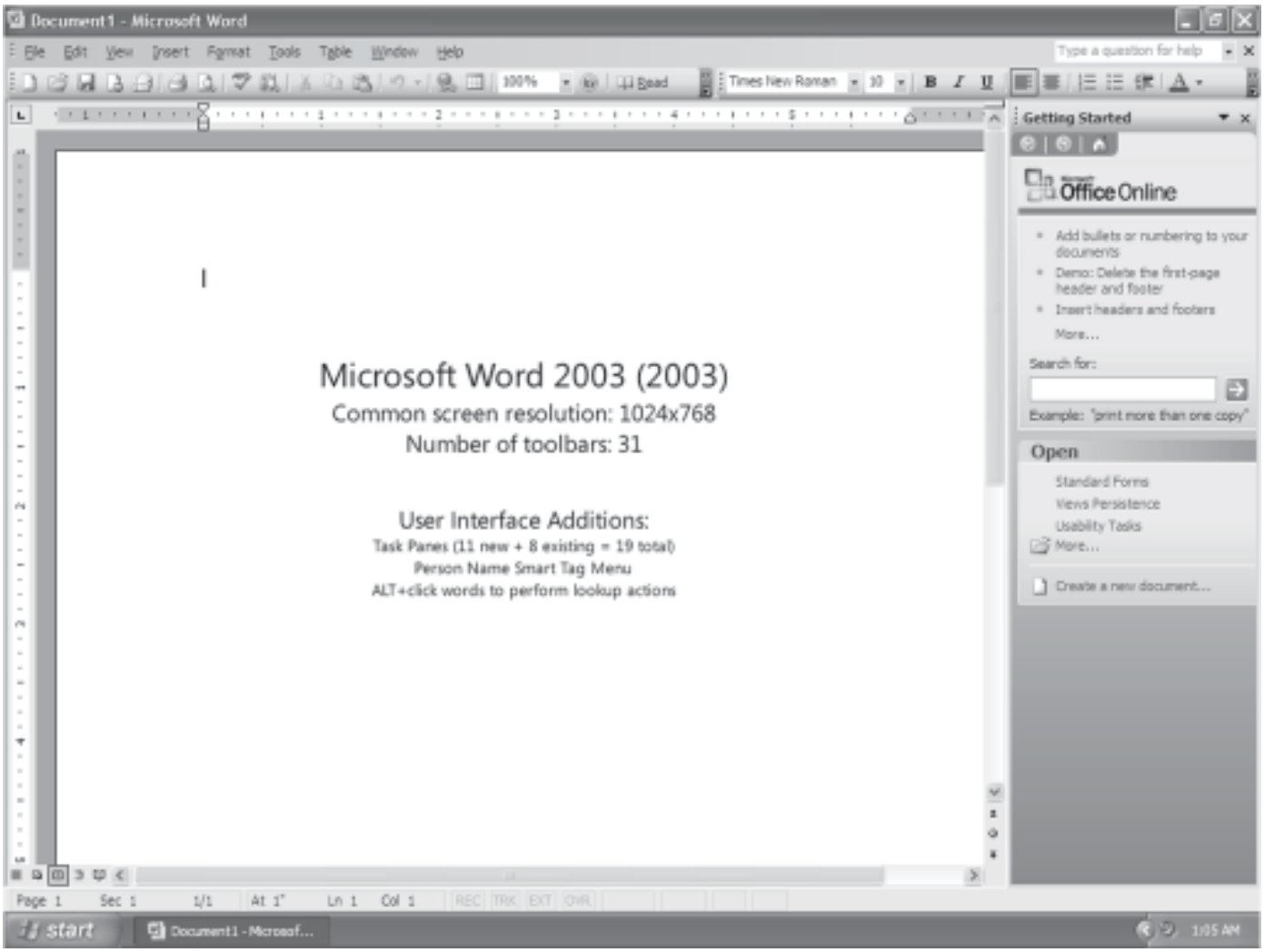

पेज सेट–अप – पेज मार्जिन सैट करना :–

सामग्री को सही आकार में छापने के लिए पेज के चारों ओर सही मार्जिन सैट करना अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है किसी कागज या पैड पर छापी जाने वाली सामग्री या पत्र का बायां, दायां, ऊपर और नीचे का हाशिया लगाने से उसकी सुंदरता बढ़ती है हाशिये माउस प्वांइटर से खींचकर भी लगाए जा सकते हैं और पेज सेट अप में कागज के आकार को ध्यान में रखकर लगाना अधिक लाभदायक होता है. पेज सेट अप डॉयलॉग बॉक्स में 4 टैब होते हैं।

1. मार्जिन से दांया, बायां, ऊपर और नीचे के हाशिये के साथ पेज नंबर भी दिए जा सकते हैं.

   मार्जिन में हैडर/शी र्ष क और फुटर/नीचे से कागज पर पेज नंबर भी दिए जा सकते हैं,

   जो पेज के ऊपर, नीचे, दायें, बायें, या केन्द्र में हो सकते हैं।

2. पेपर साइज से कागज की लंबाई, चौड़ाई और उसे छापने का स्टाइल/तरीका – पोर्ट्रेट /खड़ा या / लेंडस्केप/ तिरछा सैट करके सही आकार में सामग्री छापी जाती है.

3. पेपर सोर्स से हम कवर पेज या विशे ा प्रकार के कागज को छापने का निर्देश, पेपर साइज के अनुसार देते हैं।

4. ले –आउट से पंक्तियों, बार्डर या पेज नंबरों का निर्धारण होता है जो हेडर या फुटर में होते हैं जिनसे पुस्तकों के नाम या संकेत भी आते हैं, जैसा कि पेज सेट अप के चित्र में दिया गया है।

रूलरों का प्रयोग –

टाइप करते समय मार्जिनों को लगाने या देखने का सरलतम तरीका रूलर बार हैं.

होरिजेंटल / समतल रूलर से हमें दायें, बायें मार्जिनों का पता चलता है और खड़े / वर्टिकल रूलर से ऊपर और नीचे

क्र. सं.	अक्षर	विवरण	कोड
1	१	1	Alt+0131
2	२	2	Alt+0132
3	३	3	Alt+0133
4	४	4	Alt+0134
5	५	5	Alt+0135
6	६	6	Alt+0136
7	७	7	Alt+0137
8	८	8	Alt+0138
9	९	9	Alt+0139
10	०	0	Alt+0140

www.IndiaTyping.com

के मार्जिन दिखाई देते हैं जिन्हें हम कागज के साइज के आवश्यकतानुसार बढ़ा या घटा सकते हैं।

किन्तु यदि रूलर बार ऊपर एवं बाई ओर दिखाई न दें तो व्यू मेन्यू में जाकर–

- रूलर सेलेक्ट करें।
- रूलर लाइन पर कर्सर ले जाकर खाली स्कीन के ऊपर छोड़ दें। कर्सर एक डमरू के आकार का दिखाई देता है.
- माउस क्लिक करें और मार्जिन को वांछित स्थान तक घसीटें और ओके करें।

डॉक्यूमेंट मार्जिन को ऐडजेस्ट करना :–

सही सैटिंग और मार्जिन बदलने के लिए डॉयलॉग बॉक्स में जाएं, जैसा पहले भी बताया गया है. फिर –

- फाइल मॅन्यू में पेज सेट अप सेलेक्ट करें।
- मार्जिन टैब पर क्लिक करके सही मार्जिन टाइप करें।
- और ओ. के. करें।

10.2.1. पेपर साइज एंव पेज साइज बदलना :–

पहले दिए गए पेज अप के विवरण में भी बताया गया है कि डिफॉल्ट पेपर साइज ए4 होता है . अलग –अलग पेपर साइज पेज अप में हैं जो साइज चाहिए उस पर क्लिक करें टाइप करके पेपर साइज तय करें जैसा नीचे दिए गए चित्र से पता चलेगा.

पेपर साइज बदलने के लिए निम्न कदम उठाएं

- फाइल या पेज ले आउट के पेज सेट अप में जाकर क्लिक करें जिससे डायलॉग बॉक्स आएगा।
- मार्जिन देखें और सही सैट करें।
- पेपर साइज देखें और सैट करें।
- पोट्रेट या लेंडस्केप पर क्लिक करें।
- ओ .के.करे और छापने से पहले पेज ले– आउट देख लें।

हैंडर/शी र्ष क या फुटर जोड़ना–

पेज का ऊपरी सिरा हैडर या शी र्ष क कहलाता है। और सबसे नीचे का भाग फुटर या निम्न छोर कहलाता है ऊपर डॉक्यूमेंट का नाम और नीचे नंबर दिया जाता है नाम व पेज नंबर ऊपर या नीचे बाईं ओर, दायीं ओर या बीच में भी दिए जाते हैं ये हर पेज पर स्वतः आ जाते हैं इसके आइकॉन और डॉयलॉग बॉक्स नीचे हैं।

हैडर जोड़ने के लिए निम्न कदम उठाएं–

- हैडर और फुटर में जाकर हैडर पर शी र्ष क टाइप करें
- क्लोज बटन दबाएं या डॉक्यूमेंट को डबल क्लिक करें

फुटर जोड़ने के लिए –

- हैड़र और फुटर में जाकर फुटर पर नंबर टाइप करें।
- क्लोज बटन या डॉक्यूमेंट को डबल क्लिक करें।

खंड /सेक्शन एवं पेज ब्रेक –

सेक्शन ब्रेक से डॉक्यूमेंट को अलग अलग भागों या खंड़ों में बांटा जाता है। इनको बारीक बिन्दुओं में देखा जा सकता है नार्मल व्यू में इसमें एडं ओफ सेक्सन लिखा जाता हैं

सेक्शन ब्रेक के लिए ये कदम उठाएं–

- इनसर्शन प्वॉइंट को जहां सेक्शन ब्रेक देना है वहां पर ले जाएं।

- इनसर्ट मॅन्यू से ब्रेक ऑप्शन सेलेक्ट करें,
- ब्रेक डॉयलॉग बॉक्स आ जाएगा,
- अब निम्न ऑप्शनों में से एक ऑप्शन छांटें–
- Next page radio button से सेक्शन ब्रेक नए पेज के आरंभ में आएगा।
- Continuous radio button से सम अंकित पेजों पर नया सेक्शन आएगा।
- Odd page radio button से वि ाम अंक वाले पेजो पर नया सेक्शन ब्रेक आएगा
- डॉयलॉग बॉक्स बंद करने के लिए ओ.के.पर क्लिक करें।
- डिलीट करने के लिए सेक्शन ब्रेक को सेलेक्ट करके डिलीट बटन दबाएं।

पृष्ठों पर नबंर डालना –

छपी हुई सामग्री या डॉक्यूमेंट पढ़नें या देखने के लिए पृष्ठ संख्या होना अति आवश्यक है . पेज नंबरों को हेडर या फुटर के बॉक्सों में डाला जाता है . इसके साथ ही पेज नंबर / कमांड से पुस्तक नाम संकेत भी जोड़ा जा सकता है।

हैडर एंड फुटर टूलबार विधि – इसके लिए निम्न कदम उठाएं –

- हैडर फुटर पर डबल क्लिक करकें उसे खोलें,
- इनसर्ट पेज नंबर पर क्लिक करें

हैडर और फुटर पर एक नंबर आ जाएगा . पेज नंबर को फारमेट किया जा सकता है , इन पर पुस्तक का नाम दिया जा सकता है।

जिसके लिए निम्न कदम उठाएं–

- हैडर खोलें।
- हैडर पर पेज टाइप करें।
- इनंसर्ट पेज नंबर पर क्लिक करें।

पेज नंबर ऑप्शन का प्रयोग –

इसमें पेज नंबर के फॉरमेट , स्टाइल पहले नबंर को छिपाने की भी सुविधा है जिसके लिए निम्न कदम उठाएं –

- पेज नंबर डॉयलॉग बॉक्स में फारमेट बटन पर क्लिक करें।
- डॉयलॉग बॉक्स में सही पेज नंबर का चुनाव करें।
- ओ.के.बटन पर क्लिक करें।
- इनसर्ट मॅन्यू के पेज नंबर ऑप्शन को सेलेक्ट करें।
- पेज नंबर के स्थान का –दायें , बाएं या बीच में – चुनाव करें।

बुकमार्क :–

डॉक्यूमेंट पर कार्य करते समय आप कुछ और काम करने लगते हैं तो उस स्थान को तुंरत ढूंढने के लिए बुकमार्क का प्रयोग होता है ताकि आप बिना सर्च या पन्ने सरकाए तुरन्त उसी स्थान पर आ सकें .

इसके लिए निम्न कदम उठाकर बुकमार्क बनाऐं –

- जिस जगह बुकमार्क लगाना हो वहां इनसर्शन प्वॉइंट ले जाएं।
- ऐडिट मॅन्यू से बुकमार्क लगाना हो वहां इनसर्शन प्वॉइंट ले जाएं.
- नाम के बॉक्स में बुकमार्क का नाम टाइप करें.
- ऐड बटन पर क्लिक करें.
- बुकमार्क हटाने के लिए उसे सेलेक्ट करें और डिलीट करें. बटन क्लोज करने से बुकमार्क हट जाएगा.

केस चेंज करना –

अंग्रेजी के छोटे अक्षरों को बड़ा करने, कैपिटल लैटर्स को छोटा करने की सुविधा कम्प्यूटर में है।

- क्या छापना है, देखें और सही पर क्लिक करें।
- प्रापर्टीज में जाकर छपाई की क्वॉलिटी देखें।
- क्लिक ओ.के.करने से प्रिंटर छपाई करने लगेगा।

क्र. सं.	अक्षर	विवरण	कोड
1	ँ	चँद्र बिन्दु	Alt+0161
2	ख़	फ़ख़	Alt+0163
3	त्र	पात्र	Alt+0165
4	्र	ट्र	Alt+0170
5	त्र्	आधा त्र	Alt+0171
6	फ्	आधा फ	Alt+0182
7	य्	आधा य	Alt+0184
8	(	कोष्ठक	Alt+0188
9	)	कोष्ठक बंद	Alt+0189
10	ऊ	बड़ा ऊ	Alt+0197
11	द्द	गद्दी	Alt+0204
12	ट्ट	खट्टा	Alt+0205
13	ड्ढ	गड्ढर	Alt+0206
14	क्र	क्रम	Alt+0216
15	त्	रत्ती	Alt+0217
16	फ्र	फ्राई	Alt+0221
17	ह्न	चिह्न	Alt+0224
18	ह्र	ह्रास	Alt+0225
19	हृ	हृदय	Alt+0226
20	ह्म	ब्रह्म	Alt+0227
21	क्त	भक्ति	Alt+0228
22	न्न	अन्न	Alt+0233
23	स्र	स्रोत	Alt+0243
24	ऽ	ऽ	Alt+0183
25	ड्ड	ड्ड	Alt+0207
26	ड्ढ	ड्ढ	Alt+0212
27	ड़	ड़	Alt+0214
28	″	″	Alt+0222

www.IndiaTyping.com

टंकण गति अभ्यास

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **गति से टंकण करना ।**

अभ्यास - 7

हमारा देश कृषि प्रधान देश है जहाँ करीब 80 प्रतिशत लोग किसी न किसी रूप में खेती-बाड़ी से अपना / निर्वाह करते हैं । यदि आप एक किसान के जीवन पर दृष्टि डालें तो आप यह देखेंगे कि उसका खेत बड़ा / हो या छोटा वह और उसका परिवार साल भर बराबर खेती के काम में व्यस्त नहीं रह सकता । उसे काफी / समय बेकार रहना होता है । दूसरे रोजगार की खोज में वह अपना घर छोड़कर नहीं जा सकता क्योंकि खेती के (1) काम में कभी-कभी निरीक्षण की आवश्यकता होती है । यदि बेकारी का वह सब समय जब किसान व्यस्त नहीं होता / खादी तैयार करने के काम में लगाया जाये तो देश भर की आवश्यकता के अनुसार खादी मिल सकती है ।

ऐसी /अवस्था में कोई भी कम मजदूरी का प्रश्न नहीं उठायेगा । क्योंकि यह काम तो ऐसे समय में किया जायेगा जो / बिल्कुल खाली होगा । उस खाली समय में किसान कुछ-न-कुछ कमायेगा ही और वह कमाई ऐसी भी नहीं कि (2) उसका कुछ भी मूल्य न हो । कम से कम वह अपने लिए तो इतना कपड़ा तैयार कर ही सकेगा जिससे / उसको बाजार से न खरीदना पड़े । मैं आपको अपने निजी अनुभव से बता सकता हूँ कि एक घण्टा प्रतिदिन कातने / से हमें इतना कपड़ा मिल सकता है जितना कि एक औसत हिन्दुस्तानी के लिए आवश्यक है । इस दृष्टिकोण से देखा / जाये तो सस्ते-मंहगे कपड़े का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि खादी खाली समय में किये गये श्रम से प्राप्त (3) हो जायेगी खादी के संबंध में यह एक तथ्य है ।

हम जानते हैं आदमी सदा काम नहीं करना चाहता ।/कभी-कभी उसे खाली बैठे रहना ही अच्छा लगता है । परन्तु इन सब कठिनाईयों के होते हुए भी मैं सोचता / हूँ कि खादी का प्रचार और विस्तार असम्भव नहीं है । अतीत में जब गाँधी जी ने खादी आन्दोलन आरंभ किया / उस समय हमारे देश के प्रशासन से कोई सम्बन्ध नहीं था और न ही हम सरकार से सहायता की अपेक्षा (4) करते थे, फिर भी देश में एक ऐसा वर्ग था जो बराबर खादी का प्रचार करता रहा । वह वर्ग आजकल / भी विद्यमान है । हम चाहते हैं कि जनता के अन्य वर्ग भी खादी अपनायें और हमें प्रोत्साहन दें । मुझे प्रसन्नता / है कि वित्त मंत्री महोदय ने हमें सरकारी सहायता देना स्वीकर कर लिया है ।

एक प्रश्न यह उठाया गया है कि / महिलाओं की साड़ियाँ बहुत महंगी पड़ती है । मेरे विचार में यह प्रश्न प्रासंगिक नहीं है । मैं नहीं सोचता कि महिलाओं (5) को दिन भर में इतना अधिक काम रहता है कि वे एक घण्टा कातने के लिए नहीं दे सकती ।

प्रश्न-पत्र 1987

उपाध्यक्ष महोदय, हमारे देश के अधिकांश लोग खेती पर निर्भर करते हैं और इसलिए खेती पर आधारित उद्योगों की इस देश में अधिक/आवश्यकता है। देश से बेरोजगारी को खत्म करने के लिए, कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए कृषि पर आधारित उद्योगों की स्थापना का इस//देश में बड़ा भारी महत्व है और उसे इस बजट में अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। मैं वित्त मंत्री जी से निवेदन करना///चाहता हूँ कि खेती के उद्योग आदि के लिए हमारे बजट में अधिक गुंजाइश की जरूरत होनी चाहिए। इससे हमारे देश के बेरोजगारों (1) और किसानों को काफी लाभ होगा और हमारे कृषि उत्पादन में भी उन्नति होगी तथा इसके साथ ही साथ हमारे किसान भाइयों को भी/रोजगार मिलेगा। वित्त मंत्री जी ने काफी अच्छा बजट पेश किया है लेकिन खेती के उद्योगों के लिए इसमें विशेष व्यवस्था करने और//इसमें अधिक धन लगाने की अधिक आवश्यकता है। इस योजना में हमारी प्रधानमंत्री द्वारा जो बीस सूत्री कार्यक्रम इस देश में चालू///किया गया है उससे हमारे गरीब और पिछड़े वर्ग के लोगों का काफी हित हो सकता है। मैं निवेदन करता हूँ कि कमजोर (2) वर्ग के लोगों के लिए पशुओं को खरीदने तथा आवास और दूसरी आवश्यकताओं के लिए, धन की व्यवस्था की जाए। आज यह कार्यक्रम हमारे/देश में बड़े जोर से और बड़ी जिम्मेदारी से लागू किया जा रहा है। इसमें संदेह नहीं है कि इससे हमारे देश के//गरीब लोगों को काफी लाभ पहुँचेगा।

हमारे देश में मध्य प्रदेश काफी पिछड़ा हुआ है। मध्य प्रदेश में खनिज और वन देश में सबसे/// ज्यादा हैं। हमारे मध्यप्रदेश में बीस प्रतिशत खनिज उत्पादन है और तीस प्रतिशत वन हैं। मैं वित्त मंत्री जी से निवेदन करना (3) चाहता हूँ कि हमारे प्रदेश में इस तरह के उद्योगों और कार्यों के लिए अधिक से अधिक धन की व्यवस्था की जाए। एक दृष्टि से/मध्यप्रदेश सबसे आगे है लेकिन फिर भी यह अन्य राज्यों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। यहाँ से एक हजार टन//कोयला प्रतिदिन देश भर में जाता है। मैं निवेदन करूँगा कि कोयले की खानों के पास ताप-बिजली घर बनाए जाएँ ताकि हमारे प्रदेश///की आवश्यकता को भी पूरा किया जा सके और देश को सस्ते दामों पर बिजली मिल सके।

महोदय, सिंचाई के लिए भी हमारे प्रदेश को (4) अधिक धन दिया जाना चाहिए। इस तरफ भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि सिंचाई का खर्च पिछले एक साल में दुगुना हो गया है।/इसका कारण चाहे योजना बनाने में कमी हो या चाहे प्रशासनिक व्यवस्था में कमी हो, इसके कारणों का पता लगाकर आवश्यक उपाय//किए जाने चाहिए। मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि वित्त मंत्री राज्यों के मंत्रियों से विचार-विमर्श करके इस व्यवस्था में सुधार लाने की///कोशिश करें। हमारे देश में विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए शांति और व्यवस्था की बहुत आवश्यकता है। इससे देश की आत्म-निर्भरता (5) बढ़ेगी।

प्रश्न-पत्र 1981

बेरोजगार एक ऐसी विषम समस्या है, जो एक बड़ी संख्या में, विशेषकर शिक्षित लोगों के दिमाग को परेशान किये हुये है। यह एक कड़ुवा सत्य / है कि समर्थ शरीर वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीविका कमाने और सुन्दर जीवन बिताने के लिये सभी बूनियादी सुविधायें प्राप्त करने के लिये रोजगार / पाने का नैसर्गिक अधिकार है। हमारे देश जैसे विकासशील राष्ट्र का भी यह कर्तव्य हो जाता है, कि वह बड़ी संख्या में उपलब्ध मानव शक्ति / का अपने विकास के लिये उपयोग करे। हमारे देश में धार्मिक विकास की जो अनेक योजनायें बन रही हैं उनमें भी बढ़ती हुई जनसंख्या के / लिये रोजगार के अधिक से अधिक अवसरों को पैदा करने पर विशेष बल दिया गया है। लेकिन पिछले तीन दशकों में बेरोजगारी की समस्या को / हल करने के हमारे प्रयास सफल नहीं हो सके हैं। सच तो यह है कि इस समस्या ने एक जटिल रूप धारण कर लिया है। / आम तौर पर बेरोजगार लोग रोजगार पाने के लिये सरकार का मुंह ताकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि सरकार बहुत से लोगों को रोजगार / प्रदान करती है किन्तु रोजगार चाहने वालों की दिन प्रतिदिन बढ़ती संख्या को देखते हुये सभी के लिये रोजगार की व्यवस्था कर सकना सरकार / के लिये संभव नहीं है। देश में हो रहे सामाजिक एवं आर्थिक विकास के इस दौर में काम करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिये स्व / रोजगार के अनेक अवसर पैदा हो रहे हैं। उनके लिये यह जरूरी हो सकता है कि वे उपलब्ध कार्य और अवसर के अनुकूल प्रशिक्षण और / योग्यता प्राप्त कर लें।

राष्ट्रीय बचत संगठन ने केरल में अपनी योजनाओं में एक ऐसा परिवर्तन किया है कि राज्य की अधिकांश महिलाओं के लिये / खुद के रोजगार की सृष्टि हो। इस योजना का लक्ष्य प्रदेश के गांवों में न केवल तीन हजार से अधिक महिलाओं के लिये अंशकालिक रोजगार / की व्यवस्था करना है अपितु एक ऐसी स्थिति का निर्माण करना है जिससे सारे राज्य में ग्रामीण और नागरिक बचत की भावना को समुचित प्रोत्साहन / मिले। इस योजना की सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह है, कि विकास के लिये अधिक साधन जुटाने के क्रम में स्वयं ही रोजगार पैदा हो / जाता है। जब कि दूसरी ओर रोजगार पैदा करने के लिए इस प्रकार की योजनाओं में बड़ी पूंजी लगाने की आवश्यकता होती है। इस योजना / का एक महत्वपूर्ण अंग है दूर-दूर फैले हुये गांवों में इन कार्यकर्ताओं का जाल बिछा देने का लक्ष्य जो समुदाय के कल्याण के लिये / पारिवारिक बजट की व्यवस्था खाद्य और पोषक आहार का प्रबन्ध एवं परिवार की भलाई स्वास्थ्य और सफाई जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के विषय में समस्त आवश्यक जानकारी देने का प्रयास करेगा।

ये कार्यकर्ता अपने दैनिक जीवन में अनेक लोगों के संपर्क में आयेंगे जहां के अधिक सुखी और समृद्ध जीवन बिताने / के विचारों का प्रचार कर सकते हैं। राष्ट्रीय बचत आन्दोलन महिलाओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य के साथ-साथ उन्हें समाज की सेवा / करने और कुछ कमाने का अवसर प्रदान करने के लिये राष्ट्रीय बचत संगठन की महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना 1972 में प्रारम्भ की गई थी।

प्रश्न-पत्र 1994

सभापति महोदय, मैं सदन का अधिक समय नहीं लूंगा। मैं केवल एक दो बातों की ओर वित्त मंत्री और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता/हूँ। आज बिजली के मामले में राजस्थान की हालत बहुत नाजुक है। खासतौर से पिछले पांच-सात दिनों से गावों में परेशानी बहुत बढ़//गई है। मैंने देखा है कि कई जिलों में पिछले कई दिनों से बिजली नहीं है। नतीजा यह हुआ है कि जो फसल बोई///गई है उसको पानी नहीं मिल पाया है। वहां पहले से ही अकाल की स्थिति है। बिजली ठीक तरह से न मिलने के कारण (1) किसानों की फसल खराब हो रही है। इसलिए बिजली को ओर अधिक फैलाने की बात को छोड़कर सरकार उसकी पूर्ति को नियमित/करे।

उधर से जो माननीय सदस्य बोलते हैं, वे बातें करीब-करीब वही करते हैं, जो हम कर रहे हैं। दोनों में कोई फर्क//नहीं है। वे भी कहते हैं कि महँगाई है, बेकारी है और हालत खराब है। सरकार की ओर से भी हरेक भाषण को इसी///वाक्य से शुरू किया जाता है कि उसे विरासत में खराब हालत मिली है, जिसे सुधारने में समय लगेगा। मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि (2) सरकार एक समय निश्चित कर दे कि वह कब इस पहले वाक्य को बोलना छोड़ देगी। हम सरकार का विरोध नहीं करेंगे। वह हमें/भाषण लिख कर दे और बता दे कि हमें क्या करना है। हम वैसे ही इस सदन में और जनता के सामने बोलेंगे लेकिन//वह देश की हालत को सुधारे। आज चारों ओर हालत बिगड़ रही है। आज गांवों में कोई व्यवस्था नहीं है। सरकार हम लोगों को कब///तक दोष देती रहेगी ? यदि हालत न सुधरी तो वे लोग भी डूबेंगे, हम लोग भी डूबेंगे और लोकतंत्र भी डूबेगा। आज गांवों में (3) हालत बहुत गंभीर रूप से बिगड़ रही है। मैं बड़ी जिम्मेदारी और गंभीरता के साथ यह बात कह रहा हूँ। आखिर सरकार का और/हमारा काम एक ही है। कुछ लोग उधर बैठे हैं और हम इधर बैठे हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

हालत सब ओर से//खराब है। बिजली खराब है, कोयला खराब है, तेल नहीं मिल रहा है। किसानों के काम सब तरफ से रुके हुए हैं। गांवों के///अंदर इतनी महँगाई बढ़ रही है कि गरीबों के प्राण निकल रहे हैं और आगे यह महँगाई और भी बढ़ेगी। अनाज का उत्पादन कम हो (4) गया है। भाव अभी ऊंचे हो रहे हैं, आगे और भी ऊंचे होंगे। आप फिर कहेंगे कि आयात से बिल बढ़ रहे हैं। पेट्रोल/और डीजल के दाम बढ़ गये हैं तो आप मुसीबत में फंस गए हैं। आप मुसीबत में फंसते हैं तो हमें भी खुशी नहीं होती//है। इसलिए आप गंभीरतापूर्वक सोचें, कुछ हमसे सहायता लेना चाहते हैं तो लें, जिस तरह से भी लेना चाहते हैं, लें। आप///जैसा कहेंगे वैसे हम जनता से जाकर कहेंगे। अंत में मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि आप राजस्थान के लिए अवश्य कुछ करें। (5)

आतंक से मुक्ति

गुजरे जमाने में लोग मुक्ति की चाह रखते थे मुक्ति पाने के लिए गुरु की शरण में जाते थे। गुरु के बताये अनूसार प्रयास करते थे। एक वो जमाना था लोग इस लोक को सुधारने के साथ-साथ अपना परलोक भी सुधारने का ध्यान रख कर्म मे उसी प्रकार प्रवृत होते थे।

यू तो आज भी जो लोग कर्म में प्रवृत होते है वे उसमे अपना हित ही समझ कर प्रवृत होते है। सामान्य वर्ग की दृष्टि में आतंक की धटनाए अमानवीय प्रतीत होती है वही आतंकियों द्वारा घटित होने वाली यें घटनाए उनके अन्दर छाये आतंक का परिणाम होती है। यदि इस गहन दृष्टि से इन घटनाओं का समझाने का प्रयास किया जाये तो आतंक से मुक्ति की एक राह दिखाई पड़ेगी।

जिस प्रकार आज समाज आंतक का शिकार है उससे लड़ने की क्षमता का हर किसी में अभाव है चाहे वे सरकार हो अथवा प्रशासनिक दस्ता, प्रभावित व्यक्ति हो अथवा समाजिक ढ़ॉचा। लड़ने को य ादि हम सही अर्थ में समझे तो ऐसे प्रयास, निरंतर प्रयास जो सकारात्मक परिणाम दें।

जब जब आतंकी घटनाए होती है उनसे निपटने की खाना पूर्ति होती है और सब कुछ थोड़े समस में ही ठण्डा पड़ जाता है। इसे साफ जाहिर होता है हमारे पास आतंक से निपटने की न यथार्त सोच है न योजना है न ही प्रयास के लिए उत्साहित है। यह समाजिक बीमारी खत्म हो, न ही कोई इसके लिए चिंतित है।

चिंतन करने योग्य तो यह है कि आंतकियो के अन्दर ऐसा क्या आतंक व्याप्त है जिसके लिए वे नरसंहार पर उतारु होते हैं। क्या उनकी ये गतिविधियां मात्र मानव मात्र को पिड़ित करने की है, क्या सरकार को कमजोर करने की है, क्या सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े लोगो को नाकाम सावित करने के लिए है। कारण जो भी हो। आतंक का मूल कारण है आतंकियो के अन्दर व्याप्त आतंक। उनके अन्दर मे छाये इस आतंक ने उनकी आत्मा को अंधेरे की ऐसी गहरी खाई मे डाल दिया है कि उन्हे मुक्ति के उपाय आतंकवादी गति विधियो मे नजर आते है । उनके मन और बुद्धि पर आतंक का ऐसा साया है कि उनकी चेतना को मृत जैसा बना दिया है। कर्म गति के सिद्धांत को उनके अन्दर व्याप्त आतंक ने इस कदर उलट दिया है कि उन्हे आतंकी घटनाओ को अमली जामा पहनाने पर स्वयं में गर्व का अनुभव होता है ।अर्न्त दृष्टि से देखा जाये तो आतंकी घटनाओ से पिड़ित होने वाले लोगो से कही पिड़ित तो वे है जो आतंकी घटनाओ में लिप्त है क्योंकि उनके अन्दर मे हिलोरे ले रहा आतंक ज्यादा खतरनाक है ऐसे में मानव अधिकार आयोग एवं मानव संसाधान मंत्रालय को चाहिये कि वे इस दिशा मे अपने प्रयास तेज करे और आतंकियो को उनके अन्दर के आतंक से मुक्ति दिलाने मे महत्व पूर्ण भूमिका निभाये। भारत आध्यात्म प्रधान देश है सरकार को चाहिये कि देश में जो आध्यात्मिक हस्तियां है आतंक वाद के निराकरण में उनकी भूमिका तय कर उन से सहयोग प्राप्त करे।

जब चेतना सोती है तो आतंक जागता है । जब राजनेता की चेतना सोती है तो उसके अन्दर का आतंक लोक तन्त्र को वोट तन्त्र से संचालित करता है। जब माता की ममता सोती है तो चेतना पर आतंक काबिज हो कन्याभ्रुण हत्या कराता है जब निर्माण के श्रेत्र मे लगे इजिंनियर अथवा श्रमिक कर्तव्य विमुख होते हैं तब उनकी चेतना आतंक की गिरफ्त मे आने पर कमजोरियों का सृजन करती

है येंअन्दर का आतंक इतना खतरनाक है जिसे हम हेय कहते है वह सब यह कराता है ऐसे मे हर उस व्यक्ति को आतंक से मुक्ति की जरुरत है जिसके अन्दर का आतंक उसके कर्मो को,सोच को, योजना को, निकृष्ट बनाता है।

सुधीर कुमार

प्रश्न-पत्र 1985

अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में इस सदन में कई सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं। सबसे पहले मैं अध्यक्ष महोदय तथा/सदन का ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहता हूँ कि शिक्षा कई माध्यमों के द्वारा दी जा सकती है। जितनी विचारधाराएँ शिक्षा के//माध्यम के सम्बन्ध में हैं, चाहे प्रकृति का सौंदर्य हो, चाहे ललित कला हो, चाहे खेलकूद हो, चाहे श्रम हो और चाहे भाषा हो,///उन सभी माध्यमों का इस्तेमाल करके हमें अपने विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे उनके व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास (1) हो सके। इन सब माध्यमों में भाषा का भी अपना एक महत्व है। लेकिन अफसोस है कि आजकल हम केवल भाषा को ही शिक्षा/का माध्यम बनाकर चले जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल किताबी शिक्षा ही हम अपने बच्चों को दे पाये और केवल किताबी शिक्षा//से न उनके व्यक्तित्व का ही सम्पूर्ण विकास हो पाता है और न हम अपनी शिक्षा को ही अच्छे स्तर पर ले जा सकते///हैं। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि भाषा के अलावा अन्य जितने माध्यम शिक्षा के हैं उन सब माध्यमों को हमारी शिक्षा प्रणाली (2) में उचित स्थान दिया जाना चाहिए।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है दुनिया के सारे शिक्षा शास्त्री और हमारे कमीशन में भी जो शिक्षा शास्त्री थे/उनकी भी यही राय थी कि शिक्षा का माध्यम अगर कोई भाषा हो सकती है तो वह मातृभाषा हो सकती है। मातृभाषा//के अतिरिक्त अगर अन्य किसी भाषा में शिक्षा दी जाती है तो वह शिक्षा अच्छी नहीं कही जा सकती। उसमें बच्चों की शक्ति की///बहुत हानि होती है। जो शिक्षा हम मातृभाषा के माध्यम से पाँच साल में दे सकते हैं वह दूसरी भाषा के माध्यम से हम (3) पंद्रह साल में भी नहीं दे सकते। यदि यह बच्चे की मातृभाषा नहीं है तो उस भाषा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए बच्चे/को बहुत अधिक अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ेगी तथा अधिक समय भी देना पड़ेगा जबकि मातृभाषा के माध्यम से वह बहुत कम समय में//और बहुत कम मेहनत से शिक्षा प्राप्त कर सकता है। इसलिए आज जो लोग कहते हैं कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रखा जाय वह///देश की शिक्षा के बहुत बड़े दुश्मन हैं, क्योंकि मातृभाषा को छोड़कर अगर अंग्रेजी में शिक्षा दी जाती है तो शिक्षा का (4) कभी भी विकास नहीं हो सकता। यदि हम चाहते हैं कि देश के करोड़ों बच्चों को देश के कोने-कोने में शिक्षा दी जाये तो/केवल मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना होगा।

हमारे कुछ दक्षिण के भाई हिन्दी से नाराज हैं लेकिन अंग्रेजी से उनका मोह हमारी//समझ में नहीं आता। अंग्रेजी से मोह केवल कुछ लोगों को ही है सारे दक्षिण भारत के लोगों को अंग्रेजी से मोह नहीं है। अंग्रेजी///से मोह केवल उन्हीं लोगों को है जिन्होंने बहुत पहले अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की थी और जो आज हमारी सरकारी सेवाओं में ऊँचे पदों (5) पर हैं।

प्रश्न-पत्र 1989

माननीय प्रधानमंत्री जी अपने व्यस्त समय में कुछ समय हमारे लिए निकाला, इसके लिए हम आभारी हैं और अब मैं उनसे/अनुरोध करूँगा कि इस सम्मेलन में आए हमारे साथियों तथा अधिकारियों का मार्गदर्शन करें।

गृहमंत्री जी के स्वागत भाषण के बाद प्रधान//मंत्री श्री राजीव गांधी ने दृढ़ और विश्वास भरे शब्दों में सम्मेलन में उपस्थित अधिकारियों को संबोधित किया। संक्षेप में उन्होंने कहा कि///भारत में बहुत-सी भाषाएँ बोली जाती हैं लेकिन हिन्दी को सबसे ज्यादा लोग समझते हैं और बोलते हैं। इसलिए हिन्दी को हमने (1) राजभाषा बनाने के लिए चुना है। यही नहीं हिन्दी का एक अपना इतिहास भी है और हमारी यह कोशिश रहेगी कि देश में/सब लोग हिन्दी बोलने और समझने लगें। इस दिशा में काफी काम भी हुआ है, लेकिन जैसा कि अभी गृहमंत्री जी ने कहा है//कि जिस गति से और जिस तेजी से काम होना चाहिए था, शायद नहीं हो पाया है।

कल हमारा एक दूसरा सम्मेलन हुआ था। उसमें///भी कई मुद्दे उठाए गए थे। एक मुद्दा जो सामने उभरकर आया वह यह था कि आज भी सरकार का काम उचित भाषा (2) में हिन्दी में नहीं हो पा रहा है जबकि जो आंकड़े पेश किए गए थे उसके हिसाब से किसी विभाग में 99/प्रतिशत, किसी में 98 प्रतिशत और किसी में 95 प्रतिशत अधिकारी और कर्मचारी को हिन्दी का कार्य-साधक ज्ञान// था। हमें यह सोचना होगा कि ऐसा क्यों हो रहा है ? यदि लोग हिन्दी समझते हैं तो हिन्दी में काम क्यों नहीं हो पाता? क्या///हमारे आंकड़े ठीक हैं ? क्या सचमुच 99 प्रतिशत लोग हिन्दी अच्छी तरह समझते हैं या यह आंकड़े केवल प्रोत्साहन भत्ता लेने के (3) लिए ही हैं। यदि हिन्दी का प्रचार होना है और हिन्दी में काम होना है तो हमें अच्छी तरह से हिन्दी की जानकारी करनी/ होगी। खासकर जब कानूनी काम और संसद का काम होता है। हमें यह भी सोचना होगा कि हम किस कारण से इस दिशा में//पीछे रह गए हैं ? कहाँ पर हमने ध्यान नहीं दिया और उसे ठीक करने के उपाय भी सोचने होंगे। हिन्दी का प्रचार करते हुए///हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि दूसरी भाषा बोलने वाले लोगों को यह अनुभव नहीं होना चाहिए कि उनके ऊपर हिन्दी जबरदस्ती (4) थोपी जा रही है, क्योंकि अगर उन्हें यह लगा तो वे विरोध करेंगे। जो काम हम प्यार से और समझाकर कर सकते/हैं, वह जबरदस्ती करने से नहीं हो पाएगा। इस बात को अच्छी तरह से समझकर ही हमें हिन्दी का प्रचार करना है। साथ//साथ हमें यह भी देखना है कि भारत जैसे बड़े देश जिसमें इतनी भाषाएँ बोली जाती हैं वहाँ यह भी आवश्यक है///कि एक भाषा ऐसी हो जिसे सब लोग समझें और जो पूरे देश को एक सूत्र में बांध सके। हमने इसके लिए हिन्दी (5) को चुना है ।

प्रश्न-पत्र 1993

माननीय उपसभापति जी, मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विधेयक पर बोलने का अवसर दिया। मैं इस विधेयक/के बारे में अपने विचार प्रकट करने से पूर्व माननीय सदस्य को बधाई देना चाहता हूँ कि उन्होंने संविधान में संशोधन करने के लिए यह//प्रस्ताव रखा है। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ और कहना चाहता हूँ कि यह प्रस्ताव जनहित में है और प्रजातंत्र को कामयाब बनाने///के लिए बहुत आवश्यक है।

मान्यवर, व्यक्तिगत रूप से मैं इस विचार का हूँ कि इस देश में राज्यपाल का पद ही नहीं रहना चाहिए। (1) इसके लिए संविधान में संशोधन किया जाना चाहिए। क्योंकि अभी जो माननीय सदस्य सत्ताधारी पक्ष के भी बोल रहे थे कि राजनीति में जो/व्यक्ति किसी काम का नहीं रह जाता है, उसको राज्यपाल बना दिया जाता है। उसकी नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है। इसलिए//वह केन्द्र सरकार की राय के अनुसार काम करता है। वह किसी भी रूप में जनता का प्रतिनिधि नहीं होता है। या तो वह///उस राज्य में विधान मंडल का सदस्य हो या लोकसभा या राज्यसभा का सदस्य हो, तब ही वह जनप्रतिनिधि कहा जा (2) सकता है और जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप काम कर सकता है। यह सही है कि यदि उस राज्य में विधानसभा है तो वह/मुख्यमंत्री की राय मान सकता है, किन्तु केन्द्र के प्रतिनिधि होने के नाते उसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह जन//प्रतिनिधियों की राय माने। वह राष्ट्रपति को सिफारिश कर सकता है कि उस राज्य का शासन राष्ट्रपति अपने हाथ में लें और///इस प्रकार उस राज्य का पूर्ण अधिकारी बन जाता है। वह उसी समय तक राज्यपाल के पद पर रह सकता है जब तक राष्ट्र (3) पति महोदय उससे प्रसन्न रहेंगे। अब राष्ट्रपति केन्द्रीय सरकार के प्रधान मंत्री की सलाह पर कार्य करता है, इसलिए राज्यपाल पूरी/तरह से केन्द्रीय सरकार के अधीन रहता है और उसको प्रसन्न रखने का काम करता है। इसलिए यह कहना कि राज्यपाल अपने//विवेक पर काम करता है, यह केवल कहने के लिए है। सच्चे अर्थों में वह अपनी इच्छा से काम नहीं करता है वरन् केन्द्रीय सरकार///के इशारे पर काम करता है। इस बात के उदाहरण हैं जबकि राज्यपालों ने संविधान के नियमों के विरुद्ध काम किया और बहुमत (4) होते हुए भी राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करवाया। बाद में केन्द्रीय सरकार ने पुनः उस राज्य में जन-प्रतिनिधियों की सरकार स्थापित की/और राष्ट्रपति शासन हटाया।

महोदय, इसी सदन में पिछले सप्ताह दो राज्यों में राज्यपालों की रिपोर्ट पर बहस हुई थी। एक राज्य में//राष्ट्रपति शासन लागू करने के लिए और दूसरी जगह राष्ट्रपति का शासन बढ़ाने के लिए सरकार ने प्रस्ताव किया था। इसलिए मेरा///यह स्पष्ट मत है कि राज्यपाल अपने आप रिपोर्ट नहीं भेजते हैं। केन्द्र सरकार उन्हें निर्देश देती है कि इस तरह की रिपोर्ट भेजो (5)।

प्रश्न-पत्र 1986

उपाध्यक्ष महोदय, इस नये 20 सूत्री कार्यक्रम में / भी शिक्षा के ऊपर काफी जोर दिया गया है । मुझे / विश्वास है कि उसको / कानून का जामा भी पहनाया / जाएगा । कानून का जामा अगर पहना दिया जाए तो उससे / एक लाभ यह होगा कि 18 वर्ष तक के बच्चों को पढ़ाना ही पड़ेगा । उससे दूसरा लाभ / यह होगा कि जो बच्चे छोटी उम्र के हैं उनको / काम करने के लिए /// उनके परिवार के लोग / मजबूर नहीं करेंगे । मैं आपसे एक और निवेदन इस / संबंध में करना चाहता हूँ । मेरा यह विश्वास है (1) कि माननीय संसद सदस्य जब इसमें हिस्सा लेंगे तो / जरूर उस पर प्रकाश डालेंगे । मैं निवेदन करना चाहता हूँ / कि आज देश में अलग / रहने की भावना बढ़ती चली / जा रही है । आज स्थानीय दल केन्द्रीय दलों से अधिक / मजबूत होते चले जा रहे हैं । आज भाषा को लेकर विरोध है । भाषा कभी भी विरोध का विषय नहीं होनी / चाहिए । भाषा के विषय में तो मेरा यह विचार है / कि जितनी आसानी से /// बच्चा अपनी मातृभाषा में शिक्षा / को ग्रहण कर सकता है उतना विदेशी भाषा में नहीं / । विदेशी भाषा चाहे कितनी लचीली क्यों न हो, चाहे / (2) कितनी विकसित क्यों न हो उससे बच्चे का विकास / नहीं हो सकता । बच्चे की बुद्धि का विकास जितना उसकी / मातृभाषा में किया / जा सकता है उतना विदेशी / भाषा के आधार पर नहीं किया जा सकता है । मेरी / यह भी प्रार्थना है कि इस देश में विदेशी भाषाओं /// को प्रोत्साहन मिले । महात्मा गाँधी जी ने यह कहा था कि मैं नहीं चाहूंगा कि मेरा देश एक कोठी बन / कर रह जाए । महात्मा /// गांधी चाहते थे कि सभी / प्रगतिशील राष्ट्रों के साथ, मिल जुल कर हम चलें / मैं इस विचार का समर्थक हूं । मैं किसी भाषा (3) का विरोधी नहीं हूं । लेकिन मातृभाषा में जितनी तेजी / के साथ, जितनी मजबूती के साथ बच्चे की बुद्धि का / विकास हो सकता है उतना / अंग्रेजी से नहीं हो सकता । तमिल भाषा के बच्चे की बुद्धि हिन्दी या अंग्रेजी से / नहीं बढ़ सकती । इसी तरह से मराठी और बंगला भाषा // का है । इन तमाम भाषाओं में ऊंची से ऊंची शिक्षा / बच्चे को मिल सके इस तरह की व्यवस्था भी आज / हमें करनी होगी ।

उपाध्यक्ष /// महोदय, मेरी यह मान्यता है / कि जापान आज जापान नहीं बनता अगर यहां की शिक्षा / जापानी भाषा में नहीं होती । इसी प्रकार जर्मनी आज (1) जर्मनी नहीं बनता अगर वहां की शिक्षा जर्मन भाषा में / नहीं होती । मेरा यह विश्वास है कि रूस आज रूस / नहीं बनता अगर वहां रूसी / भाषा में शिक्षा नहीं होती । इसी / तरह भारत में जब तक मातृभाषा न हो तब तक भारत विकसित नहीं हो सकता । उसके /// बच्चों की बुद्धि का विकास करके उसको आगे / नहीं खड़ा किया जा सकता जब तक कि यहां के / बच्चों की शिक्षा उनकी /// मातृभाषा के जरिए न / हो । इसलिए जहां यह शिक्षा की प्रणाली अठारह वर्ष के / बच्चों को अनिवार्य हो वहां यदि इसके लिए (5) आवश्यकता पड़े तो संविधान में संशोधन करना चाहिए ।

अक्ण्ज्ञ गति अभ्यास 1.

एक महिला एक साधु के पास जाकर बोली –बाबा, मेरा बेटा गुड़ 12
बहुत खाता है, इस कारण यह अस्वस्थ रहता है, निवेदन है कि आप 25
इसको समझाकर इसकी यह आदत छुड़ा दें, साधु ने कहा एक सप्ताह बाद 38
आना. महिला अपने पुत्र के साथ एक सप्ताह बाद पहुँची, साधु ने फिर 51
कह दिया एक सप्ताह बाद आना इस प्रकार चार सप्ताह बीत गए 63
पाँचवी बार जब माता पुत्र पहुँचे, तो साधु ने पुत्र से पुछा तुम इतना गुड़ 76
क्यों खाते हो? गुड़ खाना छोड़ दो. पुत्र ने अगले दिन से गुड़ खाना बन्द 91
कर दिया. माता ने जाकर साधु के प्रति हार्दिक कृतज्ञा व्यक्त कि और 104
प्रश्न किया बाबा इस बात को कहने के लिए आपने पाँच सप्ताह का 117
समय क्यो लिया? बाबा ने हँसकर उतर दिया मै स्वयं गुड खाया करता 130
था जब तक मै स्वयं मै गुड़ खाना नही छोड़ दूँ, तब तक बालक से किस 145
मुँह से कहता कि तू गुड़ खाना छोड़ दे पाँच सप्ताह में मेने गुड़ खाना 160
छोड़ दिया था इस कारण मेरे कथन ने बालक को प्रभावित किया और 173
उसका वांछित परिणाम सामने आ गया। 179
हम स्वयं देख सकते हैं कि हमारे नेताओं द्वारा नित्य उपदेशात्मक 190
बड़े–बड़े व्याख्यान दिये जाते हैं परन्तु उनका कोई प्रभाव नही पड़ता है 202
क्योंकि वक्ता की वाणी के पीछे नैतिक बल नहीं होता है इसके विपरीत 215
ये ही बातें जब महात्मा गांधी कहते थे तो हजारों व्यक्ति उनकी बात 228
मानकर सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हो जाया करते थे, महात्मा जी 240
वही कहते थे, जो वह करते थे ओर वही करते थे, जो वह कहते थे 255
कथनानुसार कार्य करने से व्यक्ति की वाणी में जिस आत्म बल 266
की सृष्टि होती है, उसके द्वारा वाणी में बल एवं प्रभावशीलता का समावेश हो 279
जाता है, जो लोग अच्छी–अच्छी बातें करते हैं और तदानुसार आचरण नहीं 291
करते हैं उनके कथन की उपेक्षा लोग यह कहकर कर दिया करते 303
हैं –''आप मियाँ फजीहत, दीगराँ नसीहत'' 309
कथनी और करनी के मध्य सामंजस्य का अभाव संकल्प शक्ति को 320
दुर्बल बना देती है फलतः व्यक्ति के नैतिक बल एवं आत्म विश्वास का 332
क्षरण होता है और वह केवल वाक्सूर बनकर रह जाता है ऐसे व्यकित 345
सेमल के फूल की भाँति आक ाक तो हो सकते है परन्तु वे सर्वथा 358
सारहीन होते है वे समाज के किसी काम के नही होते 369

वर्तमान काल में सब लोग यह कहते हुए सुने जाते है की आजकल 381
सच्चाई के दर्शन दुर्लभ हो गये है, झूठ का बोल–बाला है, चारित्रिक पतन 394
हो गया है आदि विचार करने पर सहज ही इन समस्त वि ामताओं एवं 407
विसगंतियो का कारण समझ में आ जाता है प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से सत्य 420
की आशा करता है और स्वंय सत्य नहीं बोलता है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति 433
मिथ्याचार को अपने लिये सुरक्षित रख कर सदाचार का उत्तर दायित्व अन्य 443
व्यक्तियों को सोंप देता है। 448
आप स्वयं विचार करें कि जो पिता शराब पीता है, वह किस अधिकार 461
से अपने पुत्र को शराब से दूर रहने के लिये कह सकता है? जो नेता 476
संसद और विधान सभा में विधि नियम का उल्लघंन करते हैं तथा अपनी 488
बात मनवाने के लिए हिंसा का मार्ग आपनाते है वे आशा क्यों कर 501
सकते हैं की हमारा युवा वर्ग अनुसाशित होकर रचनात्मक कार्यों में अपनी 513
षक्ति लगाएगा। 515

गति अभ्यास –2

नींद का मनुष्य के जीवन में महत्व पूर्ण स्थान है –मनुष्य अपने जीवन 12
का एक – तिहाई भाग सोते हुए गुजारता है नींद में परिवर्तन होने का 24
प्रभाव मनुष्य की कार्य क्षमता तथा उसके स्वास्थ्य पर पड़ता है। 34
आज के आधुनिक युग में काम, कोध, लोभ, मोह, असंतो ा आदि 45
मानसिक विकारों के कारण मनुष्य इतना अशान्त बन चुका है की उसको 57
स्वाभाविक नींद के लिए भी तरसना पड़ता है आज अनिद्रा का रोग सारे 70
विश्व में महारोग की भाँती फैलता जा रहा है आज के दौर में नींद न 85
आना एक आम शिकायत हो गयी है –डॉक्टरों के पास नियमित ऐसे रोगी 98
आते हैं, जिनकी खास शिकायत नींद न आने की होती है 109
नींद एक प्रकिया है जिसके द्वारा शरीर आराम पाता है गहरी नींद से 122
व्यक्ति अपने आप को तनाव रहित पाता है क्योंकि उससे दिमाग और 133
शरीर को पूर्ण रूप से आराम मिल जाता है –जब हम प्रातः सोकर उठते हैं 147
तो हमारा दिमाग हलका फुल्का एवं शरीर तरों ताजा रहता है 156
यदि हम रात्रि में ठीक तरह से नींद नहीं ले पाते है , तो हमें 170
प्रातःकाल से ही सुस्ती रहती है, हाथ पैर तथा सिर दर्द करता है आँखे 182
भारी–भारी रहती हैं एवं किसी भी कार्य में मन नही लगता है अर्थात् रात्रि 196
के साथ– साथ अगला दिन भी बेकार हो जाता है . अच्छे स्वास्थ्य के लिए 209
गहरी नींद का आना अत्यन्त आवश्यक है यदि कई दिनों तक नींद 222
नही आती है तो मनुष्य पागल हो जाता है जितनी खुराक हमें नींद से मिलती 236
है उतनी अन्य किसी वस्तु से नही 243
डॉ. जार्ज स्टीवेन्सन जो कि दिमागी स्वास्थ्य के विशेषज्ञ हैं, कहते हैं 254
कि आज के बहुत ज्यादा व्यस्त और उलझन भरे जीवन के लिए जरूरी है 268
कि नींद की आवश्यकता और उसके महत्व का ध्यान रखा जाए. दिमागी 280
संतुलन और स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए कम से कम 6 घंटे नींद 291
आवश्यक है। 293
अलग–अलग व्यक्तियों के लिए नींद की आवश्यकता अलग–अलग 301
होती है, जैसे– एक माह के बच्चे को 21 घण्टे, 6 माह के बच्चे को 18 317
घण्टे, 12 माह के बच्चे को 12 घण्टे, 12 वर्ष से उपर वाले बच्चे को 332
10 घण्टे, 16 वर्ष से उपर वाले को 8 घण्टे तथा 30 वर्ष से उपर 347
वाले को 6–7 घण्टे सोना चाहिए तथा उससे अधिक उम्र वाले को 5–6 360
घण्टे सोना चाहिए शारीरिक व मानसिक श्रम करने वाले को अधिक नींद 372
आती है । 374

अनिद्रा के अतिरिक्त अधिक देर तक सोया रहना भी आलस्य की 385
निशानी है तथा स्वास्थ्य के लिए अहितकार है इंग्लैण्ड के मनोवैज्ञानिक 396
डॉक्टर जोम्ज के अनुसार अधिक सोने से रक्त प्रवाह प्रभावित होता है 408
अर्थात् धीमा पड़ जाता है परिणामस्वरूप ह्रदय के रोग उत्पन्न हो सकते 420
हैं, फेफड़े कमजोर हो जाते हैं। 426
अच्छी नींद प्राप्त करने के लिए दवाओं का सहारा लेना अच्छी बात 438
नहीं है – नींद की गोलियां खाने से स्वास्थय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है 451
नींद की गोलियों के सेवन के विषय में एक प्रसिद्ध डॉक्टर का कहना है 465
कि आपकों पाँच घण्टे की नींद आती है आप उसे सात घण्टे करने के 479
लिए नींद की गोली का प्रतिदिन सेवन करते हैं, तो कुछ दिन तो आपकी 493
नींद सात घण्टे की हो जाएगी किन्तु कुछ समय बाद आपको पाँच घण्टें 506
की नींद के लिए भी परेशानी होगी वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि 520
पूर्व दिशा में सिर रखकर सोने से शांत और सुखमय नींद आती है। 533

गति अभ्यास – 3

आज दुनिया विश्व – विनाश के ज्वालामुखी पर बैठी है मानव जाति ने 11
अपने सर्वनाश का पुख्ता इन्तजाम कर लिया है अणु, बम, परमाणु बम, 23
कोबाल्ट बम, हाइड्रोजन बम और बायोंलॉजिकल बम आज धरती पर 33
विद्यमान समस्त जीवों की मौत की गारन्टी देते हैं हमने 'गाइडेड' 44
मिसाइलें बना ली हैं परंतु हम खुद मिसगाइडेड होते जा रहे हैं आज 57
विश्व का रक्षा व्यय लगभग 2 अरब डॉलर वार्षिक हो गया है, लगभग 2 71
करोड़ लोग सैनिक तथा 20 करोड़ लोग अर्द्ध–सैनिक कार्यों में लगें हुए हैं. 84
इस अपार व्यय के मात्र एक प्रतिशत योगदान से विश्व में व्याप्त भुखमरी 97
को समाप्त किया जा सकता है, इसी जंगल के न्याय तथा शास्त्रीकरण की 110
अंधी दौड़ को समाप्त करने के लिए विश्व सरकार परमावश्यक है . 121
आज दुनिया आर्थिक असमानता की चपेट में है, विश्व में विकसित 132
देशों की 15 प्रतिशत आबादी कुल विश्व आय का 60 प्रतिशत ऐश्वर्य एवं 145
विलासिता पर व्यय कर रही है, वहीं दूसरी ओर विकासशील देशों की 157
जनता पशुवत् जीवन जीने के लिए मजबूर है, उनके बच्चों का भविष्य 169
अंधकारमय है, उन्हें शिक्षा एवं रोजगार तो दूर, भोजन, वस्त्र एवं आवास 181
जैसी मूलभूत सुविधाँए भी उपलब्ध नहीं है पिछले वर्ष उड़ीसा के 192
कालाहांडी जिले में पेयजल उपलब्ध न होने के कारण अनेक जानें गई 204
इसी प्रकार 1987 में केन्या (अफ्रीका) के सैकड़ो लोग भुखमरी के 215
शिकार हो गए, विश्व सरकार के माध्यम से इन आर्थिक असमानताओं पर 227
नियंत्रण करके विश्व जनता को मूलभूत सुविधाँए सुलभ कराई जा सकती 238
हैं। इसी प्रकार विश्व सरकार के माध्यम से विश्व में व्याप्त जाति–भेद 250
रंगभेद ओर निंरकुश एवं स्वेच्छा धारी शासन को समूल नष्ट किया जा 261
सकता है। 263
अनेक विद्वानों ने समय –समय पर विश्व –सरकार की परिकल्पना की 272
थी। इनमें हेनरी चतुर्थ, विलियम पेन, एमरिक क्रूस, पियरे डूबी, काण्ट, 283
रूसों, महात्मा गांधी, सर्वपल्ली डॉ . राधाकृष्णन इत्यादि प्रमुख हैं सन् 293
1919 में क्लोरेन्स स्ट्रीट ने अपनी पुस्तक 'यूनियन नाऊ' के दूसरे 304
अध्याय में विश्व –सरकार का उल्लेख किया है, इसी प्रकार आरनोल्ड 314
टायनबी ने अपनी पुस्तक 'हैज मैन ए यूचर' में विश्व –सरकार की 325
व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का गठन कर दिया हैं 334

विश्व –सरकार के गठन का सर्वाधिक सरल एवं व्यावहारिक उपाय है 344

कि संयुक्त राष्ट्र सघं को विश्व –सरकार के रूप में विकसित किया जाए, 356

उसके संघात्मक स्वरूप को स्वीकार करते हुए महासभा को विश्व–संसद 366

सुरक्षा परिषद् को विश्व कार्यपालिका तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को विश्व 376

न्यायालय का स्वरूप दिया जाए साथ ही विश्व सरकार को सफल एवं 388

प्रभावशील बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सभी राष्ट्र अपनी सम्प्रभुता 400

सीमित करके विश्व–सरकार को सम्प्रभु करें वे अपनी सम्प्रभुता सीमित करके

विश्व–सरकार को सम्प्रभु करें वे अपनी एकता एवं 410

अखण्डता का दायित्व उसे सौंप दें, सभी राष्ट्रों को चाहिए कि वे भाषा, 423

धर्म, जाति और सम्प्रदाय की संकीर्ण मनोवृति से ऊपर उठकर सोचें तथा 435

देश में राष्ट्र–भक्ति के बजाय 'विश्व –भक्ति ' का प्रचार करें। 444

गति अभ्यास–4

वोटिंग मशीन विशुद्ध रूप से कम्प्यूटर विज्ञान के सिद्धान्त पर 10
आधारित, कम्प्यूटर जैसी एक मशीन है, इस मशीन के उपयोग के पक्ष में 23
तरह–तरह की दलीलें दी जाती हैं मुख्य दलीलें हैं– ऐसी मशीन के उपयोग 36
से सरकारी काम–काज में आसानी हो जाती है, सुदूरवर्ती गाँवों के मतदाता 48
भी बिना किसी बाहरी दबाव के अपनी इच्छा से स्वतंत्रतापूर्वक अपने 59
मताधिकार का प्रयोग कर सकते हैं, यह मशीन बहुत बड़ी संख्या में मत 72
–पत्रों के छापने और उनको सुरक्षित रखने की समस्या का हल है, इस 84
मशीन के प्रयोग से अस्पष्ट मत चिन्ह अथवा एक से अधिक उम्मीदवारों के 96
नाम के आगे चिन्ह अंकित नहीं हो सकते, इससे कागज और स्याही की 109
बचत होगी, मतदाता की अँगुली पर लगाई जाने वाली स्याही संबंधी 120
गड़बड़ी नहीं होगी, जाली मत–पत्रों का प्रयोग असंभव होगा, चुनाव प्रक्रिया 131
सरल हो जाएगी, मतदान केन्द्रों पर होने वाली हेरा–फेरी रोकी जा सकती 143
है, मतदान–केन्द्रों तथा मतपेटियों पर होने वाले कब्जे से मुक्ति मिल 155
जाएगी। 156
वोटिंग मशीन की नियंत्रण इकाई चुनाव अधिकारी के पास होती है। 167
मतदान इकाई को चुनाव कक्ष के अंदर रखा जाता है। स्मृति भण्डार 179
(मेमोरी) इसी मतदान इकाई में होता है, जिसमें प्रोगामर उम्मीदवारों से 190
संबंधित विवरण भर देता है। मशीन पर उम्मीदवार और चुनाव चिन्ह के 202
सामने एक पुश बटन लगा होता है। बटन को दबाते ही मशीन का लैम्प 215
प्रकाश देने लगता है, जो मत पड़ने का सूचक है। मशीन को अपनी पूर्व 229
स्थिति में लाने तक यह बटन पुनः नहीं दब सकता। इस तरह इसका कोई 243
दुरूप्योग नहीं कर सकता। मतदान इकाई को पूर्व स्थिति में लाने का काम 256
नियंत्रण कक्ष में बैठा चुनाव अधिकारी, नियंत्रण इकाई के पेनल का बटन 268
दबाकर करता हैं। बटन दबाने और मतदान इकाई के लैम्प जलने की 280
सूचना नियंत्रण इकाई में एक अलार्म द्वारा चुनाव अधिकारी को मिल जाती 292
हैं परन्तु इससे यह आभास नहीं होता हैं कि मत किसके पक्ष में पड़ा हैं। 307
किसी मतदाता द्वारा दो बटन एक साथ दबाने से कोई मत रिकॉर्ड नहीं 320
होता हैं। इस प्रकार एक बार में एक ही मत रिकॉर्ड होता हैं। मतदान की 335
समाप्ति पर मशीन सीलबन्द कर गणना केन्द्रों पर भेज दी जाती हैं। गणना 348
केन्द्रों में मात्र बटन दबाने से अलग–अलग उम्मीदवारों के पक्ष में पड़े मत 361

और कुल पडे मतों की संख्या ज्ञात की जा सकती है। 372

अब वोटिंग मशीन द्वारा चुनावों में बेईमानी और घपलेबाजी का उद्‌गम 383

हो गया है। प्रोग्रामर अथवा कोई भी जानकार व्यक्ति अवांछित कार्यक्रम 394

(प्रोग्राम) वोटिंग मशीन में फीड कर सकता है। इसमें चोरी से इस प्रकार 507

के निर्देश भरे जा सकते हैं कि सभी वोट एक ही उम्मीदवार को अथवा 521

केवल एक विशिष्ट राजनीतिक दल के उम्मीदवारों को मिले अथवा हर 532

दूसरा या तीसरा वोट विशेष पार्टी अथवा विशेष उम्मीदवार को मिले 543

आदि। यह प्रोग्राम फीड करने वाले की योग्यता पर निर्भर करती है। चुनाव 556

कर्मियों की मिली भगत से यह कार्य किया जा सकता हैं। 566

गति अभ्यास –5

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृति है सेवा ही उसके जीवन का 11

आधार है, उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के इस कथन का अभिप्राय 22

युवावस्था के आगमन पर समझ में आने लगता है, जब व्यक्ति घर गृहस्थी 35

के जंजाल में उलझने लग जाता है, वह अपनी पत्नी और संतान के लिए 49

बहुत कुछ निस्पृह भाव से करने के लिए विवश हो जाता है–किसी बाह्य 63

दबाव के कारण नहीं बल्कि आन्तरिक प्रेरणा के कारण 72

प्रकृति में सेवा का नियम अव्याहत गति से कार्य करता हुआ दिखाई 84

देता है. सूर्य और चन्द्र विश्व को प्रकाश एवं उ णता प्रदान करते है वायु 98

जीवनदायक श्वास प्रदान करती है, पृथ्वी रहने का स्थान देती है,वृक्ष 110

छाया देते हैं आदि वे ऐसा जीवन किसी प्रतिफल–प्राप्ति की भावना से 122

नहीं करते हैं वे केवल अपने जन्मजात स्वभाववश ऐसा करते हैं हम भी 135

दीन–दुःखियों की सहायता किसी आन्तरिक प्रेरणावश ही करते है सड़क 145

के किसी कोने में पड़ें हुए घायल या बेहोश व्यक्ति को उठाकर जब 158

अस्पताल ले जाते हैं तब क्या हम यह सोचते हैं कि वह अच्छा होने पर 173

हमको पुरस्कार देगा अथवा अथवा बेहोश हो जाने पर 185

यह हमें अस्पताल पहुँचाएगा, 189

यह सेवा–भाव जब सप्रयास विकसित किया जाता है, तब वह व्यक्ति 200

का सदगुण एवं समाज की विभूति बन जाता है. जो लोग सेवा–भाव रखते 213

हैं ओर स्वार्थ सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाते, उनको सहयोग देने 226

वालों की कमी नहीं रहती है गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार सेवा–धर्म 237

कठिन जग जाना अर्थात संसार जानता है कि सेवा करना बहुत कठिन 249

काम है. सेवा में स्वार्थ–त्याग और निरहंकारता परम आवश्यक है। 259

अहंकार रहित व्यक्ति विश्व के कण–कण कोः अपने समान समझता 269

है, उसके लिए सब आत्मवत होते है, कम–से–कम वह किसी को भी 281

अपने से छोटा, हेय तुच्छ अथवा हीन नहीं समझता है और प्राणिमात्र के 294

साथ एकत्व की अनुभुति करता है वह अपने प्रत्येक कार्य को सर्वव्यापी 306

परम प्रभु की सेवा के भाव से करता है सेवा–भाव द्वारा उसको आत्म 319

साक्षात्कार अथवा परमात्मा का दर्शन होता है। 326

आत्म साक्षात्कार के संदर्भ में सेवा वस्तुतः साधन और साध्य दोनों है, 338

अर्थात सेवा का फल सेवा द्वारा प्राप्त आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं होता 351

है. जिस प्रकार भक्ति का फल भक्ति ही होता है. जगत के प्राणियों की 365
सेवा ही जगत को बनाने वाली की सच्ची सेवा–पूजा एवं भक्ति है। 377
ईसाइयों के धर्मग्रन्थ इंजील में लिखा है कि यदि तुम अपने पड़ोसी से प्रेम 391
नहीं कर सकते हो, जिसको तुम नित्य देखते हो तो तुम उस परमात्मा से 405
प्रेम कैसे कर सकोगे जिसको तुमने कभी नहीं देखा है। 415
महात्मा गौतम ने अत्यन्त स्पष्ट षब्दों में कहा है कि जिसे मेरी सेवा 428
करनी है वह पीड़ितो की सेवा करे. युगपुरूष महात्मा गांधी ने भी कहा है 442
कि लाखों गूँगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है मैं उसके सिवा अन्य 455
किसी ईश्वर को नहीं मानता मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की 469
सेवा करता हूँ। 472

गति अभ्यास 6

वर्तमान समय में प्रचलित अनेक चिकित्सा पद्धतियों में एलोपैथी,	9
होम्योपैथी, आयुर्वेद और यूनानी मुख्य हैं इन सब चिकित्सा पद्धतियों में	20
आयुर्वेद एक लम्बे समय तक भारत में प्रचलित एकमात्र चिकित्सा	31
प्रणाली थी, मुगलों के आगमन के साथ भारत में प्रचलित एकमात्र चिकित्सा प्रणाली थी.	
मुगलों के आगमन के साथ भारत में अरबी तथा यूनानी	43
चिकित्सा पद्धतियों का प्रचलन हुआ, अंग्रेजी राज्य की स्थापना पर भारत	54
में एलोपैथी तथा होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों का भी खूब प्रचार हुआ,	65
इनमें आयुर्वेदिक यूनानी तथा एलोपैथिक तीनों	73
चिकित्सा पद्धतियों मूलतः विपरीत चिकित्सा पद्धति सिद्धान्त पर	81
आधारित हैं अर्थात इनमें रोग को दुर करने के लिए प्रायः उन्हीं	93
औषधियों का सेवन किया जाता है जो रोग के लक्षणों के विपरीत गुण	106
–धर्म वाली हों होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में किसी रोग को दुर करन	118
के लिए इस रोग के समान ही गुण–धर्म वाली औषधि का प्रयोग किया	131
जाता है. अतः इसे सदृश चिकित्सा पद्धति कहते है।	140
भारतीय आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार विष की चिकित्सा विष है.	150
इसका तात्पर्य है कि आयुर्वेद चिकित्सा सदृश चिकित्सा सिद्धान्त पर	160
आधारित है, परन्तु वास्तविकता यह नहीं है क्योंकि उसमें बहुत–सी	170
औषधियाँ ऐसी हैं जिनकी गणना सदृश चिकित्सा के अन्तर्गत की जा	181
सकती है आयुर्वेद पद्धति के उपचार में एलोपैथी, होम्योपैथी और	191
प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के सभी सिद्धान्त समाविष्ट हैं यह चिकित्सा	201
पद्धति विशुद्ध रूप से भारतीय है जो इस कि भुमि मे ही जडी–बूटियों	213
वनस्पतियों एवं पशु–पक्षियों से प्राप्त उत्पादों पर आधारित है। जिनमें से बनी	224
औषधियों के अनुषंगी प्रभाव नहीं होता।	230
होम्योपैथी में रोग का कोई नाम नहीं होता इसमे शरीर में होने वाली	243
विकृतियों के लक्षणों के आधार पर चिकित्सा की जाती है अतः होम्योपैथी	255
को लाक्षणिक चिकित्सा विज्ञान भी कहा जा सकता है।	264
वह पदार्थ जिसके सेवन से रोग ठीक हो जाता है औषधि कहलाता	276
है लेकिन होम्योपैथी के संदर्भ में वह पदार्थ, जिसमें रोग को उत्पन्न करने	289
अथवा नष्ट करने दोनों की ाक्ति विधमान हो, औषधि कहलाता है. वह	301
पदार्थ जिनके सहारे औषधि को तैयार किया जाता है तथा सेवन कराया	313

जाता है औषधि वाहक कहलाते हैं यधपि औषधियों का निर्माण 323

साधारणतः जड़ी बूटियों, पेड़ पौधों, खनिज पदार्थों, जीव जन्तुओं से प्राप्त 331

से प्राप्त पदार्थो तथा रोगों के कीटाणुओं से किया जाता है फिर भी औषधि

विज्ञान में जडी–बूटियों तथा पेड–पौधों का विशेष स्थान है। 352

संसार की सभी चिकित्सा पद्धतियो में रोगो के निवारण के लिए पौधों 364

का उपयोग किया जाता है संसार की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या अपनी 375

स्वास्थ रक्षा के लिए वनस्पतियों एवं जड़ी–बूटियों से प्राप्त औषधियों पर 386

ही निर्भर करती है। 390

औपचारिक रूप से यूनानी एवं आयुर्वेद दोनों पद्धतियाँ एक समान है। 401

क्योंकि दोनों मे शारीरिक स्थिति का विशेष महत्व है.आयुर्वेद एकदम 412

विशुद्ध चिकित्सा पद्धति है,जो विदेशी चिकित्सा पद्धतियों के प्रभाव से दूर 424

है,जबकि यूनानी चिकित्सा पद्धति का उदगम प्राचीन ग्रीस देश में हुआ 436

था, जो फारस व अफ्रीका की चिकित्सा पद्धतियों से अत्यधिक प्रभावित है। 448

गति अभ्यास – 7.

हमारे बड़े प्रायः हमें यह शिक्षा देते हैं कि हमें सदा ईमानदार रहना 13
चाहिए। सत्य का आचरण करना चाहिए अपने कर्तव्य का पालन करना 24
चाहिए तथा कमजोर व गरीबों की सहायता करनी चाहिए वस्तुतः ये कुछ 36
नैतिक मान्यताएं हैं जिन्हें हम अपने जीवन के लिए बड़ा महत्वपूर्ण मानते 48
आए हैं तथा जिनके अधिकाधिक प्रचलन के लिए हम प्रयत्नशील रहें हैं। 60
हमारे द्वारा ऐसा किए जाने का कारण वस्तुतःयही रहा है कि हम इन 74
नैतिक मान्यताओं को अपने जीवन को सुखमय बनाने का साधन मानते है। 86
और यह मानते हैं कि इनके बिना मानव जीवन विकृत व कष्टमय हो 99
जाता है। परन्तु इसके विपरीत संसार में जब हम देखते है कि असत्य 112
धोखाधड़ी तथा बेईमानी का जीवन जीने वाले दुःखी नहीं उल्टे सुखी 124
हैं तो इस बात पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है कि सत्य, कर्तव्यपालन तथा 136
ईमानदारी आदि नैतिक मान्यताओं को हमें अपने–अपने जीवनयापन का 145
आधार बनाना चाहिए या नहीं क्योंकि अनुभव की बात यह है कि संसार 158
में प्रत्येक व्यक्ति दिखावे के लिए तो सत्य, सच्चरित्रता व ईमानदारी को 170
अच्छा बताता है और यह कहता है कि ये हमारे जीवन के आधार होने 184
चाहिए परन्तु वास्तविक व्यवहार में असंख्य लोग इन आदर्शों को 194
तिलांजली देते दिखाई देते हैं जब वे यह देखते हैं कि इन पर चलने से 209
जीवन की वास्तविक समस्याएं हल नहीं होती तथा इनकी परवाह न करने 221
वाले लोग दुनिया में अधिक सुखमय जीवन बिताते हैं। 230
सच्चाई व ईमानदारी को अधिकांश लोग क्यों नही अपनाते इस प्रसंग 241
में बेईमानी व ईमानदारी से संबंधित एक कहानी बड़ी प्रासंगिक है। कहा 253
जाता है कि एक बार ईमानदारी व बेईमानी किसी नदी में स्नान करने 266
गई स्नान के लिए अपने–अपने कपड़े उतारकर उन दोनों ने देर तक 279
डुबकी लगाए रहने की होड़ के साथ नदी में डुबकी लगाई बेईमानी अपनी 292
प्रवृति के कारण जल्दी पानी से बाहर निकल आई और ईमानदारी के 317
कपड़े स्वयं पहनकर वहां से चली गई। ईमानदारी जब बाद में पानी से 330
बाहर आई और नदी के किनारे अपने कपड़ों को नहीं पाया तो वह असमंजस में पड़
गई क्योंकि बेईमानी के कपड़े पहनकर वह अपने को 342
बेईमान नहीं बनाना चाहती थी ऐसी स्थिति में उसने निर्वस्त्र रहना ही 368
अच्छा समझा कहा जाता है कि तब से ईमानदारी नंगी ही है और उसके

कपड़ों को बेईमानी ने पहन रखा है परिणामस्वरूप जो लोग नंगेपन से 380
बचना चाहते हैं ईमानदारी के वस्त्र पहननें वाले अपनाते हैं और जब तब
उन्हें बेईमानी की वास्तविकता की पहचान हो पाती है 405
वे उसी के अभ्यस्त होकर रह जाते हैं क्योंकि उसके सहारे लोगों की 418
अनेक समस्याएं सरलता से हल हो जाती हैं कहानी के अनुसार यही 430
कारण है कि ईमानदारी दुनिया में अकेली पड़ गई और उसके अपनाने 443
वाले बहुत कम लोग हैं जबकि बेईमानी को अपनाने वाले और उसके साथ 456
रहने वाले लोग असंख्य हैं और वे उसे बुरा नहीं अच्छा समझते हैं। 470

गति अभ्यास – 8

वनों की आवश्यकता तथा लाभ

देश मे उधोगों की उन्नति हो रही है। स्थान–स्थान पर नगरों के पास मिल–कारखानों की स्थापना की जा रही है। इनकी चिमनियों से धुयें के रूप में कार्बनडाई– ऑक्साइड बड़ी मात्रा में निकलती रहती है। जो हमारे स्वास्थय के लिए बहुत हानिकारक है। बसों, ट्रकों, स्कूटरों तथा रेलयानों से भी हवा दूषित हो रही है, जो हमारे फेफड़ों में पहुँचकर जीवन–शक्ति को घटाकर शरीर को रोगों का घर बना रही है। पेड़ों की पत्तियों की यह विशेषता है कि वे डाई–ऑक्साइड को शुद्व ऑक्सीजन में बदलकर हमें जीवन दान देती है। इस प्रकार वृक्ष दूषित हवा को शुद्ध करके हमारी बहुत बड़ी सेवा अनजाने में ही करते रहते हैं।

जब कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है तथा रोग ठीक होने में नहीं आता तो डॉक्टर पहाड़ों पर जाकर वन–सेवन करने का परामर्श देते हैं। हरे–भरे वनों की शीतल हरियाली हमारें तन–मन को प्रसन्न कर देती है। नेत्रों की ज्योति तथा ारीर को नवजीवन मिलता है। मन शान्त हो जाता है। अनेक विटा. मिनों वाले मधुर फल खानें को मिलते हैं इन्हीं सब की कमी से तो अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। अतः वन प्रकृति देवी के असाधारण वरदान है। डॉक्टर या वैध कोई रोग हो जाने पर रोगी को एलौपैथि, आयुर्वेदिक, युनानी आदि दवाई देते हैं। ये जड़ी–बूटियां और दवाई हमें प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से वनों से ही प्राप्त होती हैं। इस प्रकार चिकित्सा क्षेत्र में वन सदा से मानव के परम मित्र रहे हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या खेती पर निर्भर है। बिना वर्षा के अच्छी खेती की कल्पना करना बेकार है, क्योंकि हमारे देश में अभी सिंचाई के आधुनिक साधन पर्याप्त मात्रा में नहीं है। अच्छी वर्षा के लिए वनों की बड़ी आवश्यकता होती है। अधिक वन कटने से सूखा पड़नें की संभावना रहती है। अतः कृषि की उन्नति के लिए वनों की रक्षा परम आवश्यक है। वनों से प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। पेड़ों की जड़ों में मिट्टी मजबूत हो जाती है अतः बाढ़ का पानी ऊपजाउ मिट्टी को अपने साथ बहाकर नहीं ले जा पाता है। इस प्रकार भूमि बंजर होने से बच जाती है। वनों से हमें बड़ी मात्रा में इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। घरेलू फर्नीचर के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली लकड़ी हमें वन ही तो प्रदान करते हैं। साथ ही जलाने के लिए ईंधन भी मिलता है। इस प्रकार वन हमारी बहुत बड़ी राष्ट्रीय सम्पति है। देश के आर्थिक विकास में इनका महान योगदान है।

गति अभ्यास – 9

नारी मुक्ति

अभी हाल तक यह समझा जाता था कि जीवन के युद्ध में जिसको कि मनुष्य परिस्थितियों के विरूद्ध लड़ता है, नारी की भूमिका द्वितीय पंक्ति की रहती है। यह बात निश्चय ही बड़ी महत्वपूर्ण हैं किन्तु आज हम पुरूष और नारी में कोई भेद नहीं करते हैं। जहां तक कि उनके दर्जे की समानता का संबंध है। नारी को भी मोर्चे अर्थात् प्रथम पंक्ति पर होने पर उतना ही अधिकार है जितना कि पुरूष को। जहां तक दोनों की क्षमता का प्रश्न है, यह सिद्ध हो चुका है कि नारी की क्षमताओं का कुल योग पुरूष की क्षमताओं के कुल योग से कम नहीं होता किन्तु हम देखते हैं कि हमारे समाज में नारी की स्थिति वह नहीं है जो होनी चाहिए। समाज में नारी को पुरूष के साथ गौण स्थान प्राप्त है, जन्म से ही लड़का व लड़की के मध्य हमारे अधिकतर परिवारों में भेद किया जाता है। परिवार में प्राप्त पौष्टिक आहार का बड़ा भाग लड़के को चला जाता है। उसको शिक्षा एवं उन्नति के अन्य अवसरों के मामलों में अधिक ध्यान दिया जाता है। जैसे ही बच्ची बड़ी होती रहती है। प्रतिबंधों की जंजीरें उस पर बराबर कड़ी और कड़ी होती जाती है। समय बीतते–बीतते उनमें हीनता की ग्रंथि विकसित होने लगती है और यह ग्रंथि मृत्यु तथा उसका साथ देती है। विवाह के बाजार में उसको केवल एक वस्तु की तरह समझा जाता है। दहेज के सौदे व्यापार के सौदों की भांति तय किये जाते हैं। जो अपर्याप्त दहेज लाती है उनको भांति–भांति के कष्ट सहने पड़ते है और कभी–कभी मृत्यु भी। नारी जो कि हम सबकी मां है। उसको इस दीन स्थिति में ढ़केल दिया गया है। परिवार की बच्ची का जन्म एक निराशा का अवसर होता है। जब कि लड़के का जन्म आनन्द और उत्सव मनानें का होता है। सामाजिक जीवन का रथ एक पहिये से नहीं चल सकता। किन्तु फिर भी न जाने क्यूं दूसरे पहिये के महत्व की पहचान कम क्यों है। बहुत से घरों में महिलाएं एक दास से अच्छा जीवन व्यतीत नहीं करती। उनको लकड़ी चीरने वाले और पानी खींचने वाले से बेहतर स्थान प्राप्त नहीं है।

क्या वह समाज जिसमें महिलाओ को ऐसा समझा जाता है, उन्नति कर सकता है? महिलाए जनसंख्या का लगभग आधा भाग होती है। यदि यह आधा भाग अविकसित रह जाये, उसकी बढ़ोतरी बीच में ही रूक जाये और जिसको जीवन को सम्पूर्ण बनाने वाले अवसरों के उपभोग की कमी हो तो ऐसे समाज से आशा करना अव्यावहारिक है। कि वह अपनी पूर्ण क्षमताओं का विकास कर सकेगा। अविकसित व्यक्तियों से कोई देश महान नहीं बनता।

वर्तमान में गाँधीवाद की सार्थकता

महात्मा गाँधी के विचार, दर्शन और सन्देश वर्तमान के लिए बहुत सार्थक हैं। हमें कहना चाहिए कि वे ही तो एक धनात्मक तत्व है जो कि आधुनिक सभ्यता को सर्वनाश से बचा सकते हैं। स्थायी मान्यताएँ जैसे स्व से पूर्व सेवा, संचय से पूर्व त्याग और दूसरों के लिए चिन्ता, बहुत तेजी से समाप्त होती जा रही है और उनका स्थान स्वार्थपरता, लालच, अवसरवाद, धोखा, चालाकी और झूठ के द्वारा लिया जा रहा है। इन सबमें द्वन्दों और संघर्षो को जन्म दिया है और सहिष्णुता तथा मानव प्रेम के उच्च आदर्श कमजोर पड़ते जा रहे हैं। इस भयावह तस्वीर को पूर्ण करने के लिए शस्त्रीकरण के लिए अनन्त होड़ हुई है। युद्ध के विनाशकारी शास्त्र मानवजाति के अस्तित्व के लिए खतरा बने हुए है। बड़े पैमाने पर विनाश की नई और नई तकनीकियों का विकास किया जा रहा है कानून की सभी प्रणालियों, करारों, संधियों एवं गठबंधनों को मानवीय मेल–जोल और शान्ति स्थापित करने में सफलता नहीं मिली है।

इस प्रकार के वातावरण में गाँधीवाद ही एक आशा की किरण प्रस्तुत करता है। गाँधी जी के मूल्य एवं सिद्धान्त, आदर्श और उपदेश मानवता को आंतरिक, वाह्य अमर शान्ति के मंजिल तक पहुँचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं। सत्य के साथ गाँधी जी के प्रयोगों के उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदैव विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गाँधी जी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे। उनका ईश्वर में पूरा विश्वास था। जिसका वर्णन उन्होनें इस प्रकार किया कि ईश्वर एक अदृश्य शक्ति है जिसका अस्तित्व है। ईश्वर में विश्वास और सत्य का अनुसरण मानवता को सर्वनाश से बचा सकते हैं।

ईश्वर और सत्य से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध गाँधी जी का अहिंसा में विश्वास है। वास्तव में अहिंसा गाँधी दर्शन का आधार स्तम्भ है। अहिंसा का सत्य से बहुत गहरा सम्बन्ध है। हिंसा असत्य है। क्योंकि यह जीवन की एकता के विनाशिनी है और हिंसा का रास्ता बड़े खतरों से भरा हुआ है। शांति दुनिया में तब स्थापित की जा सकती है जब हम अहिंसा का अनुसरण करें। गॉधी जी अहिंसक योद्धा थे। वे स्वयं दुःख एवं बलिदान झेलकर विरोधी के विरूद्ध संघर्ष करते थे। उनका लक्ष्य विरोधी के हृदय परिवर्तन का होता था।

गति अभ्यास – 11

भारत मे दहेज प्रथा

दहेज प्रथा भारत में बहुत बड़ी सामाजिक बुराइयों में से एक है। आये दिन दहेज के कारण मृत्यु के समाचार सुनने को मिलते हैं। इस दहेज के राक्षस द्वारा माता पिताओं की बहुत सी बेटियाँ उनसे छीन ली गईं हैं। हमारे समाज में प्रचलित भ्रष्टाचार के कारणों में से अधिकतर दहेज का कारण हैं। लोग गैर कानूनी रूप से धन संचय करते हैं। क्योंकि उन्हें अपनी पुत्रियों की शादी में दहेज पर भारी खर्च वहन करना पडता है। यह बुराई समाज को खोखला कर रही है और वास्वविक प्रगति अवरूद्ध हो गई है।

दहेज प्रथा वर्तमान भारतीय समाज की ही प्रथा नहीं है। यह हमें हमारे भूतकाल में विरासत में मिली है। हमारी पुराण कथाओं में माता–पिता द्वारा अपनी पुत्रियों को अच्छा दहेज दिये जाने का उल्लेख है। यह प्रथा किसी न किसी रूप में विदेशों में भी प्रचलित थी। सेल्यूकस निकेटर ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपनी पुत्री के विवाह में काफी आभूषण, हाथी और अन्य सामान दिया था। दूसरे देशों में भी यह प्रथा है कि माता–पिता नव–विवाहित जोड़े को उपहार और भेंट देते हैं। मातृ प्रधान प्राचीन समाजों के अतिरिक्त लगभग सभी समाजों में यह प्रथा प्रचलित है।

वास्तव में देखा जाये तो प्रथा में कोई खराबी नहीं है। यदि इसको सीमा के अन्तर्गत रखा जाये तो यह स्वस्थ रिवाज है। नकदी या उपहार के रूप में नव–विवाहित दम्पति को जो कुछ दिया जाता है। उससे वे आसानी से अपना जीवन प्रारम्भ कर सकते हैं किन्तु समस्त बोझ लड़की के माता–पिता ही क्यों उठाएँ यह प्रथा बुराई इसलिये बन गई है कि यह सीमा पार कर गई है जबकि पहले दहेज प्रेम और स्नेह का प्रतीक था। अब तो यह व्यापार या सौदेबाजी हो गई हैं। सभी भावनात्मक पहलुओं को समाप्त कर इसने निन्दनीय भौतिकवादी रूप ग्रहण कर लिया है। घृणास्पद बुराई के द्वारा भारतीय समाज के भवन को ही खतरा पैदा हो गया है।

भारतीय समाज में इस प्रथा के प्रचलन का पहला कारण महिलाओं की पुरूाों पर आर्थिक निर्भरता है। अधिकतर पत्नी अपनी जीविका के लिए पति पर पूर्णरूपेण निर्भर रहती है। और पति इसकी कीमत अपनी पत्नी के माता–पिताओं से माँगता है। दूसरे, महिलाओं को समाज में निम्न स्तर प्रदान किया जाता है। उनको वस्तु समझा जाता है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में कौमार्य पवित्रता पर बहूत बल दिया जाता है। भारतीय माता–पिता को अपनी पुत्री का विवाह एक विशेष समय पर किसी उपयुक्त लड़के के साथ करना होता है। चाहे कितना ही मूल्य देना या त्याग करना पड़े।

गति अभ्यास – 12

विश्व–शान्ति की समस्या

आजकल विश्व एक गम्भीर संकट से गुजर रहा है। युद्ध का खतरा डिमोक्लीज की तलवार की तरह मानव जाति के सिर पर लटक रहा है। मानव जाति ने बडे कष्ट और दुःख, कठिन परीक्षाओं का सामना किया है। वह शान्ति के पीछे भागती रही है, जोकि इसके पकड़ में नहीं आती। शान्ति बहुत महान चीज है जिसको मानवता चाहती है, क्योंकि बिना इसके मुक्ति नहीं। पृथ्वी माता की छाती पर युग–युगों से जो असंख्य युद्ध लड़े गये हैं, उन्होने मानव जाति को विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरित किया है जिससे कि उसका यहाँ सुखमय वास हो सके। यह खोज इतनी तीव्र कभी नहीं थी जितनी की अब शान्ति की समस्या कभी इतनी वास्तविक नहीं थी जितनी कि यह अब है क्योंकि युद्ध के विनाशकारी शास्त्र विशेषकर नाभिकीय शास्त्रों के आविष्कार एवं भण्डारण इस पृथ्वी पर मानव जाति के अस्तित्व के लिए एक वास्तविक खतरा बने हुए हैं।

जैसा कि हम पहले कह चुके है, विश्व शान्ति की समस्या हमारे युग के लिए नयी नहीं है। यह तो यहाँ हमेशा रही है। और राजनीतिज्ञ एवं विद्वान निरन्तर इसके समाधान के लिए प्रयास करतें रहे हैं प्राचीन काल में हमारे ऋषि महात्माओं ने हमको अपने अन्दर वसुदैव कुटुम्बकम के आदर्श को हृदय में उतारने की शिक्षा दी क्योंकि इस दृष्टिकोण को अपनाकर ही हम उस स्वार्थ और लालच का त्याग कर सकते हैं जिनकी वजह से मुख्यतः युद्ध होते हैं। बहुत से पाश्चात्य दार्शनिक ने विश्व राज्य या विश्व सरकार की स्थापना की आवश्यकता पर जोर दिया है। उनकी दृष्टि में विश्व राज्य या विश्व सरकार मानव जाति की विभिन्न इकाइयों को, जिनको राष्ट्र कहा जाता है एक दूसरे का आदर करने हेतु अनुशासित करेगी । यह सबको न्याय प्रदान करने हेतु कार्य करेगी। यूरोपीय इतिहास में रा. जनीतिज्ञों के द्वारा कई बार कुछ इस प्रकार की संस्था की स्थापना की कोशिशें की गई जो कि कॉमन मंच बन सके जहाँ पर विभिन्न देश एक–दुसरे के खिलाफ शिकायतें ले जा सकें और बातचीत, मध्यस्थता और पंच फैसलें के द्वारा समाधान पा सकें। 1899 एवं 1907 में आयोजित हेग सम्मेलन स्थायी आधार पर शान्ति स्थापित करने की दिशा में प्रयास थे।

1919 का पेरिस समझौता और इसका शिशु लीग ऑफ नेशंस मानव जाति को युद्ध के विनाश से बचाने के कूटनीतिक प्रयत्न थे। लीग ऑफ नेशंस की स्थापना से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध तक।

गति अभ्यास – 13

आरक्षण का प्रश्न

इस प्रश्न पर दो राय नहीं है कि पिछड़ें हुए, गरीब और अधिकार से वंचित लोगों कि दशा सुधारने के लिए सभी सम्भव प्रयास किये जाने चाहिए किंतु ऐसा कुछ नहीं किया जाना चाहिए जिससे कार्य कुशलता, सामाजिक न्याय और व्यापक राष्ट्रीय हित प्रभावित हो। केवल जाति के आधार पर वर्तमान आरक्षण नीति से सामाजिक न्याय कि मांग दूर से भी पूरी नहीं होगी क्योंकि तथाकथित पिछड़ें में ऐसे कितने ही लोग जो कि तथाकथित अगड़ों से कहीं अधिक समृद्व एवं प्रभावशाली हैं। ऐसी दशा में उन समृद्व और प्रभावशाली पिछड़े लोगों के पक्ष में और गरीब अगड़ों के विरूद्व भेदभाव करना कहाँ का न्याय है? इसके लिए आरक्षण कि नीति और कई अन्य खतरों से भरी हुई है। आरक्षण नीति से उन लोगों में, जिनके लिए पद आरक्षित कर दिये जाते हैं, प्रतियोगिता कि भावना समाप्त हो जायेगी। इस स्थिति के तहत तृतीय स्तर के लोगों का चुनाव होगा ओर जो वास्तव में ही प्रतिभाशाली और परिश्रमी युवक है वे हटा दिये जायेंगे। राष्ट्र को जो अपने कार्यों का प्रबन्ध करने के लिए सर्वोतम प्रतिभा कि आवश्यकता है और यह तभी उपलब्ध हो सकती है जब नवयुवकों को प्रतियोगिता कि कठिन अग्नि परीक्षा में गुजरना पडें। चयन प्रकिया में पूर्ण ताकत लगा सके। इस प्रकार चयनित कर्मचारी विश्वास उत्पन्न करेंगे और प्रतियोगियों में एक दूसरें के प्रति ह्रदय में जलन नहीं होगी । जिस सेवा में भी उनको लगाया जायेगा, उसमें वे पूरी मुस्तैदी से कार्य करेंगे।

आरक्षण कि इस सुविधा से लाभान्वित लोगों प्रतियोगिता करने कि इच्छा ही कुंठित नहीं हो जायेगी अपितु इससे सामान्य प्रत्याशियों में निराशा घर कर लेगी, जब उनको पता लगेगा कि कठिन परिश्रम का कोई परिणाम नहीं निकलने वाला। समय के बीतते – बीतते इन दोनो ही वर्गों में प्रतियोगिता करने कि भावना क्षीण हो जायेगी। यह चरण राज्य व्यवस्था के लिए अत्यन्त त्रासदीपूर्ण होगा। देश के गुलाम होने से भी अधिक त्रासदीपूर्ण राष्ट्र तब ही आगे बढ़ सकता है जब श्रेष्ठता कि कद्र होती हो। केवल जाति पर आधारित आरक्षण से न केवल देश का विभाजन हो जायेगा अपितु इससे निकृष्ट प्रकार के सामाजिक अन्याय को प्रोत्साहन मिलेगा । यह कौन सा न्याय है कि तथाकथित पिछड़ी जाति के करोड़पति के पुत्र का 40 प्रतिशत अंको पर चयन कर लिया जाये ओर एक अनारक्षित श्रेणी के बन्धक मजदुर के पुत्र को , जिसने 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हों।

गति अभ्यास – 14

भारत में नियोजन और आम जनता

शताब्दियों के विदेशी शासन ने भारत को दरिद्र बना दिया है। विदेशी शासन के दौरान कुछ लोग ऐसे रहे होंगे जो अच्छा जीवन बिताते थे किन्तु आम जनता कि दशा दुःखपुर्ण एवं दयनीय थी। विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त हुई और फिर सरकार के समक्ष देश की आम जनता की दशा सुधारने का अनिवार्य कार्य था। रूस से सबक सीखकर हमने 1951 से विकल्प के लिए नियोजन प्रारम्भ कर दिया और पंच वर्षीय योजनाओं का निर्माण किया। हमने लगभग चार दशाब्दी से अधिक का नियोजन पुरा कर लिया कार्यान्वयन प्रारम्भ करने जा रहे है।

नियोजन की इस अवधि में हमने जीवन के लगभग प्रत्येक क्षैत्र में अच्छी प्रगति की है ओर 1887 का भारत 1950 के भारत से बहुत भिन्न प्रतीत होता है । हमने कृषि के क्षैत्र में बहुत अच्छी प्रगति कि है । हरित क्रान्ति हो चुकि है और हम खाद्यान्न के मामले में आत्म – निर्भर बन चुके हैं। कृषि के अतिरिक्त जीवन के अन्य क्षैत्रों को भी नियोजन से लाभ पहुँचा। शैक्षिक सुविधाओं का काफी विस्तार हुआ है। स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों कि संख्या बढ़ गयी है। साक्षरता का प्रतिशत भी काफी बढ़ा है। चिकित्सीय सुविधाओं भारत के दुरस्थ क्षेत्रों में पहुँच गयी है। सैकड़ों हॉस्पीटल और डिस्पेंसरी स्थापित कि गयी है और औषधियों का भारत मे ही निर्माण हो रहा है। भारत में विज्ञान भी प्रगति के प्रथ पर है। सैकडों प्रयोगशालाएँ और अनुसन्धान केन्द्र विभिन्न प्रकार के विषयों पर कार्य करने के लिए स्थापित किये गये हैं। भारत में औद्यौगीकरण तेजी से बढ रहा है। भारत उद्यौगों द्वारा निर्मित बहुत सी चीजों के बारे में आत्म – निर्भर होता जा रहा है । नाभिकिय एवं अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षैत्र में हमारी प्रगति ने विश्व में हमारी प्रतिष्ठा को ही नही बढ़ाया है बल्कि हमारे लिए विकास और आर्थिक प्रगति के रास्ते खोल दिये हैं।

बहुत ही बहु–उद्देश्यीय परियोजनाओं की स्थापना भारत के लिए वरदान साबित हुई हैं। सम्वादवाहन और यातायात के साधनों में क्रान्ति आई है और उन्होंने भारत के जीवन में भी क्रान्ति मचा दी है। इन उपायों के कारण भारत ने अपने को अविकसित कि दशा से निकालकर विकासशील अर्थव्यवस्था में प्रवेश किया है । उसकी सम्पूर्ण राष्ट्रीय आय (जी.एन.पी.) में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है । इन सबके अतिरिक्त सरकार ने ग्रामों में गरीबी दूर करने के लिए कदम उठाये हैं।

गति अभ्यास – 15

प्रेस की स्वतन्त्रता

प्रेस लोकतन्त्र कि एक शक्तिशाली संस्था है। यह लोकतान्त्रिक राजनीतिक व्यवस्था में इतना प्रभाव रखती है कि इसको चतुर्थ रियासत कहा गया है । इसने यू॰ एस॰ ए॰ के प्रेसिडेन्ट के पद से रिचर्ड निक्सन जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को हटाने और अन्याय के शिकार भारत के मुख्यमंत्री को फिर से सत्ता में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अभी हाल ही में प्रेस ने पूर्वी यूरोप मे दुनियां के इस भाग में साम्यवादी अधिनायकवद को समाप्त करने में लोकतान्त्रिक शक्तियों को सहायता प्रदान की है और जो प्रकिया प्रारम्भ हुई है, उससे यह स्पष्ट हो रहा है कि दुनिया के दूसरे हिस्से में भी अधिनायकवादी शासन इसके अन्दर आ जायेंगे। देश का कोई भी कोना मुश्किल से ही ऐसा हो जो इसकी पैनी दृष्टि से अदृश्य रहता हो। यही कारण है कि शक्तिशाली शासक भी इसके महत्व एवं शक्ति को नजर अन्दाज नहीं कर सकते।

पहली भूमिका जो प्रेस लोकतन्त्र में निभाती है, वह यह है कि यह जनता की प्रवक्ता के रूप में कार्य करती है। लोग सरकार की कमियों के विषय में अपनी शिकायतों को प्रेस के माध्यम से व्यक्त करते हैं, दूसरी ओर सरकार को भी प्रेस के माध्यम से राष्ट्र की नब्ज मालूम करना आसान हो जाता है। जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तब चीन के साथ सम्बन्धों के सन्दर्भ में उस समय के रक्षा मन्त्री कृष्णा मेनन की भूमिका को लेकर प्रेस में बड़ा शोर मचा। नतीजा यह हुआ कि जनता की इच्छा का आदर करते हुए प्रधानमंत्री के पास श्री मेनन से मन्त्रिमण्डल से त्याग पत्र मांगने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं था।

दूसरा बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य जो प्रेस लोकतन्त्र में करती है, वह है जनमत निर्माण का। सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों पर टिप्पणियां एवं आलोचनाओं के द्वारा यह वास्तविकता को जनता के समक्ष रखती है। यह महत्वपूर्ण नीतियों के उस गूढ़ अर्थ को, जिसको सामान्य आदमी नहीं समझ पाता, स्पष्ट करती है। इस प्रकार प्रेस की सहायता से सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों के विषय में लोग अपनी राय बनाते हैं। प्रेस सारे विश्व में समाचारों और विचारों को फैलाती है। और लोगों को विश्व में होने वाली घटनाओं के विषय में अद्यतन जानकारी कराती है। इसके अतिरिक्त विश्व के निकट एवं दूर के स्थापनों में व्यक्तियों और घटनाओं के विषय ज्ञान संचय करने में सहायक होती है। प्रेस का सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि यह देश एवं विश्व के लोगों के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की समस्याओं पर राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय परिचर्चा एवं वाद विवाद में भाग लेना आसान बनाती है।

गति अभ्यास – 16

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम

1981 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता का प्रतिशत लगभग 36 प्रतिशत हैं। इसका अर्थ है कि भारत की 64 प्रतिशत जनता अभी भी निरक्षर हैं। महिला साक्षरता की स्थिति ओर अधिक दयनीय है जो कि केवल लगभग 27 प्रतिशत है। जिसका अर्थ हैं कि भारत की कुल महिला जनसंख्या का 73 प्रतिशत भाग निरक्षरता के अंधेरे में भटक रहा हैं। भारत ने अन्य किसी देश की अपेक्षा अधिक समय गुलामी सही हैं। मुख्य कारणों में से एक जनता की अज्ञानता ओर निरक्षरता रही हैं।

निरक्षरता ओर निर्धनता साथ–साथ चलते हैं। ये तथ्य कि कुल मिलाकर सम्पन्नता के सन्दर्भ में भारत का स्थान राष्ट्रों के उन समुदायों में 100 वें स्थान से भी नीचे हैं इसका कारण है व्यापक निरक्षरता है निर्धनता से पिछड़ापन पैदा होता है और उससे रहन–सहन का निम्न स्तर तीन दशाब्दियों से अधिक नियोजन के बावजूद भारतीय जनता निर्धनता, पिछड़ेपन, रहन–सहन व गन्दे वातावरण और बीमारी के घेरे से मुक्त नहीं हुई। इसका कारण भी निरक्षरता है। भारत की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। ओर हमारे सीमित संसाधनों के सन्दर्भ में हमारी निर्धनता का बढ़ जाना अनिवार्य हैं इसका कारण भी व्यापक निरक्षरता है। भारत की सरकार एवं नियोजक बराबर निरक्षरता ओर निर्धनता एवं अन्य संबंध बुराइयों के सम्बन्ध को अनुभव करते हैं। उन्होनें इस देश से निरक्षरता को समाप्त करने के प्रयोग भी किये किन्तु उनके ये प्रयास असफल रहे आखिरकार भूतकाल के अनुभव से उन्होनें सबक सीखा। ओर उन्होनें जब जनता सरकार सत्ता में आई तो विस्तृत नियोजन किया।

फलतः 2 अक्टूबर 1978 को रा ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ किया इस बार जो रणनीति अपनायी गई वह पहले अपनाई रणनीतियों से भिन्न थी ओर इससे सरकार का अधिक संकल्प ओर प्रतिबद्धता प्रकट होती थी। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का क्रियान्वयन करने के लिए विस्तृत संगठनात्मक ढाँचा तैयार किया। केन्द्र में केन्द्रीय प्रौढ़ शिक्षा परिषद् का सृजन किया गया ओर राज्य स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा परिषदों की स्थापना की गई इस के पश्चात् केन्द्रीय राज्य स्तर पर अलग–अलग प्रौढ़ शिक्षा विभाग की स्थापना की गई। अधिकारियों ओर कर्मचारियों का पद सोपान प्रक्रिया ढॉचा अस्तित्व में आया और अप्रेल 1980 से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम आगे बढ़ने लगा है। सरकारी प्रयासों के अतिरिक्त कुछ स्वैच्छिक संस्थाओं ने भी कार्यक्रम को हाथ में लिया।

गति अभ्यास – 17

ग्रामोत्थान–

भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। भारत की तीन चौथाई जनसंख्या गांवों में रहती है। ग्रामीण भारत की शक्ति ऐवं समृद्धि का निर्धारण करता हैं किन्तु दुर्भाग्य से हमारे गाँवों ने शताब्दियों की उपेक्षा सहन की हैं। नतीजा यह है कि हमारे गाँवों की साधारण दशा सन्तोषप्रद नहीं हैं। आजादी के 43 वर्ष बाद भी हम ग्रामीण ओर शरीर जीवन के अन्तर को कम करने में सफल नहीं हुए। गाँवों की जनसंख्या की प्रति व्यक्ति आय शहरी जनसंख्या की प्रति व्यक्ति आय कहीं कम हैं। साढ़े तीन दशाब्दि का नियोजन किन्तु फिर भी उसके फायदे वांछित मात्रा में ग्रामीण गरीब तक नहीं पहुँचे हैं। निःसन्देह हमारे गाँवों द्वारा बहुत प्रगति की गई है किन्तु इतनी नहीं जितनी कि की जा सकती हैं।

बहुत ही महत्वपूर्ण कारणों में से एक कारण ग्रामीण जनता की व्यापक निरक्षरता हैं। तीन चौथाई ग्रामीण लोग अभी भी निरक्षरता ओर अज्ञान के अन्धेरे में लिपटे हुए हैं। इस के कारण उन्हें यह पता नहीं कि उन के चारों ओर क्या हो रहा है। वे कृषि की आधुनिक तकनीकों ओर खेतों की उपज बढ़ाने के नवीनतम तरीकों से लाभ उठाने में अपने को अक्षम पाते हैं। औसत निर्धन ग्रामीण के अज्ञान के कारण विकास के सभी लाभ कुछ सम्पन्न लोगों द्वारा ही हथिया लिए जाते हैं। इस अज्ञान से ग्रस्त एवं निरक्षर जनता के शताब्दियों के अत्याचार ओर शोषण ने उनकी इस इच्छा को ही कुण्ठित कर दिया है के वे आगे बढ़े और दूसरों के बराबर आये। ग्रामीण जनता के कुछ सम्पन्न वर्गों ने उनका शोषण किया है कि उनके लिए अच्छे जीवन के विषय में सोचना भी कठिन हो गया हैं। कमजोर आर्थिक दशा और उसके साथ उन्नति करने की उनकी कुंठिंत इच्छा, यह उनकी पिछड़ेपन से मुक्ति के रास्ते में कठिन बाधा हैं। ग्रामीण निर्धन निडर होकर अपने दावों को लड़ने की हिम्मत नहीं कर सकता। अतः उन्होनें अपने को अपने भाग्य पर छोड़ दिया हैं। गाँव में कार्य करने वाले सरकारी कर्मचारियों की उनके प्रति उपेक्षा पूर्ण प्रवृति ने भी स्थिति को ओर अधिाक खराब कर दिया वे गांव के सम्पन्न ओर प्रभावशाली लोगों के प्रलोभन में आ जाते हैं। गरीबों के लाभ के लिए शुरू की गई अनेकों योजनओं के अंतर्गत आवंटित धन गलत स्थान पर पहुँच जाता है। इस प्रकार गरीबों की दशा को सुधारने के लिए व्यय किये जा चुके हैं किन्तु कोई सन्तोषप्रद प्रगति इस दिशा में नहीं हुई।

गति अभ्यास – 18

भारत में जनसंख्या विस्फोट–

भारत में जनसंख्या भयावह दर से बढ़ रही हैं 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या लगभग 85 करोड़ थी। 1981 में जनसंख्या लगभग 68 करोड़ थी, इस प्रकार एक दशाब्दी में लगभग 25 प्रतिशत की बढोत्तरी हुई। यदि हम इन आंकड़ों की तुलना इससे पूर्व की जनगणनाओं के आंकडों से करे तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि औसतन प्रत्येक दशाब्दी में जनसंख्या लगभग 25 प्रतिशत बढ़ी है। अनेक उपायों को अपनाने के बावजूद हम पर्याप्त रूप से इस प्रतिशत को घटाने में सफल नहीं रहे है। यह है कि हमारे यहां जनसंख्या विस्फोट का खतरा उत्पन्न हो गया है। और हम अति जनसंख्या की ओर बढ़ रहे हैं। अति जनसंख्या वह स्थिति है जिसमें जनसंख्या उपलब्ध साधनों के आगे बढ जाती है। भारत में यह स्थिति बहुत ही निकट भवि य में पहुँच जाएगी। अति जनसंख्या भी बहुत से खतरों से परिपूर्ण है। भूख, बीमारी, दयनीय आवास की दशायें, अकाल, कुपो शण आदि बुराइयां अति जनसंख्या के साथ चलती हैं। भारत की यह बढ़ती हुई जनसंख्या चिन्ता का विषय बन गई है। क्योंकि हम प्रत्येक वर्ष एक करोड़ से अधिक व्यक्ति अपनी पहले से ही बहुत बडी जनसंख्या में जोड़ देते है। यदि जनसंख्या वर्तमरन भयावाह दर बढती रही तो हमारे सभी विकास के प्रयास निरर्थक हो जायेंगे, निर्धनों को कोई राहत नहीं पहुँचा सकेंगें और जीवन के रहन सहन के स्तर में कोई राहत नहीं पहुँचा सकेंगे और जीवन के रहन–सहन के स्तर में कोई पर्याप्त प्रगति नहीं हो पायेगी।

भारत की बृहत जनसंख्या के बहुत से कारण हैं। प्रथम, भारत एक गर्म देश है, जहाँ पर लड़कियाँ जल्दी उम्र में ही परिपक्वता को प्राप्त कर लेती हैं और दम्पतियों में जनन अवधि अन्य देशों क अपेक्षा यहाँ अधिक है। द्वितीय, बड़े परिवार की स्थिति के लिए बाल विवाह की प्रथा ने काफी योगदान किया है। निर्धनता भी भारत की बड़ी जनसंख्या के लिए एक मुख्य कारण है। गरीब दम्पत्तियों के जीवनों में सेक्स के अतिरिक्त मनोरंजन का अन्य कोई साधन नहीं है। इसका नतीजा होता है परिवार में बच्चों की अधिक संख्या होना। इसके अतिरिक्त, हमारी अज्ञानी जनता बड़े परिवारों को दायित्व के स्थान पर सम्पत्ति समझती है क्योंकि परिवार में अतिरिक्त बच्चे होने का अर्थ है परिवार की आय में वृद्धि होना। पिछले दशकों में गिरती हुई मृत्यु दर ने भी जनसंख्या बढ़ोत्तरी में योगदान किया है। बड़े पैमाने पर विदेशों से लोगों का भारत आना और यहाँ आकर बस जाना, यह भी जनसंख्या बढ़ने का कारण रहा है।

गति अभ्यास – 19

भारत में दूरदर्शन का सामाजिक महत्व–

दूरदर्शन विज्ञान के अत्यन्त मनमोहक आवि कारों मे से एक है। वायरलैस और रेडियो को विज्ञान के महान चमत्कारों में गिना जाता है। हजारो मील पार से आवाज सुनकर लोगों मे सनसनी पैदा हो जाती थी और वे यह आश्चर्य करते थे कि ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है। किन्तु जब दूरदर्शन के पर्दे पर सैकड़ों मील दूर से मनु य की आवाज के साथ–साथ उसकी तस्वीर भी दिखायी पड़ने लगी, हमारे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा और यह निसःसन्देह ही सिद्ध हो गया कि मनुष्य की आवि कार करने की शक्ति पर कोई सीमा नहीं लगायी जा सकती।

दूरदर्शन ने पूरे विश्व में जीवन में क्रान्ति ला दी है। उन्नत देशों में तो लगभग प्रत्येक घर में टेलीविजन सेट है। वहां पर ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीविजन देखने की सुविधा प्रदान कर दी गई है। अधिकतर लोगों के लिए टेलीविजन उनके जीवन का अंग बन गया है। भारत में दूरदर्शन की स्थापना 15 सितम्बर 1959 को हुई। किन्तु अधिकतर जनता तक इसको पहुँचने तक बहुत से साल लग गए। छठीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक भारत में लगभग 180 दूरदर्शन केन्द्र स्थापित किये जा चुके थे। इससे भारत सरकार की कुशलता एवं सक्षमता संदिग्ध होती है कि इसने भारतीय जनता को इतनी लम्बी अवधि तक टेलीविजन देखने की सुविधा से वंचित रखा है। इस क्षेत्र में पाकिस्तान की उपलब्धी हमसे बेहतर रही है। अब लगभग 300 केन्द्रों के स्थापित हो जाने पर भी भारत की जनता का एक बहुत बड़ा भाग अब भी उस आनन्द और मनोरंजन और सूचना से वंचित है। जो कि विज्ञान के ऐसे चमत्कारिक आवि कार के कारण हमें उपलब्ध है। हमारी सरकार को कम से कम समय में दूरदर्शन प्रत्येक घर में पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। भारत दूरदर्शन का बड़ा सामाजिक महत्व है। वास्तव में यदि हम भारत को एक आधुनिक समाज बनाना चाहते है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति को तीव्र करना चाहते है तो हम को दूरदर्शन स्टेशनों का जाल बिछाना होगा और शीघ्र समस्त जनता तक टेलीविजन पहुँचाना होगा। टेलीविजन मनोरंजन का अच्छा साधन है। यह जनसंचार के बहुत ही प्रभावी साधनों में से है। सरकार टेलीविजन के माध्यम से जनसंचार के अन्य माध्यमों की अपेक्षा अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को अधिक से अधिक जनता तक अधिक प्रभावी रूप में पहुँचा सकती है।

वर्तमान में गाँधीवाद की सार्थकता–

महात्मा गाँधी के विचार, दर्शन और संदेश वर्तमन के लिए बहुत सार्थक है। हमें कहना चाहिए कि वे ही तो एक धनात्मक तत्व हैं जो कि आधुनिक सभ्यता को सर्वनाश से बचा सकते हैं। स्थायी मान्यताएँ जैसे स्व से पूर्व सेवा, संचय से पूर्व त्याग और दूसरों के लिए चिन्ता, बहुत तेजी से समाप्त होती जा रही है और उनका स्थान स्वार्थपरता, लालच, अवसरवाद, धोखा, चालाकी और झूठ के द्वारा लिया जा रहा है। इन सबने द्वन्दों और संघर्षों को जन्म दिया है और सहिष्णुता तथा मानव प्रेम के उच्च आदर्श कमजोर पड़ते जा रहे हैं। इस भयावह तस्वीर को पूर्ण करने के लिए शस्त्रीकरण के लिए अन्नत होड़ हुई हैं। युद्ध के विनाशकारी शास्त्र मानव जाति के अस्तित्व के लिए ही खतरा बने हुए हैं। बड़े पैमाने पर विनाश की नई और नई तकनीकियों का विकास किया जा रहा है। कानून की सभी प्रणालियों, करारों, सन्धियों एवं गठबन्धनों को मानवीय मेल–जोल और शाान्ति स्थापित करने में सफलता नहीं मिली हैं।

इस प्रकार के वातावरण में गांधीवाद ही एक आशा की किरण प्रस्तुत करता है। गांधीजी के मूल्य एवं सिद्धान्त, आदर्श ओर उपदेश मानवता को आन्तरिक वाह्य अमर शान्ति की मंजिल तक पहुँचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं। सत्य के साथ गांधीजी के प्रयोगों के उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदैव विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गांधीजी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे। उनका ईश्वर में पूरा विश्वास था जिसका वर्णन उन्होनें इस प्रकार किया कि ईश्वर एक अदृश्य शक्ति है जिसका अस्तित्व है। ईश्वर में विश्वास और सत्य का अनुसरण मानवता को सर्वनाश से बचा सकता है।

ईश्वर और सत्य से घनिष्ठ रूप से सम्बन्द्ध गांधीजी का अहिंसा में विश्वास है। वास्तव में अहिंसा गांधी दर्शन का आधार स्तम्भ है। अहिंसा का सत्य से बहुत गहरा सम्बन्ध है। हिंसा असत्य है क्योंकि यह जीवन की एकता की विनाशिनी है और हिंसा का रास्ता बड़े खतरों से भरा हुआ है। शान्ति दुनिया में तभी स्थापित की जा सकती है जब हम अहिंसा का अनुसरण करें। गांधीजी अहिंसक योद्धा थे। वे स्वयं दुख एवं बलिदान झेलकर विरोधी के विरूद्ध संघर्ष करते थे। उनका लक्ष्य विरोधी के हृदय परिवर्तन का होता था।

टंकण उच्च गति अभ्यास

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **टंकण उच्च गति पर ।**

गति अभ्यास 1

दलाई लामा तिब्बत की पुरातन परम्परा के 14वें धर्म गुरु हैं. दलाई लामा एक उपाधि है, जिसका अर्थ है–विद्वता का सागरत्र पहली बार यह उपाधि 16वीं शताब्दी के अन्त में सोनाम ग्यात्सों को मंगोलिया के राजा अल्तन खाँ अईम ने उनके सम्मान में दी थी.

कौन जानता था कि पूर्वी तिब्बत के आप्दी प्रान्त के एक गरीब किसान परिवार का यह बालक दुनिया के बौद्ध धर्मावलम्बियों द्वारा 'जीवित बुद्ध' के रूप में पूजा जाएगा.

दलाई लामा का मूल नाम तेनजिन ग्यात्सों है. दो वर्ष की उम्रमें ही तिब्बती उन्हें पिछले दलाई लामा के अवतार के रूप में मानने लगे थे. आज भी 60 लाख तिब्बती उन्हें दया का देवता अवलोकितेश्व (चेनरेजी) का अवतर मानते हैं, किन्तु अत्यनत विनम्र और संकोची दलाई लामा स्वयं को एक बौद्ध भिक्षु से अधिक कुछ नहीं मानते.

माओ–त्से–तुंग की सेना ने तिब्बत पर कब्जा करने के लिए जब 1950 में आक्रमण किया, तब 15 वर्ष की अवस्था में दलाई लामा को पेइचिंग जाकर माओ से समझौता–वार्ता करनी पड़ी थी. चीनी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सन 1959 में तिब्बत का स्वतन्त्र आन्दोलन विफल हो गया था, तब विवश होकर दलाई लामा को भारत में श्शरण लेनी पड़ी. तब से वे अपने एक लाख तिब्बती श्शरणार्थियों के साथ हिमाचल प्रदेश में 'धर्मशाला' नामक क्षेत्र में रह रहे हैं. 'नन्हें ल्हासा' (ल्हासा तिब्बत की राजधानी है) के रूप में धर्मशाला आज दलाई लामा की निर्वासित सरकार का मुख्यालय बन चुका है.

महात्मा गांधी, दलाई लामा के प्ररणा–स्रोत हैं. श्शान्ति और अहिंसा पर उनका अटूट विश्वास है. दलाई लामा कहते हैं–''मुझे महात्मा गांधी के अहिंसा के रास्ते पर पूरा भरोसा है. मुझे हमेशा इसी से प्रेरणा मिली है और मुझे आशा है कि तिब्बत का सवाल हल होकर रहेगा. अहिंसा के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.''

इसमें कोई संदेह नहीं कि नोबेल श्शान्ति पुरस्कार पाने के बाद एक श्शान्तिवादी और अहिंसावादी नेता के रूप में दलाई लामा की अन्तर्राष्ट्रीय छवि निर्मित हुई है. इस तथ्य का दलाई लामा स्वयं स्वीकार करते हुए कहते हैं, भिक्षु होने के नाते मुझे पुरस्कारों से फर्क नहीं पड़ना चाहिए.

मेधावी और प्रतिभा –सम्पन्न छात्रों के मन में विदेशी विश्वविद्यालयों और संस्थानों में उच्च शिक्षा पानें की महत्वकांक्षा का होना बहुत स्वाभाविक है. पर्याप्त जानकारी और उचित दिशा– निर्देश कें अभाव में उन्हें विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने की बात आकाश से तारे तोड़ लाने जैसी लगती है, किन्तु यह सब सच नहीं है. प्रतिभाशाली और होनहार छात्र जो अधिक नहीं हैं और संस्थानों में छात्रवृत्ति की सम्भावनाओं की जानकारी प्राप्त कर अपने भविष्य के लिए आगे का मार्ग निश्चित कर सकते हैं. आइए, इस विषय में आपकों कुछ उपयोगी जानकारी दें, ताकि आप भी विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अपना स्वप्न साकार कर सकें.

भारत की शिक्षा प्रणाली बहुत हद तक इंगलैण्ड की शिक्षा प्रणाली के अनुरूप है. इसके अलावा वहाँ बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लाग बसे हुए हैं. इसलिए भारतीय लोग अध्ययन के लिए प्रायः इंगलैण्ड ही जाना अधिक पसन्द करते हैं और अक्सर यह होता है कि अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद अधिकाशं लोग वहीं नौकरी भी कर लेते हैं. श्शोध और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाने वाले भारतीयों के साथ भी यहीं होता हैं. श्शायद यही कारण हे कि इंगलैण्ड में कार्यरत इंजीनियरों, डॉक्टरों तथा अन्य प्रशिक्षित मानव संसाधनों में बड़ी संख्या भारतीय मूल के लोगों की ही है. कुछ ऐसे भी होते हैं, जो वास्तव में स्वदेशी वापस आना तो चाहते हैं, लेकिन इंगलैण्ड में उपलब्ध सुविध ाओं, सामाजिक परिवेश एवं अपने बच्चों की ब्रिटिश जिन्दगी के सम्बन्धों को एक झटकें में समाप्त कर सकने का साहस नहीं रखते. इसलिए चाहे–अनचाहे अपनी मातृभूमि से दूर हो जाते हैं.

इंगलैण्ड में विदेशी छात्रों ,विशेषकर भारतीये छात्रों के शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था के बारे में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ हैं. जैसे कुछ करने की व्यवस्था के बारे में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ हैं. जैसे कुछ लोगो का कहना हे कि इंगलैण्ड में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी भाषा में दक्षता आवश्यक है. ऐसे लोगों के मत में ब्रिटेन की अंग्रेजी सबसे कठिन होती है और वहाँ शिक्षा के साथ अंग्रेजी भाषा का स्तर भी महत्वपूर्ण है. भारत में कॉन्चेन्ट या अन्य पब्लिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए इससे कोई बाधा नहीं पड़ती, किन्तु हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों को वहाँ अवश्य ही अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है .

इंगलैण्ड में उच्च शिक्षा के लिए कुल 47 विश्वविधालय एवं संस्थान हैं, जिनमें से कई तो ऐसें हैं जो विदेशी छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान कर उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं. इसके अलावा राष्ट्रकुल देशों और ब्रिटिश काउन्सिल की ओर से भी वहाँ छात्रवृत्तियाँ का प्रबन्ध हैं. यहाँ के विश्वविद्यालयों में विशेषकर स्नातकोत्तर स्तर के पाठयक्रमों में प्रवेश के लिए ब्रिटेन स्थित भारतीय दूतावास के शिक्षा अधिकारी के माध्यम से आवेदन –पत्र स्वीकार किए जाते हैं.

कैलेण्डर का आरम्भ करने का श्रेय भारत को जाता है , क्योंकि भारत में सर्वप्रथम 5000 ईसा पूर्व कैलेण्डर का उल्लेख मिलता हैं. बेबीलॉन के कैलेण्डर का उल्लेख 4700 ईसा पूर्व में मिलता है ,तथा बेबीलॉन –वासियों ने ही सर्वप्रथम अंधविश्वास को छोड़कर खगोलविज्ञान के आधार पर महीने बनाए.

कैलेण्डर का अर्थ है– दिनों का विभाजन . यह श्शब्द यूनानी 'कैलेण्ड' है जिसका अर्थ है रोमन माह का प्रथम दिन है, 'र' जोड़कर बनाया गया है.

रोम में माह के प्रथम दिन ही उस माह की सभी महत्वपूर्ण तिथियों की घोषणा होती थी वास्तव में कैलेण्डर किसी देश की देन नहीं है , इसमें समय –समय पर विभिन्न देशों ने अपना –अपना योगदान दिया हैं.

सर्वप्रथम मिस्र ने कैलेण्डर की रचना की. विश्वास किया जाता है कि इस कैलेण्डर में 12 मास होते थे. सभी मासों में दिनों की संख्या तीस होती थी. प्रत्येक माह दस दस दिनो के सप्ताहों में विभक्त था. हजारों वर्ष पूर्व सम्भवतः मिस्र के लोग 'दशमलव प्रणाली' का महत्व समझ गए थें. दिनों को संख्या के आधार पर जाना जाता था. वर्ष के अन्त में जिस दिन , दिन तथा रात बराबर होते थे, परन्तु इनकी गणना वर्ष में नहीं की जाती थी.

मिस्र की भाँति यूनान तथा चीन ने भी अपने–अपने कैलेण डर बनाए थे, परन्तु विश्व में सर्वाधिक प्रचलित कैलेण्डर की रचना का श्रेय रोम के श्शासक 'जूलियस सीजर' को हैं. उन्होंने मिस्री खगोलशास्त्री 'सोसीजेन्स' के सहयोग से मिस्री कैलेण्डर में कतिपय संशोधन करके विश्व को एक नवीन कैलेण डर प्रदान किया. उन्होने मिस्री कैलेण्डर के दिनों को आज के विषय संख्या वाले महीनों में बाँट दिया. क्विंतलस माह का नाम स्वंय के नाम को आधार मानकर, बदनकर जुलाई कर दिया. सामान्य वर्ष में फरवरी में 29 दिन तथा अधिवर्ष में फरवरी में30 दिन रखें. नववर्ष का आरम्भ एक मार्च से न मानकर एक जनवरी से मानने का निश्चय किया . यह संशोंधन 46 ईसा पूर्व में किया गया.

जूलियस सीजर ने सौर वर्ष 365.25 दिनों का माना था अतः उन्होने प्रत्येक चौथें वर्ष को अधिवर्ष मानने का निश्चय किया था. जूलियस सीजर ने मिस्री सप्ताह में कोई परिवर्तन नहीं किया था.

सप्ताह में परिवर्तन सन 321 ई. में रोगन सम्राट 'कॉन्स्स्टेटाइन' न किया . उन्होने राजाज्ञा द्वारा सप्ताह सात दिनों का कर दिया जूलियन कैलेण्डर में मुख्य रूप से दो बार संशोधन किए गए. पहला संशोधन ईसा से आठ वर्ष सम्राट अगस्त सीजर द्वारा किया गया. वे आठवें महीने का नाम बदलकर अपने नाम के आधार पर अगस्त रखना चाहते थें; अतः उन्होने रोमन सीनेट के अध्यादेश द्वारा 'सेक्सतिलस' का नाम बदलकर अगस्त रख दिया . जूलियस सीजर के जूलाई माह में 31 दिन होने के कारण सेक्सतिलस माह में 30 दिन होने पर भी अगस्त माह में 31 दिन माने गए. यह एक दिन फरवरी माह से लिया गया. तब से सामान्य वर्ष में फरवरी में 28 दिन तथा अधिवर्ष में 29 दिन होने लगें.

वोटिंग मशीन विशुद्ध रूप से कम्प्यूटर विज्ञान के सिद्धान्त पर आधारित, कम्प्यूटर जैसी हएक मशीन है. इस मशीन के उपयोग के पक्ष में तरह–तरह की दलीलें दी जाती हैं. मुख्य दलीलें हैं– इस मशीन के उपयोग से सरकारी काम–काज में आसानी हो जाती है , सुदूरवर्ती गाँवों मे मतदाता भी बिना किसी बाहरी दबाव के अपनी इच्छा से स्वतंत्रतापूर्वक अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकते हैं, यह मशीन बहुत बड़ी संख्या में मतपत्रों के छापनें और उनकों सुरिक्षत रखने की समस्या का हल है, इस नाम के आगे चिह्न अथवा एक से अधिक उम्मीदवारों के नाम के आगे चिह अंकित नहीं हो सकते ,इससे कागज और स्याही की बचत होगी, मतदाता की अँगुली पर लगाई जाने वाली स्याही सम्बन्धों गड़बड़ी नहीं होगी, जाली मतपत्रों का प्रयोग असम्भव होगा, चुनाव प्रक्रिया सरल हो जाएगी, मतदान केन्द्रों पर होने वाली हेराफेरी रोकी जा सकती है, मतदान केन्द्रों तथा मतपेटियों पर होने वाले कब्जे से मुक्ति मिल जाएगी.

वाटिंग मशीन की नियंत्रण इकाई चुनाव अधिकारी के पास होती है. मतदान इकाई को चुनाव कक्ष के अन्दर रखा जाता है. स्मृति भण्डार (मेमोरी) इसी मतदान इकाई में होता है, जिसमें प्रोग्रामर उम्मीदवारों से सम्बन्धित विवरण भर देता है . मशीन पर उम्मीदवार और चुनाव चिह के सामने एक पुश–बटन लगा होता है. बटन को दबाते ही मशीन का लैम्प प्रकाश देने लगता है, जो मत पड़ने का सूचक है. मशीन को अपनी पूर्व स्थिति में लाने तक यह बटन पुनः नहीं दब सकता .इस तरह इसका कोई दुरूपयोग नहीं कर सकता . मतदान इकाई के लैम्प जलने की सूचना नियंत्रण इकाई में एक अलार्म द्वारा चुनाव अधिकारी को मिल जाती है, परन्तु इससे यह आभास नहीं होता है कि मत किसके पक्ष में पड़ा है किसी मतदाता द्वारा दो बटन एक साथ दबाने से कोई मत रिकॉर्ड नहीं होता है. इस प्रकार एक बार में एक ही मत रिकॉर्ड होता है. मतदान की समाप्ति पर मशीन सीसबन्द कर गणना केन्द्रों पर भेज दी जाती हैं. गणना केन्द्रों में मात्र बटन दबाने से अलग–अलग उम्मीदवारों के पक्ष में पड़े मत और कुल पड़े मतों की संख्या ज्ञात की जा सकती है.

अब वोटिंग मशीन द्वारा चुनावों में बेईमानी और घपलेबाजी का उदगम हो गया है. प्रोग्रामर अथवा कोई भी जानकार व्यक्ति अवांछित कार्यक्रम (प्रोग्राम) वोटिंग मशीन में फीड कर सकता है. इसमें चोरी से इस प्रकार के निर्देश भरे जा सकते हैं कि सभी वोट एक ही उम्मीदवार को अथवा केवल एक विशिष्ट राजनीतिक दल के उम्मीदवारों को मिले अथवा हर दूसरा या तीसरा वोट विशेष पार्टी अथवा विशेष उम्मीदवार को मिलें आदि. यह प्रोग्राम फीड करने वाले की योग्यता पर निर्भर करती है. चुनाव कर्मियों की मिली –भगत ये यह कार्य किया जा सकता है.

''सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है. सेवा ही उसके जीवन का आधार है. '' उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के इस कथन का अभिप्राय युवावस्था के आगमन पर समझ में आने लगता है , जब व्यक्ति घर गृहस्थी के जंजाल में उलझने लग जाता है. वह अपनी पत्नी और संतान के लिए बहुत कुछ निस्पृह भाव से करने के लिए विवश हो जाता है – किसी बाहा दबाव के कारण नहीं, बल्कि आन्तरिक प्रेरणा के कारण.

प्रकृति में सेवा का नियम अव्याहत गति से कार्य करता हुआ दिखाई देता है. सूर्य और चन्द्र विश्व को प्रकाश एवं उष्णता प्रदान करते हैं, वायु जीवनदायक श्श्वास प्रदान करती है , पृथ्वी रहने का स्थान देती है , वृक्ष छाया देते हैं आदि. वे ऐसा जीवन किसी प्रतिफल –प्राप्ति की भावना से नहीं करते हैं. वे केवल अपने जन्मजात स्वभाववश ऐसा करते है. हम भी दीन–दुःखियों की सहायता किसी आन्तरिक प्रेरणावश ही करते है. सड़क के किसी कोने में पड़े हुए घायल या बेहोश व्यक्ति को उठाकर जब हमकों पुरस्कार देगा अथवा कभी हमारे घायल अथवा बेहोश हो जानें पर यह हमें अस्पताल पहुँचाएगा?

यह सेवा –भाव जब सप्रयास विकसित किया जाता है, तब वह व्यक्ति का सदगुण एवं समाज की विभूति बन जाता है . जो लोग सेंवा –भाव रखते हैं और स्वार्थ सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बनातें , उनको सहयोग देने वालों की कमी नहीं रहती है. गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार 'सेवा–धर्म कठिन जग जाना' अर्थात संसार जानता है कि सेवा करना बहुत कठिन काम है . सेवा में स्वार्थ –त्याग निरहंकारता परम आवश्यक है.

अहंकार रहित व्यक्ति विश्व के कण–कण को ; अपने समान समझता है, उसके लिए सब आत्मवत होते है – कम –से –कम वह किसी को भी अपने से छोटा , हेय , तुच्छ अथवा हीन नहीं समझता है और प्राणिमात्र के साथ एकत्व की अनुभूति करता है. वह अपने प्रत्येक कार्य को सर्वव्यापी परम प्रभु की सेवा के भाव से करता है. सेवा–भाव द्वारा उसको आत्म साक्षात्कार अथवा परमात्मा का दर्शन होता है.

आत्म साक्षात्कार के संदर्भ में सेवा वस्तुतः साधन और साध्य दोनों है, अर्थात सेवा का फल सेवा द्वारा प्राप्त आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं होता है. जिस प्रकार भक्ति का फल भक्ति ही होता है. जगत के प्राणियों की सेवा ही जगत को बनाने वाली की सच्ची सेवा'–पूजा एवं भक्ति है. ईसाइयों के धर्मग्रन्थ इंजील में लिखा हे कि यदि तुम अपने पड़ोसी से प्रेम नहीं कर सकते हों, जिसको तुम नित्य देखते हो तो तुम उस परमात्मा से प्रेम कैसे कर सकोगे जिसको तुमने कभी नहीं देखा है?

महात्मा गौतम ने अत्यन्त स्पष्ट श्शब्दों में कहा है कि जिसे मेरी सेवा करनी है, वह पीड़ितों की सेंवा करें. युगपुरूष महात्मा गांधी ने भी कहा है कि लाखों गूँगों के हदय में ईश्वर विराजमान है; मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर कों नहीं मानता . मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की सेवा करता हूँ.

वर्तमान समय में प्रचलित अनेक चिकित्सा पद्धतियों में एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद और यूनानी मुख्य हैं. इन सब चिकित्सा पद्धतियों में आयुर्वेद (वैद्यक) एक लम्बे समय तक भारत में प्रचलित एकमात्र चिकित्सा प्रणाली थी. मुगलों के आगमन के साथ भारत में अरबी तथा यूनानी चिकित्सा पद्धतियों का प्रचलन हुआ. अंग्रेजी राज्य की स्थापना पर भारत में एलोपैथी तथा होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों का भी खूब प्रचार हुआ.

इनमें आयुर्वेदिक (वैद्यक), यूनानी (हिमकत) तथा एलोपैथिक तीनों चिकित्सा पद्धतियाँ मूलतः 'विपरीत चिकित्सा पद्धति' सिद्धान्त पर आधारित हैं. अर्थात इनमें राग को दूर करने के लिए प्रायः उन्हीं औषधियों का सेवन किया जाता है, जो रोग के लक्षणों के विपरीत गुणधर्म वाली हों. होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में किसी राग को दूर करने के लिए इस रोग के समान ही गुणध र्म वाली औषधि का प्रयोग किया जाता है. अतः इसे 'सदृश चिकित्सा पद्धति' कहते है.

भारतीय आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार 'विष की चिकित्सा विष' है. इसका तात्पर्य है कि आयुर्वेद चिकित्सा सदृश चिकित्सा सिद्धान्त पर आधारित है , परन्तु वास्तविकता यह नहीं है, क्योंकि उसमें बहुत–सी औषधियाँ ऐसी हैं, जिनकी गणना सदृश चिकित्सा के अन्तर्गत की जा सकती है. आयुर्वेद पद्धति के उपचार में एलोपैथी, होम्योपैथी और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के सभी सिद्धान्त समाविष्ट है. यह चिकित्सा पद्धति विशुद्ध रूप से भारतीय है, जो इसकी भूमि में ही जड़ी–मूटियों, वनस्पतियों एवं पशु–पक्षियों से प्राप्त उत्पादों पर आधारित है, जिनसे बनी औषधियों के अनुषंगी प्रभाव नहीं होते.

होम्योपैथी में रोग का कोई नाम नहीं होता. इसमें श्शरीर में होने वाली विकृतियों के लक्षणों के आधार पर चिकित्सा की जाती है. अतः होम्योपैथी को 'लाक्षणिक चिकित्सा विज्ञान' भी कहा जा सकता है.

वह पदार्थ, जिसके सेवने से रोग ठीक हो जाता है. औषधि कहलाता है. लेकिन होम्योपैथी के संदर्भ में वह पदार्थ, जिसमें रोग को उत्पन्न करने अथवा नष्ट करने , दोनो की श्शक्ति विद्यमान हो, औषधि कहलाता है. वे पदार्थ जिनके सहारे औषधि को तैयार किया जाता है तथा सेवन कराया जाता है औषधि वाहक कहलाते हैं . यद्यपि औषधियों का निर्माण साध ाारणतः जड़ी–बूटियों, पेड़–पौधों, खनिज पदार्थों, जीव–जन्तुओं से प्राप्त पदार्थों तथा रोगों के कीटाणुओं से किया जाता है, फिर भी औषधि विज्ञान में जड़ी–बुटियों तथा पेड़–पौधों का विशेष स्थान है.

संसार की सभी चिकित्सा पद्धतियों में रोगों के निवारण के लिए पौधो का उपयोग किया जाता है. संसार की लगभग 80ः जनसंख्या अपनी स्वास्थ्य रक्षा के लिए वनस्पतियों एवं जड़ी–बुटियों से प्राप्त औषधियों पर ही निर्भर करती है.

औपचारिक रूप से यूनानी एवं आयुर्वेद दोनों पद्धतियाँ एक समान हैं, क्योंकि दोनों में श्शारीरिक स्थिति का विशेष महत्व है. आयुर्वेद एकदम विशुद्ध चिकित्सा पद्धति है, जो विदेशी चिकित्सा पद्धतियों के प्रभाव से दूर है, जबकि यूनानी चिकित्सा पद्धति का उदगम प्राचीन ग्रीक देश में हुआ था, जो फारस व अफ्रीका की चिकित्सा पद्धतियों से अत्यधिक प्रभावित है.

एक महिला एक साधु के पास जाकर बोली– बाबा, मेरा बेटा गुड़ बहुत खाता है. इस कारण यह अस्वस्थ रहता है. निवेदन है कि आप इसको समझाकर इसकी यह आदत छुड़ा दें. साधु ने कहा एक सप्ताह बाद आना. महिला अपने पुत्र के साथ एक सप्ताह बाद पहुँची. साधु ने फिर कह दिया एक सप्ताह बाद आना. इस प्रकार चार सप्ताह बीत गए. पाँचवीं बार जब माता–पुत्र पहुँचे, तो साधु ने पुत्र से पूछा– तुम इतना गुड़ क्यों खाते हो? गुड़ खाना छोड़ दो. पुत्र ने अगले दिन से गुड़ खाना बन्द कर दिया. माता ने जाकर साधु के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की और प्रश्न किया–बाबा इस बात को कहने के लिए आपनें पाँच सप्ताह का समय क्यों लिया? बाबा ने हँसकर उत्तर दिया– मैं स्वयं गुड़ खाया करता था. जब तक मैं स्वयं गुड़ खाना नहीं छोड़ दूँ, तब तक बालक से किस मुँह से कहता कि तू गुड़ खाना छोड़ दे. पाँच सप्ताह में मैंने गुड़ खाना छोड़ दिया था. इस कारण मेरे कथन ने बालक को प्रभावित किया और उसका वांछित परिणाम सामने आ गया.

हम स्वयं देख सकते हैं कि हमारे नेताओं द्वारा नित्य उपदेशात्मक बड़े–बड़े व्याख्यान दिए जिते हैं, परन्तु उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि वक्ता की वाणी के पीछे नैतिक बल नहीं होता है. इसके विपरीत ये ही बातें जब महात्मा गांधी कहते थे, तो हजारों व्यक्ति उनकी बात मानकर सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हो जाया करते थे. महात्मा जी वही कहते थे, जो वह करते थे और वही करते थे, जो वह कहते थे.

कथनानुसार कार्य करने से व्यक्ति की वाणी में जिस आत्मबल की सृष्टि होती है, उसके द्वारा वाणी में बल एवं प्रभावशीलता का समावेश हो जाता है. जो लोग अच्छी–अच्छी बातें करते हैं और तदानुसार आचरण नहीं करते हैं. उनके कथन की उपेक्षा लोग यह कहकर कर दिया करते हैं–''आप मियाँ फज़ीहत, दीगँरा नसीहत.''कथनी और करनी के मध्य सामंजस्य का अभाव संकल्प श्शक्ति को दुर्बल बना देता है, फलतः व्यक्ति के नैतिक बल एवं आत्मविस्त्रास का क्षरण होता है और वह केवल वाकसूर बनकर रह जाता है. ऐसे व्यक्ति सेमल के फूल की भाँति आकर्षक तो हो सकते हैं, परन्तु वे सर्वथा सारहीन होते हैं. वे समाज के किसी काम के नहीं होते.

वर्तमान काल में सब लोग यह कहते हुए सुने जाते हैं कि आजकल सच्चाई के दर्शन दुर्लभ हो गए हैं, झूठ का बोलवाला है, चारित्रिक पतन हो गया है आदि. विचार करने पर सहज ही इन समस्त विषमताओं एवं विसंगतियों का कारण समझ मे आ जाता है. प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से सत्य की आशा करता है और स्वयं सत्य नहीं बोलता है. अर्थात प्रत्येक व्यक्ति मिथ्याचार को अपने लिए सुरक्षित रखकर सदाचार का उत्तरदायित्व अन्य व्यक्तियों को सौंप देता है.

आप स्वयं विचार करें कि जो पिता श्शराब पीता है वह किस अधिकार से अपने पुत्र को श्शराब से दूर रहने के लिए कह सकता है? जो नेता संसद और विधान सभा में विधि–नियम का उल्लंघन करते हैं तथा अपनी बात मनवाने के लिए हिंसा का मार्ग अपनाते हैं. वे आशा क्यों कर सकते है कि हमारा युवा वर्ग अनुशासित होकर रचनात्मक कार्यों में अपनी श्शक्ति लगाएगा.

नींद का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है – मनुष्य अपने जीवन का एक तिहाई भाग सोतें हुए गुजारता है । नींद में परिवर्तन होने का प्रभाव मनुष्य की कार्यक्षमता तथा उसके स्वास्थ्य पर पडता है।

आज के आधुनिक युग में काम ,क्रोध, लोभ ,मोह असंतोष आदि मानसिक विकारों के कारण मनुष्य इतना अशान्त बन चुका है कि उसको स्वाभाविक नींद के लिए भी तरसना पडता है । आज अनिद्रा का रोग सारे विश्व में महारोग की भाँति फैलता जा रहा है । आज के दौर में नींद न आना एक आम शिकायत हो गई है – डाक्टरों के पास नियतमित ऐसे रोगी आते है , जिनकी खास शिकायत नींद न आने की होती है ।

नींद एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा श्शरीर आराम पाता है । गहरी नींद से व्यक्ति अपने आपको तनाव रहित पाता है ,क्योंकि उससे दिमाग और श्शरीर को पूर्ण रूप से आराम मिल जाता है –जब हम प्रातः सोकर उठते है तो हमारा दिमाग हल्का –फुल्का एवं श्शरीर तरोताजा रहता है।

यदि हम रात्रि में ठीक तरह से नहीं सोते है तो हमें प्रातः काल से ही सुस्ती रहती है – हाथ पैर तथा सिरा दर्द करता है । आंखें भारी भारी रहती है एवं किसी भी कार्य में मन नहीं लगता है अर्थात रात्रि के साथ –साथ अगला दिन भी बेकार हो जाता है अच्छे स्वास्थ के लिए गहरी नींद का आना अत्यन्त आवश्यक है यदि कई दिनो तक नींद नहीं आती है तो मनुष्य पागल हो जाता है जितनी खुराक हमें नींद से मिलती है उतनी अन्य किसी वस्तु से नहीं।

डाक्टर जार्ज स्टीवेन्सन जोकि दिमागी स्वास्थ के विशेषज्ञ है कहते है कि आज के बहुत ज्यादा व्यस्त और उलझन भरे जीवन के लिए जरूरी है कि नींद की आवश्यकता और उसके महत्व को ध्यान रखा जाए । दिमागी संतुलन और स्वास्थ बनायें रखने के लिए कम से कम 6घन्टे की नींद आवश्यक है ।

अलग अलग व्यक्तियों के लिए नींद की आवश्यकता अलग अलग होती है जैसे एक माह के बच्चे को 21घण्टे ,6माह के बच्चे को 18घण्टे, 12माह के बच्चे को 10घण्टे ,16वर्ष से ऊपर वालो के लिए 8 घण्टे तथा 30वर्ष से ऊपर वालों को 6–7 घण्टे सोना चाहिए। तथा उससे अधिक उम्र वाले को 5–6घण टे सोना चाहिए। श्शारीरिक व मानसिक श्रम करने वाले को अधिक नींद आती है

अनिद्रा के अतिरिक्त अधिक देर तक सोया रहना भी आलस्य की निशानी है तथा स्वास्थ्य के लिए अहितकर है। इंगलैण्ड के मनोवैज्ञानिक डॉक्टर जोम्ज कके अनुसार अधिक सोने से रक्त प्रवाह प्रभावित होता है अर्थात धीमा पड जाता है । परिण ाम स्वरूप ह्रदय के रोग उत्पन्न हो सकते है फेंफडे कमजोर हो जाते है ।

अच्छी नींद प्राप्त करने के लिए दवाओं का सहारा लेना अच्छी बात नहीं है – नींद की गोलियां खाने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है नींद की गोलियों के सेवन के विषय में एक प्रसिद्ध डॉक्टर का कहना हैकि आपको पांच घण्टे की नींद आती है आप उसे सात घण्टे करने लिए नींद की गोली का प्रतिदिन सेवन करते है तो कुछ दिन तो आपकी नींद सात घण्टे की हो जाएगी किन्तु कुछ समय बाद आपको पांच घण्टे की नींद के लिए भी परेशानी होगी वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि पूर्व दिशा में सिर रखकर सोने से श्शान्त और सुखमय नींद आती है।

भारत रत्न सर माक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया का जन्म 15 सितम्बर 1861 को मैसूर राज्य के कोलार जिले के मदनहल्ली गांव में हुआ था। इनके पिता पण्डित श्रीनिवास शास्त्री प्रतिष्ठित विद्व ान धार्मिक परन्तु अत्यन्त गरीब एवं साधारण व्यक्ति थे । उनके पास पुत्र को पढाने के लिए धन नहीं था । गांव की पढाई के बाद उन्हें आगे की शिक्षा के लिए बंगलोर जाना पडा । वे अपने मामा के घर भोजन करते तथा फीस के लिए ट्यूशन करते । कॉलेज के अंग्रेज प्रधानाचार्य चार्ल्स वार्ल्टस ने उनकी योग्यता प्रतिभा एवं कार्यकुशलता से प्रभावित होकर उनका दाखिला पूना के साइंस कॉलेज में करा दिया एवं छात्रवृति भी दिलवाई। इस कॉलेज में उन्होने अपने समय का पूर्ण सदुपयोग किया तथा सन् 1883में बम्बई विश्वविद्यालय की इंजीनियरिंग परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया ,जिसके फलस्वरूप सन्1884 में वे बम्बई के पी.डब्लू.डी. विभाग में असिस्टेंट इंजीनियरिंग के पद पर नियुक्त हो गए । वे अपनी योग्यता के कारण कुछ ही समय में चीफ इंजीनियर के पद पर आसीन होने वाले थे लेकिन अंग्रेज इंजीनियरों ने एक भारतीय को चीफ इंजीनियर के पद पर आसीन करने का विरोध किया । परिणामतः उन्हे चीफ इंजीनियर नहीं बनाया गया । सरकारी सेवा के दौरान सन् 1893में उन्होने प्रसिद्ध सक्खसर बांध का निर्माण कराया तथा सन्1899में सिंचाई ब्लाक सिस्टम व ऑटोमेटिक स्लूयस गेटस का आविष्कार किया जिसकी प्रशंसा श्री बालगंगाधर तिलक एवं महादेव गोविन्द रनाडे आदि जैसे योग्य राज्यनितिज्ञों ने भूरि–भूरि की । सन् 1908 में उन्होने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था।

सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद उन्होने वहां के उद्योग धन्धों के देखने हेतु विदेश यात्रा की इसी अवधि में निजाम हैदराबाद ने अपनी रियासत में आई भीषण बाढ की समस्या को हल करने के लिए अपने यहां बुला लिया । उन्होंने मूसी व उसकी सहायक नदियों पर बांध बनाकर वहां की बाढ की समस्या को हमेशा के लिए हल कर दिया इसके बाद उन्हे मैसूर के राज्य चीफ इंजीनियर नियुक्त किया । सन्1912में कावेरी नदी पर कृष्ण राज सागर बांध का निर्माण किया । बाँध बनने से पूर्व बडे,बडे अंग्रेज इंजीनियरों ने कहा था कि यह बाँध नहीं बन सकता तथा इस पर लगने वाला करोडों रुपया व्यर्थ जाएगा । इस बाँध के निर्माण से सारे विश्व में उनकी ख्याति हुई। सन 1912 में उन्हें मैसूर राज्य का दीवान बनाया गया । सन 1918 तक वे दीवान पद पर रहे । इस अवधि में उन्होनें वहाँ कई ,उघोग धन्धे चालू किए, जिनमें भद्रवती का इस्पात का कारखाना उल्लेखनीय है। शिक्षा के क्षेत्र में मैसूर विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह भारत का छठा विश्वविद्यालय था। उनके कुशल एवं सफल प्रशासन कर चर्चा लोग आज भी करते है। देश में नियोजित अर्थव्यवस्था पर कार्य करने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे। तथा इस विषय पर उन्होनें अपनी पुस्तक प्लान्ड 'इकॉनोमी फॉर इण्डिया' प्रकाशित कराई थी। भारत में प्रकाशित यह अपने विषय की प्रथम पुस्तक थी। बाद में उन्हें टाटा इस्पात का डायरेक्टर बनाया गया। जिस पद पर वे 1927 से 1955तक रहें।

लगभग 90 वर्ष की आयु में पटना के समीप मोकामो पर गंगा पुल का निर्माण करके उन्होने सारे देश को हैरत में डाल दिया ।सारे देश ने उनकी योग्यता, पुरुषार्थ एवं अदभुत संगठन श्शक्ति के लिए आदर सम्मान प्रकट किया । इस सम्बन्धमें 1931 में आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय ने , 1937 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने ,1940में एस .एन.डी.टी.महिला विश्वविद्यालय बम्बई ने तथा 1948 में मैसूर विश्वविद्यालय ने मानद उपाधियों से विभूषित किया। 7 सितम्बर, 1955 को राष्ट्रपति भवन दिल्ली में स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें ''भारत रत्न'' के अलंकरण से विभूषित किया। 1958 में बंगाल की प्रमुख रॉयल ऐसियाटिक सोसाइटी ने उन्हें दुर्गा प्रसाद खेतान स्वर्ण पदक से सम्मानित किया.

बड़े सम्मान और पुरुषार्थ के साथ एक सौ एक वर्ष की पूर्ण आयु बिताने के बाद 14 अप्रैल, 1962 को उनका देहान्त हो गया. भारतीय इंजीनियर्स इस महान भारतीय इंजीनियर की स्मृति में उनके जन्म–दिवस 15 सितम्बर को प्रतिवर्ष ''इंजीनियर–दिवस'' के रूप में मनाते है।

मनुष्य का जीवन उसके विचारों का प्रतिबिम्ब है। सफलता–असफलता, उन्नति–अवनति, तुच्छता–महानता, सुख–दुखः, श्शान्ति–अशान्ति आदि सभी पहलू मनुष्य के विचारों पर निर्भर करते है। किसी भी व्यक्ति के विचार जानकर उसके जीवन का नक्शा सहज ही मालूम किया जा सकता है। मनुष्य को कायर–वीर, स्वस्थ–अस्वस्थ, प्रसन्न–अप्रसन्न कुछ भी बनानें में उसके विचारों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। तात्पर्य यह है कि अपने विचारों के अनुरूप ही मनुष्य का जीवन बनता बिगड़ता है। अच्छे विचार उसे उन्नत बनाएगें। तो हीन विचार नीचे गिराएंगें।

स्वामी रामतीर्थ ने कहा है मनुष्य के जैसे विचार होते है। वैसा ही उसका जीवन बनता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था स्वर्ग और नरक कहीं अन्यत्र नहीं। इनका निवास हमारें विचारों में ही है। भगवान बुद्व ने अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए कहा था भिक्षुओं वर्तमान में हम जो कुछ है अपने विचारों के कारण और भविष्य में जो कुछ भी बनेगें। वह भी अपने विचारों के कारण। श्शेक्सपीयर ने लिखा है। कोई वस्तु अच्छी या बुरी नहीं है। अच्छाई–बुराई का आधार हमारें विचार ही है। ईसा–मसीह ने कहा था मनुष्य के जैसे विचार होते है। वैसा ही वह बन जाता है। प्रसिद्व रोमनदास ने मार्क्स ऑरीलियस ने कहा था हमारा जीवन जो कुछ भी है हमारे अपने ही विचारों के फलस्वरूप है। प्रसिद्व अमेरीकी लेखक ने डेल कार्नेगी ने अपने अनुभवों पर आधारित तथ्य प्रकट करते हुए लिखा है जीवन में मैने सबसे महत्वपूर्ण कोई बात सीखी है तो वह है विचारों की अपूर्व श्शक्ति और महानता। विचारों की श्शक्ति सर्वोच्च तथा अपार है। संक्षेप में जीवन की विभिन्न गतिविधीयों को संचालने करने में हमारे विचारों का ही प्रमुख हाथ रहता है। हम जो कुछ भी करते है। विचारों की प्रेरणा से ही करते है।

स्ंसार में दिखाई देने वाली विभिन्नताएं, विचित्रताएं भी हमारे विचारों का प्रतिबिम्ब है। संसार मनुष्य के विचारों की छाया है किसी के लिए संसार स्वर्ग है तो किसी के लिए नरक, किसी के लिए संसार अशान्ति,क्लेश, पीड़ा आदि का आगर है। तो किसी के लिए सुख सुविधा संपन्न उपवन है। एक सी परिस्थतियों में एक सी सुख–सुविधा की समृद्वि से युक्त दो व्यक्तियों में अपने विचारों की भिन्नता के कारण असाधारण अन्तर पड़ जाता है। एक जीवन में प्रतिक्षण सुख–सुविधा, प्रसन्नता, खुशी श्शान्ति संतोष का अनुभव करता है। तो दूसरा पीड़ा श्शोक क्लेशमय जीवन बिताता है इतना ही नहीं कई व्यक्ति कठिनाई का अभाव ग्रस्त जीवन बिताते हुए भी प्रसन्न रहते है। तो कई समृद्व होकर भी जीवन को नारकीय यंत्रणा समझते है। एक व्यक्ति अपनी परिस्थतियों में संतुष्ट रहकर जीवन के लिए भगवान को धन्यवाद देता है। तो दूसरा अनेक सुख–सुविधाएं पाकर भी अंसतुष्ट रहता है दूसरों को कोसता है। महज अपने ही विचारों के कारण।

प्राचीन ऋषि मुनी आरण्यक जीवन बिताकर कंदमूल फल खाकर भी सतुष्ट और सुखी जीवन बिताते थे। और धरती पर स्वर्गीय अनुभूति में मग्न रहते है। जबकि आज का मानव है। जो प्र्याप्त सुख सुविधा समृद्वि ऐश्वर्य वैज्ञानिक साधनों से युक्त जीवन बिताकर भी अधिक क्लेश अशान्ति दुख उद्विग्नता से परेशान है। यह मनुष्य के विचार चिंतन का ही परिणाम है। अग्रेजी के प्रसिद्व लेखक स्वर्ट अपने प्रत्येक जन्मदिन पर काले और भद्दे कपड़े पहनकर श्शोक मनाया करते थे वह कहते थे अच्छा होता यह जीवन मुझे न मिलता मै इस दुनिया में न आता इसके ठीक कवि अन्धे कवि मिल्टन कहा करते थे भगवान का श्शुक्रिया है जिसने मुझे जीने का अमूल्य वरदान दिया नेपोलियन बोनापार्ट ने अपने अंतिम दिनों में कहा था अफसोस है कि मैने जीवन का एक सप्ताह भी सुख श्शान्ति पूर्वक नहीं बिताया जबकि उसे समृद्वि, ऐश्वर्य, संपति, यश आदि की कोई कमी नहीं रही। सिकन्दर महान भी अपने अंतिम जीवन में पश्चाताप करता हुआ ही मरा। जीवन में सुख श्शान्ति प्रसन्न्ता अथवा दुखः क्लेश अशान्ति पश्चाताप आदि का आधार मनुष्य के अपने विचार ही है। अन्य कोई नहीं गलत विचारों के कारण व्यक्ति समृद्वि ऐश्वर्य संपन्न जीवन में भी दुखी रहेगा। और उत्कृष्ट विचारों से अभावग्रस्त जीवन में भी सुखशान्ति प्रसन्नता का अनुभव करेगा।

विश्वास मानव जीवन की पतपवार है। जो उसे लाखों विप. रीतताओं उलझनों में भी गतिशील और सुस्थिर बनाए रखती है। विश्वास की डोर से बंधी हुई जीवन की नैया डगमगा नहीं सकती। अनेक उलझनें समस्याएं आंधिया तूफान भी उस व्यक्ति को अपने ध्येय पथ से विचलित नहीं कर सकते है। जो अपने आप में अटूट विश्वास लिए चल रहा है। जीवन में प्रकाश देने वाले सभी दीपक बुझ जाएं किन्तु मनुष्य के अन्तर में विश्वास की ज्योति जलती रहे तो वे घोर अंधकार में भी अपना पथ स्वयं ढूंढ लेगा आत्मविश्वास की ज्योति के समक्ष संसार के सभी अंधकार तिरोहीत हो जाते है।

संसार में भी जितने महान कार्य हुए है। वे सब विश्वास की ही कृति है। महात्मा गॉधी के प्रबल विश्वास ने ही देश की आजादी का स्वप्न साकार किया तिलक जी ने कहा था– ''स्वराज्य हमारा जन्म सिद्व अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेगें।'' उनका यह दृढ़ विश्वास कालान्तर में मूर्त हुऔ। लिंकन ने अपनी डायरी में लिखा साथ ही लोगों से कहा– ''मैने अपने भगवान को यह वचन दिया है कि दासों की मुक्ति के कार्य को मै अवश्य पूरा करूगां।'' अनेक विरोंधों के बावजूद भी लिंकन ने वह महान कार्य संपन्न किया। कोलम्बस को विशाल सागर के पार किसी पुल का विश्वास था। उसने अपनी साहसिक यात्रा करके अन्ततः अमेरिका की खोज कर ही ली।

विश्वास सफल जीवन का मूल मंत्र है। टॉलस्टाय ने लिखा है– ''विश्वास जीवन की श्शक्ति है।'' श्शेक्सपीयन ने कहा था– ''विश्वास क्या नहीं कर सकता? विश्वास हमें गगनचुम्बी पहाड़ों को लांघने की श्शक्ति प्रेरणा देता है।'' विश्वास जीवन के समस्त वरदानों का आधार है। स्वेट मॉर्डेन ने लिखा है– ''विश्वास ही जीवन के उस मार्ग की खोज करता है जो हमें मंजिल तक पहुॅचा सके।'' महात्मा गांधी ने कहा था– ''विश्वास हमारी जीवन नैया को तूफानी सागर में भी खेता है। विश्वास पर्वतों को डिगा देता है। विशाल सागर को लांघ सकता है। विश्वास कोई कोमल पुष्प नहीं जो साधारण वायु के झोकें से ही गिर जाएं वह हिमालय की तरह अडिग है।''

जहॉ विश्वास है वहॉ जीवन के सम्स्त अभाव, अभिशाप , दीनता, दारिद्रय, गरीबी, निष्प्रभाव हो जाते हैं। ये जीवन के विकास के क्रम में बाधक नहीं बनते। संसार के अधिकांश महापुरुषों का जीवन इसी तथ्य का प्रतिपादन करता है, जिन्हें बढने के लिए तनिक भी सहारा नहीं था उन्होंने अपने आत्मबल के सहारे जीवन की महान सफलताएं अर्जित कीं। अनेक व्यक्ति असाध ाारण बन गए अपने विश्वास के आधार पर ।

किसी भी क्षेत्र में सफलता अर्जित करने के लिए, आगे बढने के लिए विश्वास का होना आवश्यक है। किसी भी ध्येय की पूर्ति के पीछे विश्वास की सत्ता नहीं होगी तो वह अपने प्रारम्भ काल में ही अस्त हो जाएगा। विश्वास के अभाव में मनुष्य जीवन श्शुष्क, नीरस, निर्जीव–सा बन जाता है। जडता अपने जाल में जकड लेती है। विश्वास के अभाव में राजपथ पर भी मनुष्य एकदम आगे नहीं बढ सकता।

विश्वास कहीं अन्यत्र ढूॅढी जाने वाली वस्तु या किसी की कृपा का वरदान नहीं यह हमारे अन्तर में ही विराजमान सनातन सत्य है। आत्म–चेतना अजर–अक्षर, सर्वशक्ति सम्पन्न, दिव्य स्वरूप ही हमारे विश्वास का आधार हो सकता है। मनुष्य के अन्तर में श्शक्ति समृद्धि का अजस्र स्रोत है। इसका परिचय होने पर दृढ विश्वास अभ्युदय होता है।

मानव जाति के दो पहलू हैं– स्त्री और पुरुष। दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं, अतः कहा गया है कि स्त्री औ पुरुष जीवनरूपी गडी के दो पहिये है। हमारे सामाजिक और पारिवारिक जीवन में नारी गृहणी, माता, बहन और सहचारी के रूप में सहयोग करती रही है। माता के रूप में वह बच्चे को जन्म देकर उसका पालन–पोषण कर उसे योग्य नागरिक बनाती है। गृहणी के रूप में वह सम्पूर्ण गृह कार्यों का संचालन करती है, गृहस्थ जीवन गृहणी के बिना निरर्थक हैं। गृहणी और माता के अतिरिक्त नारी को सहचारी भी कहा गया है। सहचारी श्शब्द बडा ही सारगर्भित है; पति के सुख–दुःख, लाभ–हानि, मान–अपमान आदि में सदैव साथ रहती है। उसका साहचर्य जीवन के प्रत्येक पहलू से है। श्शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि ''पत्नी पुरुष की आत्मा का आधा भाग है।'' अतः जब तक पुरुष स्त्री को प्राप्त नहीं कर लेता है तब तक वह अपूर्ण रहता है। महाभारत में नारी को अर्धांगिनी कहा गया है। प्राचीन भारत में नारी का स्थान बहुत ऊॅचा था। वह पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में पुरुष की सहभागिनी होती थी।

प्राचीन भारतीय नारी पूर्ण स्वतन्त्र होती थी, उसे स्वयंवर अर्थात् स्वयं पति चुनने का पूर्ण अधिकार था। उसे पुरुषों के समान सभी अधिकार प्राप्त थे। शिक्षा के क्षेत्र में वह पुरुषों से किसी भी माने में कम न थी। गार्गी, अपाला इसका ज्वलन्त उदाहरण हैं। महाभारत में नारी पारिवारिक, सामाजिक, रा. जनीतिक गतिविधियों को संचालित करती थी। गान्धारी, कुन्ती और द्रोपदी तत्कालीन भारतीय नारी के पत्नीत्व, मातृत्व और श्शक्ति के आदर्श रूप हैं। मन्दोदरी भी अपने पति रावण को सत्परामर्श द्वारा सही मार्ग पर लाने का प्रयास किया करती थी। संस्कृत साहित्य में नारी को गृहलक्ष्मी और गृहदेवी कहा गया है। श्शान्तिपर्व में गृहणीविहीन घर को निर्जन–वन तुल्य कहा गया है औश्र यह भी कहा है कि नारी के समान कोई बन्धु नहीं हैं और न इा लोक में नारी के तुल्य धर्म संग्रह में कोई सहायक ही है। समय परिवर्तनशील है, वह प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहता है । भारत पर मुसलमानों के आक्रमण होने लगे। पृथ्वीराज चौहान की पराजय के उपरान्त मुसलमानों का भारत पर आधिपत्य हुआ। देश की परतन्त्रता के साथ ही स्त्रियों की स्वतन्त्रता का भी अपहरण हुआ। 'यथा राजा तथा प्रजा' वाली उक्ति चरितार्थ हुई। समाज की घृणित विचार–ध ाारा ने स्त्रियों को पुरुषों को बराबरी के पद से हटा दिया और उनका स्थान गौण हो गया। धीरे–धीरे नारी पुरुष की सहचरी से भोग्या होती चली गई, उसकी स्वतन्त्रता छीन ली गई। मुसलमानों की प्रथा के अनुरूप उन्हें पर्दे में रहना अनिवार्य हो गया। इस पर्दा प्रथा ने ही उनका शिक्षा का अधिकार छीन लिया। स्त्रियों को स्वतन्त्रता से वंचित किया गया और कहा गया कि स्त्री बचपन में पिता के अधीन रहे, यौवन में पति के अधीन रहे और बुढापे में पुत्र के अधीन रहे।

यह सब तत्कालीन एकांगी न्याय वितरण का ही परिणाम है। पुरुष चाहे जितनी शादियॉ कर ले, चाहे व्यभिचार करे, कोई बात नहीं लेकिन यह सब स्त्री के लिए सर्वथा त्याज्य है। स्त्री विधवा होने पर भी श्शादी नहीं कर सकती है । यहॉ तक कि विधवा हो जाने पर उसका मुॅह देखना भी अपशकुन समझा जाने लगा। घर में लडकी का होना आज भी अभिशाप समझा जाता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मध्ययुगीन भारतीय नारी पुरुष की भोग्या और सेविका मात्र रह गई थी। भारत की स्वतन्त्रता के साथ ही स्त्री स्वतन्त्रता का आविर्भाव हुआ। हर्ष की बात है कि भारत के संविधान में स्त्रियों की समस्याओं को सुलझाने के लिए नियमों का उल्लेख किया गया है। नारियों को पुरुषों के समान अधिकार दिये गए हैं। देश में स्त्रियों की स्थिति में सुधार का प्रयास बराबर बढता ही जा रहा है। सम्पत्ति के उत्तराधिकार के लिए भी कानून बनाए जा रहे हैं। शिक्षा के द्वारा उन्हें सुशिक्षित होने का अधि ाकार प्राप्त है। इस क्षेत्र में नारियों ने अच्छी सफलता हासिल की है। आज भारतीय नारियॉ अध्ययन–अध्यापन में अग्रसर हो रहीं है, राजनीति में भी सक्रिय भाग ले रहीं है। श्रीमती इन्दिरागॉधी, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू राजकुमारी अमृत कौर श्रीमती सुचेता कृपलानी, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, तारकेश्वरी सिन्हा, स्वरूपरानी बक्सी, श्रीमती राजेन्द्र कुमारी बाजपेई जसललिता, मायावती इत्यादि इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। यद्यति स्वतंत्रता के बाद नारियों की स्थिति में बडा सुधार हुआ है, फिर भी हमारी प्राचीन मान्यताऍ, रूढियॉ आज भी बाधक बनी हुई हैं। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, अनमेल विवाह , बहुविवाह, अशिक्षा आदि प्रगति के मार्ग के बाधक हैं, इनका उन्मूलन अनिवार्य है। नरी हमारे जीवन में माता, गृहणी और सहचरी के रूप में आदिकाल से सेवा करती चली आ रही है और भविष्य में करती रहेगी। नारी पुरुष की अर्धांगिनी हैं, अतएव उसे समान अधिकार मिलना चाहिए, तभी जीवनरूपी गाडी सुचारु रूप से चल सकेगी। भारतीय नारियों का आदर्श सदैव दिव्य रहा है और रहेगा। हमारे संविधान में स्त्रीयों को पुरुषों के समान ही अधिकार दिए गए हैं, उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए अनेक नियम बनाये गये हैं। ये नियम तभी सफल हो सकते हैं, जब स्त्री और पुरुष इस महत्त्व को समझें और सहयोग दें। महिला उत्थान समाज की अविछिन्न आवश्यकता है, अतएव नर–नारी, दोनों को ही इसके लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। 16 फरवरी1975 को नई दिल्ली में ''राष्ट्रीय महिला दिवस'' का उद्घाटन करते हुए श्रीमती इन्दिरा गॉधी ने कहा था– ''ऐसा कोई काम नहीं है जिसे महिलाऍ पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर नहीं कर सकती हैं।'' विश्व की समस्याओं का समाधान करने के लिए एकता और आपसी सद्भावना जरूरी है। जब तक महिलाओं को समाज में सम्मानपूर्ण स्थान नहीं मिलता तब तक कोई देश या समाज उन्नति नहीं कर सकता। आज भारतीय नारी जागरूक है; वह दिन दूर नहीं जबकि नारी समाज का स्थान प्राचीन भारतीय नारी के तुल्य उच्च शिखर पर असीन होगा।

गति अभ्यास– 13.

विज्ञान श्शब्द दो शब्दों ,वि+ज्ञान से मिलकर बना है। 'वि' का अर्थ विशेष या विशिष्टि और 'ज्ञान' का अर्थ सर्वविदित है। इस प्रकार विशिष्ट ज्ञान या विशेष ज्ञान या विशेष ज्ञान को विज्ञान कहा गया है । जब सामान्य ज्ञान से बढ़कर मनुष्य विशेष रूप से किसी वस्तु या प्रकृति के यथार्थ रूप का ज्ञान प्राप्त पर लेता है, यह ज्ञान ही 'विज्ञान' कहलाता है। प्राचीन काल में मनुष्य प्रकृति करके उसके अन्तिम स्वरूप का साक्षात्कार करनें का प्रयत्न करता रहता था। विज्ञान का यह रूप आध्यात्मिक था। पाश्चात्य देशों में बाह्रा प्रकृति के विश्लेषण द्वारा उसकी श्शक्ति का ज्ञान करने और उस पर अधिकार करने का प्रयास हुआ। यह विज्ञान का भौतिक रूप था। विज्ञान का यह भौतिक रूप ही धीरे –धीरे विकसित होकर एक युग के रूप में प्रस्तुत है। यही कारण है कि आज का युग विज्ञान का युग कहलाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विज्ञान के दो पहलू है– भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान। इनमें से आध्यात्मिक विज्ञान का अभ्युदय भारत में तथा विज्ञान के भौतिक रूप का अभ्युदय पाश्चात्य देशों में हुआ।

विज्ञान का भौतिक रूप धीरे –धीरे विकसित होकर विश्व –व्यापी हो गया है। इसका क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि इसका सम्बन्ध हमारे दैनिक जीवन से हो गया है। जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान हमारी सेवा कर रहा है । कृषि के लिए नये – नये यन्त्रों को प्रदान करके तथा वैज्ञानिक विधियों से नई – नई किस्मों के अनाज जिनकी पैदावरी काफी है, रासायनिक खादें व कृषि के लिए ही कीटनाशक दवाएँ विज्ञान की ही देन हैं । ईंधन की समस्या के समाधान हेतु प्रेंशर कुकर नए–नए गैस चूल्हों का निर्माण, विज्ञान की ही देन है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान प्रदत्त औषधियाँ अमृत का काम कर रही है। श्शल्य चिकित्सा, एक्स –किरणें और चल –चित्रों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे भूगोल, विज्ञान, साहित्य , इत्यादि की फिल्में घड़ियाँ विज्ञान की ही देना है। हिसाब लगाने के लिए ''गणनायन्त्र'' (कैलकुलेटर) विज्ञान प्रदत्त है। मनोरंजन के लिए रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन हमारी सेवा में प्रस्तुत विज्ञान का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि आज के युग को ही विज्ञान का युग कहा जाता है। श्शनैः –शनैः विज्ञान की प्रगति हो रही है और होती रहेगी ।

यह निर्विवाद सत्य है कि विज्ञान के भौतिक रूप के विकास का ही यह परिणाम है। विज्ञान के भौतिक रूप का अभ्युदय पाश्चात्य देशों में हुआ । भारत ने उनकी उपलब्धियों को आज हमारे भारतीय वैज्ञानिकों क वैज्ञानिक प्रगति में योगदान कम नहीं है। डॉ. हरगोविन्द खुराना जो कि भारतीय वैज्ञानिक थें, अब उन्होंने अमेरिका की नागरिकता ग्रहण कर ली है। खुराना जी ने श्शरीर की कोशिकाओं में स्थित जीन्स पर जों रिसर्च की है, वह विश्व में अनुपम है। सम्पूर्ण विश्व में भारतीय वैज्ञानिक की भूरि –भूरि प्रशंसा की गई है। आधुनिक साधनोसे अपना विकास करने और उत्पादन बढ़ाने की दिशा में हमारें वैज्ञानिक और इन्जीनियर अन्तरिक्ष औद्योगिक की खोज मे लगे हुए है। जल की खोज के लिए ऐसी ड्रिलिंग मशीन तैयार की है, जो प्रायः राकेट प्रणाली के आधार पर चट्टान के अन्दर दस मीटर नीचे तक छः मीटर नीचे तक छः इंच व्यास का छेद केवल तीन मिनट के अन्दर कर सकती है । 18 मई भारत ने प्रथम अणु विस्फोट करके स्वयं को छठा अणु श्शक्ति सम्पन्न देश सिद्ध कर दिया थां । श्शान्तिपूर्ण उदेश्यों के लिए ही भारत अणु परीक्षण पर विश्वास करता है। भारत जैसे विकासोन्मुख देश अपनी जनता की गरीबी तथा दूसरी मुश्किलों को हल करने के लिए अणु श्शक्ति के विकास पर बल देते है।

भारतीय वैज्ञानिकों को 'आर्यभट्ट' से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिससे वे बड़ी बात को सोच सकें और विज्ञान की सेवा के लिए काम कर सकें । हमें आज ऐसे वैज्ञानिकों व दार्शनिकों की जरूरत है जों नैतिकता के विकास में तथा विज्ञान के विकास में मदद कर सकें, जिससें श्शक्ति का प्रयोग उन चीजों के नाश में न हो जिनके निर्माण में हजारों साल लगे हैं, बल्कि हमारी शक्ति का प्रयोग कल्याकारी हो।

बीसवीं सदी का मानव अनेक अभिशाप भेग रहा है दहेज उनमें से एक भयंकर अभिशाप है । दहेज भारतीय समाज रूपी स्वस्थ सुन्दर श्शरीर का कोढ है । यह देश की प्रगति में महान बाधक है । मां स्वयं पुत्री के जन्म से ही दुखी हो जाती है ,यह विधि की विडम्बना है जन्म से ही उसे पराया धन कहा जाता है । परिवार में कन्या का जन्म से ही उमडते –घुमडते बादलों के कुछ कारण है । दहेज इनमें से प्रमुख है । यह मानव जीवन को नष्ट कर रहा है । उसने मनुष्य को अपने आदर्शों से गिरा दिया है । इसी कारण व्यक्ति विवश होकर भ्रष्टाचार, बेइमानी, रिस्त्रतखेरी, चोरी, तस्करी करता है और काला धन इकट्ठा करने में जुटा है । दहेज ने मानव को दानव में परिवर्तित5 कर दिया है ,इसके लोभवश सैकडो नारियों की हत्याएं प्रतिवर्ष हुआ करती है ।

दहेज अरबी श्भाषा के जहेज श्शब्द का रुपान्तरित होकर उर्दू और हिन्दी में आया है । जिसका अर्थ है सौगात । भारत में इस भेंट या सौगात की परम्परा काफी प्राचीन है । मनुस्मृति के प्रणेता मनु ने आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन किया है । विवाह के समय यदि कन्या पक्ष वर पक्ष को धन इत्यादि देता है तो उसे मनु के असुर विवाह कर संज्ञा दी जाती है। जनक द्वारा सीता के विवाह मे पर्याप्त दास दासियों ,सम्पति अदि के दान का वर्णन रामायण में मिलता है । गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में इस प्रथा का वर्णन किया है ।

पहले यह स्नेह और वात्सल्य का प्रतीक प्रेमोपहार था बाद में धीरे –धीरे अभिशाप में बदल गया। आज स्थिति यह है कि योग्य से योग्य लडकियों को उपयुक्त वर ,दहेज के कारण नहीं मिल पाता है। दहेज के कारण बहुत बडी संख्या में अनमेल विवाह होते है जिसके कारण बहुतों का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है। वर्तमान विवाह पद्धिति मिं पिता अपनी पुत्री को दान करता है । और साथ में द्रव्यादि भी दान के रूप में वर पक्ष को देता है । आज द्रव्यादि का दान ही प्रधान हो गया है, अन्य बातें गौण हो गई है। वर पक्ष वाले इसे अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानकर वर टैक्स के रूप में वसूल करते है। विवाह पद्धिति के पवित्र दान के इस विकृत रूप ने आज जो विष वमन किया है वह अवर्णनीय है।

दहेज प्रथा आज विवाह की ऐसी श्शर्त बन गयी है जिसे वर पक्ष अपना अधिकार समझाता है। लडको की आज पशुओं की तरह बोली लगायी जाती है। जो सबसे अधिक कीमत को चुकाने को तैयार रहता है। उसी लडकी के साथ विवाह होता है। इस श्शर्त का प्रयोग आज का पढा लिखा सभ्य मानव भी करने लगा है। दहेज के कारण ही दिनों दिन भ्रष्टाचार बढता जा रहा है। लोग काला धन इकट्ठा करने में प्रयत्नशील है, क्योंकि वे जानते है कि अगर उनके पास दहेज की श्शर्तों को पूरा करने के लिए धन नहीं होगा तो उनकी लड़की कुंवारी ही रह जाएगी। अगर वे ईमानदारी से काम लेते है तो उनके सामने उनकी लड़की का प्रश्न है, इसलिए उन्हें भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वतखोरी, चोरी, तस्करी के लिए मजबूर होना पड़ता है। श्शादी के समय यह नहीं देखा जाता कि दहेज के लिए धनराशि किस प्रकार जुटाई जाती है। बल्कि लड़की का पिता दहेज देकर और लड़के का पिता दहेज लेकर अपने को कृतार्थ समझते है। इस प्रकार हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार दिखाई देता है। रिश्वतखोरी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है, चोरबाजारी बढ़ती जा रही है। इस सबका एक ही मूलभूत कारण दहेज है। दूसरी ओर दहेज के कारण कभी लड़की को वर पक्ष के लोगों द्वारा जालसाजी से मौत के घाट उतार दिया जाता है। कभी–कभी वह स्वयं आत्महत्या कर लेती है। दहेज के अभाव में ही लड़की अयोग्य वर को सौंप दी जाती है। अनमेल विवाह ज्यादा दिन टिकाऊ नहीं होते, द्वन्द्व और संघर्षों के बाद तलाक की नौबत आ जाती है।

महात्मा गॉधी ने दहेज के संबंध में कहा था – हमें नीचे गिराने वाली दहेज प्रथा की निन्दा करने वाला जोरदार लोकमत जाग्रत करना चाहिए और जो युवक इस तरह के पाप के पैरों से अपने हाथ गन्दें करे उसे समाज से निकाल देना चाहिए। केन्द्रीय सरकार ने 1951 में दहेज निरोधक अधिनियम बनाया परन्तु जनता के पूर्ण सहयोग के अभाव में यह कानून केवल पुस्तकों तक ही सीमित रहा। इस अधिनियम के अनुसार दहेज लेने और देने वाले को 5001 रू. जुर्माना और 6 माह की कैद होगी। उत्तर प्रदेश सरकार ने हाई स्कूल और इण्टर कॉलेज के छात्रों द्वारा लिखित श्शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करवाए है कि हम दहेज न लेगें और न देगें। ये श्शपथ पत्र शिक्षा निदेशालय उत्तर प्रदेश के यहॉ एकत्र किए गए। आर्य समाज एवं अन्य समाज सेवी संस्थाएं भी इस दिशा में प्रयत्नशील है। दहेज प्रथा के उन्मूलन के लिए देश के युवावर्ग में भी जागृति आवश्यक है। पुरानी रीति–रिवाजों में विश्वास रखने वाले पुराने लोगों की प्रवृति में आमूल परिवर्तन होना असंभव सा ही है। इसके लिए दृढ प्रतिज्ञ होकर युवक युवतियों को आगे आना चाहिए। अशिक्षित तथा रूढ़ीवादी प्रवृति के व्यक्तियों को दहेज के दुष्परिणामों से व्यापक रूप से परियित कराया जाए। लड़कियों की शिक्षा पर माता पिता अधिक ध्यान दें और उन्हें आत्मनिर्भर योग्य बनाएं केवल सामाजिक स्तर पर ही नहीं वरन् श्शासकीय स्तर पर भी, इससे (दहेज) मुक्ति पाने के लिए व्यापक प्रयत्न करने की आवश्यकता है। सरकार को चाहिए कि दहेज लेने और देने को कानूनी अपराध घोषित करके कठोर दण्ड की व्यवस्था करके, अतिशीघ्र लागू करें। लोगों में दहेज के विरूद्व सुनियोजित ढंग से प्रचार किया जाए। साथ ही इस कार्य के लिए सामाजिक चेतना से संपन्न जागरूक नागरिकों को भी आगे आना चाहिए। युवकों और युवतियों को चाहिए किवे

दहेज रहित विवाहों को प्रोत्साहन दें तथा स्वयं ऐसा विवाह करें जिसमें दहेज न लिया जाएं और न दिया जाए। लोगों में दहेज विरोधी भावना विकसित करने के लिए पत्र–पत्रिकाओं, रेडियों, सिनेमा आदि प्रचार माध्यमों का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए।

समय बदला देश की स्थिति बदली, हम स्वतन्त्र हुए, परन्तु हमारी प्रथाएं आज भी वैसी ही है, जैसे दो सौ वर्ष पहले थी। ये दोष कुछ हमारे ही घर के स्वार्थी, धर्म के ठेकेदारों ने हमारे समाज को दिए है। प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार ने दहेज पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। परन्तु इस कुप्रथा की जड़ें इतनी गहरी चली गई है कि उखाड़ने से भी नहीं उखड़ती। दहेज प्रथा हमारे समाज को खोखला करती जा रही है। इस भयंकर रोग से छुटकारा पाने के लिए भारत के हर नागरिक को सैनिक की भांति जूझना होगा, दहेज विरोधी अभियान चलाना होगा। अन्यथा दहेज रूपी अजगर हमारे समाज को पूरी तरह निगल जाएगा।

गति अभ्यास– 15

सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों के कार्यकलापों पर गहरा असंतोष व्यक्त करके प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आम जनता की भावनाओं को वाणी प्रदान की है। अभी तक आम लो. कतन्त्र या विपक्ष द्वारा अथवा समाचार पत्रों में सार्वजनिक क्षेत्रों की स्थिति की जो आलोचना होती थी उसे सम्बन्धित मंत्री, अधिकारी व कर्मचारी गम्भीरता से नहीं लेते थे और रस्मी उत्तर देकर या राजनीति प्रेरित आलोचना बताकर बच निकलते थे, लेकिन अब जब स्वयं प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों के कार्य–कलापों की आलोचना की है, तो उससे सम्बन्धित मंत्रियों और अधिकारियों के लिए अपनी बचत का रास्ता ढूँढना मुश्किल होगा। सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों ने इस देश में अपनी कार्य–पणाली से एसी प्रसिद्धि बना ली है कि लोग अब सार्वजनिक उद्यम का कार्य, घाटे का उद्यमअथवा नकारा राजनीतिज्ञों व सत्ताधारियों के चहेते अफसरों के ऐशगाह से लेने लगे हैं। ये ऐसे उद्योग साबित हुए हैं जो जनता के प्रति तो अपने को जवाबदेह मानते ही नहीं, उपभोक्ता के प्रति भी इन्हें किसी जिम्मेदारी का अहसास नहीं होतौ

आज बडे अफसर आमतौर पर सार्वजनिक प्रतिष्ठान में नियुक्ति को ऐशो–आराम व कमाई का मौका मानते हैं तथा अपना व अपने राजनीतिक आकाओं का घर भरने के लिए इन सार्वज. निक प्रतिष्ठानों का निर्मम दोहन करते हैं। प्रधानमंत्री ने अब जब इन सार्वजनिक प्रतिष्ठानों पर नजर डाली ही है तो उन्हें उनकी हालत को सुधारने के लिए पूरी कडाई दिखानी चाहिए तथा सम्बन्धित मंत्रियों के पत्र भेजने मात्र से ही सन्तोष नहीं करना चाहिए।

सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों की यह दुर्दशा क्यों हुई? और वे क्यों नहीं वास्तविक सेवा कर सके? इस पर भी विचार किया जाना समीचीन होगा। पहली बात तो यह है कि अधिकतर सार्वजनिक प्रतिष्ठान ऐसी सेवाओं अथवा उत्पादनों के नाम हैं जहॉ उनका एकाधिकार है और इसलिए उन्हें न तो किसी से प्रतिस्पर्धा करके सही व प्रतिस्पर्धी मूल्य पर उत्पादन या सेवा उपलब्ध करनी पडती है और न ही गुणवत्ता का ख्याल रखना होता है।

गति अभ्यास–16

इस सम्ताह मुझे रिजर्व बैंक से एक्सचेंज परमिट हिन्दी में मिला है। मैं नहीं समझता कि इस मामले में कोई कानूनी राक है, किन्तु सरकार का हिन्दी को बढावा देने से श्शायद केवल इतना ही सरोकार है । थोडे से नामपट्ट(साइन बोर्ड) हिन्दी में लगा देने और सरकारी प्रतिवेदनों तथा कुछ गजट, अधिसूचनाओं को हिन्दी में प्रकाशित कर देने मात्र से ही सरकार हिन्दी के प्रसार सम्बन्धी प्रयासों की अपनी इतिश्री समझ लेती है और इसी पर करोंडों रुपयों की राशि व्यय हो रही है।

नई दिल्ली में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन भी इस अभ्यास का एक भाग है। हिन्दी के प्रचार प्रसार की दिशा में कोई ठोस प्रयास करने के बजाए हिन्दी भाषा–भाषी आबादी के मतों को आकृष्ट करना ही इसका विशेष उद्देश्य प्रतीत हुआ। अनेक विदेशी प्रतिनिधीयों को विमान यात्रा के लिए टिकट निःशुल्क दिए गए थे। किन्तु उन्हें भी यह शिकायत रही कि उन्हें एक श्शब्द भी कहने का अवसर नहीं दिया गया । हिन्दी के कतिपय वरिष्ठ साहित्यकारों को भी जो इस सम्मेलन में श्शामिल हुए थे यह कहते सुना गया कि हमसे जैसा व्यवहार किया गया वैसा तो कुत्तों के साथ भी नहीं किया जाता

ऐसा लगता है मानों श्रीमती इंदिरा गॉधी के आशीर्वाद और आंशिक तौर पर सरकार द्वारा दी गई वित्तीय सहायता से संपन्न हुआ यह सम्मेलन अगले चुनाव का एक पूरा अभ्यास था और इसमें जो कुछ हुआ वह भी चुनाव के पूर्व होने वाला एक तमाशा सा ही लगता था। इससे भी अधिक अशोभनीय बात यह रही कि इसके लिए आंमत्रित किए जाने वालों का चयन करने में भी गुटबंदी की राजनीति से अपना खेल खेला यहां तक कि कांग्रेस के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री कमलापति त्रिपाठी को जिन्होनें हिन्दी के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। सम्मेलन से परे ही रखा गया।

वास्तव में यह हिन्दी और हिन्दी वालों की त्रासदी ही है हर चीज पर पक्षपात अथवा दलीय राजनीति की छाप लग जाती है हिन्दी को एक नारा मात्र बनाकर रख दिया गया है राजनीति इस नारों को अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ती के लिए रात दिन लगाते रहते है। और क्योंकि इन नेताओं मे जो प्रभावशाली है वेहिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र के है। अतः उन पर अॅगुली उठाने की कोई भी हिम्मत नहीं करता उन्होनें अपने संकीर्ण रवैये से हिन्दी की सबसे बड़ी कुसेवा की है। इसी कारण से वर्षों तक हिन्दी के प्रचार प्रसार में सक्रिय रहने के बाद भी चक्रवती राजगोपालाचार्य भी जो भारत के गर्वनर भी रहे थे। हिन्दी के विरोधी हो गए थे।

गति अभ्यास–17.

महात्मा तुलसीदास का जन्म बांदा जिले के राजापुर नामक गांव में हुआ था इनके पिता का नाम पं. आत्माराम तथा माता का नाम हुलसी था। ये सनाढ्य ब्राहण थे। कहा जाता है कि बाल्यावस्था में ही इनके माता पिता ने इन्हें छोड़ दिया था। इसलिए उन्हें बचपन में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था यहां तक कि उन्हें भिक्षाटन करके जीवननिर्वाह करना पड़ता था। अपने कठिन दरिद्रतापूर्ण जीवन का उल्लेख स्वयं तुलसीदास जी ने कई बार किया है। इनके गुरू का नाम बाबा नरहरिदास बताया जाता है। उनकी कृपा और परिश्रम से तुलसीदास जी ने धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया था और उन्हें अध्ययन में इतनी सफलता मिली कि आगे चलकर वे अपने युग के न केवल महान भक्त या कवि ही माने जाने लगे। अपितु वे एक प्रकाण्ड विद्वान भी समझे जाते थे

स्वाध्याय और शिक्षा के पूर्व का ही एक छोटा सा इतिहास है। और वह हैं रतनावली वाली प्रसिद्व घटना। तुलसीदास ने संभ्ावतः सन् 1530 ईस्वी में रतनावली से विवाह किया था जिसमें इन्हें एक बार फटकारते हुए भगवान राम से प्रेम करने की बात कही थी। तभी से इनके जीवन में परिवर्तन आ गया। और ये सन्यास लेकर साधुसन्तों की संगति में घूमने लगे। तुलसीदास जी ने उन्नीस वर्षों तक र्प्यटन किया इन्होने अयोध्या, चित्रकूट, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, मथुरा इत्यादि तीर्थ स्थानों की यात्रा की। जहां इनकी भेंट बड़े–बड़े साधु महात्माओं तथा कवियों से हुई तुलसीदास जी ने अपना अंतिम समय काशी में बिताया था। कहा जाता है। कि यहां इन्हें यश भी मिला और र्प्याप्त कष्ट भी। इन्हें एक बार भीषण बाहुपीड़ा भी हुई थी जिसके लिए इन्होनें हनुमान वन्दना की थी। हनुमान– बाहुक इसी समय में लिखा था। इन्होने अपने जीवन का अधिकांश भाग भगवना राम की गुणगान करनें में ही बिताया था। इसी संदर्भ में इन्होने कई ग्रन्थ लिखे। इनमें रामचरितमानस, कवितावाली, विनयपत्रिका और गीतावली प्रसिद्व है।

गति अभ्यास–18.

माननीय सभापति महोदय, हिन्दी जिस गति से अंग्रेजी का स्थान ले रही है। उस पर क्षोभ उचित हो सकता है। किन्तु हिन्दी भाषी राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने जिस ढंग से काम श्शुरू किया है यह सही नहीं है। वे हिन्दी को अपने–अपने राज्यों में बढ़ावा देने के तरीकों पर विचार करने के लिए मिलते रहते है। और चर्चा करते रहते है। इस बैठकों में नई दिल्ली के साथ इन राज्यों द्वारा पत्र व्यवहार में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने पर भी विचार किया जाता है। यह कोई दूरदर्शितापूर्ण नीति नहीं है। यह सहायक सिद्व होने के बजाए हानिकारक भी सिद्व हो सकती है। क्योंकि हिन्दी के प्रसार में बाधा डालने के लिए हिन्दी भाषी राज्यों के मुख्यमंत्री एकजुट हो गए तो क्या स्थिति होगी।

हिन्दी के कट्टर समर्थकों को यह नही भूलना चाहिए कि संविध ाान सभा में केवल एक मत बहुमत से ही हिन्दी को स्वीकार किया गया था यह एक वोट भी एक पंजाबी अर्थात ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर का था। इसी प्रकार 1957 से 1958 में जब तत्कालीन गृहमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत की अध्यक्षता में राजभाषा संबंधी संसदीय समिति की बैठक हुई थी तो यह सवाल नए सिरे से उठ खड़ा हुआ था उस समय भी केवल एक वोट के बहुमत से ही हिन्दी को स्वीकार किया गया था और यह एक वोट पश्चिमी बंगाल के एक कम्युनिस्ट सदस्य का था।

वास्तव में उन दिनों पुरूषोत्तम दास टंडन, मणिवेन पटेल और डॉक्टर रघुवीर ने जो हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे। और हिन्दी को तत्काल लाने के लिए बहुत अधिक व्यग्र थे और हिन्दी भाषी राज्यों के लिए अखिल भारतीय व केन्द्रीय सेवाओं में न्यूनतम कोटे की व्यवस्था की जाने की भी पेशकश की थी। तब दक्षिण भारत के एक सांसद ने आगे आकर इस सुझाव को लागू होने से रोका। इस सांसद का भावनाओं से ओत–प्रोत भाषण समिति के समक्ष हुआ। और उसमें चेतावनी दी थी कि कोर्ट प्रणाली भारत की एकता को ही नष्ट कर देगी उसने यह भी कहा था कि हिन्दी के आने में विलम्ब से कहर नहीं ढ़ह जाएगा।

गति अभ्यास–19

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को विश्व का रूप दिखाया, वह रूप इतना विस्मयकारी था कि जिसे देखकर अर्जुन भयभीत हो उठे, तीव्र ज्योति, अत्यंत ऊष्मा, द्रुतिगति, भयंकर कोलाहल देख अर्जुन के रूवरूप पर विचार करते है, तो स्थिति और जटिल हो एक कोमल अंश मात्र थी, उसका उग्र रूप और उसके रहस्य वर्णनातीत है, कृष्ण श्शब्द बडा विचित्र है; ब्लेकहोल और कृष्णपिण्ड विकिरण विज्ञान के महत्वपूर्ण अंग है। 'नान्तम् न मध्यम् न पुनस्तवादिम्' फिर इस विश्व का ओर–छोर प्रारम्भ करना होगा। विश्व के सारे पदार्थ एवम् विकिरण का समुच्चय है। इस समय हम पाते हैं कि सभी ग्लैक्सियां (आकाश गंगा) एक–दूसरे से दूर भागती जान पडती है। इस आभास की बुनियाद सुदूर तारापुंजों से निस्सारित प्रकाश में लाल विस्थापन का पाया जाना है। वर्तमानकाल में हम विश्व की प्रमुख विशेषता इसी में पाते हैं। यह एक बडी विचित्रता है, जिसे हम फैलते विश्व की संज्ञा देते है। एक ओर विचित्रता का पता 1965 में चला है। वह है इस विश्व की पृष्ठभूमि में सर्वत्र विद्यमान और एक जैसा सूक्ष्म तरंग विकिरण जो किसी कृष्णपिण्ड के तीन डिग्री केल्विन ताप पर विकिरण के सदृश है। इन्हीं दो तथ्यों के आधार पर अतीतकाल मे झॉका जाए, तो ऐसा लगता है कि एक अरब वर्ष पहले यह विश्व अत्यन्त सघन और गर्म अवस्था से आरम्भ हुआ था। इसी विश्व के निर्माण को विराट् आतिशबाजी मॉडल माना गया है, फिर भी ऑख का क्षणिक बिन्दु रहस्यमय है जो कल्पनातीत है और उसके पहले की अवस्था भी कल्पनातीत है। अब हम इस मॉडल के आधार पर विश्व के स्वरूप की छानबीन करें, जो समय की गति के साथ नित्य बदलना आया है।

गति अभ्यास–20

राष्ट्र की एकता की रक्षा को सर्वप्रधान कर्तव्य बतलाते हुए देश के मूर्धन्य विचारक तथा संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य पण्डित पट्टाभिराम श्शास्त्री ने अपने आरम्भिक उद्‌बोधन में प्रध ाानमंत्री को यह सोचने की प्रेरणा दी कि किन उपायों से इसका सम्पुष्ट किया जा सकता है और कैसी त्रुटियॉ हमारे संविधान तथा व्यावहारिक आचरण में आ गई है। जो इनमें बाधक है और इन्हें दूर करना परमावश्यक है। पण्डित पट्टाभिराम श्शास्त्री ने कहा कि यह सम्मेलन सारे देश के लिए आकर्षण का विषय है। यह एक विशेष वातावरण और विशिष्ट अनुभूतियों के परिप्रेक्ष्य में हो रहा है। चालीस वर्षों के स्वातन्त्रयकाल में एक परिपक्व प्रजातन्त्र के रूप में हम विकसित हुए हैं और इस लम्बी अवधि में हमें बहुत कुछ देखने और सिखने को मिला है। इस अनुभव के आधार पर यह स्पष्ट है कि राष्ट्र को हम सब लोगों की सेवाओं की नितान्त आवश्यकता है। राष्ट्रीय प्रशनों के समाध ाान में विवेकशील ,उदारदृष्टी सम्पन्न सत्यनिष्ट चिन्तकों का योगदान अनिवार्य महत्व रखता है। आज ऐसा समय आ गयसा है कि विद्वान लोग बपनी विद्या ,परम्परा और प्रयोग द्वारा पवित्र विशाल दृष्टि से राष्ट्र के पथ प्रर्दशन में अग्रसर हों ,जिससे चिन्तकों एवम् सत्ता के सहयोग से एक अलौकिक श्शक्ति की दृष्टि हो सके ,इसी कर्तव्य का निरूपण सुत्र रूप में करते हुए आचार्य प्रवर ने महार्षि वेदव्यास के कथन का उदाहरण देकर कहा कि जब अधर्म द्वारा धर्म की और असत्य द्वारा सत्य की हत्या हो रही हो ,तब उसको देखते रहना भी सर्वथा अन्याय है बौद्धिकवर्ग एवं प्रबुद्धजन ऐसे समय में मौन नहीं रह सकते। राष्ट्रिय एकता को सम्पुष्ट करते रहने के लिए सदा सर्वथा प्रयत्नशील रहना और इसमें श्शासक तथा श्शासित वर्ग को संयोजित करते रहना बौद्धिक जनों का सर्वप्रधान कर्तव्य है। श्शास्त्री महोदय ने कहा कि भारतीय गणराज्य के मूल में सर्व –धर्म–सम्भाव है जोकि भारतीय संस्कृति की अनुपम देन है।

गति अभ्यास–21

गरिराज हिमालय के चिरशुभ्र हिमाच्छदित शिखरों से तीव्र वेग से फूटकर निकलने वाले कितने झरने एवं गरजते हुए जलप्रपात ,कितने बर्फिले नाले और सततप्रवाही नदियॉ एक साथ मिलकर विशाल सुर –सरिता गंगा जी के रूप में प्रवाहित होती हुई समुद्र की ओर भयंकर वेग से दौडती है ।इसी प्रकार अगणित सन्तों के ह्रदय से तथा विभिन्न भू–भागों के प्रतिभाशाली व्यक्तियों के मस्तिष्क से उत्पन्न हुए कितने प्रकार के भावों तथा विचारों एवं श्शक्ति प्रवाहों ने उच्चतर मानवीय कार्यों के प्रदर्शन क्षेत्र कर्म भूमि भारत को पहले से ही व्याप्त कर रखा है।

सचमुच भारत विभिन्न मानव वंशों का मानों एक संग्रहलाय है। नर और वानर में संबंध स्थापित करने वाला जो एक अस्थि. कंकाल हाल ही में सुमात्रा में पाया गया है। वह श्शोध करने पर संभवतः यहां भी प्राप्त हो सकता है। यहां प्रागैतिहासिक काल के पाषाण निर्मित द्वारा प्रकारों का अभाव नहीं। चकमक के औजार तो प्रायः कहीं भी खोद कर निकाले जा सकते है। फिर ऐतिहासिक काल के नेग्रिटोकॉलेरियन द्राविड़ तथा आर्य मानव वंश भी यहां पाए जाते है। इनके साथ समय–समय पर प्रायः समस्त ज्ञात एवं बहुत से आज भी अज्ञात मानव वंशों का किसी अंश में सम्मिश्रण होता रहा है। उंफति उबलती संघर्ष करती और सतत रूप बदलती हुई तथा ऊपरी सतह तक उठकर फैल कर छोटी–छोटी लहरों को निगलकर पुनः श्शांत होती हुई इस विभिन्न वंशरूपी तंरगों से बना हुआ मानवता का महासागर वही है भारतवर्ष का इतिहास।

इन विभिन्न मानव वंशों के सहयोग से हमारे वर्तमान समाजों रीतियों और रूढ़ियों का विकास होना प्रारम्भ हुआ। नए विचार उत्पन्न होते गए और नए विज्ञानों का बीजारोपण होने लगा।

गति अभ्यास–22

अध्यक्षजी, भारतीय समाज कल्याण मंत्रालय तथा राष्ट्र संघ के सहयोग से विगत दिवस में बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए जो अफ्रो–एशियाई सम्मेलन हुआ, उसके सुझाव बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। चूँकि यह सम्मेलन स्वयं भारत सरकार की पहल से हुआ है, अतः यह आशा की जानी चाहिए कि इस देश में भी बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए सही वातावरण बनेगा, पर अभी तो मात्र आशा ही की जाती है, क्योंकि हमारे नेता मंच पर कुछ और बोलते हैं और व्यवहार में उनके कार्य दूसरे प्रकार के होते हैं। भारत सरकार की पहल से यह कोई पहला अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन दिल्ली में नहीं हुआ है। अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर इससे पहले भी सम्मेलन हो चुके हैं, परन्तु इन सम्मेलनों की अनुशंसाऔ को कार्यान्वित कर सकने में भारत सरकार असफल रही है।

बच्चों के अधिकारों के सम्बन्ध में जो सम्मेलन दिल्ली में हुआ उससे केवल इतनी बात तो स्पष्ट हो जाती है कि सम्स्या के प्रति केन्द्रीय सत्ता जागरूक है, पर हमारी वर्तमान संघीय व्यवस्था में केन्द्र राज्य सरकारों को इस दिशा में कार्य करने के लिए विशेषरूप से प्रेरित कर सकेगा, इसकी सम्भावना बहुत ही कम है। हमारे देश के बच्चे कुपोषण से ग्रस्त हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए उन्हें उचित सुविधाएं नहीं मिलतीं तथा खंलकूद के सन्दर्भ में भी आज भारतीय बच्चों के पास साध ाारण सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं। पब्लिक स्कूलों में पढने वाले बच्चों को मिलनी चाहिए वह उन्हें नहीं मिल पातीं। छोटे श्शहरों और कस्बों के स्कूलों में क्या होता होगा इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि हमारे देश के जो बड़े–बड़े महानगर हैं और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के महानगर हैं, वहॉ के स्कूलों में खेलकूद की सुविधाएँ दिन–प्रतिदिन जान बूझकर कम की जा रही हैं। खेलकूद के लिए छोड़े गए मैदानों पर या तो किरायाखोरी के लिए भवन बनाए जा रहे हैं अथवा उनका प्रयोग अन्य ऐसे कार्यों में किया जा रहा है, जिनके परिणमस्वरूप बच्चों को उनके अधिकार नहीं मिल पाते।

गति अभ्यास–23

अध्यक्ष जी, आज हमारे देश में किसी भी पद के लिए भर्ती की जो व्यवस्था है, वह इतनी श्रम, समय और अर्थ–साध्य है कि नौकरी पाना बहुत खर्चीला हो गया है। अब लगभग हर सरकारी विभाग को, बैंकों और जीवन–बीमा निगम आदि को बड़े पैमाने पर क्लर्कों, इन्सपेक्टरों आदि की जरूरत होती है और उनकी भर्ती के लिए हर विभाग अपनी अलग–अलग परीक्षा लेता है, इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि जो परीक्षाएँ विभिन्न बोर्डों द्वारा ली जाती हैं उन पर ये विभाग विश्वास नहीं करते अथवा जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, वह व्यक्ति को नौकरीयों के लिए तैयार नहीं करता । यदि दनमें से कोई भी कारण है, तो उसका निराकरण होना चाहिए।

अब सभी क्षेत्रों में विशेषता का युग आ गया है, तो कॉलेजों में क्लर्कों, आशुलिपिक, सेक्रेटरीशिप, इन्सपेक्ट्री आदि के पाठ्यक्रम एक विशेष स्तर के बाद, ऐच्छिक विषय के रूप में क्यों नहीं पढ़ाए जाते? और उनमें उत्तीर्ण लड़कों का मेरिट के आधार पर चयन करके उनका इन्टरव्यू करके भर्ती क्यों नहीं कर ली जाती? इससे कम–से–कम छात्रों को उस कम का सही प्रशिक्षण तो मिल सकेगस, जिसके लिए उन्हें भर्ती किया जाना है।

अभी आशुलेखन आदि के जो पाठ्यक्रम सरकारी संस्थानों में पढ़ाए जाते हैं, उनमें सीटें बहुत कम रहती हैं और इसमें पर्याप्त संस्था में उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारी न तो सरकार को उपलब्ध हो पाते हैं और न ही निजी उद्योगों व व्यापार में लग पाते हैं। जो शिक्षा व्यक्ति को रोजगार की योग्यता नहीं दे पाती, उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं कर पाती और उसेमहज डंडे व धक्कं खाने योग्य बनाती है, उसे जारी रखने से क्या लाभ? जिन्हें क्लर्की करना है उन्हें फाइलिंग, पत्रलेखन, टिप्पणी लेखन, रिपोर्ट बनाने आदि के पाठ्यक्रम न पढ़ा करके, तृतीय या द्वितीय श्रेणी के कला स्नातक या परास्नातक बना देने से क्या लाभ? व्यक्ति को उपयोगी शिक्षा उपलब्ध कराना तथा उसे सम्मानपूर्ण रोजगार कराना सरकार की जिम्मेदारी है।

गति अभ्यास–24

कानपुर व लखनऊ में हुई राष्ट्रीय स्तर की दो प्रतियोगिताओं के दौरान उत्तर प्रदेश के दो खिलाड़ियों– गाजियाबाद के विपिन गर्ग और कानपुर के सजीव पाठक ने अपने श्शानदार खेल के द्वारा जो करिश्मा दिखाया है उससे स्पष्ट हो गया है हि प्रशिक्षण व साधनों के अभाव के बावजूद भी ये खिलाड़ी मामूली नहीं है।

कानपुर के आर्डिनेंस क्लब हाल में विपिन गर्ग ने सर्वप्रथम एस. रामास्वामी के खिलाफ प्रथम खेल हार जाने के बावजूद अपनी संघर्ष क्षमता का प्रदर्शन करते हुए 18–21, 21–17 व 21–17 से जीत दर्ज करके जो सनसनी फैलाई वह अगले दिन उस समय जोरदार धमाके के रूप में बदल गई, जब विपिन ने कर्यू–राज सरीखे दिग्गज को भी हरा दिया। विपिन गर्ग अन्तिम आठ खिलाड़ियों की लीग हेतु स्थान सुरक्षित करने वाला उत्तर प्रदेश का एक मात्र खिलाड़ी बना और बाद में उसे पुरुष सिंगल्स में आठवाँ स्थान ही प्राप्त हुआ।

दूसरी ओर हैं–कानपुर के संजीव पाठक जिसे कि राष्ट्रीय रैंकिंग में जूनियर वर्ग में छठा स्थान मिला हुआ है। लखनऊ के के. डी. सिंह बाबू हाल में जूनियर सिंगल्स फाइनल में जब जयंत घाटे को हराने में सफल हुआ, तो इसे संजीवकी अप्रत्याशित जीत माना गया। संजीव का फाइनल में मुकाबला हुआ असम के अरुण ज्योति बरुआ से , जोकि मौजूदा रैंकिंग में देश का श्शीर्ष खिलाड़ी है। संजीव ने वैसे तो बरुआ को लड़ाकर रख दिया और पूरे मैच के दौरान संघर्ष भी हुआ। बरुआ हालाकि 3–1 से जीत गया, लेकिन कहना गलत न होगा कि संजीव यदि धैर्य एकाग्रता के साथ बरुआ के खिलाफ खेला होता, जैसा कि वह तीसरे खेल में खेला वैसा ही खेल पूरे मैच में अपनाया होता, तो कोई ताज्जुब नहीं कि वह बरुआ को हराने में भी सफल हो जाता।

गति अभ्यास–25

मान्यवर, जिस विषय पर चर्चा हो रही है उस विषय का हमारे देश के जनजीवन से हमारे देश के लोकतन्त्र से और हमारे देश की कानून–व्यवस्था से सीधा सम्बन्ध है, यही कारण है कि आजादी के बाद और आजादी के पहले इस विषय पर हमारे देश के जो राजनीतिज्ञ और शिक्षाशास्त्री हैं, जो इस विषय में रुचि रखते है और मान्यवर, जो हमारे देश के प्रशासक रहे हैं उन सबने समय–समय पर जो हमारी शिक्षा–पद्धति है, उसमें आमूलचूल परिवर्तन की पहल की है। इस विषय के बारे में काफी गम्भीर चिन्तन हुआ है। आज भी अगर हम इस स्थिति पर विचार करें , तो हमारे देश में शिक्षा का क्या प्रभाव है, तो हम देखते हैं कि चारों ओर जितने भी विश्वविद्यालय हैं, वे बन्द हैं सब जगह झगड़े फैल रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये शिक्षा मन्दिर नहीं है वरन् हिंसा और उपद्रव के अखाड़े बन गए है। मैं नहीं मानता हूँ कि इसमें विधार्थीयों की गलती है। यह हमारी शिक्षा पद्धति का ही दोष है। इस प्रकार शिक्षा पद्ध ति में सुधार होना ही चाहिए।

शिक्षा पद्धति के परिवर्तन के बारे में हमारे यहां गंभीर चिंतन हो रहा है। वर्तमान शिक्षा पद्धति अंग्रेजी राज की देन है। लोर्ड मैकाले ने हमारे देश में जिस प्रणाली को लागू किया था। उसी का थोड़ा–बहुत रूप आज भी मौजूद है। 1968 में पिछले श्शासन ने शिक्षा की एक राष्ट्रीय नीति की घोषणा की थी और यह निश्चित किया था कि उसमें समय–समय पर सुधार और परिवर्तन होता रहेगा। आज यह मांग जोरों से है। कि हमारी एक निश्चित राष्ट्रीय नीति शिक्षा के संबंध में होनी चाहिए। मै यह कहना चाहूँगा कि राष्ट्रीय नीति की घोषणा होने से पहले उसका सीधा संबंध जिन लोगों से है। उनके विचारों को सुनने के पश्चात ही लागू करना चाहिए।

गति अभ्यास–26.

हमारे देश का कृषि क्षेत्र में वांछित विकास तभी संभव है। जब कि कृषि उत्पादकता में वृद्धि लाने तथा गरीबी, भुखमरी एवं अकाल से कृषकों की रक्षा करने के लिए व उन्हें खुशहाल बनाने के लिए दीर्घावधी ऋणवित्त के प्रति व्याप्त उपेक्षा की भावना को समाप्त करने का प्रयास किया जाए। इसके लिए कृषि क्षेत्र में भी इसे उधोगों के समकक्ष मानते हुए विनियोजन निधी की व्यवस्था श्शीघ्रअतिशीघ्र की जानी चाहिए।

देश की राष्ट्रीय आय में कृषि का 50 प्रतिशत योगदान है। जबकि औधोगिक क्षेत्र का मात्र 18 प्रतिशत। इसलिए यह और भी उचित है कि अन्य उधोगों की भॉति कृषि के लिए भी दीर्घावधी विनियोजन योग्य निधि जो वर्तमान में न्यूनतम या नाम मात्र ही है। उपलब्ध कराई जाए।

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान देना होगा कि कृषकों को जो ऋण वितरित किया जाए उसका सही उद्देश्य के लिए ही उपयोग हों। ऋण का दुरूपयोग न केवल समग्र आर्थिक पद्ध ति को ही कुप्रभावित करता है। अपितु अन्ततोगत्वा ऋणि की भुगतान की क्षमता में कमी आती है। यह दुर्भाग्य की बात है कि अभी भी हमारे पिछले क्षेत्रों शिक्षा का वांछित प्रसार नहीं हुआ है। आज भी इन क्षेत्रों के अधिकांश कृषक अशिक्षित है। इन अशिक्षित कृषकों को जो नाममात्र के ऋण प्राप्त होते है उनके लिए भी अनेक दुरूह पथों से गुजरना पड़ता है। उन्हें आवेदित ऋण श्शीघ्र स्वीकृत करानें के लिए या उसे गति में लाने के लिए प्रायः रिश्वत का सहारा लेना पड़ता है। तब कहीं जाकर उसे अपने कृषि उधोग में भी नियोजित करने के लिए ऋण के रूप में जो राशि मिलती है। वह रिश्वत राशि के कारण प्रायः ऋण से कहीं कम हो जाती है। यही नहीं प्राथमिक भूमि विकास बैंकों द्वारा कृषकों के ऋण आवेदन पत्रों के निष्पादन में जो लम्बा समय लगता है अथवा जिस क्लिष्ट प्रक्रिया से आवेदन पत्र को गुजरना पड़ता है। वह भी अवर्णनीय है।

गति अभ्यास–27.

विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक आबादी वाला देश भारत है। दुनिया की कुल आबादी का 15 प्रतिशत भाग हमारे देश में निवास करता है। जबकि क्षेत्रफल के लिहाज से विश्व के कुल भू–भाग का 2.5 प्रतिशत से भी कम भू–भाग है। 1981 की जनगणना के अनुसार हमारे देश की जनसॅख्या 68 करोड़ 40 लाख थी। जो आज बढ़कर ..... से भी अधिक हो चुकी है। 1971 से 1981 के दशक में जनसॅख्या में 24.25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पिछले दशक के मुकाबले में आंशिक कमी आई है। अब हमारी जनसॅख्या का पठारी स्वरूप आरम्भ होने लगा है।

जनसॅख्या के रजिस्ट्रार द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार 1971 से 1981 के बीच देश में सर्वाधिक जनसॅख्या में वृद्वि मुसलमानों की हुई। जो 30.50 प्रतिशत हैं सबसें कम वृद्वि ईसाइयों की हुई जो 16.77 प्रतिशत है। हिन्दुओं की जनसॅख्या मे वृद्वि 24.50 प्रतिशत सिक्खों की 26.15 प्रतिशत, बौद्वुओं की 22.52 प्रतिशत और जैनियों की 23.69 प्रतिशत हुई।

विगत दस वर्षों में देश की जनसॅख्या में 24.69 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। हिन्दुओं की सॅख्या 4420 लाख से बढ़कर 5190 लाख हो गई। अर्थात वृद्वी 24.15 प्रतिशत हुई। परन्तु कुल आबादी में हिन्दू सॅख्या का अनुपात 83 प्रतिशत रह गया। मुस्लिम आबादी गत 20 वर्षों में 578 लाख से बढ़कर 7573 लाख हो गई। जो कि 30.59 प्रतिशत बढ़ी। कुल आबादी में मुस्लिम अनुपात आधा प्रतिशत बढ़ा। अर्थात् 10.84 बढ़कर 11.35 प्रतिशत हो गया।

1971 की जनगणना में देश में कुल 131 लाख ईसाई थे। अब वे बढ़कर 167.7 लाख हो गए है। देश की आबादी में ईसाई अनुपात 2.59 प्रतिशत था। यह घटकर 2.43 प्रतिशत रह गया। सिक्खों की आबादी 1 करोड़ 30 हजार से बढ़कर 1 करोड़ 30 लाख हो गई। उनकी जनसॅख्या में वृद्वी 20.15 प्रतिशत वृद्वी हुई। उनकी आबादी का अनुपात भी 1.94 से बढ़कर 1.96 हो गया। बौद्ध मावलम्बी 38 लाख से बढ़कर 47 लाख हो गए है। जैन दो करोड़ 59 लाख से बढ़कर तीन करोड़ बीस लाख हो गए है। आन्ध्र, गुजरात, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, मणिपुर व नागालैण्ड में हिन्दुओं की सॅख्या बढ़ी है। श्शेष राज्यों में हिन्दुओं की आबादी का प्रतिशत कम हुआ है।

गति अभ्यास–28.

हमारे मुख्यमंत्री समय–समय पर नैतिक शिक्षा से लेकर पुलिस के कर्तव्यों तक पर अपने सामयिक विचार व्यक्त करते रहे है। उन्हे ंराज्य की समस्याओं की अच्छी जानकारी है और वे उनके प्रति जागरूक भी रहते है। श्शायद साधनों के अभाव के कारण उन्हें हल करने की दिशा में उतनी प्रगति नहीं हो पाती। जितनी कि श्शायद स्वयं मुख्यमंत्री और राज्य के नागरिक भी अपेक्षा रखते है।

जहॉ तक पुलिस का संबंध है। सत्ताधारी नेताओं से उपदेश, निर्देश व आदेश पाना, विपक्षियों से आलोचना पाना तथा आम आदमियों में गालियां पाना और गालियां देना भी उसकी मजबूरी है। पुलिस को यह हर कोई बताने को तैयार रहता है। कि उसे अपना काम किस तरह करना चाहिए और यह चाहे प्रजातंत्र में जनता का और इस नाते जन प्रतिनिधियों का भी अधिकार है। यह जानने की कोशीश कम ही की जाती है। कि पुलिस स्वंय अपनी कार्यविधी और समस्याओं के बारे में क्या सोचती है। और उन्हें किस प्रकार से हल करने का इरादा रखती है। यह ठीक है कि पुलिस को इस मामले में एकदम मनमानी करने की इजाजत नहीं दी जा सकती लेकिन उसकी राय तो पता की ही जानी चाहिए पुलिस के संबंध में जो आयोग या समितियां गठित होती है। उनकी सिफारिशों पर मुख्यतः रा. जनीतिक कारणों से और गौणतः आर्थिक व कानूनी कारणों से अमल नहीं किया जाता आज देश की क्या आवश्यकताएं और उन्हें देखतें हुए किस प्रकार की और कितनी सॅख्या में पुलिस होनी चाहिए तथा उसे किस प्रकार का प्रशिक्षण व सुविधा दी जाएं। जब तक इन बुनियादी बातों पर विचार नहीं होता तथा उसके अनुसार परिवर्तन नहीं किये जाते तब पुलिस अपराधीयों पर कड़ी नजर रख पाने की अपेक्षा तो पूरी कर ही नहीं कर पाएगी। हां अलबत्ता सत्ताधारीयों की भू–भंगिमा पर जरूर नजर रखती रहेगी क्यों कि उसी से उसका बनना बिगड़ना है।

गति अभ्यास–29.

हिन्दी और उर्दू मूल में एक ही भाषा है। उर्दू हिन्दी का केवल मुसलमानी रूप है आज कई श्शतक बीत जाने पर इन दोनों में विशेष अन्तर नहीं है। इसके अनुयायी लोग नाम मात्र के अन्तर को वृथा ही बढ़ा रहे है। यदि हम लोग हिन्दी में संस्कृत के और मुसलमान लोग अरबी फारसी के श्शब्द कम लिखें तो दोनों भाषाओं में अन्तर कम हो जाएं और संभव है किसी दिन दोनों समुदायों की लिपी और भाषा एक हो जाएं। धर्मभेद के कारण पिछली श्शताब्दी में हिन्दी और उर्दू प्रचारको ंमें परस्पर खींचा तानी श्शुरू हो गई। मुसलमान हिन्दी से घृणा करने लगे और हिन्दुओं में हिन्दी के प्रचार पर जोर दिया परिणाम यह हुआ कि हिन्दी में संस्कृत श्शब्द और उर्दू में अरबी फारसी श्शब्द की अधिकता हो गई फलतः दोनों भाषाओं में काफी अन्तर आ गया। इसके बाद राजनीतिक कारणों से हिन्दी और उर्दू मिश्रित हिन्दुस्तानी भाषा पर बल दिया गया।

आरम्भ से ही हिन्दी और उर्दू में कई बातो में अन्तर रहा है। उर्दू फारसी लिपी में लिखी जाती है जबकि हिन्दी देवनागरी में। उर्दू में अरबी फारसी श्शब्दों की भरमार रहती है। और इसकी वाक्य रचना में प्रायः विशेष्य विशेषण के पहले आता है। कविता में फारसी का संबोधन कारक के रूप में प्रयुक्त होता है। हिन्दी में हिन्दी के संबंध वाचक सर्वनाम के बदले उसमें कभी कभी फारसी का संबंध वाचक सर्वनाम आता है। इसके सिवा रचना में और भी दो एक बातों का अन्तर है। कोई–कोई उर्दू लेखक इन विदेशी श्शब्दों के लिखने में सीमा से बाहर चले जाते है। उर्दू और हिन्दी की छंद रचना में भी भेद है। मुसलमान लोग फारसी अरबी के छंदों का प्रयोग करते है। इसके अलावा उनके साहित्य में मुसलमानी इतिहास और दंत कथाओं का बहुत उल्लेख रहता है। श्शेष दोनों बातों में दोनों भाषा एक है।

गति अभ्यास–30.

प्रधानमंत्री सचिवालय में फिर पंजाबी लॉबी का नाम कश्मीरी लॉबी में जमकर ठनी हुई है। जिसका अप्रत्यक्ष लाभ दिल्ली के कुछ वरिष्ठ पत्रकारों को हो रहा है । ताजी घटना महाराष्ट्र में प्रदेश इंका अध्यक्ष की नियुक्ती को लेकर हुई जो आपसी खींच तान की है राजीव गांधी और अरूण नेहरू की इच्छा थी कि महाराष्ट्र प्रदेश इंका के अध्यक्ष पद पर महाराष्ट्र के मुंख्यमंत्री बसंतदादा पाटिल के ही किसी आदमी को नियुक्त किया जाए । श्री आर. के. धवन और ब्रम्हचारी लॉबी ने पहले मोहम्मद असीर फिर प्रो. कामले को इस पद पर किसी तरह बिठवा दिया । इससे इंका हाई कमान की स्थिति दोहरा वाली हो गई । महाराष्ट्र में दोनों ही व्यक्ति ए.आर.अन्तुले के खास माने जाते हैं । इस घटना से इंका महासचिव अरूण नेहरू भी काफी दुखी है। धवन के कारण ही इंका को विवादास्पद स्थिति में फॅसना पड़ा । इस कारण चर्चा है कि धवन का श्शीघ्र ही किसी पड़ोसी देश में उच्चायुक्त बनाकर भेजा जाएगा ।

असम और पंजाब के मामले पर लोकसभा में विपक्षी सांसदों एवं इण्डिया टु–डे में श्री अरूण श्शौरी क`लेख की परेशानी इंका को अब उठानी पड़ रही है । नार्थ ब्लॉक और साउथ ब्लॉक में चर्चा यह है कि अरूण श्शौरी को आर. के धवन ने मदद की थी । गाय की चर्बी वाले मामले में भी धवन ने श्शुद्ध जैन वनस्पति के मालिक विनोद कुमार जैन को बचाने की बहुत कोशिश की । इससे ही विपक्ष को सरकार पर हमला करने का मौका मिला । लोकदल सांसद भी हरगोविन्द वर्मा ने इस बात को कहा कि जैन धवन के खास मित्र रहे हैं ।

दूसरी ओर प्रधानमंत्री सचिवालय के वरिष्ठ अफसरों में दिसम्बर में जबरदस्त फेर बदल की भी चर्चा है। कुछ नए प्रभावशाली जानकार व्यक्तियों को उत्तरदायित्व वाले पदों पर नियुक्त किए जाने की चर्चा है। लोकसभा के मौजूद सत्र एवं राष्ट्रमंडल के देशों के प्रमुखों के सम्मेलन के बाद केन्द्रिय मंत्रिमण्डल में भी फेर बदल किया जाएगा ।

अभ्यास –31

मान्यवर , लोकतंत्र का दुरूपयोग करके पदलोलुप व्यक्ति किस प्रकार कसे तानाशाह बन जाते हैं और फिर लोकतंत्र की दुहाई देते रहते हैं इसका सबसे ताजा उदाहरण हैं –मार्कोस जो अभी कुछ दिन पहले तक फिलीपीन्स के राष्ट्रपति थे । प्रतिबद्ध नौकरशाही पुलिस का सहारा लेकर मतपेटियों में परिवर्तन करके विपक्षी नेताओं पर तरह –तरह के जुल्म ढाने वाला वह व्यक्ति , आज अपनी ही जनता के द्वारा उखाड़कर फेंक दिया गया और एंसा फेंका गया कि अब पीढ़ी दर पीढ़ी तक कोई भी उस व्यक्ति का नाम सम्मानपूर्वक लेगा ही नहीं और इतिहास में उसे काला धब्बा बतलाया जाएगा । महान् दार्शनिक अरविन्द अक्सर कहा करते थे कि जब सात्विक श्शक्तियों का दमन बहुत किया जाता है, तब एक अवसर ऐसा आता है जब प्रकृति बदला लेने के लिए करवट लेती है और उस करवट से जो संहार होता है , उससे बहुत कुछ तहस – नहस हो जाता है । फिलीपीन्स में लोकतंत्र की आड़ लेकर और लोकतंत्र का नाटक करके जिस प्रकार से जनभावनाओं की हत्या की गई उसके विरोध में एक दिन जनता की अंगड़ाई लेनी ही थी । जनता की अंगड़ाई से मार्कोस का पतन हुआ । उसे अपने देश से भागना पड़ा । यह भी एक दुखद सत्य है कि ऐसे व्यक्ति सामान्यतया विदेशी राष्ट्रों का सहयोग लेते हैं। विदेशी सेनाओं के बलबूते वे न केवल सत्ता में बैठे रहते हैं , बल्कि अपने ही देश की जनता पर तरह – तरह के अत्याचार करते हैं । मार्कोस की कहानी और उसकी सत्ता का इतिहास इसी बात का सबसे ताजा प्रमाण है।

दुनिया के जो तमाम लोकतांत्रिक देश हैं और विशेष रूप से विकासशील देश जहॉ लोकतंत्र की जड़ें पूरी तरह से गहरी नही ंजम सकी हैं, उन्हें मार्कोस के पतन से सबक लेना चाहिए । जिन लोगों ने विपक्ष को कुचल डालने की आदत सी बना ली है और जहॉ लोकतंत्र का सहारा लेकर विपक्ष पर तरह – तरह के आरोप लगाए जाते हैं उन्हें कुचलने की साजिश की जाती है, वहॉ के लोगों को मार्कोस की कहानी से सबक लेना चाहिए । आज सत्ता में बैठा हुआ दल नौकरशाही औश्र पुलिस को अपना एजेन्ट मान लेता है और उनके द्वारा ही अपने राजनीतिक हितों की रक्षा के लिए हर प्रकार के कर्म और दुष्कर्म करवाता है। पुलिस और प्रशासन यदि सत्ता के दलाल बन जाएंगे तो ऐसी स्थिति में वे लोकतंत्र की रक्षा नहीं कर सकते ।

अभ्यास – 32

आजकल भारत में व्यवसायिक प्रतियोगिता में बढ़ चढ़ कर भाग लिया जा रहा है। व्यवसायिकता की इस अन्धी दौड़ में तरह – तरह के नवीन उद्योगों को लगाने का कार्य दिनरात चल रहा है। नयी – नयी कालोनियॉ को बसाया जा रहा है । इस सबसे न सिर्फ प्रदुषण बढ़ रहा है वरन मानव जीवन के स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है। भौतिकता इस दौड़ से कालोनियों एवं मनुष्य जाति के स्वास्थ्य को बचाने के लिये माननीय सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा दिये गये दिशा – निर्देशों के अन्तर्गत दिल्ली सरकार ने एक कानून बनाकर इस गम्भीर समस्या का निदान किया है। सरकान ने क्षेत्र में सी0 एन0 जी0 गैस के प्रयोग को बढ़ावा देते हुए सभी वाहनों में सी0 एन0 जी0 गैस का प्रयोग अनिवार्य कर दिया है। जिस प्रकार ट्रैफिक के नियमों का पालन करते हुए हैल्मेट का पहनना ,सीट बैल्ट बॉधना ,समस्त कागजातें का होना आवश्यक है, उसी प्रकार वाहन में सी0 एन0 जी0 गैस किट का होना भी आवश्यक है । ऐसा ना पाया जाने पर कानून का उल्लंघन माना जाता है और यातायात के नियमों के अनुसार दण्ड का भी प्रावधान है । जिस प्रकार किसी भी तकनीक के लाभ एवं हानियॉ है, उसी प्रकार से सी0 एन0 जी0 गैस के भी प्रभाव एवं दुष्प्रभाव है। सी0 एन0 जी0 गैस युक्त वाहन न सिर्फ बहुत जल्दी गर्म हो जाते हैं वरन गर्मी के कारण इसकी किट में आग लगने का खतरा भी रहता है। इनको ठण्डा रखना बहुत आवश्यक है। ऐसा न होने पर आग लगने का भय हो जाता है। सरकार द्व ारा सी0 एन0 जी0 गैस की सप्लाई के लिए जगह – जगह सी0 एन0 जी0 गैस फिलिंग स्टेशन्स पर भी सुरक्षा के यही कारण है। जिनसे सरकार को निरन्तर नये प्रयोग करने पड़ रहें हैं । लेकिन इन सभी के बावजूद सी0 एन0 जी0 गैस के प्रयोग ने न सिर्फ प्रदूषण को कम कर दिया है, वरन् लाखों लोगों को एक नया व्यापार भी दिया है। जोकि भारतवर्ष की जनता के लिए एक वरदान है।

अभ्यास –33

आज विदेशी कम्पनियों के मोबाइल फोन आ जाने से व्यापारियों एवं सफर करने वालों के वास्ते काफी राहत मिली है। चलते –चलते व्यापार से सम्बन्धित सारी बातें आराम से एक दूसरे से कर सकते है। टेलीफोन के तार तो जमीन में डाले होते हैं किन्तु मोबाइल फोन से सीमित सीमा तक आपस में एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं इसमें एक कार्ड पड़ा हुआ होता है इस में जितने पैसे का बैलेंस होता है, उतने ही पैसों की बात कर सकते हैं । जब यह बैलेंस खत्म हो जाता है तब यह काम करना बन्द कर देता हैं । नोकिया ,सैमसंग,सोनी,एल.जी., पैनाफोन , टाटा, रिलायन्स तथा एरिक्सन आदि के नाम से आते हैं मोबाइल फोन काफी सस्ते भी आ गये है। इस तरह के फोनों मे तरह – तरह की नयी – नयी योजनाएं ग्राहकों को मिल रही हैं । जैसे कि एक ग्राहक मात्र 100 रूपये के बैलेंस में 100 रूपये की ही बातें कर सकता हैं। केवल कनैक्शन लेना ही मंहगा होता ह। लड़के या लडकियां कहीं पर भी होते हैं, तो एक दूसरे से सारी जानकारियॉ मिल जाती है। आजकल मोबाइल फोन ज्यादातर हर इंसान के पास मिल जाते हैं। मोबाइल फोन पर पाबन्दी लगाकर आप सोचते हैं की छात्र – छात्राओं को मोबाइल फोन प्रेम प्रपंच के लिए नहीं लाते है। इसके पीछे उनका और उनके अभिभावकों का मकसद मात्र अपने बच्चों से सम्पर्क में रहने का होता है। कहीं कोई घटना या दुर्घटना होने पर छात्र – छात्राएं मात्र मोबाइल फोन के सहारे ही अपने प्रियजनों को सूचित कर सकता है। श्शहर में आजकल अपहरण , सड़क दुर्घटना तथा छेड़खानी जैसी वाद. रातें होना सामान्य हो चुका है और इससे बचने का मात्र एक उपाय मोबाइल फोन ही है। आज हर आदमी इसको रखने में आवश्यकता महसूस करता है। परन्तु एक बहुत ही खास परेशानी भी सामने आ रही है, जिसमें न सिर्फ मोबाइल फोन रखने वाले को ही नुकसान है, वरन उसके आसपास के व्यक्तियों को भी नुकसान पहुॅचने का खतरा हो जाता है जैसे कि वाहन चलाते समय मोबाइल फोन पर बातचीत करना , नकली बैटरियों का प्रयोग करना आदि । इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए किवे वाहन चलाते समय बात न करें तथा कम्पनी के मानदण् डों के अनुसार ही उपकरणों का प्रयोग करें ।

अभ्यास – 34

किसी भी कार्य की सिद्धि केवल जानने से नहीं होती , उसके साथ उसे सिद्ध करने की इच्छा एवं उसके अनुकूल कार्य करने की आवश्यकता होती है । भोजन से भूख मिटती है यह जान लिया , परंतु इस जानने से ही पेट नहीं भरता । भोजन की इच्छा होनी चाहिए और वह इच्छा भी ऐसी होनी चाहिए ,जो अनिवाग्र आवश्यकता के रूप में परिणत हो गयी हो – जैसे अत्यंत प्यासे को जल की इच्छा होती है। ऐसी इच्छा होने पर क्रिया स्वयमेव होती है और फिर उसका फल प्रकट होता है।

एक बात यह भी है कि प्रयास भी मंद नहीं होना चाहिए। उसके लिए अटूट धैर्य चाहिए और चाहिए परम श्रद्धा एवं आत्मविश्वास। येाग दर्शन में आया है कि अभ्यास वही दृढ़ होता है जो निरंतर चलता हो, दीर्घकाल तक चलता रहे और जिसके करने मं बुद्धि श्शुद्ध हो । हम जिस वस्तु को पाना चाहते हैं, उसकी सत्ता और श्रेष्ठता में हमारी श्रद्धा होनी चाहिए ,उसको प्राप्त होने में श्रद्धा होनी चाहिए तो हम उसे अवश्य ही प्राप्त कर लेंगे , इस निश्चय में दृढ़ विश्वास होना चाहिए । जहॉ। श्रद्धा का अभाव है , आत्मविश्वास की कमी है , वहां सिद्धि तो दूर रही , साधना ही सुचारू रूप से नहीं हो पाती । अतएव मैं तो आपको सलाह दूॅगा कि आप अपने जाने हुए तत्व को पाने के लिए आतुर हो जाइए । फिर उसके लिए प्रयत्न अपने आप ही होता और फिर आपको प्रशस्त मार्ग बतलाने वाले भी अवश्य मिल जाएंगे । तीव्र इच्छा होने पर विश्वास साधक की सहायता स्वयं भगवान करते हैं।

भगवान के नामों में छोटा बड़ा कोई नहीं है। जिसको जिस नाम में रूचि हो , जो प्रिय लगे वह उसी का जप कीर्तन करे, परंतु दूसरे किसी को भी छोटा न समझे , न किसी की निन्दा करे ।

अभ्यास – 35

हमारे पूर्वज जीवनकाल में कठोर परिश्रम किया करते थे । इस कारण वे सदा हृष्ट –पुष्ट और स्वस्थ रहते थे , लेकिन आज हमने विज्ञान के सहारे सुख – सुविधा के इतने साधन जुटा लिए है कि कठोर परिश्रम करना केवल मशीनों का ही काम हो गया है। यही कारण है कि हम अपना स्वास्थ्य खोते जा रहे है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो यह मानता हो कि श्शरीर के लिए व्यायाम आवश्यक नहीं है। व्यायाम से होने वाले लाभों के विषय में लगभग सभी परिचित हैं । यहॉ हम कुछ ऐसे व्यायामों का वर्णन कर रहे हैं जिनके लिए न तो आपको कुछ विशेष तैयारी करने की आवश्यकता है ओर न ही अतिरिक्त समय खर्च करने की ।

आज किसी के पस इतना समय नहीं है कि कोई चार – पॉच किलोमीटर प्रतिदिन घूमने के पश्चात् आधा एक घण्टा कसरत भी कर ले । किसी कारणवश क्रमभंग हो ही जाता है। इन नए व्यायामों का आरम्भ सुबह नींद से जागते ही आरम्भ करें । चारपाई पर ही दोनों हाथों को सिर के ऊपर कानों के बराबर ले जाकर फैलाएं । इसके बाद करवट बदलकर चारपाई से उठें। प्रातः भ्रमण के लिए अवश्य ही कुछ समय निकाले । कुछ व्यक्ति सुबह उठते ही यह सोचने लगते हैं कि उनके पास दिन में करने के लिए कुछ भी विशेष कार्य नहीं है , उनके जीवन का कोई महत्व नहीं है। सुबह जहॉ तक सम्भव हो कुछ देर तक विचार शून्यता की स्थिति में रहें । व्यर्थ के विचारों को मन में न आने दे। यदि आपका कार्यस्थल घर के निकट है, तो पैदल ही जाएं । कार्यालय में कुर्सी पर इस प्रकार बैठने का प्रयास करें कि आपकी कमर कुर्सी से चिपकी रहे । जब आप थकान महसूस करें , तो अपनी कुहनियों को मेज पर टिका कर शरीर का भार उन पर डालने का प्रयास करें ।

विभिन्न प्रकार के पत्रों की जानकारी

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **विभिन्न प्रकार के पत्रों की जानकारी ।**

पत्र - 1

सेवा में,

प्रधानाचार्य,
राजकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान,
बनीपार्क, जयपुर।

विषय :– अनुबंधित प्रवक्ता पद के लिए आवेदन करने हेतु।

महोदय,

नम्र निवेदन है कि उपरोक्त विषयान्तर्गत आपके द्वारा निकाली गई विज्ञप्ती दिनांक 6.01.2015 दैनिक भास्कर समाचार पत्र के आधार पर निर्धारित योग्यताएं एवं अनुभव पूर्ण करते हुए मैं अपना आवेदन पत्र आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ। आपसे निवेदन है कि एक बार सेवा का मौका प्रदान करनें की कृपा करें।

मैं आपकी सदा अभारी रहूँगी।

भवदीया
नेहा जैन

संलग्नक :– 1. बायोडाटा समस्त शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव प्रमाण पत्रों सहित।

पत्र - 2

सेवा में,

प्रधानाचार्य,
राजकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान,
अलवर। 1/4राजस्थान1/2

विषय :– अवकाश प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

नम्र निवेदन है कि मेरी बहन का विवाह दिनांक 15.02.2015 को होने के कारण मुझे दिनांक 20.01.2015 से 17.02.2015 तक अर्जित अवकाश की आवश्यकता है। अर्जित अवकाश मैं निर्धारित प्रारूप में भरकर आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ। आपसे निवेदन है कि मेरा अर्जित अवकाश स्वीकृत करने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी।

मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

भवदीय,
1/4दिनेश जैन1/2

पत्र - 3

दिनांक .....

प्रेषक,
विधाधर नगर सेक्टर 8 के समस्त निवासी,
विधाधर नगर, जयपुर– 302013

सेवा मे,

स्वास्थय अधिकारी,
जयपुर नगर निगम,
जयपुर।

महोदय,

निवेदन यह है कि विधाधर नगर सेक्टर 8 के सेन्टंल गार्डन के आस–पास काफी गंदगी फैली हुई है जगह–जगह पर कूड़े के ढेर लगे है जिससे बच्चों तथा बड़ों सभी का पार्क में घूमना, बैठना कुछ भी संभव नहीं है। तथा अत्यधिक मच्छर पैदा हो गए है। वहां के सफाई कर्मचारियों से कहने पर भी सफाई नहीं हो सकी है इस संदर्भ में आप से निवेदन है कि आप शीघ्रताशीघ्र सफाई करवानें की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी ।

हम आपके सदैव आभारी रहेंगे।

भवदीय,
विधाधर नगर सेक्टर 8 के समस्त निवासी
जयपुर

पत्र - 4

सेवा में,

प्रबन्धक महोदय,
यू.बी.आई. बैंक,
मालवीय नगर, जयपुर।

विषय :– बैंक में खाता खोलने के संबंध में।

महोदय,

नम्र निवेदन है कि उपरोक्त विषयान्तर्गत में आपके बैंक में अपना खाता खोलना चाहती हूँ जिसके अन्तर्गत में अपने पहचान पत्र के रूप में मतदाता पहचान पत्र आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ।

धन्यवाद।

भवदीया
वर्षा शर्मा

पत्र - 5

पत्र संख्या .....

स्टेशन रोड
इलाहाबाद

दिनांक 15 जुलाई 1994

प्रिय डॉ. शर्मा

मैंने आप को दिनांक 1 जुलाई 1994 को पत्र भेजकर महाविद्यालय के दिक्षांत समारोह के बारे में लिखा था, जो आगामी 24 जनवरी को आयोजित किया जा रहा है। मुझे आशा है कि आपको वह पत्र प्राप्त हो गया होगा। मैं आपका आभारी रहूंगा, यदि आप इस संबंध में भेंट के लिए अपनी सुविधानुसार कोई तिथि मुझे दे दें।

आपका शुभचिन्तक

.....

ऐक्सेल

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **आशुलिपि उच्च गति पर ।**

ऐक्सेल में फॉरमैटिंग

ऐक्सैल डाटा फॉर्मेटिंग में एम.एस.वर्ड की तरह कई कार्य होते हैं जैसे टैक्स संख्या, फोंट टाइप, फोंट साइज, सैल ऐलाइनमेंट बार्डर लगाना, सैलों का शेडिंग करना, तारीख, समय आदि।

ऐंटर, टैब और ऐरो का ऐक्सैल में क्या प्रयोग है ?

ऐंटर से कर्सर अगले सैल में जाता है।

- टैब कुंजी से कर्सर को उसी पंक्ति के अगले सैल में ले जाते हैं।
- ऐरो या तीर से कर्सर को वांछित दिशा में पंक्ति एवं सैल में ले जाते हैं।

स्प्रेडशीट में टैक्स्ट

टाइप करने के लिए सैल सेलेक्ट करें.

- टैक्स्ट नाम, पता आदि टाइप करें,
- एंटर कुंजी प्रेस करें.

टैक्स्ट बाई ओर ऐलाइन होकर आ जाएगा.

गिनती के लिए फॉरमूला

सेल को सेलेक्ट करें और उसमें आंकड़े भरें.

चिन्ह डालें, अब फॉर्मूला टाइप करें

= SUM (C3:C6) OR (C3..C6) ,OR

= AVERAGE (C3:C6) OR (C3..C6)

टैब ऐंटर प्रेस करें

डाटा प्रोसेस होकर परिणाम आ जाएगा .सैल डाटा को और से अलग किया जाता है।

भविष्य के लिए नई वक्रबुक

वर्कबुक का नाम दें और निम्न प्रकार सेव करें–

फाइल खोलें और सेव एज में नाम टाइप करें

जिस फोल्डर में सेव करना हो उसका नाम दें

वर्कशीट को कैसे छापते

एम.एस.वर्ड केवल प्रिंट एरिया छापेगा जब तक कि उसे पूरा निर्देश न दिया जाए सैल की रेन्ज को छापने के लिए –

सेलेक्शन पर क्लिक करें.

- फाइल मॅन्यू में Print what पर क्लिक करें और बॉक्स में ऐक्टिव वक्रशीट पर क्लिक करें सलेक्सन का प्रिन्ट प्रीव्यू में सामने आ जायेगा की सामग्री कैसी छपेगी.

कस्टम लिस्ट

सैलों की रेन्ज में नाम व आंकड़े भरने के काम को कस्टम लिस्ट कहते हैं।

ऐलाइनमेंट और डिफॉल्ट ऐलाइनमेंट

सैलों की बाउंड्री के अन्दर आंकड़े टाइप करना ऐलाइनमेंट कहलाता है. डिफॉल्ट ऐलाइनमेंट हमेशा बायीं ओर होता है, इसे हम सेंटर में या दायीं ओर भी कर सकते हैं ।

Language	Number of Speakers (Crores)	Non-Mobile (Lakhs)		Mobile	
		2011 September	2011 October	2011 September	2011 October
Hindi	40	77[1]	87[1]	2,53,000[1]	2,61,000[1]
Bengali	30	29	43	45,000	51,000
Marathi	9	46[2]	59[2]	64,000	55,000[2]
Telugu	8	23	35	31,000[2]	21,000
Tamil	6.6	41[1]	47	65,000	75,000[2]
Urdu	6	16	15	40,000[2]	49,000
Kannada	4.7	13	18	15,000	20,000
Gujarati	4.6	8.84	11	27,000	20,000
Sindhi	4.1	0.72	0.8	2,300	3,000
Bhojpuri	3.85	1.75	2.69	4,900	3,400
Malayalam	3.7	28	54[1]	33,000	31,000
Odia (Oriya)	3.1	2.07	4.73	1,800	1,900
Punjabi	2.9	2.6	4.03	836	1,200
Assamese	1.3	1.28	2.36	1500	1,500
Nepali	1.3	6.94	13	22,000	17,000
Kashmiri	50 lakh	0.72	0.63	415	615
Newari	8 lakh	13	14	1,900	2,100
Bishnupriya Manipuri	4.5 lakh	7.66	12	1,900	2,200
Sanskrit	50,000	3.43	5.51	3,800	4,200
Pali	-	1.39	1.79	1,900	1,900

फॉरमैट सैल के डॉयलॉग बॉक्स

डायलॉग बॉक्स के फॉरमैट टैब निम्न हैं–

1 – नंबर

2 – फोंट

3 – ऐलाइनमेंट

फारमूला बार तथा ऐडिट

डाटा को ठीक करने या बदलने के लिए सैल को सेलेक्ट किया जाता है और करसर को फॉरमूला बार पर ले जाते हैं। जहाँ उस का रुप बदल कर 1B हो जाता है। इस पर क्लिक करके फॉरमूला बार ऐडिट किया जाता है।

रो तथा कॉलम को इंनसर्ट और डिलिट करना

रो इंनसर्ट करने के लिए –

- रो हैड़िंग पर क्लिक करें जहां नई रो डालनी है ।

इनर्सट पर क्लिक करे नई रो आ जायेगी और पुरानी नीचे सामग्री सहित चली जायेगी।

डिलीट करने के लिए.

- कॉलम हैड़िंग पर क्लिक करें जहां नया कॉलम ऐड करना है।
- कॉलम के नाम C or F पर क्लिक करें।
- इनसर्ट पर क्लिक करें और कॉलम छांटे।

वर्तमान कॉलम दांई ओर चला जायेगा.।

ध्यान रखें की डिलीट कॉलम या रो वापस नहीं आ सकती, इसलिए डिलीट बटन को सावधानी से क्लिक करें।

ऐक्सेल विन्डो में ऐप्लीकेशन विन्डो और डॉक्यूमेट विन्डो होती है ऐप्लीकेशन विन्डो अपने टूल बारों की मदद से कार्य करती है और डाक्यूमेंट विन्डों में टाइटल बार वर्कशीट एरिया और स्क्रॉल बार होता है जिनकी सहायता से वह कार्य करती है

ऐक्सल शीट या वर्कशीट

कंम्प्यूटर के पर्दे पर दिखने वाली खाली शीट इलेक्ट्रॉनिक्स स्प्रेडशीट या वर्कशीट कहलाती है जिसे माइक्रोसॉफ्ट कारपोरेशन द्वारा बनाया गया है इसमें रो, कॉलम और सैल होते है जिनमें आंकड़े और गणितीय आंकड़े का विवरण डाला जाता है कॉ. लमों और पंक्तियों के बीच में बनने वाले आयताकार सेलों में टैक्स्ट/सामग्री अंक एवं फॉमूले डाले जाते हैं जिनमें गणितीय कार्य किया जाता है।

क्र. सं.	अक्षर	विवरण	कोड
1	१	1	Alt+0131
2	२	2	Alt+0132
3	३	3	Alt+0133
4	४	4	Alt+0134
5	५	5	Alt+0135
6	६	6	Alt+0136
7	७	7	Alt+0137
8	८	8	Alt+0138
9	९	9	Alt+0139
10	०	0	Alt+0140

www.IndiaTyping.com

कांस्टेंट , डाटा, लेबल और वैल्यू :–

कांस्टेंट ऐसा डाटा है जिसका मूल्य या नाम नहीं बदलता है, जैसे बी2 या बी4 में डाला गया डाटा कंपनी या वस्तु का नाम हो सकता है जो नहीं बदलता ये, नाम, तारीख, समय आदि हो सकते हैं डाटा या आंकड़े ऐसे अकं है जो सैलों में टाइप किए जाते हैं ऐक्सल शीट में डाले गए आंकड़े कम्प्यूंटर समझता है जो तीन प्रकार के होते हैं :–

1 लेबल –टैक्सट का नाम है जो हम टाइप करते हैं यह सैल में बांई ओर /लेट ऐलांइड होता है और गणितीय कार्य में सहायता नही होता .

2 वैल्यू – ऐसी संख्याएं या अंक है जो हम सैलों में टाइप करते हैं ये हमेशा दांयी तरफ /राइट ऐलाइडं होते हैं इनसे ही कैल्कुलेशन या गणितीय कार्य होते हैं।

3 फारमूला – जो हम सैलों में टाइप करते हैं वही सवालों का तुरन्त उतर देता है यह भी सैल में राइट ऐलाइड / दायीं ओर होता है

रो कॉलम और सैल

1, 2, 3, से दिखाई देने वाले सैलों के समूह को पंक्ति और कॉलम में दिखाइ देने वाला सबसे छोटा बॉक्स सैल कहलाता है ।

रो तथा कॉलम को इनसर्ट और डिलिट करना।

रो इनसर्ट करने के लिए –

- रो हैडिंग पर क्लिक करें जहां नई रो डालनी है।
- इनसर्ट पर क्लिक करें नई रो आ जायेगी और पुरानी नीचे सामग्री सहित चली जायेगी।

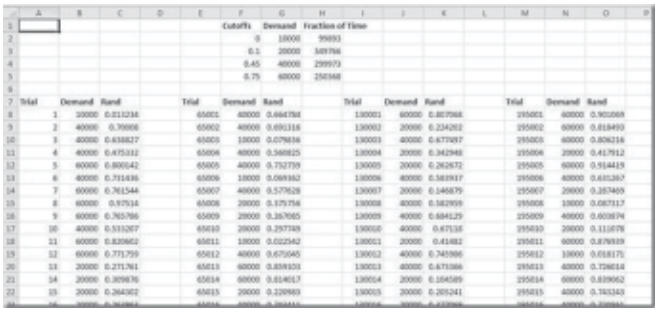

डिलीट करने के लिए :–

- कॉलम हैड़िंग पर क्लिक करें जहां नया कॉलम ऐड़ करना है।
- कॉलम के नाम C or F पर क्लिक करे।
- इनसर्ट पर क्लिक करें और कॉलम छांटे।

वर्तमान कॉलम दांई ओर चला जायेगा.

ध्यान रखें की डिलीट कॉलम या रो वापस नहीं आ सकती, इसलिए डिलीट बटन को सावधानी से क्लिक करें।

ऐक्सेल शीट के रो और कॉलम

रो या पंक्ति या शीर्षक हर पंक्ति को बताता है ऐक्सल शीट में 65536 पंक्तियां या रोज होती है जिसे वर्कबुक कहते हैं।

कॉलम ए, बी, सी, डी से प्रकट किए जाने वाले सैलों का समूह है वर्कशीट में कुल 256 कॉलम या खंड होते हैं।

वर्क बुक और वर्क शीट

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **वर्क बुक और वर्क शीट बनाना ।**

सैल एवं रेन्ज :–

वर्कशीट का सबसे छोटा आयताकार बॉक्स जो पंक्तियों और कॉलमों के बीच में होता है , सैल कहलाता है सैलों में डाटा टाइप किया जाता है जो टैक्स्ट, नंबर और फारमूला होते हैं।

ऐक्टिव सैल

जिस सैल की लाइट जलती हो, हाइलाइट हो रही हो, वह ऐक्टिव सैल कहलाता हैं.

रेन्ज

सैल या कई सैलों के समूह को रेन्ज कहते हैं इसे सेलेक्ट करने के लिए –

- सेल या रेन्ज सेलेक्ट करें।
- नाम के बॉक्स जो फारमूला बार के बाई ओर होता है उसे क्लिक करें।
- रेन्ज का नाम टाइप करें जिसमें अकिधकतम 255 अक्षर हो सकते हैं. नाम किसी अक्षर से आरंभ होना चाहिए

कंटीन्यूअस और नॉन – कंटीन्यूअस रेन्ज

दो आपस में जुड़े हुए सैलों को कंटीन्यूअस या कंटीन्यूअस /लगातार सैल कहते है बांई ऊपर तथा दांयी ओर नीचे के सैलों के लिए यह नाम दिया जाता है जो सैल अलग या दूर हैं वे नॉन –कंटीन्यूअस /कंटीन्यूअस सैल कहलाते हैं.

ऐक्सैल में सैल और रेन्ज

पहले स्टार्ट में जाएं और सेलेक्ट करें – प्रोग्राम

- फिर छांटे माइक्रोसॉफ्ट ऐक्सल, और
- इसे क्लिक करें।

ऐक्सल की खाली शीट आ जाएगी

पूरी वर्कशीट फाइल या वर्ड फाइल कैसे सेलेक्ट करें ?

पूरी फाइल या वर्कशीट को कंट्रोल +ए से सलेक्ट करेंगें।

एक साथ कई रेन्ज सलेक्ट करना –

पहले सैलों की पहली रेन्ज को सलेक्ट करें .

कंट्रोल की दबाएं और दबाते हुए नीचे लाएं

सैलों की दूसरी रेन्ज सलेक्ट करें

रारीरवाच

इस तरह से कितनी ही रेन्ज सलेक्ट कर सकते हैं

रो और कॉलमो को कितने प्रकार से सलेक्ट कर सकते हैं ?

रो सलेक्ट करने के लिए –

माउस प्वांइट को रो में करके उसे ऐक्टिवेट करें

रो के शीर्षक /हैडिंग को क्लिक करें पूरी रो सलेक्ट होगी या

शिफ्ट और स्पेस बार को एक साथ दबाएं

पूरे कॉलम को सलेक्ट करने के लिए –

- मांउस प्वाइंटर को कॉलम में ले जाएं
- कॉलम शीर्षक पर क्लिक करें, अथवा
- कंट्रोल और स्पेसबार एक साथ दबाएं

सैल ऐड्रेस

किसी पंक्ति और सेल में जो आंकड़ें या डाटा डाला जाता है वह सैल ऐड्रेस कहलाता है जैसे सी2, सी3, सी4 और डी2, डी3, डी4 इनमें सी, डी डाटा के कॉलम प्रकट करते हैं जैसे चित्रों में दिखाई देता है

1	56	34		44	56	78
2	45	44		56	78	87
3	34	23		26	73	44
4	45	45		56	78	87
5						
6						

सैल ऐड्रेस का प्रयोग फॉर्मूला लागू करने के लिए किया जाता है सैलों में आंकडें बदलने के बाद भी वही फॉर्मूला तुरन्त गि. नती करके बता देता है कांउट फॉर्मूला से, सैल ऐड्रेस बराबर सी2 + सी3 + सी4 + सी5 जो क्रमश : 5 + 7 + 9 + 23 44 बताते है इन आंकड़ों को बदलते ही फॉर्मूला तुरन्त नया उतर दे देता है।

ऐक्सेल में फॉरमैटिग

ऐक्सैल डाटा फॉर्मेटिंग में एम.एस.वर्ड की तरह कई कार्य होते हैं जैसे टैक्सट संख्या, फोंट टाइप, फोंट साइज, सैल ऐलाइनमेंट बार्डर लगाना, सैलों का शेडिंग करना, तारीख, समय आदि ऐंटर, टैब और ऐरो का ऐक्सैल में क्या प्रयोग है ?

ऐंटर से कर्सर अगले सैल में जाता है।

- टैब कुंजी से कर्सर को उसी पंक्ति के अगले सैल में ले जाते हैं।
- ऐरो या तीर से कर्सर को वांछित दिशा में पक्ति एवं सैल में ले जाते हैं।

स्प्रेडशीट में टैक्स्ट कैसें ऐंटर करते हैं ?

टाइप करने के लिए सैल सेलेक्ट करें।

- टैक्स्ट नाम, पता आदि टाइप करें।
- एंटर कुंजी प्रेस करें।

टैक्स्ट बाई ओर ऐलाइन होकर आ जाएग

गिनती के लिए फॉरमूला

सेल को सेलेक्ट करें और उसमें आंकड़े भरें.

चिन्ह डालें , अब फॉरमूला टाइप करें

= SUM (C3:C6) OR (C3..C6) ,OR

= AVERAGE (C3:C6) OR (C3..C6)

टैब ऐंटर प्रेस करें

डाटा प्रोसेस होकर परिणाम आ जाएगा .सैल डाटा को और से अलग किया जाता है।

नई वर्कबुक

वर्कबुक का नाम दें और निम्न प्रकार सेव करें–

फाइल खोलें और सेव एज में नाम टाइप करें

जिस फोल्डर में सेव करना हो उसका नाम दें

फॉरमूला :–

चार सैलो को जोड़ने का फॉरमूला

= SUM (uacj 1,2,3,4,) या

= SUM (B3:E 3) OR = SUM(B3..E3)+ तीन कॉलम C to E का औसत निकालने का फारमूला बताइए.

= AVERAGE(Value/Cell C, D,E,)or

= AVERAGE (B3:C3) OR (B3..C3)

किसी संख्या या प्रतिशत का अधिकतम बताइए।

= MAX (B2,C2,D2,E2),OR

= MAX (B3:E3) OR (B3..E3) OR (B3,E3)

ऐक्सेल के Auto Sum feature का प्रयोग

ऐक्सेल वर्कबुक खोलें

- जमा करने के लिए अंक टाइप करें।
- जिस सेल में टोटल देना है उसे सेलेक्ट करें।
- टूलबार में " Auto Sum" icon पर क्लिक करें।
- जिस रेन्ज का योग करना है वहां लाइन घूमेगी।
- ऐंटर कुंजी दबाएं. कुल योग आ जाएगा।
- यदि रेन्ज गलत है तो माउस से सैलों पर ड्रग करके उनको सेलेक्ट करें और ऐंटर दबाने से कुल योग आ जाएगा।

ऐक्सेल का काउंट फंक्शन

सैलों की रेन्ज में दिए गए अंकों को जोड़ने के लिए काउंट फंक्शन का प्रयोग किया जाता है नीचे लिखे गए सैलों का वह योग करेगा

= COUNT (argument) फारमूला लगाने पर

- कई रैन्जों के सैलो का टोटल कर देता हैं
- सेलेक्टेड रेन्ज में खाली सैलों को छोड़ देता है
- यदि खाली सैल में आंकड़े डाले जाएं तो उनका भी योग कर देता है।

ऐक्सेल फॉर्मूला लागू करते समय # VALUE and # NAME क्यों आते है और क्या बताते हैं?

VALUE का अर्थ है कि गलत फार्मूला लगाया गया है # NAME आने पर समझें कि ऐक्सेल नाम नहीं समझता है।

गुणा, न्यूनतम, पूर्ण और वर्गमूल का फॉर्मूला :–

= PRODUCT (1,2,3 ……) से सारे अंको का गुणा हो जाएगा।

= MIN (178,198,127) करने से उत्तर आएगा 127

= MAX (134,156,190,201) करने से उत्तर आएगा 201

सेल रेफरेंसिंग :–

सैलों या उनके समूह को रेफर करना सैल रेफरेंसिंग होता है इसका लाभ यह है कि हमें केवल मूल आंकड़े टाइप करने होते हैं बाकी कार्य फॉर्मूला अपने आप करता है।

सेल रेफरेंसिग के तीन तरीके हैं–

रिलेटिव, ऐब्सोल्यूट और मिक्स रेफरेंसिंग रिलेटिव रेफरेंसिंग अपने बाईं ओर से सैलों का रेफरेंस लेकर उनका उत्तर देता है जैसा नीचे दिखाया गया है।

B	C	D	E	F	G
नाम	अंग्रेजी	हिन्दी	गणित	साइंस	कुल योग
गोपाल	62	57	88	78	290
ज्ञान	75	78	88	67	313
श्याम	85	67	56	56	269
लता	86	78	76	48	293
कुल					1165

A	B	C	D	E	F	G	H
1	नाम	अंग्रेजी	हिन्दी	गणित	इकॉ.	जोड़े	कुलयोग
2	गोपाल	62	57	88	78	5	290
3	ज्ञान	75	78	88	67		313
4	श्याम	85	67	56	56		269
5	लता	86	78	76	48		293
6	कुल						1165

ऐब्सोल्यूट रेंफरेंसिंग में + चिन्ह का प्रयोग किया जाता है जैसा उनमें दिखाई देता है। Formula H2, H3, H4, H5 ij yxus ij Result by Dragging Mouse Pointer + the Total column.

MIXED REFERENCING - Relative & Absolute दोनों referencing का मिला–जुला प्रयोग होता है, जैसे नीचे दिखाया गया है।

A	B	C	D	E	F G	H
1	नाम	अंग्रेजी	हिन्दी	गणित	इकॉनोमिक्स	कुलयोग
2	गोपाल	62	57	88	78 5	290
3	ज्ञान	75	78	88	67	313
4	श्याम	85	67	56	56	269
5	लता	86	78	76	48	293
6	कुल					1165

टोटल के कॉलम में रिजल्ट के लिए Drag Mouse Pointer + Formula F$2 + G$2 to H3, H4, H5. रो या कॉलम की फिक्स राशि होने पर इसका प्रयोग होता है।

पावर पाइंट प्रजेन्टेशन

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **पावर पाइंट प्रजेन्टेशन ।**

लाइड,स्लाइड नोट और स्लाइड ले– आउट :–

1– स्लाइड –

एक ही पेज कि सामग्री जिसमें पिक्चर, ग्राफिक, इमेज आदि होती है, स्लाइड कहलाती है, जैसा दायीं ओर चित्र में दिखाया गया है।

2– स्लाइड नोट –

जो विवरण, नोट या टिप्पणी किसी स्लाइड के विषय के बारे में दी जाती है, उसे स्लाइड नोट कहते हैं, जैसा कि दायीं ओर चित्र में दिखाया गया है।

3–स्लाइड ले–आउट –

किसी स्लाइड की बनावट या डिजाइन स्लाइड ले–आउट कहलाती है, जिसमें पिक्चर, चार्ट, टैक्स्ट होते हैं, जैसे दोनो चित्रों में दिखाई देता है.

एम. एस. पावर पाइंट के भाग :–

एम. एस. पावर पाइंट के दो भाग होते हैं –ऐप्लीकेशन विन्डो और प्रजेन्टेशन विन्डो, पावर पाइंट ऐप्लीकेशन विन्डो में खुलता है और बाकी कार्य प्रजेन्टेशन विन्डो में होते हैं जिसमें मॅन्यु बार,टुल बार टाइटल बार, व्यु बटन, स्टेटस बार, स्लाइड, स्क्रॉल बार काम करते हैं।

पावर पाइंट स्टार्ट करना

कंप्यूटर के बूट होने के बाद माउस को स्टार्ट बटन पर क्लिक करे और फिर

- ''ऑल प्रोग्राम'' सेलेक्ट करें।
- ''एम.एस.आफिस ''सेलेक्ट करें।
- ''एम.एस. पावर पाइंट''सेलेक्ट करें।

विन्डो में पावर पाइंट लोड हो जाएगा जिस पर कार्य करें।

ब्लेंक या खाली प्रजेन्टेशन :–

ब्लेंक प्रजेन्टेशन खोलने के लिए –

फाइल सलेक्ट करें और फिर–

1 न्यू ऑप्शन सलेक्ट करें।

2 न्यू प्रजेन्टेशन टास्क पेन सामने आ जाएगा।

3 ब्लेंक प्रजेन्टेशन को क्लिक करें।

4 न्यू स्लाइड से ले–आउट टास्क पेन आ जाएगा जैसा चित्र में है।

प्रजेन्टेशन के प्रकारः–

प्रजेन्टेशन तीन प्रकार से तैयार किए जाते हैं :–

1 ऑटो कंटेन्ट विजार्ड से

2 टैम्प्लेट से

3 ब्लैंक प्रजेन्टेशन से

ऑटो कंटेन्ट विजार्ड :–

स्लाइड में एक नकली टैक्स्ट होता है, जिसे क्रियेट करने के लिए निम्न कदम उठाए जाते हैं।

1. न्यू प्रजेन्टेशन टास्क पेन में ऑटो कंटेन्ट विजार्ड पर क्लिक करें।
2. डॉयलॉग बॉक्स आने पर सही स्लाइड चुनें।
3. क्लिक next करें।
4. टैक्स्ट का नमूना ukeZy व्यू पर आ जाएगा।

टास्क पेन का उददेश्य :–

टास्क पेन एक बॉक्स है। जिसमें बहुत सारे स्लाइडस के नमूने होते हैं जिनमें से हम आवश्यकतानुसार सही स्लाइड छांटते हैं।

प्रजेंटेशन के क्या भागः–

1 स्लाइडस इसका मुख्य भाग होते हैं।

2 आउटलाइन जिसमें प्रजेंटेशन के बारे में लिखित जानकारी होती है।

3 स्पीकर नोटस जो प्रजेंटेशन के मुख्य बिन्दु होते हैं।

4 छपे हुए पर्चे जिनमें रंगीन स्लाइड होती है और जिन्हें दर्शकों में बांटा जाता है।

स्लाइड ले–आउट सेलेक्टः

स्लाइट ले–आउट टास्क पेन में कई स्लाइडस के नमूने होते हैं जिनमें से किसी को सेलेक्ट करने के लिए–

वांछित स्लाइड ले–आउट पर क्लिक करके उसे एक बॉक्स में इनसर्ट किया जाता है, जैसा चित्र में दिखाया गया है।

विभिन्न विषयों से संबंधित स्लाइड :–

कम्प्यूटर के क्लिप आर्ट में अनेक विषयों से संबंधित स्लाइड होती है जिनमें से आवश्यकतानुसार स्लाइड छांटते है यदि सही स्लाइड नहीं मिलती है तो उस विषय से मिलती–जुलती किसी स्लाइड को उस लिखित सामग्री के साथ दिखा सकते हैं।

न्यू प्रजेटेंशस की स्लाइड तैयार करना :–

न्यू प्रजेटेंशस के लिए

1. फाइल मेन्यू में जाकर New पर क्लिक करें।
2. न्यू प्रजेटेंशस टास्क पेन सामने आएगा।
3. ब्लेंक प्रजेटेंशस पर क्लिक करें जिसमें सफेद स्लाइड आएगी
4. OK क्लिक करें।

न्यू स्लाइड तैयार करना :–

इनसर्ट मेन्यू में जाकर न्यू स्लाइड को छांटे अथवा

1. स्टेंडर्ड टूलबार पर उपलब्ध न्यू स्लाइड बटन पर क्लिक करें।
2. ओ.के. बटन पर क्लिक करें।

स्लाइड ले–आउट :–

किसी स्लाइड में टेकस्ट और पिक्चर को सजाना स्लाइड ले–आउट कहलाता है स्लाइड ले–आउट बदलने के लिए–

1. फारमेट मेन्यू में जाकर स्लाइड ले–आउट पर क्लिक करें, स्लाइड ले–आउट टास्क–पेन आएगा।
2. वांछित ले–आउट राइट क्लिक करें।
3. स्लाइड ले–आउट पर Apply को सेलेक्ट करें। स्लाइड ले–आउट दो बॉक्सों में आ–जाएगा। एक में शीर्षक और पिक्चर सूची या क्लिप आर्ट से डाल सकते हैं।

स्लाइड प्रजेंटेशन को आकर्षक बनाना :–

डिजाइन टैंप्लेट को लागू करने से प्रजेंटेशन को आकर्षक बनाया जा सकता है इसके लिए–

1. फारमेट मेन्यू में स्लाइड डिजाइन पर क्लिक करें, स्लाइड डिजाइन टास्क पेन आएगा।
2. अपनी वांछित स्लाइड डिजाइन पर राइट क्लिक करें।
3. सेलेक्टेड स्लाइड आने पर Apply पर क्लिक करें।

स्लाइड का Background :–

फॉरमेट मेन्यू में Background पर क्लिक करें।

1. Background फिल पर क्लिक करें।
2. जो रंग देना चाहते है उस पर क्लिक करें।
3. ओ.के. पर क्लिक करें, स्लाइड का बैकग्राउंड कलर बदल जाएगा।

प्रजेंटेशन को प्रिंट करना :–

फाइल मेन्यू में प्रिंट पर क्लिक करें।

1. प्रिंटर का नाम दें, यदि अनेक प्रिंटर लगे हों तो
2. सारे प्रजेटेंशन प्रिंट करने के लिए क्लिक ऑल करें।
3. प्रिंट gov में हैंड आउट पर क्लिक करें।
4. पेज में खड़ा/Portrait या तिरछा/ Landscape कैसे छापना है चैक करें।
5. ओ.के. पर क्लिक करें।

ट्रॉबलशूट :–

यदि प्रिंटर नहीं छापता है तो स्टार्ट में प्रिंटर और फैक्सेज में जाएं और प्रिंटर का नाम या नंबर पर क्लिक करें, यदि छपने

वाली लिस्ट आती है तो सारे प्रिंटिंग काम कैंसिल करें g what is printing में आएगा। जब यह 0 हो जाए तो प्रिंट ऑप्शन क्लिक करें।

यदि प्रिंटर कागज फेंकता है तो फिर वही कार्यवाही दोहराएं।

एंटी वायरस प्रोग्राम/सॉफ्टवेयर :–

कम्प्यूटर में करप्ट या खराब फाइलों को हटाने के लिए एंटी वायरस प्रोग्राम या सॉफ्टवेयर इंस्टाल किया जाता है। इंटरनेट और ई–मेल से वायरस कम्प्यूटर में आते रहते हैं जो कम्प्यूटर के लिए खतरनाक होते हैं इनसे बचाने के लिए कम्प्यूटर में निम्न प्रकार के एंटी वायरस सॉफ्टवेयर डाले जाते हैं। जिनके कुछ नाम इस प्रकार है।

1- AVG Anti-Virus/ ए.वी.जी. ऐन्टी वायरस

2- Avast Anti - Viorus/ ऐवास्ट एंटी वायरस

3- Avira Anti Vir/ ऐवीरा एंटी वायरस

4- Kaspersky Anti Virus/ कास्परस्काई एंटी वायरस

5- Norton Anti Virus/ नॉर्टन एंटी वायरस

स्कैनिंग :–

एंटी वायरस सॉफ्टवेयर द्वारा वायरस ढूंढने और उसकी सफाई करने की प्रक्रिया को स्कैनिंग कहते है। सारी स्टोर डिवाइसेज अर्थात स्टोर करने वाली चीजों की लगातार स्कैनिंग करना आवश्यक है।

इंटरनेट से हमें नवीनतम एंटी –

वायरस प्रोग्राम मिल सकता है। एंटी वायरस प्रोग्राम की लेटेस्ट या नवीनतम फाइलों को लाइव–अपडेट के ऑप्शन से डाउनलोड किया जा सकता है जिसके लिए निम्न कदम उठाए जाते हैं।

1. स्टोरेज डिवाइसेज पर क्लिक करें और
2. स्कैन पर क्लिक करें सैलेक्ट की गई स्टोरेज डिवाइस का स्कैन हो जाएगा अर्थात् वायरस से उनकी सफाई हो जाएगी।

प्रजेंटेशन के क्या भागः–

1 स्लाइडस इसका मुख्य भाग होते हैं।

2 आउटलाइन जिसमें प्रजेंटेशन के बारे में लिखित जानकारी होती है।

3 स्पीकर नोट्स जो प्रजेंटेशन के मुख्य बिन्दु होते हैं।

4 छपे हुए पर्चे जिनमें रंगीन स्लाइड होती है और जिन्हे दर्शकों में बांटा जाता है।

स्लाइड ले–आउट सेलेक्टः

स्लाइड ले–आउट टास्क पेन में कई स्लाइडस के नमूने होते हैं जिनमें से किसी को सेलेक्ट करने के लिए–

वांछित स्लाइड ले–आउट पर क्लिक करके उसे एक बॉक्स में इनसर्ट किया जाता है, जैसा चित्र में दिखाया गया है.

विभिन्न विषयों से संबंधित स्लाइड :–

कम्प्यूटर के क्लिप आर्ट में अनेक विषयों से संबंधित स्लाइड होती है जिनमें से आवश्यकतानुसार स्लाइड छांटते है यदि सही स्लाइड नहीं मिलती है तो उस विषय से मिलती–जुलती किसी स्लाइड को उस लिखित सामग्री के साथ दिखा सकते हैं।

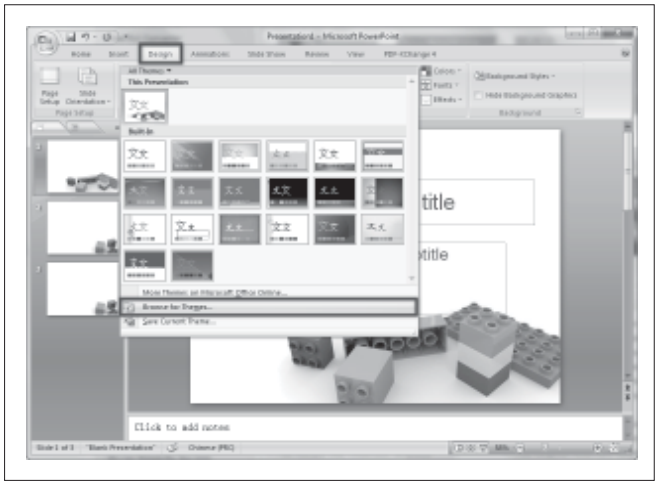

न्यू प्रजेटेंशस की स्लाइड तैयार करना :–

न्यू प्रजेटेंशस के लिए

फाइल मेन्यू में जाकर New पर क्लिक करें।

न्यू प्रजेटेंशस टास्क पेन सामने आएगा।

ब्लेंक प्रजेटेंशनस पर क्लिक करें जिसमें सफेद स्लाइड आएगी

OK क्लिक करें।

न्यू स्लाइड तैयार करना :–

इनसर्ट मेन्यू में जाकर न्यू स्लाइड को छांटे अथवा

स्टेंडर्ड टूलबार पर उपलब्ध न्यू स्लाइड बटन पर क्लिक करें।

ओ.के. बटन पर क्लिक करें।

स्लाइड ले–आउट :–

किसी स्लाइड में टैक्सट और पिक्चर को सजाना स्लाइड ले–आउट कहलाता है स्लाइड ले–आउट बदलने के लिए

फारमेट मेन्यू में जाकर स्लाइड ले–आउट पर क्लिक करें स्ल. ाइड ले–आउट टास्क–पेन आएगा।

वांछित ले–आउट राइट क्लिक करें।

स्लाइड ले–आउट पर Apply को सेलेक्ट करें। स्लाइड ले–आउट दो बॉक्सों में आ–जाएगा। एक में शीर्षक और पिक्चर सूची या क्लिप आर्ट से डाल सकते हैं।

स्लाइड प्रजेंटेशन को आकर्षक बनाना :–

डिजाइन टैंप्लेट को लागू करने से प्रजेंटेशन को आकर्षक बनाया जा सकता है इसके लिए–

फारमेट मेन्यू में स्लाइड डिजाइन पर क्लिक करें स्लाइड डिजाइन टास्क पेन आएगा।

अपनी वांछित स्लाइड डिजाइन पर राइट क्लिक करें।

सेलेक्टेड स्लाइड आने पर Apply पर क्लिक करें।

स्लाइड का **Background** :–

फॉरमेट मेन्यू में background पर क्लिक करें।

Background फिल पर क्लिक करें।

जो रंग देना चाहते है उस पर क्लिक करें।

ओ.के. पर क्लिक करें स्लाइड का बैकग्राउंड कलर बदल जाएगा।

इंटरनेट

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **इंटरनेट और नेटवर्किंग ।**

नेटवर्किंग :–

जब दो या अधिक कम्प्यूटरों को एक –दूसरे के साथ जोड़ा जाता है तो वह नेटवर्किंग या नेटवर्क या जाल कहलाता है।

नेटवक्रिंग के लाभ :–

1. नेटवर्किंग से एक फाइल को कई लोग एक साथ खोलकर उस पर कार्य कर सकते हैं।
2. एक–दूसरे से सूचनाओं का आदान–प्रदान कर सकते हैं।
3. इसमें डाटा या फाइलों के ट्रांसफर की लागत न्यूनतम होती है।
4. इसमें एक टर्मिनल होता है जो सर्वर कम्प्यूटर के सीपीयू की मैमोरी से काम करता है। सर्वर मेन कम्प्यूटर होता है जिसमें शक्तिशाली सीपीयू और मैमोरी होती है जो सभी टर्मिनलों को कंट्रोल करती है और तेजी से कार्य करती है।

मोडम :–

मोडम ऐसी इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो इंटरनेट सुविधा लेने के लिए कम्प्यूटरों को टेलीफोन लाइन से जोड़ती है इसके कई मॉडल होते है।

अब डी.एस.एल. मोडम के द्वारा ब्रॉड बैंड इंटरनेट कनेक्शन से लाइन बहुत जल्दी जुड़ जाती है और आप तेजी से काम कर सकते हो

इंटरनेट द्वारा प्रदत्त सुविधा :–

इंटरनेट निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करता है।

1. किसी भी विषय पर वांछित जानकारी प्राप्त कराना।
2. ई–मेल से सूचना, फाइलें आदि प्राप्त करना और भेजना।
3. गानें, म्यूजिक या मूवी दिखाना या सुनाना।
4. कम्प्यूटर पर गेम खेलना।
5. सामान का विज्ञापन, खरीद व बिक्री करना
6. वैब कैमरे से दुनिया में बैठे लोगों से सीधी बात करना। तथा वीडियो या टेली कांफरेंसिंग करना।

वैबसाइट :–

वर्ल्ड वाइड वेब या वैब WWW या इंटरनेट का बहुत बड़ा विश्व व्यापी जाल है जो HTTP Server द्वारा फाइलें भेजता है इनका

लिंक डॉक्यूमेंटस से होता है। जिन्हें रिसोर्स कहा जाता है इन सर्वरों में बहुत सारी सामग्री स्टोर की जाती है जिसको कोई भी व्यक्ति दुनिया में कहीं से भी इंटरनेट के द्वारा देख और ढूंढ सकता है वेब सूचना का समुद्र है जिसे कोई भी इंटरनेट से खोज सकता है। वास्तव में ये सूचनाओं का पुस्तकालय है जो वेब पेजों में स्टोर होता है।

एक विषय के बहुत सारे पेजों में फैली जानकारी को वेबसाइट कहा जाता है वेबसाइट पर पहुॅचने के लिए एक यूनिक/ विशेष नाम की आवश्यकता होती है। माइक्रोसॉफ्ट इंटरनेट एक्सप्लोरर अथवा कोई ब्रोजर जैसे मोजीला फायरफौक्स, वैब पेज खोलने या वेबसाइट देखने के लिए आवश्यक होता है।

कार्यालय का परिचय

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **कार्यालय का अर्थ एवं परिभाषाएँ ।**

कार्यालय का अर्थ :–

कार्यालय रक्तवाही शिराओं की भाँति किसी भी संस्था के अंग–प्रत्यंग में अन्तर्व्याप्त है। वह संस्था को शक्ति, दिशा एवं गति प्रदान करता है। कार्यालय एक ओर ऐसी निर्माणशाला है जहाँ महत्वपूर्ण सूचनाएं, प्रलेख तथा अभिलेख तैयार किए जाते हैं, दूसरी ओर वह एक ऐसा कोष अथवा भण्डार गृह हैं जहाँ उक्त सूचनाएँ, प्रलेख तथा अभिलेख सुरखित रखे जाते हैं तथा तीसरी ओर वह ऐसा कल्पवृक्ष भी है जो आवश्यकता पड़ने पर माँगने वाले व्यक्ति (पदाधिकारी) को वांछित सूचना, प्रलेख तथा अभिलेख प्रयोग हेतु उपलब्ध कराता है। कार्यालय की इन उपयोगिताओं के कारण ही आज प्रत्येक संस्था में चाहे वह व्यावसायिक हो अथवा गैर व्यावसायिक, सबसे पहले कार्यालय की स्थापना की जाती है।

कार्यालय शब्द निम्न दो शब्दों के योग से बना है। (1) कार्य, और (2) आलय। अतः इन दोनों शब्दों का अलग–अलग अर्थ समझने से कार्यालय का अर्थ स्वतः स्पष्ट हो जाएगा। कार्य शब्द का आशय है किसी प्रयोजन (आवश्यकता) की पूर्ति के लिए एक सुनियोजित योजना बनाना। आलय शब्द का अर्थ है स्थान। इस प्रकार कार्यालय से हमारा आशय उस स्थान विशेष से है जहां से किसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए सुनियोजित ढंग से विविध प्रकार के क्रिया–कलाप किए जाते हैं। दूसरे शब्दों में, कार्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ से किसी संस्था विशेष के सभी दैनिक कार्यों का सुव्यवस्थित ढंग से आयोजन, संगठन, संचालन एवं नियन्त्रण किया जाता है। शब्द–कोष के अनुसार कार्यालय वह स्थान है जहाँ व्यवसाय किया जाता है। कार्यालय में व्यवसाय संबंधी आवश्यक सूचनाएं, प्रलेख तथा अभिलेख आदि सुरक्षित रखे जाते हैं। जिनका उपयोग भविष्य में आवश्यकतानुसार किया जाता है।

एक साधारण व्यक्ति के दृष्टिकोण से कार्यालय से आशय एक ऐसे स्थान से है जहां पर कुछ लिपिक एवं पदाधिकारी कुर्सियों पर बैठकर उनके सामने मेजों पर रखी फाइलों के बण्डलों के ऊपर झुककर कागजी कार्यवाही करते रहते हैं। उक्त स्थान कर्मचारियों के लिए निर्दिष्ट होता है, कार्य को सम्पादित करने के लिए सुविधाएँ उपलब्ध होती है, संगठन होता है और व्यवसायी या प्रशासक होता है। किसी भी कार्यालय में जाकर अवलोकन कर लीजिए, चाहे वह कोई सरकारी कार्यालय हो या किसी व्यावसायिक संस्था का कार्यालय, चाहे लघु स्तरीय हो या विशालकाय, कुछ बातें समान मिलेंगी। सभी कर्मचारियों के

बैठने के लिए कुर्सियां और काम करने के लिए टेबिल होगी। इन टेबिलों पर और आस–पास में रखी फाइल केबिनेटों में फाइलें होंगी। टेबिलों पर अन्य लेखन–सामग्रीयाँ भी मिलेगीं। टंकण–यंत्र और डुप्लीकेटर तथा अन्य यंत्र भी दिखाई देगें। इस प्रकार प्रत्येक कार्यालय में कुछ कर्मचारी अपने–अपने स्थान पर कार्य करते हुए होंगे। यह एक कार्यालय का स्वरूप है। एक बड़े कार्यालय में ये सारी वस्तुएं काफी बड़ी मात्रा में और बड़े भवन में व्यवस्थित होंगी और छोटे कार्यालय में वस्तुएं और कर्मचारी कम होंगे किन्तु प्रत्येक कार्यालय की साज–सज्जा में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। कार्यालयों के आकार में अन्तर हो सकता है, प्रकृति में नहीं। प्रत्येक कार्यालय में कागजी कार्यवाही महत्वपूर्ण क्रिया होती है कागजों पर टिप्पण होता है, अभिलेख होता है, आदेश होता है, क्रियान्वयन का प्रतिवेदन होता है, लेखा–जोखा रखा जाता है और प्रत्येक क्रिया–कलाप को लिपिबद्ध कर स्थायी अभिलेख रूप में सुरक्षित रख लिया जाता है। सुरक्षित रखने के लिए रजिस्टरों तथा फाइलों का प्रयोग किया जाता है। वस्तुतः यह कागजी कार्यवाही ही किसी कार्यालय का आधार है चाहे वह कार्यवाही किसी पक्के भवन में बैठकर की जाये चाहे पेड़ की छाया में। कार्यालय कहलाने के लिए पक्का भवन आवश्यक नहीं है किन्तु कागजी कार्यवाही अवश्य होनी चाहिए। किसी भी ऐसे स्थान को जहाँ कार्यालय की क्रियाओं के नियमन, निर्देशन और नियन्त्रण के लिए कागजी अभिलेख तैयार किए जायें और इनकी देख–रेख की जाये, कार्यालय कहा जा सकता है। हां, पक्के और सुविधाजनक भवन के होने से यह कार्य ज्यादा सुगमता से सम्पन्न हो सकता है।

कार्यालय कुशलता का आधार है

कार्यालय प्रबन्धक

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **कार्यालय प्रबन्धक ।**

कार्यालय प्रबन्धक :–

किसी भी व्यावसायिक संस्था में कार्यालय प्रबन्धक की संग. ठनात्मक स्थिति उस संस्था की अपनी जरूरतों, परम्पराओं तथा आस्थाओं पर निर्भर करती है। जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, कार्यालय प्रबन्ध एक विशिष्ट, लेकिन सेवा कार्य है। दूसरे शब्दों में, यद्यपि इस कार्य की अपनी विशिष्टताएँ तथा विषमताएँ होती है। जिनके सफलतापूर्वक निपटने के लिए इस कार्य में निपुण तथा अनुभवी अधिकारियों की नियुक्ति करनी अनिवार्य है, लेकिन इस कार्य के गौण महत्व के कारण ऐसा करना सदैव वांछनीय नहीं हैं यदि व्यवसाय छोटा है, उसमें केवल नैत्यक किस्म का दफ्तरी कारोबार किया जाता है, तथा बहुमूल्य मशीनों जैसे कम्प्यूटर आदि का इस्तेताल नहीं किया जाता है तो वहाँ कार्यालय का प्रबन्ध चलाने के लिए विशेष रूप से निपुण तथा अनुभवी कार्यालय प्रबन्धाकों को नियुक्त करना आवश्यक नहीं है। एक अनुभवी तथा विश्वासपात्र वरिष्ठ क्लर्क भी कार्यालय प्रबन्ध के दायित्व को कुशलतापूर्वक निभा सकता है एक अपेक्षाकृत बड़ी व्यावसायिक संस्था में भी, जहां दफ्तरी कार्य का विक्रेन्द्रीकरण कर दिया जाता है और प्रत्येक विभाग का प्रबन्धक अपने–अपने विभाग के कार्यालय का स्वयं संगठन तथा नियन्त्रण करता है, प्रायः कार्यालय प्रबन्धक के लिए पृथक विभाग नहीं बनाया जाता है इसका संगठन तथा प्रबन्ध, प्रायः कंपनी सचिव, वित्तीय नियन्त्रक,अथवा कर्मचारी प्रबन्धक के नेतृत्व में ही संगठित कर दिया जाता है। कुछ संस्थाओं में कार्यालय, संस्था के महा–प्रबन्धक के विभाग का ही एक अंग होता है।

कार्यालय प्रबन्धक, चाहे वह एक वरिष्ठ क्लर्क कहलाये या कम्पनी सचिव, वित्तीय नियन्त्रक कहलाये या मुख्य प्रशासन अधिकारी, उसका मुख्य दायित्व दफ्तरी कार्य का इस प्रकार संगठन तथा नियन्त्रण करना है कि वह कार्य पूर्ण कुशलता तथा किफायत के साथ किया जा सके।

कार्यालय प्रबन्धक की संस्था के संगठन ढाँचे में सही स्थिति को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि कार्यालय संबंधी कार्य केवल सेवा संबंधी कार्य होता है, कारोबार संबंधी कार्य नहीं। फलस्वरूप कार्यालय प्रबन्धक की वास्तविक स्थिति एक सहायक अधिकारी की स्थिति है, एक कार्यकारी अधिकारी की स्थिति नहीं। लेकिन जहाँ तक कार्यालय का प्रश्न है, इसका संचालन व प्रबन्ध चलाने में उसे कार्यकारी अधिकारी के सारे अधिकार प्राप्त होते हैं। दूसरे शब्दों में, अपने विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों तथा अधिकारीयों से वह उसी प्रकार काम ले सकता है जिस प्रकार उत्पादन विभाग में उत्पादन प्रबन्धक काम लेता है।

कार्यालय प्रबन्धक चूंकि एक विशेष चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारीयों से भरा पद है। इसमें न सिर्फ उसे स्वयं के बल्कि अन्य अधिकारीयों के कर्तव्य एवं दायित्वों का ध्यान रखतें हुए सामंजस्य बैठाते हुए कार्य करना पड़ता है। इसके लिए आवश्यक है कि वह सर्वप्रथम कार्यालय का जो ढ़ांचा तैयार करता है। वह बाहरी रूप से इस तरह का तैयार करें कि उसमें सभी पदाधिकारीयों के बैठने तथा अपने दायित्वों को निभाने का उचित अवसर मिलें एवं तभा सभी के लिए एकीकरण की भी व्यवस्था होनी चाहिए। यह ढांचा ही ऐसा होना चाहिए कि कोई जब उसे बाहर से देखें तो अंदर की सकारात्मक व्यवस्स्थाओं का अंदाजा लगा सकें।प्रशिक्षणार्थीयों की समझ के लिए कृपया निम्न को देखें। एवं अवलोकन करनें का प्रयास करें।

कार्यालय ढांचा व वातावरण

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **कार्यालय ढांचा व वातावरण ।**

सचिवीय पद्वति के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थीयों को कार्यालय का आधार जानने के बाद यह जानना अति आवश्यक होता हैं कि आखिर ढांचा क्या होता है। ढांचा को अंग्रेजी में कहते है। Structure जैसे कि हम घर में कोई मकान बनवाते है। तो उसका भी एक ढांचा होता है कि कहां रसोईघर होना चाहिए, कहां पूजा घर होनी चाहिए, कहां अतिथि रूम होना चाहिए एवं कहां हमारा बगीचा होना चाहिए। चाहे घर का कोई भी कक्ष हो उसे बनवाते समय यह ध्यान रखा जाता है कि उसे पर्याप्त हवा एवं रोशनी मिल सकें तथा कार्य की प्रकुति के अनुसार भी वह एकदम सही हों। तथा जिससे कार्यालय के लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर के उत्तरोतर वृद्वी की जा सके। देखिए निम्नानंसार

कार्यालय में स्थान व ले–आउट नियोजन :–

कार्यालय के लिए उपयुक्त स्थल तथा भवन का चुनाव हो जाने के बाद कार्यालय प्रबन्धक इसके इस्तेमाल की एक ऐसी व्यवस्थित योजना बनाता है, जिससे कार्यालय में किया जाने वाला काम, कम–से–कम स्थान–उपयुक्तता की दृष्टि से, ज्यादा–से–ज्यादा कुशलता के साथ किया जा सके, और कार्यालय भवन में उपलब्ध जगह का पूरा, सही तथा किफायती उपयोग हो। इस व्यवस्थित योजना में दफ्तरी कर्मचारियों, जरूरी मेज–कुर्सियों, अलमारियों व अन्य साजो–सामान भी शामिल है और कुल जगह का भिन्न–भिन्न दफ्तरी कामों की जगह की जरूरतों के अनुरूप बँटवारा करना भी।

संक्षेप में, ले–आउट की समस्या का सम्बन्ध सम्बद्ध जगह में कार्य स्थलों की ऐसी व्यवस्था करना है जिससे सम्पूर्ण साजो–सामान, सामग्री, कार्य–प्रणालियों तथा कर्मचारी अधिकतम कुशलता के साथ काम कर सकें। कार्यालय का गलत ले–आउट दफ्तरी काम के सीधे और कुशल प्रवाह में भी अड़चन डालता है। और कर्मचारियों के उत्साह तथा मनोबल को नीचे गिराता है। फलस्वरूप, समय और श्रम की बर्बादी होती है, दफ्तर की लागत बढ़ जाती है, तथा कर्मचारियों की इस संस्था से नौकरी छोड़कर दूसरी संस्था में भागने की प्रवृति में वृद्वि होती है।

वातावरण का संबध कार्यरत कम्रचारियों एंव अधिकारियों के आप सी सौहार्द्रपूर्ण संबंधों पर भी निर्भर करता है। जितने अच्छे उनके संबंध होगें उतना ही अच्छा उनका कार्य करने का वातावरण बनता जाएगा। तथा वातावरण किसी भी उत्पादन कार्य के लिए बहुत अच्छा घटक होता है। चाहे वह प्रत्यक्ष उत्पादन हो या उप्रत्यक्ष उत्पादन। एवं कार्यालय निरन्तर प्रगति का ही एक विषय होता है। निरन्तर यहां प्रतिदिन अनेकों व्यक्ति आते

है। तथा पत्र व्यवहार के रूप में भी उनका संबंध कार्यालय से होता है। प्रथम ख्याति कार्यालय का वातारण ही होता है। क्योकि बाहर से आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सर्वप्रथम उससे ही परिचित होता हे।

फाइलगि

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **फाइलिंग ।**

फाइलिंग कार्यालय चाहे अकार में छोटा हों या बड़ा फाईलिंग इसका महत्वपूर्ण अंग है। क्योंकि किसी भी कार्यालय/संस्था को अपना रजिरूट्रीकरण कराना होता है। उसके लिए पत्राचार करना होता है। चाहे वे ई–मेल के द्वारा ही होता हो तो उसको भी उसकी प्रति संभाल कर रखनी होती हैं कागजों को नियमानुसार अनुक्रमणिका के रूप में संभालकर रखना फाइलिंग कहलाता है। फाइलिंग एक तरह से कागजों को व्यवस्थित रूप मे रखना होता है। निम्न को देखिएं

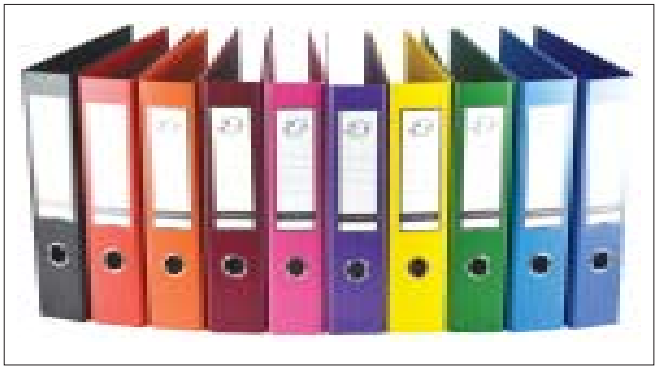

फाइल एवं अनुक्रमणीका :–

आधुनिक समय में जब यह कोशीशें की जा रही हैं। कि कार्यालयों में कागजी कार्यवाही कम से कम हों तब भी कुछ आवश्यक उद्देश्यों की पूर्ती हेतु आधुनिक कार्यालयों में फा. इलिंग का महत्व बढ़ता जा रहा है। आधुनिक कार्यालयों में फाइलिंग एक कार्य सूचना तथ्य आंकड़े एकत्र करना है। यह सूचनाएं पत्रों, बिलों एवं रिपोर्टों के माध्यम से एकत्र की जाती है। भविष्य हेतु इन्हें सुरक्षित रखने के अनेक तरीके अपनाएं जाते हैं। इन्हीं तरीकों में फाइल बनाना एवं अभिलेखों का प्रबन्ध करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। अतः कार्यालय की विभिन्न सूचनांए, रिकार्ड आदि सुरक्षित रहे एवं सही ढंग से रखने की विधि फाइलिंग कहलाती है। फाइलिंग के अन्तर्गत यह प्रयास किया जाता है कि उपर्युक्त रिकॉर्ड एवं अभिलेखों को उनकी उपयोगिता के आधार पर सुरक्षित एवं सही ढंग से रखा जाए। इससे आवश्यक जानकारी बिना समय व्यर्थ किए ढूंढी जा सकती है। एवं कार्यालय की कार्यवाही सुचारू रूप से चलाई जा सकती है।

कार्यालय में फाईलिंग की बढ़ती उपयोगिता के कारण इसके लाभ निम्न हैं।

1. उपयुक्त तरीके से यदि फाइलों की व्यवस्था की जाए तो समय की बचत होती है। एवं कार्यालय की कार्यप्रणाली

में कोई रूकावट नहीं आती क्योंकि फाईलिंग प्रक्रिया के अन्तर्गत समस्त दस्तावेज बिना समय व्यर्थ किए सरलता से मिल जाते हैं।

2. सही फाइल निर्माण सन्दर्भित लिपिकों एवं सचिवों को ढूंढनें में आसानी रहती है। जो कि उस पत्र के उत्तर देने के लिए उत्तरदायी होते हैं।
3. फाइलों के अन्तर्गत अभिलेखों को प्रामाणिक जानकारी के रूप में रखा जाता है। जिससे निर्णय लेने में आसानी होती है। एवं कभी भी विवाद से बचा जा सकता है।
4. फाइलों के आधार पर नीति संबंधी निर्णय भी लिये जाते हैं। यह निर्णय अधिकारी सही ढंग से बिना विलम्ब के ले सकते हैं।

फाइल निर्माण के सिद्धान्त :–

फाइलिंग प्रक्रिया के अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि फाइल बनाते समय कुछ सिद्धान्तों का पालन किया जाए। ये सिद्धान्त निम्न प्रकार हैं।

कार्य व्यवस्था के अनुरूप :–

1 फाइल निर्माण का अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि फाइलों का निर्माण कार्यालयों की कार्यव्यवस्था, कार्यों की प्रकृति के अनुरूप किया जाना चाहिए।

2. सरलीकरण :– किसी भी व्यावसायिक संगठन को अपनी आवश्यकता अनुसार फाइलें बनानी चाहिए। जिससे आवश्यकता पड़ने पर उनकों आसानी से ढूंढा जा सके एंव फाइल बनाने का उद्देश्य सफल हो सके।

3. फाइल निर्माण करते समय कार्यालय स्थान की उपलब्धता को भी दृष्टि में रखना चाहिए अप्रचलित एवं अनुत्पादक फाइलों एवं दस्तावेजों को प्रबन्धकीय निर्णयों के पश्चात् समाप्त कर देना चाहिए

4. फाइलिंग के पश्चात् उपयुक्त अनुक्रमणिका विधि का चुनाव करना चाहिए। जिससे कि फाइलों को ढूंढ़ना एवं उन तक पहुँचना आसान हों सके।

5. फाइलों की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण तथ्य है। फाइलों को सुरक्षित रखने हेतु उन्हें चोरी होने से एवं अन्य माध्यम से नष्ट होने से बचाने के लिए।

सचिव

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **सचिव की भूमिका**
- **सचिव के प्रकार ।**

सचिव प्रत्येक संस्था के लिए अपरिहार्य होता है। क्यों कि सचिव एक धुरी, एक आधार तथा एक शिला के रूप में कार्य करता है। क्योंकि सचिव ही वह व्यक्ति होता है जिससे बाहर से आने वाला प्रत्येक आगन्तुक तथा कार्यालय के भीतर प्रत्येक व्यक्ति उससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वार्तालाप कर सकता है। संस्था में होनी वाली सभाएं, सेमिनार, फ्रेंचाइजी, शाखा एवं किसी भी संबंधित कार्यालय या अन्य कार्यालय या फिर कार्यालय में होने वाले किसी भी कार्यालयीन अवसर या किसी अन्य अवसर पर होने वाले कार्यक्रमों को संपूर्ण प्रभारी एक तरह से सचिव ही होता है। सभाओं में होने वाली वार्तालाप का एजेण्डा, मिनट्स, तथा कौन–कौन व्यक्ति सभा में उपस्थित होएगें एव उनके बैठने की तथा उनके रहने की व्यवस्था होटल आदि की व्यवस्था सभी के टी.ए. डी.ए. बिल संबधी सभी औपचारिकताएं सचिव को ही पूर्ण करनी होती है।

साथ ही कार्यालय में कार्यरत सभी व्यक्तियों के मध्य समन्वय है या नहीं ये भी देखना सचिव का ही कार्य है। कुल मिलाकर सचिव कार्यालय समन्वयक, ऑपरेटर, कार्यालय सहायक, निजी सचिव, स्वागतधायक्ष, लोक प्रबन्ध अधिकारी के रूप में भी कार्य करता है।

कार्यालय

कार्यालय जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता हैं कार्य+आलय अर्थात् कार्य करने का स्थान, जहां कोई कार्य किया जाता है। परन्तु सचिवीय पद्धति के संदर्भ में कार्यालय का अर्थ केवल शाब्दिक ही नहीं है। जहां विशेष नियमों को ध्यान में रखते हुए सुनियोजित तरीके से किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ती हेतु कोई कार्य किया जाता हैं तो उस स्थान को कार्यालय कहते हैं।

भारत में दिन प्रतिदिन बढ़ रही आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु कई व्यावसायिक संस्थाएं समाज में कार्य कर रही हैं। ये संस्थाएं विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ती हेतु कार्य करती हैं। यह उद्देश्य मुख्यतः दो प्रकार के होते है। पहला उद्देश्य लाभ होता है। लाभ उद्देश्य की प्राप्ती हेतु व्यावसायिक संस्थाएं वस्तु इत्यादि का उत्पादन एवं विक्रय कर मुनाफा कमाती हैं। जबकि सेवा उद्देश्य की प्राप्ती हेतु संस्थाएं समाज को सेवा प्रदान कर उस पर उचित मूल्य प्राप्त करती हैं। अस्पताल, परिवहन, निगम, स्कूल जन कल्याण संस्थाएं इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

जीवन के विविध क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की संस्थाएं, कंपनियां अथवा व्यक्ति विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। कोई उत्पादन करता है।कोई समाज सेवा का कार्य करता है। जैसे :– रेल, विज्ञापन ऐजेंसियां, बैंक आदि। कई संगठन सामाजिक सेवा के कार्य करते है जैसे अस्पताल, स्वास्थय विभाग, जन– कल्याण समितियां, नगर–निगम आदि। जिन पर कि जनता का पैसा लगा होता है। प्रत्येक संगठन को सुचारू रूप से चलाने के लिए उसका एक संचालक या संचालक मंडल होता हैं जिसका एक कार्यालय होता है। कार्यालय में विभिन्न कार्यो को करने के लिए अलग–अलग विभाग बनाए जाते हैं। जिनमें अलग–अलग तरह के कार्य किए जाते हैं। जैसे प्रशासनिक विभाग, क्रय–विक्रय विभाग, लेखाशाखा विभाग, वित्त विभाग आदि। जिनमें अलग विभाग के अलग अधिकारी भी होते हैं। तथा कार्य की प्रकृति के अनुसार उनके सचिव/निजी सचिव भी होते हैं।

किसी भी कार्यालय में जो कार्य होते हैं उन कार्यो के संपूर्ण अध्ययन को सचिव पद्धति कहते हैं एवं कार्यालय का जो संगठन होता है। उसमें कार्यालय का अति प्रमुख स्थान होता है। क्योंकि संगठन से संबंधित जो कार्य होते हैं। उनको मूर्त रूप कार्यालय में ही दिया जाता है। क्योंकि किसी अन्य स्थान पर उनकों मूर्त रूप प्रदान नहीं किया जा सकता। संगठन दो या दो से अधिक व्यक्तियों का वह समूह है जो किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ती के लिए नियमों को ध्यान में रखते हुए कार्य करता है संगठन कहलाता है। और संगठन में विभिन्न विभागों में अनेक व्यक्ति कार्य करते हैं। संगठन में कार्यालय एक धुरी के रूप में कार्य करता है।

सचिव के प्रकार

सचिव के अनेक प्रकार होते है। अर्थात् उनकी कार्य की प्रकृति तथा उनके अधिकारी के कार्य की प्रकृति के आधार पर उनके कार्य विभाजीत होते जाते है। तथा वैसे भी सचिव को हर तरह के कार्य करने होते हैं जैसा कि ऊपर बताया गया है कि सचिव एक रूप में अनेक पदों की भूमिका निभाता है। तो इसके अनुसार उसको सारे कार्यो को निर्वाह करना होता हैं। यदि किसी बड़े संस्थान में बहुत बड़े डिजाइनर के अधीन कार्य करता है। तो उसके कार्य की प्रकृति होगी। ग्राहको के अपॉइन्टमेन्ट फिक्स करना, चाहे वह स्थानीय स्तर के हों या अर्न्तराज्यीय स्तर के हो ।यदि वह सचिवालय में अध्यक्ष का सचिव है तो वहां भी उसके कार्य सभाएं आयोजित करना, नियुक्ति, पदोन्ति संबधी, फ्रेंचाइजी, ब्रांचेज संबधी सभी कार्यो की औपचारिकताएं पूरी करना।

निजी उपक्रम में कार्यरत सचिव का कार्य सरकारी उपक्रम के सचिव से भिन्न होता है। इसी प्रकार एक लघु स्तर की व्यावसायिक संस्था में कम होता है। सामान्यतः निम्न पदों एवं अवस्थाओं हेतु सचिव की नियुक्ति की जाती है।

मंत्रालय या सरकारी विभाग का सचिव

महासचिव

राजदूतावास का सचिव

स्थानीय निकाय तथा सहकारी समिति, श्रमिक संगठन या संस्थापन सचिव एवं कम्पनी सचिव

कार्यालय उपकरण

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **उपकरणों की पहचान ।**

कार्यालय उपकरण

कार्यालय यंत्रों से आशय उन छोटे–बड़े यन्त्रों से है। जिनके उपयोग द्वारा कार्यालयों में काम करने वाले लिपिकों के श्रम तथा समय दोनों में बचत होने के साथ ही कार्यालय की कार्यकुशलता में वृद्वी होती है। कार्य में तीव्रता आती है। कार्यालय यंत्रों को अपनाने का उद्देश्य यही है कि श्रम तथा समय की बचत के साथ–साथ शुद्वता एवं संवर्धन भी आता है। तथा कर्मचारीयों एवं अधिकारीयों की नीरसता को दूर करके कार्य तथा उद्देश्य के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। तथा साथ ही कार्यालय की सुन्दरता में भी वृद्वी होती है।

कार्यालय यंत्रों के प्रकार

टाइपराइटर, टेलीफोन, स्कैनर, फोटोकॉपी मशीन, पतालिखने की मशीन, टिकट छापने की मशीन,मुहर लगाने की मशीन, गणना करने की मशीन, डिक्टाफोन, कम्पयूटर आदि।

यांत्रिक विधियों से लाभ :–

कार्यालय में यांत्रिक विधियों से यह लाभ है कि श्रम तथा समय की बचत होती है। एवं कार्य में शुद्वता आने के साथ–साथ कार्य की नीरसता से छुटकारा मिलता है। तथा कार्य कुशलता में वृद्वी आने के साथ ही लालफीताशाही का उन्मूलन होने में सहायता मिलती है। इससे कार्यालय आधुनिकीकरण की दिशा में अग्रसर होता है तथा विशिष्टीकरण को प्रोत्साहन मिलता हैं कर्मचारी अधिक निष्ठा एवं लगन से कार्य करते हैं

यांत्रिक विधियों से हानियांः–

उपरोक्त विधी छोटे कार्यालयों के लिए अनुपयुक्त है। तथा इनको संचालित करने के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होती हैं ऐसी अवस्था में उनको प्रशिक्षण दिलाया जाना आवश्यक होता है। एवं पूंजी का अपव्यय होतहा है।

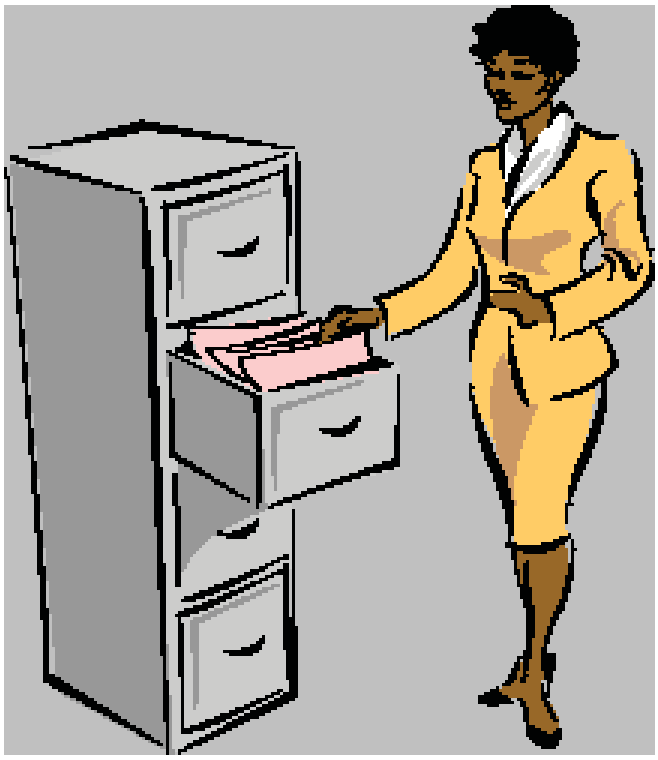

पोस्ट ऑफीस सेवायें

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **उपकरणों की पहचान ।**

डाक विभाग की आवश्यकता :–

प्राचीन काल में व्यापार का क्षेत्र सीमित था। उस समय व्यापार केवल आस–पास रहने वाले व्यक्तियों के मध्य ही होता था। इस प्रकार व्यापार का क्षेत्र केवल स्थानीय सीमाओं तक ही था। किन्तु आधुनिक व्यापार केवल स्थानीय ही न रहकर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर चुका है। उदाहरण के लिए, आगरे का पेठा, बीकानेर की भुजिया भारतवर्ष के कोने–कोने में प्रसिद्व है। आज का व्यापारी अपने व्यापारिक कार्यालय में बैठे–बैठे ही देश व विदेश के व्यापारियों से संबंध स्थापित करके माल का क्रय–विक्रय कर सकता है, रूप्या व मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त कर सकता है। ये सभी सेवायें डाक–विभाग द्वारा उपलब्ध होती है। यदि आपको पत्र–व्यवहार करना है, पार्सल, पैकेट आदि भेजने या मंगवाने है, शीघ्र समाचार भेजने है, टेलीफोन पर बातचीत करनी है रूप्या भेजना या मंगवाना है तो डाक–विभाग का सहारा लेना होगा। इतना ही नहीं डाक–विभाग जनता को मितव्ययी बनाने की भी चेष्टा करता है। यह हमें बचत खाता, राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र आदि की सुविधायें भी प्रदान करता है। यही कारण है कि प्रत्येक देश की सरकार डाक–विभाग को अपने नियन्त्रण में रखती है। भारत में भी डाक–विभाग केन्द्रीय सरकार के अधीन है।

डाक व्यवस्था लेखन सामग्री

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **कार्यालय ढांचा व वातावरण ।**

डाक–व्यवस्था

मानव जीवन में डाक का विशेष महत्व है। चाहे हमारे रिश्तेदार हों, दोस्त हों या निकट परिचित, चाहे वे कितनी ही दूरी पर रहते हों, उनका संबंध डाक से भेजे जाने वाले पत्रों से जुड़ा रहता है। गरीब हो या अमीर सभी के घर पोस्टमैन इस प्रकार के पत्रों को बांटता है। संदेश प्रेषण की यह विधि संदेश वाहक द्वारा संचालित होती है। जिसके लिए प्रत्येक शहर, कस्बे या गांव में डाकघर या पोस्ट आफिस होता है। संदेश भेजने के और भी कई तरीके हैं जो डाक व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का डाकघर से नियमित व्यवहार होता है।

किसी भी कार्यालय या संगठन की एक विशेष प्रकार की कार्यविधि होती है जिसके अनुसार उस का कार्य चलता है। इस में अन्य विभागों के साथ ही डाक–विभाग या डाक–व्यवस्था कार्यालय का महत्वूर्ण अंग होती है। संगठन के अंदर तथा संगठन के बाहर भी अच्छे संबंध तथा संपर्क बनाए रखने में डाक विभाग का महत्वपूर्ण योग दान होता है। अतः डाक व्यवस्था की कार्य प्रणाली को समझना हर व्यक्ति एवं कार्यालय सचिव के लिए आवश्यक है।

प्रत्येक संस्था के कार्यालय में बड़ी संख्या में डाक से पत्र, परिपत्र, आदेश, लिखित एवं मुद्रित सामग्री, सूचनाएँ एंव तार प्राप्त होते हैं। इन लिखित सूचनाओं को जो डाक से या व्यक्तिगत रूप से पत्रवाहक द्वारा प्राप्त होते हैं या भेजी जाती है, उन्हें डाक कहा जाता है।

डाक व्यवस्था मे पोस्ट कार्ड, लिफाफे, अर्न्तदेर्शीय पत्र, रजिर्स्टड पत्र आदि आते है। जिनका प्रत्येक के जीवन में अत्यधिक योगदान होता है। फिर यदि कार्यालय की बात की जाए तो वह प्रतिदिन डाकघर के संपर्क में रहता है। स्थानीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक उसे संप्रेषण करना आवश्यक होता है। क्यों कि पत्र एक प्रमाण होता है। और बड़े–बड़े स्तरों तक इसी के आधार पर व्यवहार जैसे क्रय, विक्रय, आदेश पत्र, शिकायती पत्र, गश्ती पत्र, सर्कुलर पत्र, निर्गमित पत्र, प्रतिनिधी पत्र आदि का सीधा संबंध डाकघर से होता है। निम्न को ध्यान से देखें।

लेखन सामग्री

लेखन सामग्री जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है कि लिखने के लिए जिस सामग्री का उपयोग किया जाता है उसे लेखन सामग्री कहते है। चूंकि कार्यालय में प्रत्येक कार्य लिपिकीय एवं लिखित प्रकृति का होता है सर्वप्रमुख उदाहरण है पत्र व्यवस्था प्रत्येक कार्य की फाइल एवं नोटशीट बनाई जाती है। लेखन सामग्री को ंजंजपवदंतल भी कहा जाता है। चाहे कार्य हस्तलिखित हो या कम्पयूटरीकृत दोनों ही प्रकार में कागज, पेन, स्याही आदि का प्रयोग किया जाता है जोकि स्टेशनरी के अंतर्गत ही आते है। कागज, पेन, रबर, पेन्सिल, स्याही, फाईल फोल्डर, गोंद, कार्बन पेपर आदि लेखन सामग्री के अन्तर्गत ही आते है। निम्न को देखें।

पत्राचार

उद्देश्य : इस अभ्यास के अन्त में आप यह जान सकेंगे :

- **सभी प्रकार के पत्राचार ।**

दिनांक .....

अजमेर,

प्रिय मित्र अशोक,

यहां सब कुशल मंगल है और आशा करता हूँ कि तुम भी सपरिवार कुशल–मंगल होंगे। यह बताते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि मैंने अपनी पुत्री का विवाह निश्चित कर दिया है जो कि 08 फरवरी 2015 को होने जा रहा है और इस अवसर पर तुमको सपरिवार सादर आमंत्रित कर रहा हूँ और हाँ तुम सभी लोग दिनांक 5 फरवरी तक जरूर पहुँच जाना।

घर में माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना तथा दोनों बच्चों को प्यार एवं शुभाशीर्वाद के साथ पत्र को समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा मित्र

रमेश शर्मा

व्यावसायिक अनुदेशक

आशुलिपि हिन्दी

शिकायती पत्र :– दिनांक .....

प्रेषक,

प्रधानाचार्य,
राजकीय इण्टर कॉलेज,
मेरठ।

सेवा में,

स्वास्थय अधिकारी,
नगर महापालिका,
मेरठ।

पत्रांक..... का. रा. इ. का. –सफाई व्यवस्था

दिनांक 9 जनवरी 2015

महोदय,

नम्र निवेदन है कि विधालय के आसपास काफी गंदगी फैली हुई है। स्थान–स्थान पर कूड़े के ढेर लग गए हैं तथा नालियाँ मैले से अटी हुई हैं। जमादारों से कहने पर भी सफाई नहीं हो सकी। इस गंदगी के कारण विधालय में दुर्गन्ध फैल रही है तथा काफी मच्छर पैदा हो गए हैं जिसके कारण बीमारी फैलने का भय है। कृपया आप सफाई कर्मचारियों को आदेश दें कि वे नियमित रूप से सफाई करते रहें, जिससे बीमारी फैलने से रोका जा सके।

मैं आशा करता हूं कि आप इस ओर विशेष ध्यान देकर शीघ्र कार्यवाही करने का क' करेंगे।

भवदीय,
प्रधानाचार्य,
राजकीय इण्टर कॉलेज,
मेरठ।

सेवा में,

प्रधानाचार्य,
राजकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान,
बनीपार्क, जयपुर।

विषय :– अनुबंधित प्रवक्ता पद के लिए आवेदन करने हेतु।

महोदय,

नम्र निवेदन है कि उपरोक्त विषयान्तर्गत आपके द्वारा निकाली गई विज्ञप्ती दिनांक 6.01.2015 दैनिक भास्कर समाचार पत्र के आधार पर निर्धारित योग्यताएं एवं अनुभव पूर्ण करते हुए मैं अपना आवेदन पत्र आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ। आपसे निवेदन है कि एक बार सेवा का मौका प्रदान करनें की कृपा करें।

मैं आपकी सदा अभारी रहूँगी।

भवदीया
नेहा जैन

संलग्नक :– 1. बायोडाटा समस्त शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव प्रमाण पत्रों सहित।

राधा पाइप फिटिंग डिपो
(नल, पाइप फिटिंग के विक्रेता)

दूरभाष : 8475890

2/डी, माहीपुर
नई दिल्ली – 110085

पत्रांक : प्र. पा. फि. डि. 3/2021

दिनांक : 25 जनवरी 2021

सर्वश्री सुरेन्द्र वर्क्स
504 जी. टी. रोड
जयपुर।

विषय : पूछताछ हेतु

महोदय,

18 जनवरी, 2021 के नवभारत टाइम्स में प्रकाशित आपके विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आप विभिन्न उत्पादों के पाइप ट्यूब बेचने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के सेनेट्री उत्पादन करते हैं। कृप्या लोटती डाक से आपके पास उपलब्ध टाटा व जिन्दल के 100 फुट लम्बे पाइप तााि अपने उत्पादों की 800 ग्राम वाले पीतल के नल के मूल्य तथा व्यापारिक शर्तें भेज दें। यदि यदि आपकी शर्तें हमारे अनुकूल हुई तो हम पर्याप्त मात्रा में माल का आदेश भेज सकेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय
महेश
प्रोपराइटर
राधा पाइप फिटिंग

दिल्ली नागरिक सहकारी बैंक

सी.4, यमुना विहार दिल्ली–110053

पत्रांक : 7 / 2011 14 सितम्बर, 2012

प्रिय कमल,

आपका 10 अगस्त 2011 का लिखा हुआ पत्र हमें 13 सितम्बर 2012 को प्राप्त हुआ। आपने उस पत्र में बैंक की सदस्यता ग्रहण सम्बन्धी जानकारी मांगी है।

हम बैंक में सरकारी कर्मचारियों के अलावा व्यापारियों को भी सदस्य बनाते है। आपके दो व्यक्ति हमारे इस बैंक के सदस्य होने चाहिए जो कि आपकी गवाही दे सकें। बैंक की नयी नीति के अनुसार गवाही देने वालों की मासिक वेतन रसीद एवं दिल्ली के राशन कार्ड की फोटो कापी आपको अपने सदस्यता फार्म एवं ऋण आवेदन पत्र के साथ संलग्न करनी होगी। यदि आप किसी व्यापार से जुड़ें हैं तो प्रथम श्रेणी के न्यायाधीश से मासिक आय का प्रमाण–पत्र बनवा कर संलग्न करना होगा। सदस्यता फार्म किसी भी कार्य दिवस में खिड़की नं. 2 पर सौ रूपये जमा करके प्राप्त किया जा सकता है। बैंक की सदस्यता ग्रहण करने के एक माह के उपरान्त आपको ऋण दिया जा सकता है। विस्तृत जानकारी के लिए कृपाया संलग्न देखें।

आशा है आप बैंक की पूर्ण जानकारी पढ़कर हमारे बैंक के सदस्य बनेंगे।

धन्यवाद,

भवदीय

(मनोज तोमर)

श्री कमल दीवान 2563, हड़सन लाईन,

दिल्ली–110054

संलग्न : बैंक की नियमावली।